

I SSN-2229-547X-VI DEHA

વિદેહ-૩૬૧-મ-શ્રંક-૦૧-ઝાનવરી-૨૦૨૩-(વર્ષ-૧૬-માસ-૧૮૧-શ્રંક-૩૬૧)

(વિદેહ-www.videha.co.in)

વિદેહ-ઢૈયિઠી-સાહિત્ય-શ્રાન્ઢોઠઢઃ -ઢાનુષીઢિહ-સંસ્ક્રિતાઢ્



વિદેહ--પ્રથમ-ઢૈયિઠી-પાક્ષિક-૬-પત્રિકા

સમ્પાદકઃ -ઝાઝેન્ઢ્1-ઢાકુ11-



ऐ.पोथीक.सर्वाधिकार.सुरक्षित.अखि.का ी1इट.(©).या1कक.ठिप्पित.अनुमतिक.विना.पो
थीक.कोनो.अंशक.छाया.प्रति.एवं.निकाडिंग.सहित.इलेक्ट्रानिक.अथवा.य ंदिक,.कोनो.मध्य
मसँ,.अथवा.ज्वागत.संग्रहम.वा.पुनर्प्रयो क.प्रमाणी.द्वारा.कोनो.पूषम .पुनरुत्पादन.अथवा.सं
या1न.प्रसा1म.नै.कए0णा.सकैत.अखि।

(c) .२०००-

.२०२३.सर्वाधिकार.सुरक्षित.मा0सगिक.गाछ.जे.सन.२०००.सँ.याहूसिटी0प1.छ0., .<http://www.geocities.com/ggaiendra>.आदि.ठिकप1.आ.अपनो.प.णु0इ.२
००४.क.पोस्ट.के1.पूषमे.इंटरनेटप1.मैथि0 क.प्राथीनतम.उपस्थितक.पूषमे.विद्यमान.अखि
(किछु.दिन.ठे0.ठिकप1, .स्रोत.wayback machine of [https://web.archive.org/web/*/vi.deha.258.capture\(s\) from 2004 to 2016](https://web.archive.org/web/*/vi.deha.258.capture(s) from 2004 to 2016)-
<http://vi.deha.com/>.मा0सगिक.गाछ-
प्रथम.मैथि0.व्हाग./ .मैथि0.व्हागक.एग्रीजेट1) ।
ई.मैथि0क.पहि0.इंटरनेट.पत्रिका.थिक.ण 1.नाम.वादेमे.१.णनवरी.२००८.सँ.'विदेह'.पड़वै.
इंटरनेटप1.मैथि0क.प्रथम.उपस्थितिक.यात्रा.विदेह-
.प्रथम.मैथि0.पाक्षिक.ई.पत्रिका.धनि.पहुँय0.अखि, .जे.०.प1.ई.प्रकासित.होइत.अखि.आव.“
मा0सगिक.गाछ”.ण0व्रित्त.’ विदेह’ .ई-
पत्रिकाक.प्रवक्तक.संग.मैथि0.भाषाक.ण0व्रित्तक.एग्रीजेट1क.पूषमे.प्रयुक्त.गऽ.१ह0.अखि
.

(c) २०००-२०२३.विदेह: .प्रथम.मैथि0.पाक्षिक.ई.पत्रिका। SSN-2229-

547X-VI DEHA.(since-2004) . .सम्पादक: .गणेशू1.डाकु1।-Editor: .Gajendra Thakur. .In respect of material s e-
published in Vi deha, the Editor, Vi deha holds the right to
o create the web archives / theme-
based web archives, right to translate / transliterate the
ose archives and create translated / transliterated web-
archives; and the right to e-publish / print -
publish all these archives. .१यनाका1/ .संग्रहकर्ता.अपन.भौतिक.आ.अप्र
कासित.१यना/ .संग्रह.(संपूर्ण.उत्त1दायित्व.१यनाका1/ .संग्रहकर्ता.मध्य) .editorial .
staff. vi deha@ mail . com कै.मे0.अटैयमेमटक.पूषमै.पडा.सकैत.अथि, .संगमे.श्रो
.अपन.संक्षिप्त.पत्रिय.श्र.अपन.स्कैन.कए0.जे0.श्वोटो.सेहो.पडावधि.एतऽ. ्रकासित.१य
ना/ .संग्रह.सगक.कापी1इट.१यनाका1/ .संग्र हकर्ताक.0गमे.अन्हि.आ.णतऽ.१यनाका1/ .

સંગ્રહકર્તાક.નામ.નૈ.શ્રિ.તત્સ.ઈ.સંપાદકાધીન.શ્રિ.સમ્પાદક: .વિદેહ.ઈ-
 પ્રકાશિત.ત્રયનાક.વેવ.શ્રીકાર્કાડવ/ .થીમ.શ્રાયાતિત.વેવ-
 શ્રીકાર્કાડવક.નિર્માણક.શ્રયિકા1, .એ.સમ.શ્રીકાર્કાડ ક.શ્રુગુણાદ.શ્રા.ઠિપ્પંત1મ.શ્રા.તકતો.વેવ-
 શ્રીકાર્કાડવક.નિર્માણક.શ્રયિકા1; .શ્રા.એ.સમ.શ્રીકાર્કાડ વક.ઈ-પ્રકાશન/ .પ્રિંટ-
 પ્રકાશનક.શ્રયિકા1.તપ્પૈત.છયા.એ.સમ.ઠેઠ.કો ઓ.ત્રાયુટી/ .પાનિશ્ચાનિકક.પ્રાવયાન.નૈ.છે,
 .સે.ત્રાયુટી/ .પાનિશ્ચાનિકક.ડ્યુક્.ત્રયનાકા1/ .સંગ્રહકર્તા.વિદેહસં.નૈ.પુડથુ.વિદેહ.ઈ.પત્રિ
 કાક.માસમે.દૂ.ટ.શ્રંક.નિકઠૈત.શ્રિ.જો.માસક.૦૧.શ્રા.૧૫.તિથિકે.૫1.ઈ.પ્રકાશિત.કપ્ઠ.
 ળાડત.શ્રિ.

Vi deha.e-J ournal : .I s sue.No. .361.at .www.vi.deha.co.in..

Vi de ha: ·Māi t h i l i ·L i t e r a t u r e ·M o v e m e n t

ଅନୁକ୍ରମ

ଐ·ଅଙ୍କଭେ·ଅଛି:-

୧. ୧. ଗଞ୍ଜେଇ·ଠାକୁରାଣୀ·ଗୁରୁତର·ଅଙ୍କ·ସମ୍ପାଦକୀୟ

୧. ୨. ଅଙ୍କ·୩୬୦୫୧·ଟିପ୍ପଣୀ

୨. ଗଞ୍ଜେଇ·ଆଳତ

୨. ୧. ଗିତ·ଗପ୍ତ·ସୁମାଧ୍ୟ·ୟଙ୍ଗୁଳ·ପାଠକ·ଭାଗ-୧-୩ (ଗଞ୍ଜେଇ·ଠାକୁରାଣୀ)

୨. ୨. ଆଧ୍ୟାୟ·ଗାନ୍ଧୀ·ନିର୍ଦ୍ଦେଶ·ନିୟମ·ମିଆଦୀନ

୨. ୩. ଆଧ୍ୟାୟ·ଗାନ୍ଧୀ·ନିର୍ଦ୍ଦେଶ·ନିୟମ·ପାଠକ

୨. ୪. ଗାନ୍ଧୀ·ନିର୍ଦ୍ଦେଶ·ନିୟମ·ପାଠକ

୨. ୫. ସନ୍ତୋଷ·କୁମାର·ନାୟକ· ' ପଠାଣୀ ' -- ଡାକ୍ତରୀ · ଚଳ·ସୁ·ହୁ'

૨. ૬. ળગદીસ•પ્રસાદ•ઝઠઠ-વુઠઠી

૨. ૭. ળગદીસ•પ્રસાદ•ઝઠઠ-

•ઝોડપ૫૧•(યા૫ાલાહિક•ઉપન્યાસ•છશ્રઝ•પડાવ)

૨. ૮. ૧વીઠ્ઠ૧•ઝા૫ાયાઠઠ•ઝિશ૧•ઝાવ્રિઝૂઝિ•(ઉપન્યાસ) --૧૮ઝ•ઝેપ

૨. ૮. ઝિઝઠા•કઠઠ--શ્રઝિ•સિપ્પા•(ઝાગ--૧૨)

૨. ૧૦. ઝઠ્ઠ•વ્રિઠાસ•૫ાયક•૪•ટા•કથા--કથા-

૧•ળડપ૫૧•સઝપાદકીય•સઝીવષા•શ્રંઝેળીઝે•સઝપાદકીય•પ્રિષ્ઠ•પ૫૧

૨. ૧૧. ઝઠ્ઠ•વ્રિઠાસ•૫ાયક•૪•ટા•કથા--કથા-

૨•ળડપ૫૧•સઝપાદકીય•સઝીવષા•શ્રંઝેળીઝે•સઝપાદકીય•પ્રિષ્ઠ•પ૫૧

૨. ૧૨. ઝઠ્ઠ•વ્રિઠાસ•૫ાયક•૪•ટા•કથા--કથા-

૩•ળડપ૫૧•સઝપાદકીય•સઝીવષા•શ્રંઝેળીઝે•સઝપાદકીય•પ્રિષ્ઠ•પ૫૧

૨. ૧૩. ઝઠ્ઠ•વ્રિઠાસ•૫ાયક•૪•ટા•કથા--કથા-

૪•ળડપ૫૧•સઝપાદકીય•સઝીવષા•શ્રંઝેળીઝે•સઝપાદકીય•પ્રિષ્ઠ•પ૫૧

૨. ૧૪. ઝઠ્ઠ•વ્રિઠાસ•૫ાયક•૧•ટા•૯કાંકી-

--ળડપ૫૧•સઝપાદકીય•સઝીવષા•શ્રંઝેળીઝે•સઝપાદકીય•પ્રિષ્ઠ•પ૫૧

૨. ૧૫. કુમાર-મનોહ-કશ્યપ-૧૮-ઉદ્યુકથા-શ્રવણ-શ્રવણ-સંસાર

२. १६. त्रिपेश.यन्द्.१.०।०-कथा-।५.दिपेश

୨. ୧୭. ପ୍ରେମସଂକଳ୍ପ-ପ୍ରାଚୀନ-ପଦ୍ୟ-କଥା-ଗୀତ-କବିତା

३. पद-पङ्क्ति

३. १. १।७. किशो१. गिश्-सुप्पाए०. पोप्पनि

३. २. संतोष·कुमा१·१।य०' वटोही' --एकटा·वि१हा-
·देहक·सिंगा१·छी·हम१

३. ३. श्याम-विहारी-मिश्र-श्रम्यासः सशुभाक-सीढी

३. ४. वद्दीनाथ. नाय. दूटा. पद्य

3. 4. କୃପଣାଂଶୁ-ଉଷୁଗମ

૩. ૬. શ્રાક્ષીષ.શ્રગયિન્હા1-ઋક્તિ.ગાળઠ

४. विदेह-सूयना-संपर्क-श्रव्येषाम्



११।१०६१ शकु- गूगल अंक सम्पादकीय

१२।अंक ३६०५१ टिप्पणी

११।१।१६.१ शकु- गूढ अंक सम्पादकीय

१

मैथिलीक सात टा गएन छटिनेनी एसोसियेशनकें मान्यता एस कऽ साहित्य अकादेमी जे मूठयानाक मैथिलीक मुसाथनी वैसेवाक काज केँकै से आव सत्य गऽ नहँ अछि। प्रेम मोहन मशिनक पनामनसदा □ समितिमि ब्रिटिह द्वाला वैक कएथ कथनि योन साहित्यकानक अनिकि आन वहुनो ननहक रूप नहथि जे आव अशोक अवयिथक पनामनसदा □ समितिमि छथि। ऐ ननहक ठेक व्थैकमेथक शक्ति आनामसँ होइ छथि कानाम अपन मेनटिसँ तँ ओ आवै नै छथि। खुन हुनका सेमीगान, अनुवाद, मोनोग्राफ आदि असाइनमेन्ट वाँटथ जाइ अछि, जे अमनजीक अनुसा कियो पढ़ै नै छै, ओ सग साहित्य अकादेमीक जोदानमे सड़ि जाइ छै। अइसँ दूटा पाइ होइ छै आ वायोडेटा मजिगिन वर्ग जाइ छै, जे ब्रिटिगन ह का केन अनुसा, नयना तँ जे से, ओहिन मजिगिन वायोडेटासँ सहिगाँ कए जा सकै। अशोक अवयिथ जे आ ई सातो गएन छटिनेनी एसोसियेशन एकटा नाम आगाँ अगठक अछि- ७ □ अणय कुमार हा। जेहने अशोक अवयिथ आ मूठयानाक आग साहित्यकान छथि, एन-मेग नकने मनिन रमेज। मुदा मूठयाना वठा सग कगानोहट उठे अछि जे हनिका कियो यगिहो नै छगि, ओ अशोक अवयिथक मागिनि छथि तँ। मुदा अनुवाद असाइनमेन्ट ओहो सग जोगानेसँ ठेगे छथि, समागानान यानाक छेपक सगक हककें मानिकऽ, तँ सएह असाइनमेन्ट ७ □ अणय कुमार हा सेहो ठेगे छथि। अशोक अवयिथ छथि नहुआक आ ७ □ अणय कुमार हा उमनीक, तँ माम-मागिनि होथि वा ममयौन-पसियौन समागानान याना ठेग धनिसन। हम पहिनहयि कहने छी जे एहिन ठेक मुदा व्थैकमेथक शक्ति गऽ जाइ छथि से ७ □ अणय कुमार हा केन व्थैकमेथिगि सुनू गऽ जेठ छगि, ओ सोसल मीडियामे मूठयानाक के-के ठेक सग हुनका गनथिथकनि, नकन वसिठ वना कऽ ओकनासँ गेट कनव सुनू कऽ देगे छथि आ जँ अगुठका पसिसा पढ़ी तँ से एक ननहँ ठीको छै, ओ सग दूटा पाइ, पुनस्कात आ वायोडेटा ठेग अपस्यौन नहना आ अहाँकें वकसिदिना।

અકટા નાનકુમારી નહ્ય, પત્ની દ્વૌપક નાનકુમારી, વડ્ડ કાવઠિ, તોવ્ન વુચવાઠિ। અકટા દૈત્ય ઓતુક્કા પત્ની સમકે વડ્ડ તંગ કનૈ। પત્ની સમ નાનકુમારી ઇગગેઠિ, નક્ષા કનૂ। નાનકુમારી કહઠગિ- આવડે દૈત્ય આવડ તં હમના પ્યવનકિનવ। દૈત્ય આપડ તં નાનકુમારી હુનકન સોહાં આવીગેઠિ। દૈત્ય આગ પત્નીકે ઘોડિ નાનકુમારીક પાછાં યડ ઇઠક। નાનકુમારી ઓકના દ્વૌપક દક્ષામિ માગ ઇડ ગેઠિ। યાનૂ તનશ્ચ સોના, સે દેખા દૈત્ય નાનકુમારીકે વસિનિ સોના પોદસ ઇગઠ। નાનકુમારી ઘુનિ ઇઠિ। પત્ની સમકે કહઠગિ- આવ નશિયનિત નહૂ, આવ ઓ દૈત્ય મનૈત કાઠ યનિ સોના પોયૈત નહા, અહાં સમકે તંગ નૈ કન।

સાહિત્ય અકાદેમીક મૈથિલિ પનામન્સદાન□ સમિતિપિન અકટા નાટકો ઇપિઠ ગેઠ અઘા, નામ છે યૂનિ સમાગમ। ઈ તેનહમ સનાવ્દીમે ઇપિઠે નહથા જ્યોતિર્ગિશ્વન, ટ-ટ સપ્ત સાઠ વાદ હોસ્વઠ ઘટનાક આગાસ નહગ્હિ હુનકા આ તં ને ઓ ઇથા ઇતેક પૈઘ નાટકકાન! તં પહૂ ઓર નાટકક સાનાંશ આ યનિહૂ ઓકન પાત્ન સમકે આ ખં યોગ્હિ ઇ તં પ્યવનિ કનૂ ઈ-પાત્ન સડકેતે દતિનાથિસનાડડ્ડદિહબામિયોમ પન (સ્થાન આ પાત્નક નામને જ્યોતિર્ગિશ્વન ઇપ્પકીય સ્વતંત્રતા ઇમે ઇથા)।

યૂનિસમાગમ: ઈ નાટક તેનહમ સનાવ્દીમે જ્યોતિર્ગિશ્વન ઠાકુન દ્વાના નયઠ ગેઠ પે સંસ્કૃત આ મૈથિલિમે ઉપવચ્ચ અઘા જ્યોતિર્ગિશ્વન ઠાકુનક સંસ્કૃત યૂનિસમાગમમે સેહે મૈથિલિ ગીતક સમાવેશ અઘા ઈ પ્નહસનક કોટમિ અવૈત અઘા મૈથિલિક અધકિંશ નાટક-નાટકિ સ્ત્રીકૃષ્ણ અથવા હુનકન વંશયનક યનિતપન અવૈવતિ આ હનાસ આકા સ્વયંવન કથાપન આયાનિ ઇઠ મુદા યૂનિસમાગમમે સાયુ આ હુનકન શિષ્ય મુખ્ય પાત્ન અઘા યૂનિસમાગમક સમ પાત્ન અકસં અક યૂનિ ઇથા તર હેતુ અક નામ યૂનિસમાગમ સન્વથા ઉપ્યુક્ત અઘા પ્નહસનકે સંગીતક સેહે કહઠ ખાસ તર હેતુ એમે મૈથિલિ ગીતક સમાવેશ સન્વથા સમીયોગ અઘા એમે સૂત્રધાન, ગટી, સ્નાતક, વશિષ્ઠગન, મ્નાંગાન, સુનપ્તપિયા, અંગા

सेना, असज्जाना भिक्षु, वंयुव्यक, भूतनाशक आ नागानिक मुष्प पात
 छथी सुनयान कर्मात्ता यूडामाहा नरसिंहदेवक प्रशस्तानि कर्तव्य अछी सेन
 ज्योतिर्गोस्वामिक प्रशस्तानि होश अछी ऐमे एक प्रकारक एवम्पडि अछी
 जे नानि आधुनिक अछी आ ऐमे जे ओय छै से एकना लोकनाट्य वगै छै
 वसिष्ठनाम स्त्रीक अनावमे वनहमयानी छथी शिष्य सनातक संग भक्तिषाक
 हेतु मन्त्रांगान गुरुक घन पाश छथी तँ असौयक वहागा भेटे छन्हि
 वसिष्ठनाम शिष्य सनातक संग भक्तिषाक हेतु सुनप्राप्तिक घन पाश छथी
 सेन अंगसेना नामक वैश्याकें ७ गुण- शिष्यमे मानि वज्रपाश छन्हि गुण-
 शिष्य अंगसेनाक संग असज्जाना भिक्षु ७ पाश छथी, भिक्षुजो उपर
 छथी जे ज्ञाना प्रेमाएव आ संगम ईह दूटाकें संसारक सात बुद्धि छथी
 असज्जाना भिक्षु पुछै छथी जे के वादी आ के प्रतापिदी? सनातक उत्तर
 दै छथी- अग्नियोग कहवाक छै हम वादी थिकौ आ शुद्ध देवाक हेतु संग्रहासी
 प्रतापिदी थिकिहा वसिष्ठनाम अपन शुद्धमे सनातकक गाथाक पोटनी
 प्रस्तुत कर्तै छथी वद्विषक असज्जाना भिक्षुक कागमे अंगसेनाक यौगक
 प्रशंसा कर्तै अछी असज्जाना भिक्षु अंगसेनाकें वीर्यमे नापि दुनूक वदना
 अपना पक्षमे नानिह्य छै अछी एम्हनि वद्विषक अंगसेनाक कागमे कहै
 अछी- ई संग्रहासी दानि अछी, सनातक आवाता अछी आ ई भिक्षु मूढ
 तँ हमना संग नहू अंगसेना यातक दक्षि देयि वपौछ- ई तँ असठे
 युनसमागम नऽ गेठ वसिष्ठनाम सनातकक संग पुनः सुनप्राप्तिक घन
 दक्षिपाश छथी एम्हनि भूतनाशक गौआ अंगसेनासँ साठ नानिक कर्मैगी मंगैए
 ओ हुनका असज्जाना भिक्षु ७ पाशै अछी भूतनाशक असज्जाना
 भिक्षुकें अंगसेनाक वन बुद्धि अछी गाथा शुद्धमे ७ असज्जाना भिक्षुकें
 गानाक नऽ वाग्विनेगा भाषि कर्तै अछी जे ओ वेहेश नऽ पाश छथी ओ
 हुनका मुश्त बुद्धि कऽ नागि पाश अछी वद्विषक अवै अछी आ हुनका वंय
 पौषै अछी आ पुछै अछी जे हम अहाँक प्रामाण्य कए अछी आ जे कछु
 आन प्राप्ति काय हुअ तँ से कहू असज्जाना कहैए जे छठसँ संप्राम देशकें

प्यएवै, यूनातवत्तासि ई पुन्या पाओ, सेहे अहाँ सग आजाकागी शपिय
पओक, ऐसँ पुन्या आव कछु नै अछि, तथापि सत्त्वान सुपसांगिहुअ
तकन कामना कनै छी।

ओना ज्योगिनिस्वन् सग हमहूँ अपन महसिवाग वनाहममक गाम कथामे ऐ
गनिउज्जाक युन्या केने छी- " काम पुछवन्हतिँ ओ सग काम कहणी
जे ई सग गनिउज्जा होइए आ से ऐ कामसँ जे जन्मेपन एका सगक पाछु मे
थक दऽ देउ जाइ छै, जइसँ कथक ठाज कोनो जगामे नै होतै। "

२

तीनटा द्वांस जइमे पहिउ वेन एकटा महिवा द्वांस

साहित्य अकादेमीक मैथिली वंशज द्वांस तीनटा द्वांसायान्यक गयिकृतिमे
एकउत्पन्नक औग कटवाक छै। तीनटा द्वांसमे वंशज शहिंसमे पहिउ वेन
एकटा महिवा द्वांस सेहे गयिकृति मेथि ऐ घासाति काय सम्पन्न कनवाक
छै। ई तीन गोटे तहिज जेठक जठ्ठाद सग अपन काय पूना गणिगसँ
सम्पन्न केठनि जठ्ठादक कोनो दोष नै, ओकना तँ श्वाँसी देवा छै पाइ दै
छै सकना। दोष अछि द्वांस सग आ ओर साहित्य अकादेमीक मैथिली
पनामशदाता समितिक जका गयिकृति कनै अछि साग टा कथति छिटनेनी
एसोशियसग। अवधिमे ऐ सागो छिटनेनी एसोशियसगक माग्यना न्ह कए
जाय आ अंग्रेजी सग, जइमे कोनो छिटनेनी एसोशियसग नै छै मुदा ओकन
काज नीक जाँ यथै छै, ई काज कय।

आ अहाँकेँ रूखा नै अछि जे ई द्वांस सग के छथि आ एकउत्पन्न के छथि?

द्वांस- उ० देवकाग हा, उ० मन्त्रेश्वर हा आ उ० शेषाधिक वन्मा।

एकउत्पन्न- गाणदेव माउठ।

દુનોમ સઠ કલ્પા ખો નાખદેવ મામ્ડઉક પોથી તું હુનકા સઠ ઇગ એવે ગે કેઇર્ગી
તું ઓ સઠ દોખી કેગા? રીતીગુ દુનોમ ડસિમ્ડ ગોટ દડ સકૈ છલા, મગા કડ
સકૈ છલા. આ રીતીગુ પુતીક છર્થા સમ્પૂત્તમ સાહિત્ય અકાદેમીક મૈથાઈ
વ્રજાગક તૈ. આ વ્રસિન □ ન અત્તન દેઇ ખાપ્ત વ્રદિહક આવેવઇ સાહિત્યક
શૂષ્ટાયાન વ્રસિષાંક મે।

વ્રદિહ "સાહિત્યક શૂષ્ટાયાન વ્રસિષાંક" છેઇ ગમિનઇપ્પિતિ વ્રષિયપન ઓપ્પ
ર-મેઇ દતિનાઈસનાડડવ્રદિહગામાઈયોમ પન આમંત્તનિ અછાઈ

૧ સાહિત્ય, કઇ આ સત્કાતી અકાદેમી:-

(ક) પુનસ્કાતક નાખગીર્તિ

(ખ) સત્કાતી અકાદેમીમે પૈસવાક ગાન- ઓકાંત્તનકિ વ્રધાગ

(ગ) સત્તાગુટ આ અકાદેમી કેન કાખ કનવાક તીકા

(ઘ) સત્કાતી સત્તાક છદ્મ વ્રતીયમે ઉપજઇ તાત્કાલકિ સમાગાંતન
સત્તાક કાત્યપદ્યર્તિ

(ડ) અકાદેમી પુનસ્કાતમે પાર શ્લેક્ટન: મથિક વા પ્રથાન્ય

૨ વ્રયક્તગિત સાહિત્ય સંસ્થાન આ પુનસ્કાતક નાખગીર્તિ

૩ પુનકાશન ખગતમે પસનઇ શૂષ્ટાયાન આ ઓપ્પક

૪ મૈથાઈક છદ્મ ઓપ્પક સંગડન આ ઓકન પદાયકીતી સવહક આયનામ

૫ સ્કૂઇ-ક □ ઓપ્પક મૈથાઈ વ્રજાગમે પસનઇ સાહિત્યકિ શૂષ્ટાયાનક
વ્રવિયિ નૂપ-

(ક) પાર્શ્વક્રમ

(ખ) અધ્યયન-અધ્યાપન

(ગ) ગણિકર્તિ

૬ સાહિત્યકિ પત્તકાતિતિ, નિવિયૂ, મંચ-માઇ-મારક આ ઓકાંત્તપમક ખેઇ-
તમાશા

૭ ઓપ્પક સવહક ખગ્મ-મનામ સત્તાવદી કેન યુગાવ , કેઇડનવાદ આ તકના
પાછૂક નાખગીર્તિ

૮ દઇતિ એવં ઓપ્પકિ સવહક સંગે મેદ-જાવ આ ઓકન શોષમક વ્રવિયિ તીકા

દં કોનો આગ વધિયા.

- ગાળેન્દ્ર ૧ ઠાકુર, સમ્પાદક વાદિહ, પૌરાણસાપ્ત ગો
+ ૮૧૮૫૬૦૮૬૦ ૭૨૧ હથથશ્વ. વસ્યપરશ્વશ્રીસમ્પાદક ૨૨૨૮- ૫૪ ૭૨
વસ્યપરશ્વ

૩

આવ અહાં પુછવ જો તકન પૂનતકાન સમાગાનના યાના કેના કેઠક, શ્રો તં
કળાનોહટ બે કૌત, તં તકન અના અઘાહમન ૩ ટા પોથી જો ૧૧૧મ સગા
નાતિદીપ જાપ મે ઓકાનપતિ મેઠ ૩૧ દસિમ્વન ૨૦૨૨ કૈ, વાહ સગા નાતિ
દીપ જાપ જાકના સાહિત્ય અકાદેમી ગા દસ વન્યસં ગોડિ ઓવાક પૂનયાસ
કડ ૧૬૭ અઘા અહાંસં એ તોનૂ પોથીપન ટપિપામી ૬- પૂન
સડકેતે દતિનાતિસગાડડવદિહાગામિયોમ પન આમંતનતિ અઘા પહિદ દૂ
પોથી મે નાનદેવ મમ્પડઠ આ સુમાપ યન્દ્ર પ્રાદવક સાહિત્યક સમીક્ષા અઘા
જો હમન તેસન પોથી મૈથાથી સમીક્ષાસાસનાક સદિયાંતક આચાનપન કણ
જેઠ અઘા

તોનૂ પોથીક ઓકિ ગીયાં દેઠ જેઠ અઘા

ઢાળદો માગદાઠ- માતિહિતિ શ્રીનતિન (મોૌૌતિહ પુપપઠેમેગા ૨ & ૩૨)
ગતિ ગવઠ સુમાપ યન્દ્ર પ્રાદવ ગતિ ગવઠ સુમાપ યન્દ્ર પ્રાદવ
(મથિતિક્ષપન)
મૈથાથી સમીક્ષાસાસના મૈથાથી સમીક્ષાસાસના (નિહુના)

૪

આનાઠેઠ ડતિનાતુને નિ માતિહિતિ નિદ વદિહ માતિહિતિ ડતિનાતુને મોવેમેગા

નળદ વ્રધિસ નાયક યાનટિ કથા આ એકટા એકાંકીપત હમન ટપિપમી

હુન પહેના સતોર્ગેસિ નદ ઓગે અયા શુભાપ વપ માનદ વ્રધિસ હોપ

થે ડેઠઠોનિગ ડુન સહેના સતોર્ગેસિ નદ ભે ઓગે- અયા શુભાપ હોવે વેન
દાનુદગેદ ઇસ હસિ વેસન વપ તહેનાહેના માનદ વ્રધિસ હોપ

૧. હુન પહેના પતોર્ગેસિ- અ યોયતોન પોન (યોયતોન મેના), થે ઔદેન
છપ્પયથે (પાતહિછપ્પયથે), થે જુનદેન (જહાન), નદ હોગસ શાન (હોગસ
શાન)

૨. ઓગે- અયા શુભાપ- થે હેનોન (શાતિ)

ઔથયોમે તો તહે સયતિનિગોનૌદોડ પાનાથેથે થતિનાતુને

માનદ વ્રધિસ હોપ 'શપઠાનિસ તહે નિતનિયાર્યોસિ ડોડ તહે મોદેન
માતેનાથિસિતિયોનૌદ નિ હસિ સહેના સતોનપ' અ યોયતોન પોન, 'તેને તહે
સોન સિ સો વુસપ મનિતનિગ મોગેપ તહાન હે ડોનગોતસ તો વેન યાથે હસિ
થિનિગ મોતહેન થે ડાતહેન, તે સપેનતે વેનપાતનિગ તો દુયાતે હસિ સોન,
હાસ વેન નોન વથે તો યોનનાયન હસિ સોને વેન તેથેપહેનિયાથેથે થે દુગહોન
ભે તહેતહેન હાનદ ડુઠઠિસ હેન નેસપોનસવિથિતિપ

૩. 'થે ઔદેન છપ્પયથે' સિ તહે સતોનપોડ હિયાથાથ નદ હસિ મિમેનસે
ડાતિહ નિ દુયાતીન થહેગહોને મેનેનાતીન ડાથિસ (નિયાથેથે હસિ વનોતહેન
ગોતસ તહે વેનેડાતિ, વુન હે વેયોમેસોવેનાગો) તો ગોત તહે વેનેડાતિસ પેત હે દોસ
નોત દતિહેન ડોમ હસિ વેથેડ નદ ડાનાથેથે સુયથેદસ થે ઔદેન છપ્પયથે
સિ તહે સપ્પમવોથોડ હસિ વેથેડ

૪. 'થે જુનદેન' હે સપોસેસ તહે હપ્પોયનસિપોડ હસિ સોયતિપૌહયિહ સિ
હસિ નોન નદ દોનભે વસિ-૧- વસિૌદોસ' ને- માનનાગિ, પેત હે ડનિદસ.

ગોપ

જન ' હોનસ શ્વાન' તહે નેસુભાડોપામિમુ સોડ ઇનદ ડોન યોમમેનયાઈ
ગાનિયુભુને હાસ વેને મપહાસસિદ ઇભગગૌતિહ તહે નિતનયિયોસોડ સોયાઈ
નેભાગૌનસહપિસ

હસિ શ્રોમે- શ્રયાત શ્વપ્પ- ' થહે હેનુન' સિૌનતિતેગ ડોન તહેાતને ૭દ તહાત
સિૌ વ્રદિનત ડોન તહે વેગનિનિગ, ગૌતિહ તહે નિતનોદ્યુયગૌન ડો તહે
૭તસિતસ ઇભગગૌતિહ । વ્રદિદિ દેસયનપિતૌન ડો તહેનિ યભેતહેસ, ૭દ
વુડડાભે ગાપેનસ પભાપનિગ યાનદસૌહિષે તહે વુડડાભેસ ૭ે ગાપનિગ જા
સહૌસ તહે પનેડેનયે ડોન યભેતહેસ ૭યોસસ ગેનેનાતૌનસ થહે પભા
વેગનિસૌતિહ તહે નાનપ્રોડ હુદાન, નિ તહે તમિડ છોનોગ થહે ગાપેનસ
નિડોનમ હમિડ । માનગિયે યેમેનગપ્ર સયહેદેદોગ તહાત વેનપ દાપ્રોડ હસિ
૭નવિષે થહે દેમેનેતસિતૌન ડો યુનનેગયપ્ર છે તો સોમે યોમપઈયાતૌનસ
હૌવેન, તહે દેડુભેન પાનપ્ર ભાતેન નેપેનેદ થહેને- ૭ત પભાપ્ર યોનસસિતસ
ડો સસિ સયેનેસ, તહે દાિથેગેસ ૭ે યનસિપ, ૭દ તહે સયેનેસ
૭ે ૭સિથે નાયનાવે જા ગવેસ । સોયાઈ મેસસાગે તૌ

- ઘાપેનદના થહાકુન, દિતિન, વ્રદિહ (મે પાનડો વ્રદિહ ૧૧૧૧૧૧૧૧૧૧ -
સેનદ યુન શ્રૌહાતસશ્રપપ નો તો +૮૧૮૫૬૦૮૬૦૭૨૧ સો તહાત નિ યાન વે
૭દેદ તો તહે વ્રદિહ શ્રૌહાતસશ્રપપ નોદયાસાત ઇસિત)

શ્રપન મંત્રપ્રે દિતિનૌઈસાડડવ્રદિહૌગામાઈયોમ પન પડાડ

१२ अंक ३६०५१ टपिपामी

अंक ३६० ५१ टपिपामी

उदय गानायाम सहि 'नयकिता'

अहाँक ऊना ईप्सा केन कामस नऽ सकैये करोको ओगक छै।

कठपना हा, पटना

आशीष अनयनिहान जो द्वाता मैथिलीक मूठ समस्य पन अपिठ ओष्य, एकटा गीक, सायक यन्या करैत ओष्य ओग। सत्ये, ई ओष्य मैथिलीक मूठ समस्य दसि रंगति करैत तँ ई हनेक समयमे पुनासंगिकि अछि। भाषा केन मनोवर्जिमान गोग्र मे वहुत श्रुति अछि। ओषिठनि अछि-"जोगा-जोगा वनाम्हस-कायस्य ओ छोट जानकि भाषाक वीय अंग पान होश गेथै वनाम्हसवादी सग ओकना मैथिली मानवासँ असुवीकान कऽ देउक। ऐकट्टन वनाम्हसवादी सगहँक गजनि ई छै जे भाषाक मेदसँ वनाम्हस वा छोट जाननि मेद छै। आहुक समयमे अंगिकि ओ वज्जिकि भाषाक पान वनाम्हसवादक एहि पुनवर्तिसँ मेथ अछि। " आगाँ भाषा केन मनोवर्जिमान गोग्र मे स्पष्ट केठनि अछि, जे वनाम्हसवादक संवय मात्र वनाम्हस जानिसँ नहि छैक। ई मात्र मानसकिता छैक, जे कोनो जाननि न' सकै। वनाम्हसवादक उक्षम सगपन सेहो यन्या केठनि अछि। केकनो आगू नै वढऽ देव, मात्र अपनो टाकै गीक वुहव, पनविानवाद, वनाम्हसवादक मुप्य उक्षम अछि, जेकन कामस आपसी द्वेष अछि। एहन वषिय पन ओष्य कम अपिठ अछि, तँ वषिय ओग।

आयात्प्र नामागंढ मंउठ जीक १यना "साम१थ के दुप्प गारिगोसाई" गीक अर्छा मुदा सगंठम "मे" केँ "मे" छपिठ देप्पछुँ। ई अशुद्धि पढ़वाक श्रुते मे वाचक बुहाएठ। हमना बूहठ अर्छा मैथिली छपिठ काठ "मे" अशुस्त्रा१क पु१योग गहि होइत छैक।

गति गवठ सुग्राष यग्ह१ प्रादव- सुग्राष यग्ह१ प्रादवक समस्त्र साहित्य आ ओइप१ गजोह१ गकु१क टिप्पसी पढ़ैत गीयक ठागठ। सुग्राष यग्ह१ प्रादव जीक जीव१-प्रा१ना आ हुक१ छेप्पनी सँ संवंधति जनगव सग भेटैत छै, एहि सीरीज केँ पढ़ैत सँ।

समग्र१ रूप सँ गीक अंक ठागठ, जक१ना पढ़ि कछि नव जनगव सेहे भेटठ। मात्र१ ए०१टेगभेट वा टाइमपास वठ सामग्रि१ गहि गि१ठ नहैत अर्छा, वद्विहक अंक मे, से वद्विहक वडका वशिषता। एह छिठ वद्विह टीम साधुवादक पा१न छथी।

पुनसंगन ह, देहनाहूग

अवा१ना गहतिग नामामु०उठमे एगोटीक स्ट०उसँ ठेगे नहि, एक्के गिसाँसमे पढ़िगिठ नहि। वद्विहक केदा१ नाथ यौधनी वशिषांक पु१ापु१ भेट, हम ठगु१ति छी जे कएि वी१मे वद्विहक संप१कसँ कछि दनि ठेठ हू१ मऽ गेठ नहि।

कुसाठ

ऐमे आव कोनो संदेह नै जे वद्विह मथिछि महिनि वगि१ठ अर्छा।

पुनश्चेस१ उषा यौधनी

गकु१ जी, अपनेक ई वद्विह वेजोड़ प११कि थकि। एहमे मैथिली साहित्यक संव१धनमे अगु१नीय योगदान देवाक साम१त्य थकि। जय मां मैथिली।

अपन मंग१प्रे दति१गिठिसगा०उ०वद्विहवामाठि१यम प१ पडाउ।

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ

ରଂଗେୟ ଗବେଷଣା ସଂଗ୍ରହ ଯନ୍ତ୍ରଣା ପ୍ରାୟ- ଗା- ୧- ୩ (ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଶାଳା)

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ଗାନ୍ଧୀଜୀ ମଂଡଳ- ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଗାନ୍ଧୀଜୀ

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ଗାନ୍ଧୀଜୀ ମଂଡଳ- ଗାନ୍ଧୀଜୀ

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ପ୍ରାୟ- ଗାନ୍ଧୀଜୀ

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ କୁମାର ଧ୍ୟାୟ ' ଗାନ୍ଧୀଜୀ ' - ଗାନ୍ଧୀଜୀ ' ଗାନ୍ଧୀଜୀ ' ଗାନ୍ଧୀଜୀ

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ପ୍ରାୟ- ଗାନ୍ଧୀଜୀ

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ପ୍ରାୟ- ଗାନ୍ଧୀଜୀ (ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଗାନ୍ଧୀଜୀ)

ରଂଗେୟ ଧ୍ୟାୟ ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଗାନ୍ଧୀଜୀ - ଗାନ୍ଧୀଜୀ (ଗାନ୍ଧୀଜୀ) - ଗାନ୍ଧୀଜୀ

रूढंगनिमिषा कृत्स्न- अंगुलिशिष्या (भाग- १२)

रूढंगनूद व्रधिस नायक ४ टा कथा- कथा- १ ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंगुलिशिष्या सम्पादकीय पृष्ठ पन

रूढंगनूद व्रधिस नायक ४ टा कथा- कथा- २ ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंगुलिशिष्या सम्पादकीय पृष्ठ पन

रूढंगनूद व्रधिस नायक ४ टा कथा- कथा- ३ ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंगुलिशिष्या सम्पादकीय पृष्ठ पन

रूढंगनूद व्रधिस नायक ४ टा कथा- कथा- ४ ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंगुलिशिष्या सम्पादकीय पृष्ठ पन

रूढंगनूद व्रधिस नायक १ टा एकांकी- ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंगुलिशिष्या सम्पादकीय पृष्ठ पन

रूढंगकुमान मंगोण कक्षप- १ टा उद्युक्था- अपन- अपन संसा

रूढंगवृषेश यन्त्र ७- कथा- डीप डिपिेशन

रूढंग पुनमसंक ६- उद्युक्था- नाकक गकवे

रूग्णति नव्वठ सुग्गाप यग्द्द- प्रादव- भाग- १- ३ (गणेश्च १०००)

नति नव्वठ सुग्गाप यग्द्द- प्रादव- भाग- १- ३

यो नोत्त पुद्गो यद्द दाय वय नहे हानवेसा यो नोत्त वुत्त वय नहे सेदस नहान यो
पव्वन- दवेत्त द्दुत्त पव्वेत्तसोत्त

वद्विहः भातिहवि डिन्तिनात्त नोत्तमेत्त

नति नव्वठ सुग्गाप यग्द्द- प्रादव

[नान्त्तस व्द- मैथिलिक समागान्त्त यानात्त वेत्त- सुग्गाप यग्द्द-
प्रादवत्त समत्त साहत्त]

सुग्गापयग्द्द- प्रादव (१८४८-), नान्त्त ०५ नान्त्त १८४८, नान्त्त
दीवान्त्त, सुपौत्त पैत्त सथात्त: वत्त-मेत्त, सुपौत्त

મૂઠ મૈથિલી છેવળ પહોંચી યામ: ઘનદેવિણી (૧૮૮૩)

મૂઠ મૈથિલી છેવળ દોસન યામ: વગેળ વગિડેળ (વિદેહ ૬-પત્રાકામે ૨૦૦૮ સં ૨૦૦૮ યતિ છેવળ પુસ્તકાકામ ૨૦૦૮ મે), ગુલો (મથિલિ દર્શનમે પુસ્તકાકામ, ૨૦૧૪, છેવળ પુસ્તકાકામ ૨૦૧૫ મે), નમાળા ખોગી (૨૦૧૮), મડન (૨૦૨૧), નાખકમઠ યૌવની મોનોગ્રાફી (ખગવની ૧૮૮૭ મે સાહિત્ય અકાદેમી દ્વારા નાખકટ, નયના પત્રાકામે દસિમવન ૨૦૦૫- માન્ય ૨૦૦૬ અંકમે આ પુસ્તકાકામ ૨૦૨૨ મે "ગાંધી ગવઠ નાખકમઠ" નામસં), મોટ (૨૦૨૨)

"ખે સુનવૈપ ખસિસા સે નાખ કૈપ એ સંસાનપન"- હોપી અમેરિકી કવિભાક ભેકોક્તા

આ સુમાપ યજ્ઞ દાદવ ખસિસા સુનેગાર છોડી દેઇગ્હા

"સવપનસુનદની સમડ દ મૈખાકિઠ વડસ આંશ મથિલિ" (ગીતા યત્રમાખાન, કથા, ૧૮૮૬)

મથિલિક ટુનમુગિયા નાખકુમાની સવપનસુનદનીકેં ગાવૈવલા યાડે સમ વડડ પસગિન છલે મુદા ઓ માછ, વકડી આ ગાપ સમકેં સેહે યાડે વના દૈળ છલો પના નાખકુમાનીકેં ઉપનાગ દેઇક, નાખકુમાની નૂસા ગેલો આ યાડે વગેગાર વગ્ગ કઠ દેઇગાં ઓ મહઇસં વાહનો ને અવૈ છલો ખાદૂવલા દેસ મથિલિસં ખે વાંચઇ યાડે છઇ સેહે નપિના નઠ ગેઇ ખનીખાનાખોમે અપ્પનો ગવૈળ

छवि, मुदा वनि १७ वनिउक यडिँक ई मथिषि आव ओ मथिषि नै ठगौ छ छ
 आ छेन आधुन गाछक पैकान सग, वनि यडिँ गाछक कोन काण, ई गप छेक
 सगकेँ वृद्ध, उक किउ ओ सग मथिषिक सगटा गाछकेँ काट किउ छ गेठ
 पनीपाना सग, सगटा पुगाना गिडिँगाना जे कहि गाछ वया जाय, मुदा से
 न नै सक छ वनि गाछक सगटा यान सुप्या गेठ वनि गाछक छेक सग होश
 गेठ गनीव आ पैकान सग होश गेठ वनीक पनीपाना सग गेठिह नापकुमानी
 छ, कहौ, कहौ जे नापकुमानी, मदाना कू, हम सग गछा छवौ
 स्वप्नसुगदनी वैस छवि अपन कोठिमे, पाठ यानाका देवाउपन छ १७
 वनिउक यडिँ सगक यानि ओर यडिँक यानि सगकेँ देखै मथिषिक
 नापकुमानी स्वप्नसुगदनी उदास न वगछि नै, अहि सग गिक छवौ पाछि
 यडिँ हमना सगकेँ पुनसगन नै नापसिकैस मुदा पनीपाना सग वगछि वनि
 यडिँ सेहो हम सग पुनसगन नै नह सकव, ओ यडिँ सग घुना क आगदिअ
 नापकुमानी मुदा नापकुमानी गोक उदास छवि जे ओ पाहू नै क सकछि
 नपन पनी-पाना सग कहउगहि याना नै, हम सग गाछ नोपव आ
 गावैवछा यडिँ सग घुना आओन आ ऐवेन ककनो वेशमानी सेहो हमना सग नै
 कर देवै आ वगह सग पट छगछ समूपना मथिषि ककनो कोनो पछपाना
 नै, आ ओ सग गाव कि नयाकि नोप छगछ आ पटक छगछ गाछ आ
 गाछ जेना-जेना वड छगछ आ यकगान होश गेठ सग हंस छगछ, आ
 थोपड़ी पाठ छगछ संग मथिषि काण केसाँ हुनका सगकेँ पुशी होश आ
 ऐ सँ गाछो सग नीकसँ आ पठेदीसँ वड छगछ आ स्वप्नसुगदनीक देश
 मथिषिमे छोट-पैछ गाछ सग मुसकी देन छगछ यान काण पाहूवछ संगीन
 यान दसि पसनागेठ छ १७क, जेमक १७क, अकासी, पीअ, गुठवी
 आ पनसोप्या सग साग १७क यडिँ सगक डेना वगन ई नापकुमानी कहउग
 पनीपाना सगसँ हमन देशक वयापिसग पाठशाठ पाना, ई हमन सग दनि
 सँ सपना अछा पनीपाना सग वगछि हँ नापकुमानी, जँ हम सग पढ़
 छपिठ नहगौ न कोनो पैकान हमना सगकेँ उक नै सकगिय मुदा आधुन एकटा

हमेव जनीजानामि सँ कहि कहि मुदा नयन धनक काण के काना?

नयन मथिषिक नाजकुमानी आदेश देवनि वाचक सग वाचकिक काण सीप्या
आ वाचिक सग वाचकक काण मथिषि पुठि कऽ आगाँ वढ़ैमे सगकें नीक
ठागाना आ स्वप्न सुन्दनी सग पढ़ैवाची वाचकिकें देवनि एकटा सारकसि
स्वप्न सुन्दनी वृद्धेयनिह संसार गनमि ओ सग पुनस्रग छथि ओ एक
गमसँ दोसर गम जउदी पहुँचि जाइ छथि कानाम नसँ ओ सग सगटा काण
जउदी-जउदी पूना कऽ छै छथि जनीजाना सग पुछवनि की हम सग
सारकसि नै यथि सकै छी? नाजकुमानी कहवनि कहि नै? महिषिकें ओ सग
काण कनवाक याहि ओ ओकना नीक छै छै कहि गोटे नाजकुमानीसँ
पुछवनि मुदा टाका कऽ सँ आओ? मुदा सग ओकना दवाड़िदिक सगटा
काण नाजकुमानी कनवा? आ ओउक सग एकटा वडका मेवा पाइ जमा
मेव आ वगव नाजकुमानी स्वप्नसुन्दनीक पाइशावा पाइशावा कनैए
जाइ ओर वय्या सग जा कऽ वग जाइ अछि ओना होथि नउ वनिउक
याडि। अहँ कहि नै अवे छी पाइशावा नाजकुमानी? नाजकुमानी एक दनि
पाइशावा एवी, दोसर दनि एवी आ सग दनि आवय जगि। आ छेन ओ कहवनि
ओ वय्या सगक माय वाव सेहो आवय पाइशावा आ छेन नाजकुमानी छेनसँ
कऽ जगि जाइ मुद एवेन ओ प्यारी वेकान यीन सगकें वगव जगि याडि
आ वृह नस कएक नउक पाँपविवा याडि सग सेहो धुनि आयत अछि
मथिषिमे, वनि जाइ कयने सग अपना ओउमे एक-एक हजान पोथी छेने,
उज्जस आनैववा पोथी सग, वाव, गुठिवा आ अकासी नउक वाव, जामक
नउक, पीअन, गुठिवा आ पनसोप्या सग साग नउक, कानाम नेक सथाग
ऊ छेक अछि हनियन कयो गाय सग आ याडि सग गाव नहव अछि वनि
जमान सुन्दनीन अछि सुप्पायत यान सग आ ओर टुगमनयि नाजकुमानीक
मथिषि वनि ओउ वसिवक सगसँ वेशी हनियन आ पुनस्रगि देश ओक सग
नँ ईहो कहै छथि अहि याडि सगक कानाम मथिषिक हवामे नहै अछि जाइ

સદપિંગ આ પાં ફલિયો હમનો સમર્થ મેટા પાપ લકટા લેન સ્થાન, પાપ
મહિ આ પુત્ર સોય સિંકથા પેઘ પેઘ ગપા! ફ પાદવ સ્થાન હમના સમર્થ
ભો પાસમે તાં મે? ફ સ્થાન પાપ પાદવ વૌસુ સમ અર્થા હમને સમ
સાયામ ભોક્ક મારિને તાં મે અર્થા? પાં અર્થાં મેટપ ફ સ્થાન, પાપ કાંઈ, તાં
સૂચાતિ કૂન હમના હમના ફ પાપ
સપ્તમે દિગિનાઈસનાડવદિલ્લામાઈયોમ પા

સુગાપ યન્દુ પાદવ પ્સિસા સુગેનાર છોડિ દેઈર્હા

મુદા ઓ ૧૮૮૩ સં અડધ ૧૬૦૬ અસગે, આરક તથાકથાતિ ગમિંગ વનગક
કછુ ઇપ્પક સમ સેહે મૈથાઈક આઠાસી વનગીક સડા યઈગિભા આ છોડિ
દેઈપ્પિર્હ અસગા હુગકા, ઓ સમ ગૈસઈરટગિક સિકાન મડગેભા પૈકાન સમ
યાતુકાન સહસર કાડ ભાગા ઓર ટુનમુગિયા નાપકુમાની સમ ઓ દેપ્પેન
૧૬૦૬

મુદા ૦૧૦૧૨૦૦૮ સં ૮ સાઈક તૈપ્રાનીક વાદ વ્રદિર્હ- મૈથાઈ ફ- પાપાકિ ગાઘ
ગોપવ શુન કેઈક, મથિથિમે, પક્ષ- દન- પક્ષ, આ ઘુનિક આવપ ભાગ
૧૭- વનિઈક યાઈ સમ

ગયકિના રપ વનપ્પક મૌનગંગક વાદ વ્રદિર્હ પાક્ષકિ ફ- પાપાકિ મે ગો
સમટની: ના પાપાશિ પાપાશિ કાપ ભાગા આ ઓહી વનપ્પ રપ વનપ્પક વાદ
સુગાપ યન્દુ પાદવ વ્રદિર્હ પાઈકર્થ પ્સિસા સુગવપ ભાગા પક્ષ- દન-
પક્ષા સુગાપ યન્દુ પાદવક ઘનદેપ્પિયા આપ ૧૮૮૩ મે આ રપ વનપ્પક વાદ
"વૈન વગિડા" ૨૦૦૮- ૦૮ મે વ્રદિર્હમે ફ- પાપાશિ મેઈક વાદ ૨૦૦૮
મે પાપિટમે સેહે આવાગિભા

"જો સુગામી પિંડિયા સપ્ત નાળ કાળ એ સંસારપત્ર" આ સમાગમના યાત્રા સુગા ૧૬૭ અર્થ પિંડિયા મથિલક કલ્પ નાળાક પાંચવિધ યાદે સગ ઘુની આપઠ જોના સગદીપ કુમાર સાશ્વિ, ઉમેશ પાસવાળ, વેચન ગકુન, કપડિશ્વર નાગ, ઉમેશ મામ્ડર, નામ વધિસ સાહુ, નાળદેવ મામ્ડર, ગન્દ વધિસ નામ, નાગદીશ પુનસાદ મામ્ડર, દુનગાનન્દ મામ્ડર, આયાત્ર નામાનન્દ મામ્ડર, ઇશન કુમાર કામળ, નાનાપામ પ્રાદવ, મુગ્ની કામળ, શવિ કુમાર પુનસાદ, ધોનેન્દ્ર કુમાર, નામદેવ પુનસાદ મામ્ડર "હાનુદાન" પણ નાળ વનિલક કથા આ ગીતક સહ.

ઘુની આપઠ અર્થ સગ અપના ઇશમે દક-દક હજાન પોથી ઇને, ઉવ્વાસ આગેવધા પોથી સગ, ઇશ, ગુલાવી, જોમક, પગસીપ્પાક સાળ નાળક આ અકાસી નાળક કાનમ જોક સ્થાન ઇશ ઇશ અર્થ હનિયન કયોન ગાલ સગ.

આ સુગામ યન્દ્ર પ્રાદવ પિંડિયા સુગેનાર શેનસં શુન કડ દેઇન્દ્રા

વગેળ વગિડેલક વાદ આપઠ નમળા જોગી, ગુલો, મડન, મોટા સાહિત્ય અકાદેમી દ્વાન નાળિક્ક કલ્પ નાળકમઇ યૌચની મોનોગ્નાશ્ચ આપઠ "નતિ નવઇ નાળકમઇ" નામસં આ ને સુગામ યન્દ્ર પ્રાદવ ઇર્થા "નતિ નવઇ સુગામ યન્દ્ર પ્રાદવ".

મૈથિલી સ્તોત્રી સારંસ (મૈથિલી કથાશાસ્ત્ર) આ સુગામ યન્દ્ર પ્રાદવ

મશિઇ શ્લોકો (દ્વિયાધા) ક "અનુશાસન સંસ્થા" વા મનોવૈજ્ઞાનિક વાન્ટન આ હ્વાસ્તહેડક "જૈસઇસ્ટગિ" દુનૂક ઇક્ષ્પ દકે છે મશિઇ શ્લોકો ક "અનુ શાસન સંસ્થા" અર્થ, સોહાવધાકે અનુશાસનમે આનૂ આ નર ઇશ સગકે આપ સેમે ઇડાડ, કઠિઉકે પુનસ્ક કૂ આ જો અનુશાસનમે ને અવેન નકના આ

सूतो-

आसूतो माहुन दियौ गैसठाइगिमे सोहँवठा केँ वसिवास दआओठ जाइअ अ
छाँजे अहाँ जे यथास्थितिकि वगोय कऽ नहथ छी से कोनो वगोय नै, ई तँ स
न कऽ नहथ अछि, अहाँ तँ वगोयक नामपन वगोय कऽ नहथ छी आ से अपन
कमी गुकेवा ठेठ। ऐमे समाजमे वगोयमाग आचारमाग कमीक सहप्रता सेहो ठेठ
जाइअ अछि, आ आसूतो-

आसूतो टागोट वगाह नऽ जाइअ अछिवा पठाप्रन कऽ जाइअ अछि।

से सुभाष यन्त्र पादवक नाइतस-
वृँक सामाग्य नाइतस वृँक नै छथ, ई छथ "गैसठाइगि"।

मुदा एकन प्रताकिनमे अवैत अछि सूतोनी साइंस, कोन कथा सुनेछासँ ठेक
आ समाजपन की असन पड़त, ई ओइ आचारपन पूर्व-
वसिषेयस कतैत अछि से समागान्ता याना माहुनकेँ माहुनसँ काटवाक
गनिमय ठेठक। ओ मूठयानाक साहित्यिकान सन जे मागकीकनामक नामपन
माषाकेँ मनोडै छथ, ओ सूतोनी साइंसक संग गैसठाइगिक आचारपन काज
कऽ नहथ छथ। हुनकन उद्देश्य छथ वगोयक गनिगनाकेँ अशुद्धताक नाम
देवा नामदेव हा घनदेयपिआकेँ उक्थति कऽ ई सन ठपिठगहिजे, जे ठपिव से
वाजव असमयिमे अससुठ गेठ से मैथिलियोमे हएत।

आ सुभाषयन्त्र पादव असगन पड़िगेवाह।

मुदा जप्यन नामगद हा 'नाम' अहि सूतोनी-साइंसक प्रयोग वसिँदक
सठ केठगहि, आ तकन आठेकमे जगदीश प्रसाद नाम्ठेक श्विसंकन
श्रीगवासि द्वाजा वगोय-संशोधन कएथ कथा (जइथे ओ अशुद्धता दून
कनवा ठेठ गीन दनि मेहगति कएथ, अहि नामक अहसास सेहो
जोठगहि) उमेश नाम्ठेजो जप्यन हमना पठेठगहि तँ हमन काग डाढ़ नऽगेथ।

કાનામ સુગ્રામ યજ્ઞ પાદવક વર્ત્તનીક કથા વ્રદિહમે તાવત ૬- પુત્રકાશતિ
મેગાર સુનુ મઝ ગેઠ ઘઠા હમ ઉમેશ મામ્ડઠ ડી કે સ્તોત્રી- સાંસક મન્મ
વુદ્ધેયિગ્ધિ આ વર્તિ તથાકથાતિ સુદ્ય કર્ણ વર્ત્તનીવઠા નૂપ વ્રદિહમે ઘપવ સુનુ
મેઠ [દેખુ દુય-પાત્રી સુનાક-સુનાક (કથા એવં પામ્ડુઠપિ ડગદીશ પુત્રસાદ
મામ્ડઠ)- (છાપા એવં સમ્પાદન- ઉમેશ મામ્ડઠ)] ।

આ ઉમેશ મામ્ડઠ સૂચાતિ કેઠગ્ધિ ડે વર્ત્તની સુદ્યનાક વાદ ડગદીશ પુત્રસાદ
મામ્ડઠ ડી ગુમ ૧૬૭ ઠાગઠ ઘઠાહ, આ ડાહિયાસં ઓ સુગઠગ્ધિ ડે વર્ત્તનીક
સુદ્યના વઠા ૧૫ના વ્રદિહમે નાપિકટ મઝ ગેઠ ઘગ્ધિ આ હુગક૧ અસઠી
વર્ત્તનીવઠા વર્ત્તસગ આવ ૬- પુત્રકાશતિ હેગ્ધિ તાહિયાસં હુગકામે ગવ ડાસાહ
આવાગેઠ ઘગ્ધિ

સે ૧ ઉમેશ મામ્ડઠ ડીક ગપ સુગ્રામ યજ્ઞ પાદવસં મેઠગ્ધિ, ડં સુગ્રામ
યજ્ઞ પાદવ ડી સૂચાતિ કેઠગ્ધિ ડે મૂઠયાના વઠા સઠ કછિ ઠપિ
દિપ્તિ, સુગવે ગે ક૧૧ કાગે-વાત ગે દેના નાખમોહન હા માર સાહેવપ૧ સેહે
વડ્ડ વસિવાસ કેગે ૧૬૫૧ " ડં તક૧ ડપાય?" " ડપાય વાહ ડે અહાં સઠ
કઝ ૧૬૭ ઘી, માગે ઠેપ્પક વઢાઝ "

આ સ્તોત્રી સાંસ સેહે સપ્હ કહે, ડે કથા સુગ્રામ સે ક૧૧ નાખ, આ ડે
ખાતે કથા સુગ્રામ સે તાતે આગાં વઢના આ અસગ૧ વૃહસ્પતિયો દૂઝ મુદા
એવે દોસ૧ યામામે સુગ્રામ યજ્ઞ પાદવ અસગ૧ ગે ૧૬૫૧

આ સમાગાત૧ યાના કથા સુગ૧ ૧૬૭ અઘ્ધિપ સાઠસં આ મૂઠયાના સુગ૧ ૧૬૭
અઘ્ધિ

ખપ્પન

કા

મસિઠ શ્લોક સઠા ડસિપ્ઠિની રંસ્ટીટપૂસગ " અગુશાસગ સંસ્થા " ડેના
સાહિત્ય અકાદેમી, મૈથિલિ અકાદેમી, મૈથિલિ મોખપુની અકાદેમી, આ

સાહિત્ય અકાદેમી દ્વારા માન્યતા પ્રાપ્ત કથા ઇટેનેની અસોસિયેશન સમ મૂઠ યાના ઇગ છે.

મુદા

મશિઇ શ્લોક સમટા ડિસીપ્લિનરી ઇન્સ્ટીટ્યૂશન આ મૂઠયાનાક ગૈસવાઈગિ ક ટેક્નિક, ગાનપ્રિય વગવાક આંશ્વનક ટેક્નિક સ્ટોની સાંસ દ્વારા પ્ત મ કડ દેઇ ગેઇ છે.

સ્ટોની સાંસ તાનાગ્દ વ્રિયોગીક શ્વદાવૃ (૧) ડોના થોકક હસિવે મૈથૃષિ મે ઉપન્યાસ વહનાશ અર્થ, (૨) મેહનક ષાષા આ (૩) કૂડા-કડકટક પહાડ ડાક કનવાક સાપ્રિય આ નમાગ્દ હા "નમાસ" ક શ્વદાવૃ (૧) "હાટ-વખાનક ષાષા"

(૭) પ્રમોદ કુમાનક 'કળકનિવા' ક આમુખમે) કેં ઉઘાન કેઇકા.

૬ સમ હોત્સાહિતિ કનવા ઇઇ ઉપયુક્ત ગૈસ-

ઇસ્ટગિ કેન ટેક્નિક અર્થ ડાકના સમાગાનત યાના દ્વારા સ્ટોની સાંસક મદનાસિં પ્તમ કડ દેઇ ગેઇ અર્થાં ૬ ઉદાહરણ સદિય કૈપ ડે મૂઠ યાનામે સમ ડાનાક ઇક અર્થઆ સમાગાનત યાનામે સેહો સ્ટોની સાંસક મદનાસિં વ્નાહમાસવાદક સંગ ગાન-વ્નાહમાસક ગવ-વ્નાહમાસવાદકેં સેહો યગિહિતિ કાઇ ગેઇ અર્થાં

આ સર્વ કાનસ છે ડે મૈથૃષિ કથા સુગેવાક આયોજન "સગન નાતિ દીપ ડાનપ" કેં સાહિત્ય અકાદેમી દ્વારા ગીર્જિયેવાક પ્રયત્ન મેઇ આ સે વ્રિશ્ચિ ષડ ગેઇપન નમાગ્દ હા 'નમાસ' સહિત મૂઠ યાનાક આગ ઇક અપન માગસકિ સગ્તુઇ વગા કડ ગૈ નાપ્તિ સકથા. નમાગ્દ હા 'નમાસ' નં સમટા સીમાક અર્કિનમાસ કૈપ દકટા વ્નાહમાસવાદી સંસ્થાક પત્નિકિમે વાગિ ગામ ઇગે હમના આ ઉમેશ માસડઇકેં અવાય કથા સેહો કહઇગ્હિ આ ડાકન ઉપહાન સ્વરૂપ સાહિત્ય અકાદેમી દિવિલિક ઓર સંસ્થાકેં કથા ઇટેનેની

અસોસિયેશનક નૂપમે માગ્યાના દેઉકા ઈ ઘટના સૂટોની-સાંરંસક પૂનમાવકે દનુશાનિ કનૈન અછા

મુદા અશોક ગાન દસ સાઇસે 'સગા નાના દીપ ખાન' કેન આયોજન સમાનાગ્નાન યાનાક ટેપ્પક સગ દ્વાના કલ્પ ખેવાસે આહ્વાદિનિ છર્થા આ કહે છર્થા- "અકન પૂનાનમ્બકિ ઉદ્દેશ્ય નહે ગામ-ગામ ગોષ્ઠી કનવાક, સે આવે ખા કડ ઝડ નહો છે" પ્રપ્ત ગપ હમન ગામમે મેઠ ૮૨ મ સગા નાના દીપ ખાન [કથા વૌદ્ય સદિય મેહથપા (વાઇ સાહિત્ય કેન્દ્રનિ) મેહથા] મે શિવિસંકન સ્ત્રીગણિસ સેહે વાખઇ છઇ- "ખમ્પન હમ સગ 'સગા નાના દીપ ખાન' શૂન કેને છઠી ખમ્પન અકન ઉદ્દેશ્ય છઇ ખે ઈ ગામે-ગામ હુઅપ, મુદા ઈ નં પટના-યેગ્બૈ ઘુમડ ઇગઇ"

આ ઓમ્હન નામગનોસ કાપડી 'ગ્નમન' આ પનમેશ્વન કાપડી સેહે પાયાપાન બેપાઇ મે અડઇ છઇ. ગાનાક સનકાની સંસ્થાક સંકલનમે હુગકન સગક નયગા વાહની (બેપાઇક) હેવાક કાનાસ ગૈ દેઇ ગેઇનિ મુદા ઓહી બેપાઇક દોસન ટેપ્પક, ખે સ્ટેટસ-કો કેન સડ છઇ, કેન કથા દેઇ ગેઇ.

ખુઇયો કનસિયેલાક અનુદૈધ્ય સમ્વન્ધ વઇ ધૂની, ખુઇયો કનસિયેલાક અનુધ્વાયન સમ્વન્ધ વઇ ધૂની ખેક્સ ડેનીડા- અના સંનયનાવાદ માને વ્રાપ્તિસંકલનાત્મક સદિયાન

કથાક પ્રાના-વૈદિકિ આખ્યાન, ખાનાક કથા, રેશપ શ્વેત્સ, પંચાંગના આ હિતોપદેશ આ સંગ-સંગ યૈન નહો ઠેકગાથા સગા સગ ડામ અગ્નિખાત્ય વગ્ગક કથાક સંગ ઠેકગાથા નહી અછા, આ સે મૈથિલિયો મે અછા

એ સમ્વન્ધમે સુગ્રાપ યગ્દન પ્રાદવક ગમ્નિગ વ્રિયાન છર્ણ:

"મૈથિલિ મે ઠેક-કથા પન વડ કમ કાખ મેઇ અછા ઠેક-

कथाक कहिए संकष्ट उपव्य अछि आ से स्मृति आया पन विविध
कथे गेथ अछि श्रुति वृत्त आया पन नहि ठेक-

साहित्यिक कोनो रीति हो, ओकर एक सँ अधिक रूप विद्यमान नैहै छैक,
जे श्रुति वृत्त कथे सँ प्राप्त भऽ सकैत अछि। स्मृतिमे ओकर मात्रा
एकरा रूप नैहै छैक, जकरा स्मृत्यात्मक रूप मानि ठेव गेल भऽ सकैत अ
छि। ठेक-

कथा क लोक संकष्ट अभ्यवधानमेथ अछि, से अपूर्ण अछि। मैथिली मे ठे
क-

गीत, ठेक गाथा आ ठेक देवता क छेथ नऽ कहि श्रुति वृत्त कथे गेथ, ठे
क कथाक छेथ नसिकके कोनो श्रुति वृत्त मेथ अछि। आव जग्न एक दुस्
न सँ दोसर पुस्त मे ठेक साहित्यिक अंगीकृत दण्डिदण्ड संकटग्रस्त मेथ जा
नहथ अछि, तै एक संक्षेपमात्रा अछि। ठेकसाहित्यिक संक्षेपमात्रा
नहथेथ मात्रा नहि अछि जे ओ अतीतक एकटा वस्तु थिक; ओ अपन स
मयक विमिश्र आ आत्मवाचन सेहो होथ अछि आ एकटा प्रमाण उपस्था
न करैत अछि। ओकरा रूपक, प्रतीक, भाव आ शिल्पिक उपयोग विधि
साहित्य मे हम सभ अपन-

अपन ढंग सँ करैत नहै छी। नहिना विधि साहित्य सेहो ठेक-

साहित्य केँ प्रभावति करैत नहै अछि। ठेक-

साहित्य संबंधी अध्ययन मुख्यतः स्थापना आ काव्य गीतानाम पन केन्द्रा
नहथ अछि ओकरा कान्य, अग्रिमात्र आ अन्त सँ संबंधित प्रश्न अप
नो उपेक्षति अछि। मैथिली मे नऽ ठेक-

साहित्य संबंधी अध्ययन अपन गीक सँ शुरू नहि भैथ अछि जे पोथी अछि
, नहि मे ठेक-

साहित्यिक प्रमाण आ सूची उपस्थाति कथे गेथ अछि ठेक-

कथाक उपव्य संकष्ट सभ मे ओह कथाक संख्या वेसी अछि जे देशान्तर
सक कानामें मैथिली मे आयथ अछि मैथिलीक अपन ठेककथा, जकरा प्यंटी

मैथिलि कहि सकैत छएक, से कम आयल अछि नामधेयन ठाकुन दुवामा संक
वलि मैथिलि ठेक-

कथा, जकरा हम अपन एहि अग्रिम संक्षिप्त अग्रिमक आचार वगैरे छी,
, तालू मे पाँटी मैथिलि ठेक- कथा कममे अछि ठेक-

कथाक अग्रिमनाथ आ अग्रिम संबंधी अपन वात कहवाक ठेक जालिहूटा कथाक
ययन हम कयने छी, से अछि- एकटा बुढ़िया रह्य आ एकटा यगिया प्येए
नओ मैथिलि। एहिहुन कथाक वातावरण वसिष्ठ मैथिलि अछि हुनक वसिष्ठ,
आत्मवायन आ पुनर्मात्र मैथिलि-

मानसक अनुप अछि हुन कथाक वसिष्ठ न्याय पन केहूनि अछि पहिल
कथाक बुढ़िया दाढ़िक एकटा आँक ठेक वनहि, नाजा, नानी, आगि पागि आ
हथि केँ न्याय पयवाक पागि ठेककैत अछि कएक नऽ पुट्टी ओकन दा
ठिगुका ठेक छैक आ नऽ नहि रहै छैक।

कथाक वसिष्ठ पद्यात्मक रूप मे एना व्यक्त भेल अछि- हथि हथि हथि!
समुद्र सोपू समुद्र। समुद्र ने अगि नहिवाय, अगि अगि ने नानी डे
नावय, नानी। नानी ने नाजा बुढ़िया नाजा। नाजा ने वनहि डँडय वनहि
वनहि ने पुट्टी योडय, पुट्टी। पुट्टीने दाढ़ि दसि, दाढ़ि की पाउ, की
पील, की डऽ पदेस जाउ जाइ अछि पुट्टी तैयार नऽ जाइ छैक। से नऽ
पुट्टीक डँ हथि, हथिक डँ समुद्र, समुद्रक डँ आगि आगिक डँ
नानी, नानीक डँ नाजा, नाजाक डँ वनहि न्याय कनक ठेक तैयार नऽ
जाइ छैक आ पुट्टी बुढ़िया केँ दाढ़ि दऽ दैत छैक। ई कथा नामधेयन अपन
माय सँ सुनने छएल ओ कहएना ओ माय वरिष्ठ वृत्तान्त मे बुढ़िया हथि ए
सँ धूनि जाइ छैक। विविध कथा काठ ओ एक पुनर्मात्र कयएना
हुनक विविध कयठ वृत्तान्त मे बुढ़िया हथि सँ आग पुट्टी वनि जाइ
अछि बुढ़िया केँ पुट्टी वनि डऽ गेना कथाक व्यंग्य मे वसिष्ठ अगैत छै
का ठेक ठेक कथाक एहन पुनर्मात्र कथक उचि अछि? एहिकथाक आत्म
वायन बुढ़ियाक मायमे पुनऽ भेल अछि। अपन स्थिति पुनर्मात्र बुढ़िया ओ

पुनर्जागरण कर्तव्य अर्थात् सत्य एवम् अस्ति किं आत्म वाचनं यत्किं एकदा दारि
 कं वरं पश्यन् वृद्धया पश्यन् प्रोवाक्यं गेयम् कर्तव्य अर्थात् गानम्-
 गानं सन् गानं दारिद्र्यं देवात् पुनर्जागरणं कर्तव्य अस्ति। समुद्र-
 सँ हीना मोतीकं दानं गच्छति अर्थात् दारिद्र्यं अपनं अर्थात् वरं वरं नहि
 अर्थात् गानं पश्यन् ई प्रो सपना देव्यवाक्यं याहि। गीष्म आ दयाकं पातुं गच्छिवाक्यं
 याहि। दानं देव गीष्म गच्छि स्वागमिणी देवाक्यं याहि आ अपनं हर्षं वरं वरं
 याहि। कथा ई पुनर्जागरण उपस्थिति कर्तव्य अर्थात् गेयं संघर्षं कथं सँ मे
 टैल छैक। 'एकदा यनिमा प्रेम्परे नओ गच्छा' गेयकं वरिष्कशीला पश्यन् वरि
 ण्स् कर्तव्य अर्थात् मुन्या (यदि) कँ एकदा योनि प्रेम्परे अपनय मे पुनर्जागरण
 मेटै वरं छैक। ई वरिण्स् पद्यात्मकं रूपमे यवैल छैक, जाहि मे ओकन दान
 गुण अवस्था सेहो यतिनि मेव छैक।

वनव्रत गच्छ!

पश्यन् पहाड़ पश्यन् योनि मे योनि

गुप्ते नये छै वय्या

एकदा यनिमा प्रेम्परे नओ गच्छा

नर एव पकड़ने जाय

श्वेत घोड़ावत अवे छै, हथीवत अवे छै, पुष्टी-

वरं अवे छै। मुन्या सन सँ मनिनी कर्तव्य अर्थात्

ओहो सन प्रेम्परे कँ पोष्टवैल छैक; छोड़वाक वरं मे वरं, घोड़ा, हथी
 देव-वरं तैयार छैक, एकनि प्रेम्परे टस सँ मस गच्छि अर्थात् गच्छि गू
 प्रे-

प्रासे जाग जाय ओ छैक, गच्छि पुष्टीक वरं मे मुन्या कँ छोड़वैल अ

छा मुनयि कनुमा आ मागवीयताक आवाहन कैत अछि मनुस्मृतिमे कह
 ० गेठ छैक जे युपयाप ककनो सुठ गोड़ छैव योनिगहि होश छैक; महिना क
 कनो एकटा योग प्या छैव कोनो अपनाय नहि भेला इह कथाक आत्मवायन थी
 का कथा ई पुनर्माग उपस्थिति कैत अछि जे सभक जीवक मोठ वनावन हो
 श छैक । असहाय आ गनिधनो केँ जीवाक अधिकार छैक। एहि संसार मे ओक
 नो छै एकटा सुपेस (जगह) हेवाक याही।"

कथामे असंख्यताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ वेशी होश
 अछि, कानि उपन्यास अछि "सोप ओपेना" जे महिनाक-महिना आ साठक-
 साठ बर्गियैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा वनिद्वय आवाप्यताम
 होश अछि मागे सन्तान एपीसोडक उपन्यासमे उन्हाता एपीसोड बर्गित
 आशा वगैर अछि जे कथा एकटा मोड़ छै आ अन्त बर्गित कथाक दिसि नहि
 वट्टत तँ पुनर्माग सभटा एपीसोड हटि आ मात्र अन्तमे एपीसोड सुठ्ठा
 मुदा कथा एक अन्तमे नै दैत अछि ई एक एपीसोड वगैर नयना छी आ नीक
 तँ पूवे नीक आ नै तँ प्यापे-प्याप।

कथा-गाथा सँ वढि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्मेषम
 शावदीक अन्तमे भेला एकटा छुट्का, कथा आ गल्पक रूप मानठ गेला ओना
 ऐ नीलक वीरक भेट सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायति कए गेला
 नवीनताथ ठाकुनसँ सुनु भेट ई ब्राह्मण मानक एक कोनसँ दोसर कोन बर्ग
 सुधानवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ वढेला असमयिक
 वेगवन्त, उड़ियिक शक्ति मोहन सेनापति, तेछुक अप्पानाव, वंगलक
 केदारनाथ वगैर ई सभ गोटे कम्पनी बानीक पुनर्मागसमन्वयमे तँ कम्पनी
 समाजक सूक्ष्मक वनिद्वय अवैत गेलाह नेपाछी भाषामे "देवी को वरि"
 सूत्रकाग्न प्रभाषी द्वारा दसहनाक पञ्चवर्षी प्रथाक वनिद्वय छपिठ गेला
 कोनो कथा प्रेमक वंशक मध्य जाति-धनक सीमाक वनिद्वय तँ कोनो दठति

समाजक स्थिति आ यात्रमकि अंधवशिशवासक वषिप्रमे ठप्पिठ गेठ आ ई सभ कतैन सन्वदा कथाक अन्त सुप्पद होश छठ सेहो गै।

वादः साहित्यः उर्गन आयुगिक, अस्मातिववादी, मानवतावादी, ई सभ व्रियानयाना दन्शनशास्त्रक व्रियानयाना थकि पहिने दन्शनमे व्रिज्माग, शहिस, समाज-नाजनीति, अन्थशास्त्र, कवि-व्रिज्माग आ भाषा सम्मिति नैह छठ मुदा जेना-जेना व्रिज्माग आ कविक शाप्पा सभ व्रिशिष्टता पुनपुन कतैन गेठ, व्रिशिष कऽ व्रिज्माग, तँ दन्शनमे गाम्ति आ व्रिज्माग मैथेमेठकिठ ठाँजकि यनी सोमति नहि गेठ। दान्शनकि आगमन आ गजिगनक अध्ययन पुनमाथि, व्रिशिषमात्रक पुनमाथि दसि वढठ। मान्कस जे दुनिया गनकि गनीवक छै एकटा दैवीय हस्माक्षेपक समाज छठह, द्वागद्वान्त्रक पुनमाथिकँ अपन व्याप्प्याक आधान वनओठग्हि आइ-काठकि "उसिकसन" वा द्वागद्व जइमे पक्ष-वपिपक्ष, दुनू सम्मिति अछि, दन्शनक (माधवायान्त्रक सन्वदन्शन संग्रह-दन्ष्टव्य) प्माडन-माम्डन पुनमाथिमे पहिनेहिसँ व्रिद्विज्माग छठ।

से शहिसक अन्तक घोषमा कयनहिन शुंगांससि शुक्रियामा -जे कम्पुनसिट शासनक समाप्तापिन ई घोषमा कयने छठह- वादमे ऐसँ पठति गेठह। कम्पुनसिट शासनक समाप्ता आ वन्त्रिक देवाठक प्यसवाक वाद शुंगांससि शुक्रियामा घोषति कएठग्हि जे व्रियानयानाक आपसी ह्गाडा (द्वागद्व) सँ सृजति शहिसक ई समाप्ता अछि आ आव मानवक हतिक व्रियानयाना मात्र आगाँ वढना मुदा कछु दनि वाद ओ ऐ मतसँ आपस गऽ गेठह आ कहठग्हि जे समाजक नीति आ राष्ट्रनीयताक मध्य अम्पनो वहुन नास गनिन व्रियानयाना वाँयठ अछि नहिना उर्गन आयुगिकतावादी व्रियानक पौक्स डेनीडा भाषाकँ व्रिप्माडति कऽ ई सद्वि केठग्हि जे व्रिप्माडति भाग डेन नास व्रिगिगन आधानपन आश्रति अछि आ वनि ओकना वुहने भाषाक अन्थ हम

बै ७॥ सकैत छी।

उत्तम-आधुनिकतावाद सेहो अपन पुनर्निर्माणिकी उत्साहक वाद डमकी गेथ
अछी।

अस्मितावाद, भागवतावाद, पुनर्जातिवाद, नोमेन्टसिजिज्म, समाजशास्त्र
नीय वशिष्ठेषाम् ई सग संश्लेषणमामक समीक्षा पुनर्जातिमे सम्मिलित भऽ
अपन अस्मिताव वयेगे अछी।

साइको-एनेथिसिसि त्रैपुनर्जातितापन आधानि नहवाक कामस द्वावद्वात्मक
पुनर्जाति जाका अपन अस्मिताव वयेगे नहान।

आधुनिक कथा अछी की? ई केहन हेवाक याहि? एकन कछि उद्देश्य अछी
आकाहेवाक याहि? आ एकन गिन्यानस कोना कएत जाय ?

कोनो कथाक आधान मनोवर्णन सेहो होश अछी कथाक उद्देश्य समाजक
आवश्यकताक अनुमान आ कथा पात्रांमे पत्रिपत्र समाजमे भेथ आ होश
पत्रिपत्रक अनुपे हेवाक याहि। मुदा संगमे ओर समाजक संस्कृतिसि ई
कथा स्वयमेव गतिगति होश अछी आ एमे ओर समाजक ऐतिहासिक
अस्मिताव सोहँ अवैत अछी।

जे हम वैदिक आप्यगक गप कनी तँ ओ राष्ट्रक संग पुनर्भक्त सोहँ अवैत
अछी आ समाजक संग भविक नहान सम्पिदैत अछी जातक कथा ठेक-
भाषाक पुनर्जाति संग वैद्य-यन्म पुनर्जाति इच्छा सेहो नपैत अछी।

मुस्लिम जातक कथा जेना नूमीक "मसजिदी" आनसी साहित्यिक वशिष्ठ
गन्ध अछी जे पुनर्जाति महान आ नाप्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछी।

आजुक कथा ऐ सग वस्तुकेँ समेटैत अछी आ एकटा पुनर्वाद्य आ भागवत

સમાજક ગતિમાત્રક દસિ આગાં વઢૈન અછા આ ખે સે ગૈ અછા તં ઈ ઓકન
ઉદ્દેશ્યમે સમ્મિતિ હેવાક યાહિ આ તપ્પમે કથાક વ્રશિષ્ઠેષમ્ આ સમાધેયના
પાઠકીય વ્રવિસના વર્ગ સકના

મનોવ્રશિષ્ઠેષમ્ આ દ્વન્દ્વાત્મક પદ્યતિ ખેકાં શુક્રિયામા આ ડેનોડાક
વ્રશિષ્ઠેષમ્ સેહે સંશ્લેષતિ ઝડ સમીક્ષાક છેઇ સ્થાયી પુત્રાભિગ વગઇ નહા

કકના છેઇ કથા ઇપ્પી? વ્રા કહી? કથાક વ્રાદઃ ખગિકા વ્રષિયમે ઇપ્પિવ સે તં
પઢનાહ ગૌ કથા પઢી ઇોક પુત્રુદ્ય ઝડ ખાપ્પા ? ગીતાક સપ્પા પ્પા કડ હૂડ
વખગહિતક સંપ્પા કમ ગૌ તં કી હ્લન કસૌટીપન નયતિ કથાક મહત્ત્વ કમ
ઝડ ખાપ્પા ?

સગ પુત્રુદ્ય ગૈ હેનાહ તં સ્વસ્થ મનોખગ તં પુત્રાપ્પ કડ સકનાહ આ ખે
एकोटा વ્યક્તી કથા પઢી ઓર દસિમે સોયત તં કથાક સાત્થકના સદ્ધિ હપ્પા
આ ખકના છેઇ નયતિ અછા ઈ કથા ખે ઓ ગૈ, તં ઓકન ઓર પનસ્થિતિમિ
હસાક્ષેપ કનવામે સક્ષમ વ્યક્તી તં પઢનાહ આ ખા ઈ નહા તાચનાં
તનહક કથા નયતિ કલ્પ ખાશન નહા

આ ખે સમાજ વદઇ તં સામાજિક મૂલ્ય સગાતન નહા? પુત્રાગશિષ્ઠ કથામે
અગુત્તવક પુત્રગતિમાત્ર કનવ, પત્રિત્તગશિષ્ઠ સમાજક છેઇ, ખડસં
પુત્રાકર્ત્તિક આ સામાજિક યથાત્થક વીય સમાયોજન હુઅપ આર્કાં
પત્રિત્તગશિષ્ઠ સમયકે સ્થાયતિવ દેવા છેઇ પત્રપત્રાક સ્થાયી આ મૂઇ
તત્ત્વપન આચારતિ કથાક આવશ્યકના અછા? વ્યક્તી-હિત આ સમાજ-હિતમે
દ્વૈય અછા આ દુગૂ પત્રપ્પ વ્રિગીયી અછા એમે સંયોજન આવશ્યક વ્રશિવ
દૃષ્ટિ આવશ્યક કથા માત્ર વ્રિયાતક ઉત્પત્તિ ગૈ અછા ખે નોશગરસં
કાગયપન ખેગા-નેગા અનાદિઇરિ ઈ સામાજિક-સેતહિસકિ દસાસં ગતિદશિતિ
હેરન અછા

तँ कथा आदन्सवादी हुअय, पुनर्वादी हुअय वा प्रथाथवादी हुअय। आर्का
 ई मागवावादी, सामाजिकवादी वा अनुभवकें महत्त्व देमप्रवण
 प्रभोगेन्द्रीय-प्रथाथवादी हुअय? आ गै तँ कथा प्रयोगमूलक हुअय। ऐमे
 उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कामवाद, अन्त्यकर्मवाद
 आ श्रवण सभ सम्मिलित अछा ई सभसँ आयुगिक दृष्टिकोस अछा।
 अपनकें अन्वितक केंद्र मागवाय स्वभाव अछा मुदा ओ सामाजिक
 नशिममे सीमित नऽ जाय अछा। पनस्थितिसि प्रभावित नऽ जाय अछा।

तँ कथा अनुभवकें पुनर्नयन कऽ गढ पारना। आ व्यक्तित्वगत येनना नयन
 सामाजिक आ सामूहिक येनना वगैर। शोधकें अपन प्रवृत्तिपि
 अंकुश ठावय पड़ान्हा। तँ शोधकें एक प्रतीय मुष्ण रूपमे कय पड़ान्हा।

स्वतन्त्रता- सामाजिक परिवर्तन। कथा नयन संप्रेषण हल, संवादक
 माध्यम वगैर। कथा समाजक छेउ सत्ता नयने वगैर सकल, शक्ति नयने
 वगैर सकल।

जे कथाका उपदेश देनाह तँ प्रभोग हस्तागत कनाह, जकर
 आवश्यक्ता आव गै छै। नयन कथाका सम्वाद सुन कनाह नयने मुक्तिक
 वातावरण वगैर आ सम्वादमे गाग ऐगहिन पाठक जड़नासँ गनाह पओनाह।

कथा कर्मवद्द हुअय आ सुग्राह्य हुअय नयने ई उद्देश्य प्रान कना।
 वृद्धिपिक गै व्यवहारपिक वगैर। वैदिक साहित्यक आध्यात्मिक उदान।
 संवादकें जन्म दै छै जे पौनासिक साहित्यक मुद्रादित। पान कय देछ।

आ संवादक पुनर्स्थापना छै कथाका मे वसिवास हेवाक याहि- नक-पनक
 वसिवास आ अनुभवपनक वसिवास, जे सुभाषणद्वारा प्राद्वमे छन्हा।
 प्रत्यक्षवादक वसिष्ठेयतात्मक दृश्य वस्तुक गै, भाषिक कथन आ
 अवयवात्मक वसिष्ठेयता कौन अछा से सुभाषणीक कथामे स्वरूप देयवामे

आओ। वशिष्ठेषामात्मक अथवा नात्किं पुन्यकृषवाह आ अस्मात्प्राप्तवाहक
 जगत् वशिष्ठानक पुनः पुनः किं योऽपि रूपमे वेत्ति। ऐसं वशिष्ठानक द्विविधो
 वियोगं स्पष्ट कएत गेह।

पुनः पुनः शास्त्रानुमे योगाक पुनः पुनः पुनः रूपमे अय्ययन होश अछि।
 अगुणा वशिष्ठ मागसकि कृषिक नय्यक गीकृषम अछि। वसुके
 गनिकृष आ वसुध रूपमे देववाक ई माय्यम अछि। अस्मात्प्राप्तवाहमे मनुष्य-
 अहिमात्न मनुष्य अछि। ओ जो कहि गनिमास कएत अछि। ओसँ पृथक ओ
 कहि नै अछि, स्वर्गात्न हेवा छे। अगशिपु अछि (सात्ता)। हेओक
 जयपेकटकिं देवा। वशिष्ठेषाम आ संश्लेषामक अंगहिन अंगसंय देवा।
 पुनः पुनः गुण गनिमास आ अस्मात्प्राप्त गनिमास कवापन जोन देवहो
 मूलात्न जोन गहिन हए ओतक स्वरूपसँ दू नहए आ वास्तवकितासँ छ।

कृष्णान् सद्दियाग आ अगस्यटेनटी पुनः पुनः सेहे आयुगिक यनिगके
 पुनः पुनः केने अछि। देवपद पदएव वास्तवकिता सँ दू गीतक आ वाहक
 पुनः पुनः सग शक्ति-ऊनाक छोट नावक आदान-पुनः सँ समग्र होश
 अछि। अगशियतिनाक सद्दियाग देवा। स्थिति आ स्वरूप, अन्तासँ
 गशियति कय पड़ै अछि।

गीतसँ वेशी जइमेनसग वसिष्ठक पुनः पुनः आ सटीश्वर हाँकगिसक "अ
 वशिष्ठ हसिटी अँश्व टाश्म" सोहे-सोही गगवागक अस्मात्प्राप्तकेँ पानम कः नहए
 अछि। कानाम ऐसं गगवागक मनुष्यक अवधानमा सेहे सोहँ आयत अछि, से
 एपग वसिष्ठक गनिगनाक अस्मात्प्राप्त पानामे पड़ै अछि। गगवागक मनुष्य
 आ शहिसक समाप्ताकि पुनः पुनः मयथि कथा कहिय। यनि पिसिसा
 कहै नहए ? छु, आ-छु कथा (विहनि कथा), कथा, गप आदिक
 वशिष्ठेषामे गगए नहए ?

जेना वन्युअठ नश्चिठि वासनावकिना केँ क्त्वामि नूपेँ सोहँ आनियेनकाकेँ ओकना संग एकाकान कनैठ अछि नहनि वनि नीगसँ वेशी वीमक पनकिउपनाक हम पुनकासक गगसँ जे सन्धिघटाटी सन्धिघनासँ यथी तँ नश्यो वनहमासुडक पान आर यनी गै पहुँचि सकवा ई सून्य अनव-अनव आन सून्यमेसँ एकटा मध्यम कोटकि नगेगास- मेडओकन सटान- अछि ओर मेडओकन सटानक एकटा गृह पृथ्वी आ ओकन एकटा गगन-गाममे नहनिहिन हम सन अपन माथपन हाथ नाप्पि यिनिगि छी जे हमन समसूयासँ पैघ ककन समसूया? हमन कथाक समक्ष ई सन वैज्जानाकि आ दान्शनाकि तथ्य युगौगीक नूपमे आयठ अछि

हेठिस्टिकि आकि सम्पूनामाक समन्वय कन्य पड़न ! ई दन्शन दान्शनाकि सँ वासनावकि नप्पगे वनना

पोस्टस्टनक्यनठ मेथोडोवोजी भाषाक अन्थ, शब्द, नकन अन्थ, व्याकानासक नश्चिम सँ गै वनन् अन्थ ननिमास पुनकनयिसँ ठगवैठ अछि सन ननहक व्यक्ता, समूह ठेठ ई वनिनिगि अन्थ यानास कनैठ अछि भाषा आ वनिवमे कोनो अन्तमि समन्वय गै होश अछि शब्द आ ओकन पाड केन अन्तमि अन्थ वा अपन वनिषिठ अन्थ गै होश अछि

ऐ समन्वयमे सुभाष यन्द्न प्रादवक ननिग वनिया छनः

"कोनो ठेप्पक सँ ई अपेक्षा केनार जे ओ अपन नयनाक स्पष्टीकानास आ व् व्याप्प्या कनए

एकटा अनुयति अपेक्षा होएना ई काण ठेप्पकक नहथिकैका नयना याहे कन वो दुनवौय्य आ वनिदास्पद हो, ठेप्पक ओहि ठेठ जमिमेदान नज होश अछि , मुदा ओकन भाष्यकान हेवाक ठेठ वाय्य नहनि ठेप्पक ककना-

ककना अपन नयना वुहेगे अनिग आ कएिक? की ई समन्वय छैक? ठेप्पक जँ

याहए नऽ अपन जीवगकाठमे नयनाक संदन्ममे कछि समवाद स्थापति कऽ सकैत अछि, मुदा मृत्योपनात? पाठक अपन वोय आ व्रविकक अनुसा न यनाक पाठ कजैत अछि। हनेक युगाक सेहो अपन गनिग वोय होश छैक। तँ ई पथ गनिगना आ पनविनागशीठना हनेक समन्थ नयनाक आगविनाय गुप्त होश अछि। समय के संग-

संग नयनाक संवेदनात्मक अभापिनाय वदथैत नहैत छैक। तँ ई युग वदथैत पन नयनाक व्याप्य सेहो वदथैत जाश छैक। एहि तनहँ कोनो एकटा नयना के एक्के टा आ समाग पाठ नहि होश अछि; मूख्यवान नयनाक पाठ अंग होश अछि। पाठ पन छेपकक गपिनास नहि होश छैक। तँ ए पाठ गनिगनाक छेठ ओकना सञ्चार आ स्पष्टीकनास देवाक कोनो वेगना नहि वाक याही।

हमन अपन अनुभव नऽ ई अछि। जे जायना कोनो घटना कथात्मक वणिगसँ दीप्त नहि होएत जायना ओ नयनामे नूपातनाति नहि नऽ सकत। ओहि आनगिक वणिगकें पाठक गनिग-गनिग नूपें पकड़ैत अछि आ अछा-

अछा व्याप्य कजैत अछि। हमना छौत अछि। जे कोनो नयनाक वणिग आ दन्शनकें पाठक गछे नहि वूह पवैत हो, ओकन मन्मकें जान पकड़ैत अछि; ओकन संवेदनात्मक तत्वकें हृदयंगम कऽ छैत अछि। छेककथा सँ उदाहरण छी नऽ वात वेशी स्पष्ट होएत। एकटा यनिमा जेठए नओ गइया नऽ छे पकड़ने जाइए' - एहि उक्तमे गप्पा आ समागनाकें जे वनिनस आ दन्शन छैक, तकरा पाठक गछे नहि वूह पवैत हो, मुदा स्वतन्त्रताक छेठ जे शुद्धीक आनगाह छैक तकर अनुभव पाठक अवश्य कऽ छैत अछि।

नहिना हमन कथा ' नदी' आ ' कनियाँ

पुतना' मे जीवगदायिगी सकत। कि नूपमे पुनमकें जे वणिग (दन्शन) छैक तकरा वूह ओतेक आसाग जाँ नहियो होइ, तैयो नेहक अनुभूति नऽ पाठक कनाति अछि। साहित्यमे असवी यीज ईए संवेदना या मन्म होश छैक। कोनो वीयान (या दन्शन) संवेदनेक माध्यमसँ पाठक यन पहुँचवाक याही; कोनो वीनस

वमिन्स या गागावागीक रूपमे गही हमना वुहने यन्म आ संस्क्राफि गति
ति प्रेमे थकि प्रेमसँ वढा किऽ एहि संसागमे कोनो दोसऽ ग्राव गही अछि
हमन कथा सग कोनो व्रियानयानात्मक या आयागसास्त्रीय आग्राह ँऽ कऽ
गही यैग अछि ओ अपन समयकेँ आयाग-

व्रियानकेँ वृत्तक नऽ करैग अछि, मुदा ओहि सँ वद्व गही अछि
हमन यागमा अछि जे कछाकृति कोनो कृतांगि गही अगैग अछि ओ मनुकूप
क ग्रावात्मक अगविर्त्ता आ दृष्टिकेँ वृहत् सूक्ष्म ढंगसँ वद्वैग अछि
आ दीर्घकाविकि सामाजिक पनविर्त्तानक घटक होश अछि एकन अगनिकि
न आन कछि गही जे आधेयक एहिसँ शन कोनो अपेक्षा आ आग्राह (जोगा
मैथिलीक येगगावादी हऽ) ँऽ कऽ साहित्य ँग जाएग, से अपनोकेँ ऽकन आ
दोसोकेँ घोषा देग।"

आधुनिकि आ उर्गन आधुनिकि नृक, वास्तवकिता, सम्वाद आ व्रियानक
आदान-प्रदानसँ आधुनिकिताक जन्म भेग मुदा छेन नव-वामपंथी आगदोष
शृंगासमे आयैग आ सन्वगासवाद आ अनाजकतावाद आगदोष सग
व्रियानयाना सेहो आयैग ई सग आधुनिकि व्रियान-प्रकृति प्रमाणी ओकन
आस्था-अवधानमासँ वहान भेग अवशिष्टासपन आधानि छैग।

पाठमे गुकायग अन्थक स्थान-काठ संदन्तक पनपिनेकूपमे वृत्ताप्युता शुन
भेग आ गाथाकेँ प्पेठक माधुप्रम वगाओग गेठ- ँग्राह जेग आ ऐ सग सत्ताक
आ व्रैयता आ ओकन सगनीकतासक आधेयगाक रूपमे आयैग
पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्यूटर आ सूचना कृतांगिताइमे कोनो तंतुांशक गनिमाता ओकन गनिमास
कऽ ओकना व्रिस्त्रव्यापी अग्नान्तापन नाप्पिदैग छथि आ ओ तंतुांश अपन
गनिमातासँ स्वतंत्र अपन काज करैग नहैग अछि, कछि ओहो कान्य जे

एक गनिमाणा ओकना छे गनिमति नै कयने छथी आ कहि हसतक्षेप-
 तानांश जेना वायनस, एकना मान्गसँ हटावैत अछि, वयिंसक वनवैत अछि
 तँ ऐ वायनसक एटी वायनस सेहे एकटा तानांश अछि, जे ओकना ठीक कयैत
 अछि आ जे ओकनो सँ ठीक नै होइत अछि तिमन कम्प्युटरक वैकप छ ओकना
 शुर्न्मेट कए देत जाइत अछि- क्वीन स्टेट !

पूँजीवादक जनम भेट औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आव पोस्ट इन्डस्ट्रियल
 समाजमे उत्पादनक वढा सूनवा आ संयानक महत्व वढा गेठ
 अछि, संग्रामकक भूमिका समाजमे वढा गेठ अछि मोवाइ, क्रेडिट-कान्ड
 आ सभ एहन वस्तु यिप्स आधानति अछि २००८क कोसीक बाढमे
 गौरीनाथजी गाममे आँस छेह, भोजन छेठ मानि पडैत नहय मुदा क्रेडिट
 कान्डसँ एसीटफिट वुक भऽ गेठहो मथिषिक समाजमे सूनवा आ संग्रामकक
 भूमिकाक आन कोन दोसरा उदाहरण याही? गुठिमे सेहे अहाँ मोवाइ यात्रा
 कनवाक विगिनेसक यन्या देपैत छी।

जी कन्सट्रक्शन आ जी कन्सट्रक्शन वरियान नयना प्रकल्पिक पुनर्गठन
 केँ देपवैत अछि जे उत्तम औद्योगिक काठमे येतनाक गनिमास गव नूपमे भऽ
 नहठ अछि शहिस तँ नै मुदा पनपनागत शहिसक अग्र भऽ गेठ अछि
 गान्ध, वनग, गान्ध, दठ, समाज, पत्रिका, गैरकिता, वरिहा सभ
 सेनसँ पत्रिकाति कएठ जा नहठ अछि मानते नास पत्रिकागक
 पत्रिकासँ, वरिहाति भऽ सगन्महेन भऽ गेठ अछि कितेक संस्था।

मैथिलीमे नीक कथा नै, नीक नाटक नै? मैथिलीमे व्याकनास नै? पगसोह आ
 पगगिन ऐ तनहक वरिहास कनऽ अछि मैथिली व्याकनास मे, वएह
 अगठ, पात्रक सभ अछि! सुभाष यन्त्र पादत्रक कथा प्राग्नाक सगन्ममे
 ई गप कहव आवश्यक छ।

ખરે સમય મૈથિલીક સમસ્યા ઘન-ઘનસં મૈથિલીક ગણિકાસન અર્થા, ખખખ હર્નિદીમે એક હાથ અખમેલાક વાદ નામ ગૈ મેલા અખખ એક મૈથિલીક કથા-કવિતા ઇખિ આ સમ્પાદક-આભેયક ઝડ, અખ મહાવાકાંકષાક ઝાનસં મૈથિલી કથા-કવિતાક વાતાવનમકેં ઝાનિયા ૧૬૭ છર્થા, માત્કસવાદ, શ્વેનિખિખિમ આ યનમનિખેકષના ઘોસિયા-ઘોસિયા કડ કથા-કવિતામે ઝાનખ ખા ૧૬૭ અર્થા, ખખખ સ્નાનક ગનિયાનમ સપ્દ કડ ૧૬૭ અર્થા, સ્નાનિનનાક વેદ વાદ વગથ અર્થા

ખે ઝાનિવ આ ગમિન ખાનિયક શોષમ આ ઓકના હોત્સાહનિ કનવામે ઇખથ છર્થા સે માત્કસવાદક સનામમે, ખે મહિભેકેં અખમાનનિ કેઇનહ સે શ્વેનિખિખિમક સનામમે આ ખે સામ્પનદાયકિ છર્થા ઓ યનમનિખેકષનાક સનામમે ખાશન છર્થા

ઓના સામ્પનદાયકિ એક શ્વેનિખિસિટ, મહિભ વનિયી ધાત્કસિસિટ આ એ નનહક કોતક ઝડવંચન આ મડમે ખાશન દેખથ ગેથ છર્થા ક્યો નાખકમથક વડાસમે ઇખથ અર્થા, નેં ક્યો ધાત્નૌક આ ધૂમકેતુક, આ હુનકા એકનકિ નેં કો પક્ષ નાખન નકન આનમિ અખગાકેં આગાં નાખન ૧૬૭ અર્થા ધાત્નૌક પાનોકેં આ નાખકમથ આ ધૂમકેતુક કથાકેં આસ્યો સ્વીકાન ગૈ કપથ ગેથ અર્થા-એ નનહક અનગથ પુનથાપ !

ક્યો નથાકથાનિ વનિદાસપદ કથાક સમ્પાદન કડ સ્વયં વનિદા અપનન કપ અખગાકેં આગાં નાખન ૧૬૭ અર્થા માત્ન મૈથિલિ વનાહનમ આ કનામ કાયસ્થક ઇખનક વોય સોનનિ પુનથિયોગાનિ ખરે કવનિકથાકાનકેં વનિયથનિ કડ ૧૬૭ છર્થા આ હર્નિદી છોડ મૈથિલીમે સ્વાક વાદ ખરે ઝાનસં ઓ ૩ સન કનવ કડ ૧૬૭ અર્થા, નનિકા મૈથિલીક મુખ્ય સમસ્યાપન ધ્યાન કહિયા ખોનહ સે ગૈ ખાનિ? એક ૩હે વુદેન છર્થા ખે હર્નિદીક વાદ ખે મૈથિલીમે ઇખિવ, નેં

सुवीकृतान्तराति गतएँ भेटल ? जे मैथिलीक नयनाकारैकेँ ऐ नरहक नूनम
छग्हि आ आत्मवर्षिवासक अभाव छग्हि, अपन मातृभाषाक
संप्रणामात्मकता अपन अवस्थावास (!), नयन ऐ भाषाक नवप्रिय हनिका ठोकराकि
काग्हपन दऽ कोन छद्म हम सभ संजोगनिहए छी ?

मैथिलीमे बीस टा छपिगहन छवह आ पाँचटा पढ़गहन, से कोन ब्रविह ३९९
हएत ? नाजकमठ यात्रीक मैथिलीक छेपन सौम्य अछि, से हुनकर सभक
गोट-गोट नयना पढ़ि कऽ हम कहि सकैत छी। नर स्थितिमे- ई ब्रविह नहए ऐ
कव्रितामे आ ऐ कथामे- ऐ नरहक गप आगिआ ओकर पक्षमे अपन नरक दऽ
अपन छेपनी यमकायव ?

आ नरक वाद यात्रीक वाद पहिछि उपन्यासकार सुभगा आ नाजकमठक वाद
पहिछि कव्रि यथिगा-आव न कथाकार आ कव्रि जोड़ी सेहे सोहँ अवैत
अछि, एक दोसराक नरकामि आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एवा छै।

मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा ऐ सीमति पुनर्जागो (हुनवृष!)
सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मानकि वीर्य मनिहए अछि। कव्रि-कथाकार
मैथिलीकेँ अपन कैनिअन वना छेछग्हि, सेमोगानक वस्तु वना छेछग्हि नयन
कनऽ पाठक आ कोन ब्रविह !

जे समस्या हम देखनिहए छी जे व्ययारकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ
जानकि ठोकर ऐ भाषासँ प्रेम कनथि नर छै कथा आ कव्रिता कनऽ आगाँ
अछि ? कएकटा ब्रजिआन कथा, वाद-कशिी कथा-कव्रिता कैनिअनजीवी
कव्रि-कथाकार छपनिहए छथि।

सय-दू सय कँपी पोथी छपवा कऽ, नरक समीक्षा कनवा कऽ, सय-दू सय
कँपी छपयववा पत्रिकामे छपवा कय, नरक खेटोस्टेट कँपी खेटोस्टेट

वना कऽ घनमे नाप्पिपुनस्का१ छे० आ सधिवसमे कर्ताव ठगेवा छे० कय० गे०
ताकिडमक वातावनासमे हम१ आस गौ१ मैथि० वनाहमास-कनास कायस्थ पाठक
आ छेपकप१ जा स्थानि मऽ गे० अछि।

जे अपन घन-पनविन१ नै सम्हानि सक० से डेनी-ढाकी भाषायी पुनस्का१ ०५
वैस० छथि, मथि० नाप्य वनेवामे ठाग० छथि, पना नै नाप्य कोना
सम्हानि सक०।

मना०, उ०, नमि०, कन०डसँ मैथि० अगुवा पुनस्का१ गनि०जानासँ
छै० छथि, वसकक के१ अ० पुछवन्हि से नै अवै० छन्हि, अ०वे-वे-से
के१ जान नै, मना०मे कोनो वय्यासँ गप क०वाक साम०थ्य नै छन्हि आ
मैथि०मे हुनक१ माथ छुटवासँ ऐ द०वा मे वया जा० छन्हि कानास अपन छपवा
कऽ समीक्षा क०वै० छथि, से पाठक नै छन्हि नै। पाठक नै नहमे हुनका
ओकनिकँ खाए छन्हि आ ऐ पुनस्का१ सभमे जानी आ ए०वा०जानी वो०ड
अपनकँ आगाँ क०वामे जायन स्वयं आगाँ अवै० छथि जायन ऐ सीमा
पुन०यिगी ओकनिकि आत्मवश्रिवास कोक दु०व० छन्हि, सए सोहँ अवै०
अछि।

जानिक१ सग०ान साहित्यमे नै अप्रवाह हुनक१ य०या से० के० हए, हुनक१
पक्ष के आगाँ नापन? मैथि० साहित्यक ऐ सत्यकँ देखा० क०वाक
आवश्यकता अछि। आँपिमुनिकऽ सेहो एक१ समाधान ओक मुदा ताकयि नह०
छथि।

कथा-कविता-नाटक-नविन्य संग्रह सभक सम्पादक ये० यपाटी मैथि०क
सन्वकाषिण संक०मे स्थापन पाव जा० छथि। प०कि सभक सेहो वए
स्थिति अछि। वृत्तगिा मह०वाकांक्षामे कटाउह कनै० वनि पाठकक ई
प०कि सभ स्वयं म० नह० अछि आ मैथि०कँ मानि नह० अछि डा०।

नूममे वणि श्रोउवृत्तक ठप्पिठ ठेककथा णइ भाषामे ठप्पिठ णइण हुअय, ओणय ऐ णहक हास्यसूपड कटाउह स्वाभाविकि अछा आव तँ अण्णण्णायपन सेहे मैथिलीक कछि णाउवृत्तपन णाणगिण कटाउह आ अपसव्दक पुन्योग देय्यवामे आएठ अछा

मातृसंस्ति आ श्वेभगिस्ति वणिगकनो वृत्तापान सुनू कनव आ अपन सानक गृहगताक ऐ णहँ पूनगि कनव, सीमति पुनगयोगिणि मय्य अठ्प पुनगियायुक्त साहित्यकानक ई हथियाण वणिगिठ अछा णे मातृसक आदन कनन से ई कएक कहल णे हम मातृसवादी आठेयक आकठिप्पक छी ? हँ णे मातृसक थंया कनन णकन वषियमे की कहल आ णकन कानस सेहे सुपष्टा णाष्टनीय सन्नेक्षस ई देय्यवैण अछा णे संस्कृता, हगिदी, मैथिली आ आग साहित्य कंठेणमे एएह पढ़ैण छथि णगिका दोसण वषियमे गानांकन गै भेटैण छन्हि, पुनकानगिमे सेहे एएह सभ अवैण छथि पुनगिणि वषिण एहने साहित्यसेवोकेँ साहित्यक यस्का ठागठ छन्हि आ हगिके हाथमे मैथिली भाषाक भवषिय सुनक्षति नहण? मुदा ऐ वासनावकिताक संग आगाँक वाट हमना सभक पुनोक्षामे अछा सुय्या मैथिली सेवो कथाकान आ पाठक णे धूना-गनदामे णएवा ठेठ तैयान हेथि, वय्या आ सान्नी णगताक साहित्य नयथि आ अपन उण्ण मैथिलीकेँ णिवति नयवा मातृमे ठावथि ओ श्रोसो तैयान हेवे टा कनन।

मैथिलीक गामपन कोनो कम्पुनोमाइण गै। सुभाषयगुन प्रादवणीक ई संगनह यानावहकि नूपमे "वदिह" ई-पुनकिमे (हणपुनौवदिहयोगि) अण्णण्णायपन ई-पुनकासिणि नऽ हणानक-हणान पाठकक संगेह पओठक, आंगठाइण कामेण्ट ऐ कथा सभकेँ भेटठेक णइमे वेशी पाठक गैण मैथिलि व्नाहमास आ कानस कायसथ नहथि, से हम हुगकन सभक उपगाम देय्य अण्णण्ण ठावाओठ एणऽ ईहे गप सोहँ आयठ णे शिक्षाक अभावक कानस सेहे, भाषाक उय्याणस आ वायन मे अणन अवै-ए णकन ई भणठव गै णे वठयनभाक भाषा एयगो प्रादव

जी वजैत छथि, आव जे ओ भाषा कथाक घाटव पातूँ तेँ प्रयोग कनव तँ शोकुनतम् केन संस्कृत गटकक वीथ जगसाभासक तेँ प्रयुक्त प्रकाश जेकाँ भाषा, आ ओइ वनक ओककेँ अपमानजनक सेहे भाषागर्ही भाषा यथाप्रमाण होइत अछि आ ऐयन पनम्पना ओकन मध्य स्थिति आनेन अछि से सुभाषणीक भाषामे सेहे ई अन्तर्गत स्पष्ट देखवामे अवैत अछि, हुनका कथाक भाषा आ गविग्यादिक भाषा मध्य।

पूर्वजो कनसिद्योला अपन प्रसूता "वन, डायतग एम्हो गोवत"मे स्मृत-टेक्सटअर्थि माने अन्तर्गत-पाठ्यताक संकल्पना देखि, मने कोनो पाठ एकटा देवानमे वन गै नहिसकैए। से ओ पाठकेँ संकल्प कहै छथि।

आव गुठिमे देखू, नजीका नजानसँ छह बोटक एक हजान टका गनेशवा दियौ। मुदा ओ गपित्ता मऽ जाइ छै। शुद्धा मोदीकेँ जितौ। एम्पि केन एक्केशन छै।

से सुभाष यन्त्र घाटव टेक्सटक कनटेक्सट नाकिये छथि २०१५ मे। से हुनका नीतन धुनियारा हेनगर्ही आ से वसिष्ठान रूपमे वहीन भेट "मोट"मे एम्पि केन भेट एक्केशनक संग २०२२ मे।

से अन्तर्गत-पाठ स्थापति कजैत अछि अन्तर्गत-वसिष्ठक वसिष्ठ-वस्तु। ई सगटा पाठ आ वसिष्ठ एक दोसनासँ नगाड़ा छै नहैए आ एक दोसनाक प्रभावकेँ पान कजैत नहैए, कम्पनी कोनो पाठ आगाँ तँ कम्पनी दोसना। आ ऐ पाठकेँ अहाँ समाज आ संस्कृतिकि आधानसँ अछि गै कऽ सकै छै। से समाज-संस्कृतिकि पाठ आ साहित्यिक पाठ मजिह्नी मऽ जाइत अछि।

पाठ अन्तर्गत आ उत्पादनक वसिष्ठ अछि। से पहिनेसँ समाज-संस्कृतिकि पाठ आ साहित्यिक पाठ दू नहैए स्वयं गकिषैत अछि।

वसिष्ठानाक संघन्य आ नगावकेँ पाठ समाहित कजैत अछि।

जुठिया क्नासिडोवाक अगुटैन्धय सम्वन्ध वठ यूनीमे सोहे ऐप्पक आ पाडकक वीय वान्ना होइ छै। मागे ठिखिखक वौस्तु आ ठिखिखपन ठप्पिठ पना केन वीय सोहे वान्ना होइ छै। मुदा जुठिया क्नासिडोवाक उन्धवायन सम्वन्ध वठ यूनीमे "पाड" भूषयानाक साहतिप्र संगे सेहे आ एकटा छोट काठाव्रयमे भेठ घटगाक वीय वान्ना कनैत अछि। मागे पाड आ ओकन सगुट्ठक वीय वान्ना होइ छै, एक ऐप्पकक पाड दोसनक ऐप्पकक पाड संगे वान्ना कनैत।

ईदुगु यूनी जप्पन एक दोसनाकेँ काटेत जप्पन शवद वा पाड उत्पन्न होइत जश्मे कमसे कम एकटा आन पाड पढ़ैत जा सकैत।

जुठिया क्नासिडोवा वोषि-वागीकेँ प्रथावन जप्पवाक आ कछि पाड, जे भगुक्पसँ अठग अछि, केन रूपमे ऐप्पकक अयकिान आ कान्ठयक वान्नाम कनैत छथि।

जुठिया क्नासिडोवाक पुनस्तुति "बन्ड, डायठ□ग एम्ड गोवठ" भप्पिअठ वाप्पानिक संकल्पनाकेँ आगाँ बढ़वैत अछि। संगहि जुठिया क्नासिडोवा भाषाक संकेत आ पुनीकक रूपमे सेहे वसिष्ठेयस कनैत छथि। जप्पन वय्या संकेतक रूपमे, ठयसँ गप कनैत अछि। ओइमे संनयना नै होइ छै, अन्ध नै होइ छै। मुदा जप्पन ओ पैघ होइत तँ ओकना अपना आ आगमे अगुन दुहाइ छै, ओ वाजड ठगैत आ अठगासँ वहराइत। आतकना वाद ओ अपनाकेँ मायसँ दून कनैत। मुदा ओ ठाकषामकि सँ एकदममे दून नै होइत वनगु ठाकषामकि आ पुनीकान्मकक वीयमे दुठैत नहैत अछि। ठाकषामकि स्तुती गुल्ल, संगीतमय, कवति आ ठय सँ युक्त; आ पुनीकान्मक पुनुष गुल्ल, व्रिधि आ संनयनासँ युक्त नहैत अछि। से यथयतिन आदिमे महिषिक शनीनक आ ओकन कनिदानक जे अवमूठयन पुनुष द्वाना कएठ जाइत अछि से मायक शनीन द्वाना ओकन अस्तानिक्क पानाक डन अछि। मुदा वेवी याइठ अपन मायसँ ठग नहैत अछि से ओ ठाकषामकि स्तुती गुल्ल, संगीतमय, कवति आ ठय सँ वेशी युक्त नहैत अछि, से ओ मायकेँ अस्वीकान तँ कनैत अछि। मुदा ओकनेसँ अपनाकेँ पनभाषति कनैत अछि।

जेक्स डेनोडा योगि केन्द्गति वप्पिम्डगात्मक सद्दिवान्तसँ गानीवादी व्रियानयानामे जे हस्तक्षेप कर्तै छथि तिकन कोन्गेठ समन्थन कर्तै छथि आ गाग्रनी यक्षव्रणी स्पीवाक स्वागत। कछि दान्शनिकि व्रियानयाना जइ पुनकोनसँ योगिकेँ अप्पान्क्ष नूपेँ महान् दस् एतस डेनोडा द्वावा योगि केन्द्गति द□षट्कोत्मक सोमाक पुनानि यथागाकनषम एकटा सायक हस्तक्षेप अर्था आ तइसँ पुनतीकक घटकक श्रेयसँ एकटा पुनकन्यािक अन्तान्गत पनशिषा देव समन्व गेठ अर्था

डेनोडा आपसमे होश्वठा सम्वादक गुप्पगप्पाम्डक असम्भाव्यताकेँ देय्यवै छथि, ओकरा सगै बै कएत जा सकैए। से स्त्रीकेँ अनुमान आ ज्ञानक वस्तुक नूपमे बै देय्यत जेवाक याही। पुनुषत्वक सापेक्ष गानीवादकेँ बै देय्यवाक याही वनन गानीवाद ऐठ एकटा अठगे मोहावना वनेवाक प्यगाना अर्था

से पाठ, डेनोडा कहै छथि, मोटामोटी एकटा गान्धैतिक कान्य अर्था जे शक्ति-सम्वन्ध वा तकरा ऐठ होश वान्ताक नूपमे पनशिषाति कएत जा सकैए। मुदा डेनोडापन आनोप अर्था जे ओ गानीक अवाजकेँ पुनुष द्वावा अयगि□हेत कनवावय याहै छथि, गानीक एतेक यत्नसँ जे वकान शुठ छन्हि, जे ओ अपन ऐठ वाजनिहठ छथि, से अयकान ओकरासँ छेगड याहै छथि। डेनोडाकेँ महिषिक दगि-पुनानिगिक होश समस्य आ शक्तिहिगतासँ कोनो मतव बै छन्हि। डेनोडा वप्पिम्डगात्मक पद्यतिकेँ नीक आ यगात्मक नूपमे ठइ छथि आ गानीवादकेँ अस्तित्वक तान्त्रमीमांसाक तन्त्रक द्वैयक नूपमे गप्पै छथि, जेना पुनुष स्त्री।

डेनोडा पाश्चात्य दान्शनक केन्द्ग आधानति संनयनाक मोहकेँ उघान कर्तै छथि। सुसंयिक भाषाव्रिजानसँ पुनति संनयनावाद सांस्कृतिकि अस्तित्वक वैज्ञानिकि विश्लेषात्मक पुन्यास कर्तै अर्था ऐवी स्टन□सक संनयनात्मक मानव व्रिजान सए छेकगाथा ऐठ कर्तै अर्था तहिना साहित्यमे गद्य आ पद्य ऐठ संनयनात्मक विश्लेषात्मक पुन्यास कएत जाइत नहठ अर्था मुदा डेनोडा एकना उघान कर्तै छथि, संनयनावाद अपन

वशिष्ठेषाम् ऐव एकटा ठोस आद्यान ताकैत अछि, वृषवस्थायक वाहन एकटा
 केन्द् १५सँ ओ एकन वैज्जानिकि वशिष्ठेषाम् कऽ सकय, मुदा से मात्त
 दान्तरिकि आभास मात्त अछि। भागे कोनो ठेकगाथाक कोनो स्थायी वा
 गनियानि संनयना केना नऽ सकैए। से ठेककथा वा ठेक गाथाक संनयनाक
 अय्ययन कनवा ऐव अहाँकें ओ व्रियान वा ओ केन्द् १, एकन आद्यानपन अहाँ
 एकन वशिष्ठेषाम् कनऽ यहाँ छी, गनियानि कनऽ पड़त। डेनीडा कहै छथि
 जे कोनो संनयना ऐव ओकन संकल्पना- व्रियान आवश्यक अछि, खुन टुकड़ी-
 टुकड़ी जोड़ि कऽ अहाँ ओकना वनायव। मुदा वनि अन्त सोयने संनयना
 समवे गै अछि। आ से साहित्यमे सेहो अछि। यावत अहाँ कोनो नयना ऐव
 एकटा स्वयंसिद्धि अन्त गै ताकाँ छैत छी ओकन संनयना अहाँ गै ताकाँ सकै
 छी, कानाम् अन्त भागे अन्त ओकन संनयनाकें गनियानि कनैत अछि। से
 संनयनावदीकें अन्त पहिनिहियेसँ पना नहै छै आ तपने ओ ओकन वनिनि
 अंग आ एकन आपसी समवन्धकें वशिष्ठेषाति कऽ सकैए। आ एए
 वशिष्ठेषाम्सँ पहिनि ज्ञान स्वयंसिद्धि अन्त अछि डेनीडाक केन्द् १। आ
 डेनीडा कहै छथि जे एए गनियानि कनैत अछि जे पाठक संनयना केना
 वना, कोन अंगकें ऐव जायत आ कोन अंगकें छोड़त जायत। से जायत हम
 साहित्यक संनयनाक वशिष्ठेषाम् कनैत छी तँ ओकन अन्त आ ओकन
 पुनरावक गप कनैत छी तँ हम ओर संनयनासँ ओर तात्त्व सगकें यनिहवाक,
 शुनाक कनवाक पुन्यास कनैत छी जे ओर पुनराव ऐव उत्पन्नायी अछि, से
 ओर समवाति पैटर्नकें हम छोड़ि दैत छी जे ओ पुनराव गै आगत। से ई
 केन्द् १ आनन्तिकि स्थित अछि संनयनाकें वृहवाक हेतु। मुदा ई वशिष्ठेषाम्कें
 सीमति सेहो कनैत अछि। कानाम् केन्द् १ अपनकें स्थिति नपवाक ऐव
 सानिकानाम्क गनिनाम कनैत अछि, आ ओकना पन गनितनाम कनैत अछि।
 आ ई अन्तक पूर्व ज्ञान पाठकक पूर्व शहिस आ समकालीन आधेयना
 सिद्धांत आ व्रियानद्यानपन गनिन सेहो कनैत अछि, ईहे सग तँ
 संस्कृतिकि अंग अछि जायत केना एकना सगकें संनयनासँ दून जायत जाइए
 जे एकना सगकें सीमति कनैए मुदा अपने एकना सगसँ सीमति गै होइए? से
 अपन वशिष्ठेषाम्क आद्यान कोनो स्थायी केन्द् १कें वनायव एकटा गुस्पा देव

सग अर्छा आ ई पुनर्किर्णियावादी वा प्रथास्थवादी स्थिति अर्छा आ ऐ सँ भागक आ गए-गुणगुणक स्वरंग अर्थात् नकिर्णवाक भाग रूपा सद्दिय होए। से ई भूमिमे हम संनयन गान्तिहो छी भूमिमे अर्छा, वास्तवमे अहाँ पाठ्य सामग्रीसँ संनयन गान्तिहो कऽ रह छी।

से डेनोडाक उगत संनयनवादी सेहो केन्द्रीयक विनि पुनर्भूत गै नऽ सकै। अर्छा मुदा ओ ऐ सद्दिय गै भेद स्वरंगसद्दियक विनिगुणगुणक विशेषण आयापन ओर केन्द्रीयक दोस केन्द्रीय द्वाभा स्थानापन कए। अर्छा मुदा ई नव केन्द्रीय सेहो स्थायी गै नह।

गहगि सुसंयि (सुसंयि) अपन पुनर्किर्ण सद्दियगुणमे पुनर्किर्णक विशेषण कए। छथि ओ कोनो शब्द ओन विनिगुण- विनिगुण विनिगुण अर्छा कानि ओ कछि आग गै अर्छा से शब्द अर्छा पुनर्किर्ण यन्त्रि आ गन। ओ दन्तवै अर्छा से अर्छावैसु पुनर्किर्ण। मुदा डेनोडा कहै छथि ओ अहूँ पहेन एकटा संकल्पना आग पड़ै अर्छा आ जँ अहाँ पुनर्किर्ण यन्त्रिके गनपेक्ष वगैरे देव ओ ओक कोनो पुनर्किर्ण समन्वय गै छै, ओ स्वरंगमे एकटा स्वरंग संकल्पना अर्छा ओ कोनो पुनर्किर्ण वैसुसँ ओक कोनो पुनर्किर्ण समन्वय गै छै, मुदा गणन ई संकल्पना सग पुनर्किर्ण यन्त्रिके पान कऽ गान आ कछिओ सुसंयि गै कन। आ जँ हम पुनर्किर्ण आ पुनर्किर्ण यन्त्रिके एके भागि तँ पुनर्किर्ण यन्त्रिके जड़ियन योड पहुँच।

से सुसंयि सद्दियगुण गान्तिवातिक विनिगुणमे अर्छागणन ओ कहै अर्छा ओ पुनर्किर्ण यन्त्रिमे अहाँ पुनर्किर्ण कोनो उक्ति गै देव। मुदा गणन ओ कहै छथि ओ पुनर्किर्ण यन्त्रि पुनर्किर्ण उक्ति कनवा भेद भाग पुनर्किर्ण होए अर्छा ओ ओ ओक अर्छा ओ गान्ति आयागि सद्दियगुणक पक्षमे वृद्धि छथि। से डेनोडा कहै छथि ओ पुनर्किर्ण आ पुनर्किर्ण यन्त्रिक ई स्पष्ट भेद भाग गै अर्छा, आ पुनर्किर्ण पुनर्किर्ण यन्त्रिक अपन देव वनीयता सेहो उगतवाक गणन अर्छा।

पूनीक यन्त्रिमे अन्थ पहिहियिसँ वदियमाण गै नहै छै। आ पूनीक अन्थ कोनो एकटा पूनीक यन्त्रिमे गै भेटा। से पाठकेँ अहाँकेँ घोत-भट्टा कऽ पढ़ा, आ ई अन्तर्गत पोण दसि अहाँकेँ चकेछा। से ई पूनीक यन्त्रिह दोसऽ पूनीक यन्त्रिहसँ अपन अन्तर्गत आयापन पूनीक गनियानाम कऽैत अछि, जाके वेशी अन्तर्गत जाके छ। अहाँ पूनीकसँ होइ छी। मुदा ई कहियौ गै हए जा अहाँ सगऽ अन्तर्गत नाकिसकव। मुदा पूनीक यन्त्रिहमे वानम्वाना हेवाक याहि, तपनो तपन एक पूनीक यन्त्रिह गनियानाम कऽैत अछि आ ए छे ओइ पूनीक यन्त्रिहक तपनिस जागव आवस्यक। से पूनीक यन्त्रिह वनिनि अन्थ आ कपनो काठ उठै अन्थ सेहो देत।

डेनोडा तपि छथि जा पेटोसँ सुसयि (सुससुगे) आ ठेवी स्ट्रिङ स यनिसन तपिवाहसँ उपन वणवाहकेँ तापि छथि, कागस तपिब एकटा मायप्रम अछि, असत योण तँ वामी अछि। सुसयि तपिनि नूपमे उय्यागस तनुटपिन यप्राण दियिवैत छथि। मुदा डेनोडा कहै छथि जा ओ सन वसिषथा जा वामीमे छै से तपनमे सेहो छै। आगाँ ओ कहै छथि, पूनीकक वणिपुनि वामीमे वरियानक पूनीकक नहवाक गनम उत्पन्न कऽैत। मुदा जा वानत वामीकेँ हम नेक-नूड कऽ कय सुनी तँ ओहो तपिब अक्षय सन पूनीकक संप्रपे अछि, जाइमे वनिनि पूनीककेँ ओकन एक-दोसनाक अन्तर्गत सँ यन्त्रिह जा सकैत। आ तपन सेहो सामान्य तपन आ यतिनसँ वुहा कऽ कए तपन, ए दू तनहँ गऽ सकैत। 'अपन अवस्थितिकि तान्त्रमीमांसा' एकन सनक पाछाँ अछि।

पास्यातप दक्षिणक 'अपन अवस्थितिकि तान्त्रमीमांसा' मे जा मुप्य अछि से अछि सदयः अनुगत- मुदा वपिमांडनवाह कहैत अछि जा एहेन कोनो अनुगत पना-भाषा सानपन गै होइत अछि, कागस ई अनुगत भाषाक मायप्रमेसँ यन्त्रिह जाइत अछि। छेन ई जा दैवीय येनगासँ हम पनम सत्यकेँ वुहैत छी मुदा वपिमांडनवाह कहैत अछि जा ई मात सनकक संप्रपण अछि। छेन ईहे जा कोनो वीसुत पाछाँ सत्य गुकायत अछि, मुदा वपिमांडनवाह कहैत

अर्थात् तेह्न कोनो स्वतंत्र अस्तित्व नै होइ छै, सगटा गनिमास आ पुनर्गनिमास व्यवस्था द्वाला होइ छै। से सुसंयोजित स्वतः उपस्थिति किछु नै अर्थात् कागस सगटा व्यवस्थाक अन्तर्गत गनिमति अर्थात्

उनीडा कहै छथि जे एक ऐ सगटा दान्शनिक यन्त्रिक आधान अर्थात् से कोनो अन्तर्नि सत्य आ वसिवात्माक परिकल्पना देठ जाइत अर्थात् से सत्यताको अर्थात् मुदा उनीडा कहै छथि जे ओ सद्धि नै भेठ केन्द्रीक कयनो गण्ड, कयनो व्रिया आ कयनो वसिवात्मा कहठ गेठ आ ओ अपनसँ नीयाँ वसिन्ति सत्यक गनिमास केठक। से यन्त्र गण्डकें परम सत्य भागठक आ मनुक्य आ आग नयनाकें ओ अपूना, व्रियो आ ई सगटा केन्द्री वगठ जे अपन हसिगे व्रिया-व्यवस्था वगेवाक दावा केठक। मुदा एकना सगकें व्यवस्थासँ उपन हेवाक याहि। से गण्डक स्वतंत्र रूपसँ यन्त्रक वाहन उपस्थिति हेवाक याहि। अन्त संनयनवादी व्रियमण्डनवादी एहेन कोनो परासत्यक उपस्थितिकि आभासी भागैत अर्थात् अन्त संनयनवादी भाषाक सद्धिवाक परामिमा भागैत अर्थात् से ऐ परातीक यन्त्र सगक आपसी जेठमे किछु अन्त कोनो व्रियनयनाक हस्तकूपेसँ उय्य स्थान परापर कनैत अर्थात् ओकन दोसन अन्त तक पाछाँ जेवा छेठ यकेठ देठ जाइत अर्थात् स्वतंत्रता, गामतंत्र, न्याय आदिसन व्रियनयना हमना सगक जगिगीक भाग छी मुदा ठाँजै जे ओर सगसँ हमना सगक जगिगीक वहुत नास अन्त नकिछठ मुदा अन्वेषणक उपान्त ओ सग दोसन व्रियासँ वहन भेठ वृद्धात्। कोनो संकल्पना एहेन नै अर्थात् जेठमे दोसन व्रियनक अवशेष नै भेटय।

देखी गुठक पाठ केना सुन होइत अर्थात् ई सुन होइत अर्थात् नि सकनागिसँ, आठन नीप नहठ अर्थात् गुठक छोटकी वेटी नगियाँ। गुठ उपन्यासक आनमन नगियाँ सँ कए भेठ, गुठक वेटासँ कए नै भेठ। कागस जठव्रि कसिदोवाक अन्तसाने वेटा अपनकें मायसँ दून कनैत अर्थात्, मुदा वेटीमे ओ य, ओ गुम नहि छै से ओ दून होइतो मायसँ, संस्कृतिसँ ठा नहैत

अर्छा कोनो आन पुनकासँ ऐ उपन्यासक एतेक नीक आनमन गै नऽ सकैत छथ। गीत गावनिहठ अर्छा नितियाँ, श्वेन पावकि खाह जाँ ओस, पछिया हवा आ मायक यगिनि हएव। "गे यद्दनी ओढ़ि गे छे। "

वाद्येमे वेटी आ वेटीमे अगत छैह- छौड़ी असकने कपूण घनऽ कपूण गाछी दौड़ैत नहऽ छऽ। छौड़ी आठ वजे घनऽ सुनछे नहै छै।

आ श्वेन अवैए पुठिया कनसियोवाक पुनुप, ओकन ऐछी। "गे यगिहै छहि नऽ यीगह छे। "

की ई हेछी अहाँ छुटियिन्स जोगमे गै दैजै छए, सगले ई हेछी भेटत। मानव समाजमे, प्यास कऽ पुनुप पातमे।

अपन कथा-कवित्तापन अपने समीक्षा कऽ आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दृष्टवतासँ आयत अर्छा ऐ एकमात्र आ पहिठि शब्दसँ हमना वनिष्पन्ना अर्छा आ तकर गदिन हम मैथिलीकें देठ सुठे-पोरजगिक वनिद्ध्य "वदित" ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे दैजैत छी। वय्या आ महिषिक संग जालिनहँ गौन मैथिली वनाह्मास-कन्मास कायस्थ पाठक आ ठेपक जुटतह से अद्भुत छथ। हमन ऐ गपपन देठ जोनकें कछि गोटे (मैथिली) साहित्यकें प्यासुति कनवाक प्रयास कहलाह मुदा हमन प्रामथम्यक मैथिली अर्छा, मैथिली साहित्य आन्दोलन अर्छा, ई भाषा जे मन जायत तप्यन ओकन उनाइ नूनमे वैसठ दृष्टव्य सम्पादक-कविकथाकान-मथिलि नाप्य आन्दोलकना आ समाचारक की हेतहलि सुभाषयन्द्न यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ ऐ नूनमे हमना आन आकर्षणित करैत अर्छा आ एतऽ ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अर्छा जे सुभाषयन्द्न यादवजीक अक्षिण कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ छऽ उगातान आवा नहठ अर्छा आ ई घटना मैथिलीकें सबठ कन से आशा अर्छा।

आव आउ सुभाष यग्हन प्रादवक सगटा मूठ नयनाक वेना-वेनी पाड कनी घनदेप्पिया

घनदेप्पियामे ३५ टा ठवुकथा अछी ऐमे दसम गम्बनपन 'काडक वगठ ठोक' अछी जे गौमा-दसमाक वहिन ब्रह्मिष्ठ पनीक्षा समितिकि पाठ्यक्रममे गठप गुय्छ कथा संग्रहमे छथ आ तँ ई कथा सगसँ वेशी ठोकपनिये नहथ अछि, सगसँ वेशी ठोक एकना पढ़ने छथि, 'घनदेप्पिया' कथासँ सेहो वेशी।

पुनकासकीय मदनेश्वर मशिन्, अध्यक्ष मैथिली अकादमीक अछी ओ ठियै छथि जे ओ जाहि वृत्ताक ठोकक सुप्-दुप्, आशा-आकांक्षा, उदासीगना, आक्रोश एवं सामाजिक, आर्थिक पक्षभूमिकि यतिनास कप्रथम अछि से एम्पन तक उपेक्षति जेकाँ छथ आ ईहो जे हनिक कथा वहुन मान्मिक, शैली सहज एवं स्पष्ट तथा भाषा सगठ तथा सगक हेतु वोद्यगम्य नहै अछी।

१

अभाव (१८७१)

ठेप्पकक नयना ठप्पिवाक, कवितिकँ कएक नहसँ ठप्पिवाक पुन्यास। सुभाष यग्हन प्रादव ओना तँ कविति गै ठप्पै छथि मुदा सन् १८७१ मे ठप्पिठ पुनस्तुन कथामे छोट-छोट तीगटा कविति ठप्पि गेथ छथि जे साहित्य अकादमी पुनस्तुन पुनपुन मूठ आ अगूदति कविति संग्रहक कविति सगसँ कोनो नहै न्यून गै अछि:-

पहिल कविति

हमन वाँह आ पीडपन

छाओ गेव वधि

वधिवा पाँ छटिक' छाओ छ

आ हम कपैत १६७६

आ वयावक दशिमे

एहि कोनसँ ओहि कोन यनी

गौत १६७६

पाहि कोठिमे गे७६

ओक १ देवाव ययक' छाओ छैक

कोठिसँ नकिथि

भौसम वदथि गे७६

आ हम मनुमसिँ गदी आ

पहाड़क अगहीन दूनी

गपैत १६७६

दोसनी कवति

शवद संग गहि दैठक कहियी

श्यछति सगदुनसँ अछा

વગેળ અત્યંત દુઝામ પહાડ

અસંશ્ચર ૧૬૭૬ હમ

કાનુ પૂંચવામે

૯૬ ટા પાનગામન સંસારમે

ખીવનક આનંદ

તેસન કવિતા

હમન પૂંચ ઓળ' અર્થ

ખાહિ મોડપનસં

શવ્દક અત્યંત

પનવિનિગતિ આકાનમે આવ' ઓળ છેક

મુદા કવિતા એસં આગાં બે વડેકે। તપ્પન ઓ સોયને નહ્ય ખે કાવ્ય-નયનાક
૭૭ તીવ્ન દુઝાત્મક આવેગ આવશ્યક છેક। વ્યંગ્યાત્મક કવિતા ઇપ્પિવાક
પ્રયાસ કેવક મુદા સત્તે આક્રોશ માત્ર ઇપ્પિયકે।

આર- કાઉકે કથાતિ વ્યંગ્યાકાનપન સેહે ૬ ઓળ હેશન અર્થ

૨

અસંગતિ (૧૮૭૮)

कुकी आवाज देठकैक ओकना हाथमे गनाउपनी दूटा कप नाप्यै नहैक।

'आन यू गोइंग टू टैट साइड?'

नवीनकें नामस उठैक- कहैक 'नो', मुदा ओकना भोगमे होइत नहैक जे कुकी ओकन वगय देपिके कप ठस जा कऽ नाप्यै छै कह्य याहै छै।

३

आँयन (१८६८)

आइ छैनै उवेन भैक- डवठ सगनयि। आसनि मास जाँ वह्य रसाग, घन-घन कागय गाय-कसिग। ओकन साँय सेहो कहै छै- वाजान गे भुक्ता आ वैसठ-वैसठ टुकटुक गकैत नहै। सग ओकन सुप्यै आँयनकें ठक्क कनै छै। गे घीया गे पूना, की कनैक। नौद कड़गन गऽ गेठ छैक। ओकना वृद्धकें जोगा गुठसी छैनै पानि ढाँस पड़ैक।

४

अनन मेघ (१८७२)

प गोटै मौजी, शीवू, कामू, देवू आ वणिगन्त। एक्के सगक संगे कथा आगाँ वढैत अछि।

तीन टा मौजी, तीनू मुसहनी, ओइमेसँ एकटा बुढ़िया। नुसनिहिन बुढ़ियाक वेटी। वृद्ध नाम गोछानक येहू येहापन। आठिक अमाव आ ध्यान गै देठक कामस दुनू सगन दूठि नहै छैक, शीवू, कामू आ वणिगन्त ओइ दिसि गकैत छै। घनक हगड़ा, पानि सेहो नहै जकना दिसि बुढ़िया संकेत कनै छै।

पाँय आगाँ मेघ दिसि वढि गेठ।

शेन आगू एकटा वूढ़ ठोक भेटवै, . एकटा मास्टरनीक जासूसी कऽ घुमै छै।

आगाँ एकटा कनकिकी अथवायसू मौगी। मौगी छपपावठा पधिनका साड़ी आ ठाठ वठाउन पहिने छै। एकटा पुनुष संगे एकटा कोठिमे यै गेवैक।

टनेनसँ एकटा पनीवान उतरैक, तीन-यागिटा एकतुनपि छौड़ी सभ एककोटा नीक गै छैक! - कामू कहैकैक।

अहाँक आस-पास की सभ गऽ नहै अछि के की गोजगान कऽ नहै अछि, वेशी ठोकै ३ गै वूढ़ नहै छै।

५

एक टा दुःखान्ता कथा (१८७७)

सुगमिक पानिअनऽ गेठ नहै, ओ दसिन संगे सम्वन्ध वगवैए, गठानिहै छै। कछि दनिक बाद शेनसँ सभ कछि सुनू गऽ गेठ। पाप आकिकोनो पाप गै, दुःखिया।

६

एकटा पुनयोग ओहनि (१८७०)

ओ दू घासूटासँ होटलमे बैसै कोनो गनिमय ठेवासँ असमन्थ दू वेन याह पीवा युक्त अछि। शिक्षा, गाजनीति, कक्षा, वेकानी आ वृहत् नास सामयिक पुनसंगक यन्याक सूत्र कागसँ गनिगत टकनाश छै। जेविमे वीसटा पार होयव भति आऽ आगा देगे नहैक। सासुन जायन आ पार भाजान जाड़ मास छोड़ कोनो मौसममे ओ दनिमे सासुन गै जाश छै। ओकन सासुन पूना एक्के कोठिमे नहै छैक। से जाड़मे दनिमे छापन बैसै नहै सकै अछि। सासु हनिपदेशक मोटनी ठऽ कऽ बैसि गेवैक।

७

एक टा सम्वन्धक अन्ग (१८७६)

जेठ सुनू पुनदीप, नागर्गो दगा आ वपिठ- जे हानौ से कवाव पुएतौ, कवावमे आठ टाका से 'हम' युपे नहथी, पाइ गै छठगही पुनदीप आ 'हम' एक दसि वपिठ आ दगा दोस दसि। वपिठ दगाक ववाय- खुमेसुड छठ, ओकन वयवहान मुदा ववाय- खुमेसुडक हिसावे 'हम' के वयिगि आ अगनोआन ठाठगही।

८

एक दीनक घन (१८७३)

ट्नेनक आस, ट्नेन कयन पुणतौ, आ जयन पुणतै तँ आउटन सगिनपन नुकागिठै।

छोटी ठाइन आ कयनो काठ वड़ी ठाइनक ट्नेन- गाड़ीमे ऐ ननहक घटना होइत नहै छै अछी। वसमे तँ कमसँ कम पना यैत नहै छै जे कोन कामसँ ओ गढ़ अछी, मुदा ट्नेनमे नै। नकने मनोवशिष्टेषाम कए जेठ अछी।

९

कठपति मनुष्य (१८७०)

पानि-पानी सम्राट, ससुनक हाकपन पानीक जायव। ससुन द्वागा टाका दस तँ देव मुदा घुमेवाक अवयगिगिधानि केठपन पानि पानि हएव। आ पानीक कहव जे जँए ओ तँए सम्वन्ध आ जस पानी मनि जाय तँ सेन ससुनक संग पानि कोन सम्वन्ध वाँयत। की अहाँ हमन वहीनसँ कस ठेवै वयिह?

૧૦

કાઠક વનઠ ઠોક (૧૮૭૬)

એ કથા સંગ્રાહક સત્વસ્રેષ્ઠ કથા। નામીક વૃક્ષક ખાપ્પવ, ઘનખસૂસીક પયાસ ટાકા ઠેઠ। ઓકન વેટા વદનિયા છે કાઠક વનઠ, માનિખેલોપન એકો ડોપ નોન નૈ ખસૈ છે, આંખિયસઠ, ઘાતીક સઘટા હાડ ખાગઠ, કમ્મે વાખૈ, ખેલેવો નૈ કનૈ, તેના ઘસ કસ નાકૈ ખોના કછિ મોન પાડૈન હો। મુદા ખખ્ખન નામી નાનકિડ એઠે નં ઓ કાઠક વનઠ વદનિયા પૂછૈ છે- 'અંપ હૈ વાલૂ, કખ્ખન એહક?'

- વાડ હૈ, ડાડગિઠહક। આવડ આવડ આગિઠગ આવહ। હમ નં અખ્ખનિયે એપિ વેટા।

- સાંદે કાપિક નૈ એહક?

ઓકન એ પનસૂનપન વેલેવાઠી આ નામીકે ઠગાઠેક ખોના સઘટા દુખ-સંગાપ મેટા ગેઠ હો। ઓ દુનૂ દનિ ઘનમિ પહિલે વેન મુક્ત ઘસ કસ હસઠેક।

૧૧

કોનો પાપાપન (૧૮૭૪)

પનદેશીકે યાનટી વય્યાક માપ્પક આ ઓકન પાત્રીક સન્દેશ આ ડઠહનક યાટિડી।

૧૨

ગાળખોન આ મળમુડન (૧૮૬૮)

વેયગીક સાસુનમે સગ ઓકન દુછાકે અવાન કહે છે આ ઓકનો સગ ઓઠ સગ વોઠ સુગવૈન છે, વેયગીકે કહે છે ગાળખોન આ ઓકન સાંપ્રકે મળમુડન।

૧૩

ઘનદેખ્યા (૧૮૭૪)

ટાશ્ટઠ કથા। ગાદીશ પ્તસાદ મમ્મડઠ સેહો ઘનદેખ્યા ઇપ્પિઠ્ઠ્ઠિ વ્રદિહમે ૬- પ્તકાશિતિ મેઠ આ ગામક ખનિગી (૨૦૦૮) કથા સંગ્રાહમે સંકલિતિ મેઠ।

વમિઠા, સત્તમ સાઠ ઇઠે, દેખ્પઠાસં મુદા ગે ઇઠે છે, મુંહ-કાન સુપ્પાપ્પઠ છે। ઓકને દેખ્પેઠે ઇડકિવઠા સગ આપ્પઠ છે, કમ પ્ત્યામે સગ કાળ હેર છે। ઇડકી પસન્નિ પડે। ઇડકા ડનેવન ગે ટાકપન પ્પઠાસી છે। ઇડકી પસન્નિ પડે ઇઠે। ઇડકા હેપેમે કઠકાનાસં ગામ આપ્પઠ છે એપ્પન તુનને સમાદ પડાકડ મડૈનાર પ્ત્યાક ઘન ગડ ડોતે। ઇઠાસં દસ દનિ પહિનિ આવીડોતે, ખનિકા દેખ્પડ કે હેતે, દેખ્પેઠે।

૧૪

યેહનાપન ખમૈન કુહેસ (૧૮૭૨)

પ્તોટૈગોનસિટ (સૂત્રાયાન) આ ઓ વાઠકિ। 'નાતિકેવાડ પ્પુઠે નાપ્પવા।' સૂત્રાયાન કહે છથા, મુદા કહિકડ વસિતિખાર છથા।

'કેવાડ પ્પુઠે છેઠેક, કુકૂન ટુકાખરૌક નાપ્પન?'

'પ્પુઠે છેઠેક।' પ્તોટૈગોનસિટ (સૂત્રાયાન) કે ડોના વસિવાસે ગે ગડ નહૈ છેઠ્ઠ્ઠિ

૧૫

યૌવટણિ (૧૮૬૮)

પુનૌટિગોનસિટ (સૂત્રાયા) હોટમે વૈસથ, મૂખસં માથ યસ છેને છગ્હા ગામ
 ખાર છથા, કાકાક અગા ખસિસા- તીગ માસસં પાછી નોટણિ પાસા અછા
 માતક આંખાં નૈ દેખક અછા પુનૌટિગોનસિટ (સૂત્રાયા) કૈં નામસ ડૈ
 છગ્હા- સોક ખગમાકડ ઢેનો કડ દેને છથા આ આવો સંપ્રમ નૈ કનડ અવૈ
 છગ્હા કાકાકૈં હોર છગ્હા ખો પુનૌટિગોનસિટ (સૂત્રાયા) કૈં ખૂવ નુપૈપ્રા
 છગ્હા, ઓ પાર મંગૈ છથગ્હા આ પુનગકા પાર માદે કહે છથગ્હા ખો પટુઆ વટાર
 કપ્રને છથા, વેયકિડ હુગકે દસ દેથગ્હા ના દસ ટાકા માંગૈ છથગ્હા મુદા
 પુનૌટિગોનસિટ (સૂત્રાયા) નં પારક અમાવમે દૂ-દૂ સૌંદ મૂખથ નહિ ખાર
 છથા વિગિ ખપ્રને વદિ યસ ખાર છથા, કોનો સંગી સં પાર મંગૈ છથા,
 પહિને ઓ દેગહણિ છગ્હા, યનણિ આના દેવા છેક કહેન છથા મુદા ઓ એકો
 પાર નૈ દૈન છગ્હા દોસન સંગી પ્રહુગ્દન, એક ટાકા દૂ વનખ ધનિ નૈ દસ
 સકથ છથગ્હા, ઓ કાને દસ યથા ગેઇગ્હા તેસન કાઠિયાના મુદા ઓહે નૈ
 કહે છગ્હા, શ્વેન હોટ, વહુ પહિલિકા પાર વસિન ગેઇહેનગ્હા, મુદા ઓનાડ
 દોસન છોડા વૈસથ અછા. કોક આનામદેહ યૌવટણિ અછા

૧૬

ખાસૂસ કુકુન આ યોન (૧૮૭૩)

યોની, થાગકૈં ખવનિ આ મૂખટાયા, ખાસૂસી કુકુનક ગામપન દનોગા પાર
 મંગૈ છે, કુકુન યોનકૈં યસ છે. સપિહી ૫ સપ્ર મંગાઇકૈં આ તીગ સપ્રપન તપ
 તશ્વસધિ મેઘે. મુદા કુકુન?

૧૭

હાઈ (૧૮૭૩)

धनकटनी, आरु गहायुग ने मेथे नामाकेँ गँय जगौन उगाय उगैक। गाणा
 दुसधयेथिमे उमाहा यागिये यथिमे उऽ कऽ उड़िगैथै। वनिदुआ कहै छै।
 दुसधयेथिक वणिगेस, मौगी-छौड़ीसग दनि आ गनिसुनको कऽ कोरुआ
 वछैत छै। मरदसग दनिमे गाणा वेथेमे नहाऽ आ छौड़ी सग नागकिऽ।
 छनिनो भाय दनोगा पहुँचिगैथै, पयास टाका यट सनि उऽ छेउकै। जट्टा
 वाठा गाणामे नसिँ वड़ जठ्ठी यङ्कै छैक।

अमेनिकोमे अशुनीकन-अमेनिकनमे उगाक व्योपान होर छै, की कछि
 समानता देखा पड़ै?

१८

८पि (१८७४)

होटमे ८पि देठापन मोजान आ नै देठापन?

१९

७१ (१८६८)

उनक मनोवर्जिमानक वसिष्ठेपाम।

२०

गीत (१८६८)

वठवावाथिक अंगनाक प्यसिसा। कोनो डाकूटन ओकना वनाहि नै कहौक मुदा
 ओ वनाहि अछा। जहिये ओकन दुनागमन मेथैक नहियेसँ भूग उगाऽ
 उगैक। 'देपैत छहि कुसुमाकेँ। ओकन पनाग कहियो हेवहि गोनासग?'
 से कुसुमा वठवावाथि मऽ गेथि। यागटि वयया, मुदा सोरनी-धनमे सग वेन
 महुआक नोटी आ साग भेटैत नहैक। दशिन पाइ नै दएकै तैयो सासुकेँ

तीनूथ कनेतै, ओकना देया देतै। पुनोटैगोनसिट (सूनाया) सँ कछु टाका
मांगै छन्हि, पुनोटैगोनसिट (सूनाया) क हाथ छूछ छन्हि, पाइ गै भेटै छै।
मुदा ओ वैजगाथणी जेवे टा कनैक। एक-दू सेन यूडाक दामे की होयनैक,
गेडाना दअनिकें देया देतै। मुदा हलहल-पटपट कऽ कय जोगाडीक गै होशै
तँ ओ गै जेथी

२१

धुंभमे घटना (१८७०)

कथाक पहिठि दोसरा तेसर स्थिति, श्वेन कथा संयोजकक दूटा समाद। आ
कथाक अन्तमि स्थिति।

पहिठि स्थितिमे भावकें छुवैत वा गै छुवैत पुनवा-पछवा, ब्राह्मणस टनिहा
मकान, गुणमोहनक गाछ, घास, दूनी।

दोसरा स्थितिमे साँह, वगडाक प्योना आ मकडाक जाठ। पुनाग वनि
मगधक कागया। गनीदिनि श्वेन उघठाक वाद कोठिसँ एक आदमी वजान
जेठ छथी।

तेसर स्थितिमे एकटा महिषा जे कथा शुरू होइसँ पहिने कोठि छोड़िदिने छथी,
ओ जँ आविजोतीह तँ की-की हएन से सग।

अन्तमि स्थितिमे पहिने दूटा समाद- पहिठि श्वेनसि गनसून पुनकास- माने
पनौछ आ दोसरा गनसून वहाल होश मगन वय्या।

आ कथाक अन्तमि स्थितिमे सड़कक ठेठ 'बेसूया सड़क' कहठ जेठ छै,
एकन ठामनदह होइ छै तँ शाशन। पएन सुग्ग आ गानी मुदा सांत्वना ठेठ
वाक्य सगक टुकड़ी वनि-वनि आयव। मुदा पुनोटैगोनसिट (सूनाया) कें
याहियेनह गीड़, शजोत। मुदा अदह नसना आविजागव बेकान।

शेन सुप्पायउ धानक वमिव, नकन मतिपापन गढ़। यानू दसि कुहेस, ने
गाम, ने ठोक, ने पुनकास, ई सन सन दसिमे थोड़े-थोड़े दूनपन छै, मुदा
एप्पन से सन वृत्त, अप्पन युग्घ आ शून्ध मन्तु सन।

की अहाँकें 'वेठठि शुभन गोडो' (सेम्पुठ वेकेट) भोग नै पड़ेए?

२२

धुककड़ (१८७०)

वस पुणवाक समय नै वृहठ अछा। वस आर नानिदिनि एही गम नहौक?
कंडकूटनकें सन डकठि छै, पुनोटैगोनसिट (सूनयान) सेहो। वड्ड कम
ठकित वुक होइ छै।

मुदा शेन ओ कंडकूटन पुनोटैगोनसिट (सूनयान) कें नै भेटै छन्हि, कपिना
नोकनी छोड़िने होइ।

२३

पनयिध (१८७१)

नेताजी अपन घन यधवाक आगुनह केअप्पनिह, पुनोटैगोनसिट (सूनयान)
कें वृहठग्हिणि ओ हुनका भोजन देअप्पनिह मुदा संगी संगे जप्पन ओ हानि थारि
वदि। मेघा न संगी नाटक कम्पनीक साँह वध सो देअवाक जहिद कयग्हिआ
ओरस नेताजी

२४

पेट (१८७१)

कथिSS न!, ओ नीडमे हेना जाइत अछा। नीन घामटा पहिने वनियकें हाक,

મુદા ઓ ધ્યાન ને દેને છતાં મૂખ હોટમે ઝૂંડી દસ દાંડે, મુદા પાનિમાન વાળિપાવે છો। દનિક અપેક્ષા મોહવા સાળા છે। દેવાઈસં સટા નથ કાર્યો પુણે છોડિને છે, હવા સહા ને હેરા અર્થા, મુદા ફેલે વુહા અર્થાને મોનમે વેસી હવા હૈ।

૨૫

શ્વસની (૧૮૬૮)

મેઘવાણી કાકો, સપ વપ્પસં વેસી ઝમે, આંખા કમળો (પ્રાપ્ત: મોતિયોવર્ણ), પાણી છાહે ટાંદેપેન છોહા કાળકિ માસક વમિવ અહૂ કથામે અર્થા અગ્રહને યગકટની હેર છે, ઓરસં એક માસ પૂર્વ માને અગ્રહનક વાદક ૧૧મ માસ, વડ્ડ કર્ણ, પૈસાક ટાંટ। પ્નોટૅગોગસ્ટ (સૂત્રયા) ઇગા પાર છર્થા, તમાકુઠ ઇઠ યુગા ઇઠ કાકો સોન કડ નહા છર્થા, મોનેસં કાઠીઠ કડ નહા છર્થા દૂ-તીન દનિસં પાણી યુને-યુન મુકે છર્થા, યુન નહાૈક તપ્પન ને કાર્યો દૈૈક। પ્નોટૅગોગસ્ટ (સૂત્રયા) કનેક યુન આર્થા દેઘર્ણ, પૈની યુનાર્યો દેઘર્ણ। માઠકિ (વેટા)ક પ્પોળ કનૈન છર્થા, સુપૌઠ પારવઠા નૈ, મુદા ભૈ છે, માથ શુટા નૈન છર્ણા પુનોહુકે હેર છર્ણાને શિકાર કડ નહા અર્થા, સહા ને કડ સકર્ણા મુદા વુહાકા કાન સેહે કમળો છે, સુર્ણાને સકર્ણા અપ્પન મનિને તં મોળો-માળ કોના હૈ, વારસ ટાંદેટા છે- પ્નોટૅગોગસ્ટ (સૂત્રયા) કૈ છે છર્ણા કાકો તીન-યાનિ દનિ ગનદનિ શ્વસની ઇગોને નહાર્થા, માહુન સેહે એક દનિ પેઠર્થા તર્યો ને મુરર્થા, શ્વસની કસે ને ગેઠેક તં કેના મનિર્થા।

૨૬

શુકળા (૧૮૭૦)

પ્નોટૅગોગસ્ટ (સૂત્રયા) મામાગામને છર્થા, મુદા હુનકા ઓન દૂ નડક વ્યવહાર વુહા પાર છર્ણા સ્કૂઠસં આર્થાવેનહ કનવાક વદવા દોઆર્થા

प्यनडैग नहवाह। मौजीकें गाना पढ़थग्हि तँ ओ हनिका वुहैथपनिह जे ओ छोटकी मौजी गै छथि एकके याठमे मुँह वाठ कऽ देखनिह। गानी वयवथिनिह मुदा हुनका काग-आँपि दुगू प्याप छथग्हि। सांस्कृतिक मस्तिष्काधिर शून केथग्हि आ व□थपनि उड़ि गेथै। व□थपनि भेटथग्हि तका वदवामे गीन दनगन शुक्का कनिथग्हि। नवनिदने कछि शुक्का भेटथै, जेवामे नून छथग्हि, ओ गै गछथकन्हि तँ ओकना पठिथग्हि। वावू भोग पड़थग्हि। गानीकें पुछथपनिह- वावू कहयिओ औथनि?

२७

वाँह (१८६८)

साओग मास, थाठ कीय, दुआनी अउगा सगाने, याथि सोहैत। दुपणीक पहिठि साओग आ तपनी ओकना सासुनेमे छोड़ि देथिए? दुपनी मायकें नामपुनवाथि पुछथकै। उढ़ वोधा जमीन वाँयथ छै, सेहो दन-दियाद हड़पऽ याहै छै। पतिके अवसाग, दुपणीक वयाहक हंस्ट- अनी मनी के होपड़ि, सोता माइक प्योपड़ि नापिथैह- नापिथैह। यान हटाओठ जेठ, दुपनी माय मुख पड़ै। संयोगसँ दुपनी पड़कऽ आयथि, ओहि दनि साँहमे। नामपुनवाथि आग माउग ठा तका पुनयान केथनि- आग आगे होइ छै- कहथकै- यास दी वास गै दी। दुपनी वदि नऽ जेथि मौसी ओहिगिम दुपणीक वड़ु आदनी गाव होइ छथै, मौसा- मौसीक स्वागत गावकें ओ गै वूहँ सकै। मुदा उड़गती उड़ऽ गथै तँ मौसी पुछथकै जे सासुनसँ कयिओ कएि गै अथै छै।

- ओ सभ हमना वाँह वुहै छथी

मौसा-मौसी ओकना जमीन छपिवा छेथकै, ठेक पुछतै तँ कहि दैतै जे वयाहमे प्यन्य नऽ जेथै, वयाहक प्यन्य तँ वुढ़वे वनकें ठातै उपनसँ पाँयसय नुपैय्यो दैतै।

२८

वेन-वेन (१८७८)

हन्निश आ न्दुवन्श श्रुसूट क्ठासमे आया दूनीसँ वेशीक टकिट कटा छेने नहय।
आव दस टा टीशन आन पान कनवाक छै। मुदा हन्निशकेँ टीटी पकड़ि
छेकै। ओकना जहँ नऽ गेथै, मुदा एक दनि न्दुवन्श आवकऽ ओकन
पुनःमाग गनिछेकै।

२८

महिमा (१८७५)

भोटगि कनै काँ पुछसि पकड़िकऽ सुप्पदेवकेँ छऽ गेथै जेथ। एक मासमे
छुटथै, भोसामे पकड़ायथ नहै।

ओ थोड़े दनि नकसथि नहै आ सनकानी वाग्ह काटवाक कामससँ पहिनिहयि
आऽ दनि जेथमे छथै।

भोटमे कनेक गोटे सँ टाका डकने नहै।

छड़ा-हड़ा पूव होइ, गै ककनो नँ नकटयिवाथिकेँ धुमधुमा दै। जेथसँ गै
कछि नँ यानसिध केन कपड़ा छऽ कऽ धुनथि होतै।

३०

नामगहिन (१८७५)

भेसक हेथपन नामगहिन छैजावाह जामिने कोनो सूनीकेँ पुनःमास दू सय
टाका पडवैत छथ। पुनःमागसिध (सूनीयान) सँ हेठुछाँ मांगिदिस दनिक
छुट्टीपन गाम जेथ, दस दनि नऽ गेथै, साँह यनओ आवसिकै, हेठुछाँ

ऐ एोक यगिगति नै हेवाक याहि।

३१

अश्वि (१८८०)

मसिण कपूतसँ अश्वि ऐव मनोणकें गानी पड़ि गेऐ, काम दवाकनकें ओ
जने छथि, ओकना संगे मनोण किए गाड़ीमे यढ़ि गेऐ।

३२

संकेत (१८७४)

नम नम्वन गान्धमे छह टा सीट छै। ओकना उड दहकि तँ वेड वछि गहिँ।
ओना क्यो सूनिहौक।

३३

सहसा दुपहन गाना (१८७२)

सुगाष, महापूकाश आ सुकाग। सुकाग मोड़सँ गाय यहेन अछि,
सुगाष नमिसयहिन अछि। महापूकाशकें ओक सोयय नै पड़ै छैक।
सुगाष कोनो छौड़ीक पीठपन जड़ै सगियेटक टुकड़ी शेकय यहेन अछि।
तीनूकें गानमि दुमवाक ऐठ पुठिसि पकड़ि गेन अछि।

३४

सकियेट (१८६८)

सकियेटक गठव, नोकनसँ मंगैत अछिमुदा ओ तँ माथिक अयकट्टी नकिथि
कऽ पविन अछि। आ एकटा पनयिनि, कहि यगुनार आ विसि अठिठन
भेटि गेऐ।

૩૫

સુનંદા (૧૯૭૨)

પ્રોટેગોનિસ્ટ (સૂત્રધાર) આ કશીની માથ પહુંચા શીઠા આ ઓકા
 રંગીનપ્રિન પાળી ઇગા। કો રંગીનપ્રિન સંકાપ મેઠ શીઠા આ કશીની માથક
 પૂના? શીઠા કાપે મેહામે નહ્ય ઇગા। વેની ડેઢ વનપ્પક, એકટા અવોય
 વચયાક દૂય આ વસિકુટ છોળાકેં ઓ કોન પૂનાશિય છેવડ યાહૈન અછા, સે
 યાટિંગેમે પ્રોટેગોનિસ્ટ (સૂત્રધાર) પઢને નહ્યા। મુદા ઓનડ રંગીનપ્રિન
 વેવી સંગે ખેલા નહૈ અછા।

રંગીનપ્રિન ધૈમ્પ વનપ્પસમે કાળ કાળે અછા। કશીની માથ સક્સીટી વાટક
 વધ્વ પ્રોટેગોનિસ્ટ (સૂત્રધાર) કેં પકડવૈન વદિ હેર છથા મુદા આગાં
 ગેલાપન પ્રોટેગોનિસ્ટ (સૂત્રધાર) કેં પાળા યથૈન છગ્હાપે ઓ સૂપૂળ છે, સે
 પ્રોટેગોનિસ્ટ (સૂત્રધાર) કેં ઓકા વદઈ અનવા છે કહે છથાનહ।

ઘનદેવપ્રિયક કથા સગક થીમ દેખૂ, વદનપ્રિયક નેપ્પા યાત્રિ દેખૂ (કાઠક
 વગર, માનિપ્રેલોપન એકો ગેપ ગોન મેં પસૈ છે, આંખાધિસર, છાતીક સગટા
 હાડખાગર, કમ્મે વાપૈ, પ્રેલોવો મેં કાપૈ, તેના ઝડ કડ તાકૈ પોના કછિ મોન
 પાડૈન હો।), વાવિહૈનન સમ્વન્ધક કથા, પ્રોટેગોનિસ્ટક ગનીવી,
 પ્રેખનપ્રિયા। કાક ટા કથા મેં સુગાપ અવૈ છથા આ એકટા કથામે સુગાપ,
 મહાપ્રકાશ આ સુકાળ તીનૂ [સહસા દુપહન નાળા(૧૯૭૨)]।

નિતિ નવર નાપકમર (નાપકમર મોનોગ્રાફ)

[નાપકમર યૌધની મોનોગ્રાફ (જાનવરી ૧૯૮૭ મેં સાહિત્ય અકાદેમી દ્વારા

गणित, यथा पत्रिका मे दिसिम्बर २००५- मास २००६ अंक मे आ २०२२ मे "गति गवत गाणकमठ" नामसँ प्रकाशित]]

गाणकमठ गी (वनिविध) क प्रकाश काल मे पडैत छै, से कालक प्रत्यक्ष
 गड गेथै आवा। मुदा से एहन कृत्य छैक से अहीक समादमे संपष्ट भेथै।
 ते एक वन्यवाद अही केँ दैत छी गणेश गी। ओगा वासावकिता गँ ई गे
 सम्प्रदास पढवासँ पहिने भोग' वनिक्ता' गड गेथै। गै पढा भेथै आगाँ। गीक
 केथैहँ गेट पन दस कड। समकाषीन आ आगा पढी सेहे वृद्ध ओ ई कानी-
 कथा। हमना सग लोकक वडिभवना देख्य गे पूना प्रकाश अपन अगुण-
 मति- अगुण सँ पडैत अछी। से एहन ऐतिहासिक दुर्घटना गड गेथै
 अछी। अगादायी प्रकाशित हम कह्य सँ गै। मुदा साहित्यिक पीढीक
 गौकिता सँ "अपनाय बोध" सहवा छै अगसिपन छी। उपाय:- ससंगेह
 गंगेश गुण ११ सितम्बर २०१२ (ब्रह्म ११७)

गाणकमठ भोगोनाथ साहित्य अकादेमीक मैथिली वनिगा द्वाला मोहन
 गानद्वाणक कनिदागी आ गाणमोहन हा केन सहयोगसँ अस्वीकृत भेथै छै
 सग पणवनी १९८७ ई मे आ १२ कृत्य छै गाणमोहन हाकेँ साहित्य
 अकादेमी द्वाला १९८६ ई क मैथिलीक मूठ पुनस्तकासँ पुनस्तकृत कए गेथै
 सग १९८७ मे। संगहि ओही कृत्यक सम्पादन छै मोहन गानद्वाण
 साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामसदान समितिक सदस्य वगाओ गेथै
 छै।

गति गवत गाणकमठ (गाणकमठक जीवण) समन्पति अछि- यन्प्रकाश
 संगोष कुमान कुन्दन सुवर्णा गतिविन कृत्य नाथे नाथे ।

गति गवत गाणकमठ - दणकथाक नायक

नाणकमठ यौधनी (मामीगुह्नी गानायाम यौधनी पुनसर्द्धि सुष्ठु वाव) १८२८-
१८६७, महर्षि, सहनसा। १५गा- आदि कथा, आग्नेय, पाथी सुष्ठु
(उपग्यासी), सुवर्णांवा (कवर्णा संग्रह), उठका पाग (कथा संग्रह),
कथा पनीग (कथा संग्रह सम्पादन)।

शूकम्प, वंगाधि संग्र्यासनि आ नासविठाक यति नाणकमठक
आत्मवक्तृव्यपन आयागि अछा १८३४क शूकम्पक सम्पादि, धनी
कड़कड़ाथ आ हुनकन माय वाव अपन जागक यनिगामे ठागि ठेठा हनिका
छोड़ि देवपनिह।

शेन ओर शूकम्पक थोड़े दनि वाद आयठि एकटा वंगाधि संग्र्यासनि, कोनो
नीत्यमे हुनकन माँ सँ ओर संग्र्यासनिक गेट छठनी हुनका ओ अपन संगे
यैठे दे कहवपनिह आ ओहो जाय याहै छथ।

एकटा नासविठाक यति देवपनिह किष्ण आ कएकटा गोपी।

नाणकमठ ऐ सग गपकँ हवा देठनी सग अपन वक्तृव्यपन ठेठ व्रियायाना
ठेठ कोनो वहनगा नकै अछा नाणकमठ ई मान्केटगि स्टाटाजी सेहो छथ।

गति गवठ नाणकमठ - जीवण

कोनो प्यास नै, वएह पहिठि पानीमे वय्या नै, से दोसन व्रिवाह (नामपुन हवेथि
नाणकमठक माय) मायक मन्त्र आ पतिाक दोसन शेन तेसन व्रिवाह हनिकन
उमेनक युवतीसँ। नाणकमठ अपन पतिा मयूसूदन यौधनीकँ ठाठ कक्का कहै
छथ। तेसन व्रिवाहक एकटा पुत्री मदाठसा जीवति नहवपनिह, हुनकासँ
नाणकमठकँ सुगेह छठनी पतिा आणन, उपदेश आ मानपिठक मायपनसँ
व्नाहमास संस्क्रामे दीक्षति केवपनिह। नाणकमठ कँ मैटनिक पास
कनवासँ पुत्रे जीना आ हुगासपशतिक सगटा श्वेक कंडस्थ गड
गेठनी पतिाक टांसस्थिक संग एगड सँ ओगड दुमैठ नहवथि,
गवादासँ पटगा एठा वीएक ठेठमे गामाकन, पतिा ४४ टा नषिय मन्

દેવપ્રિય જો કી- કી ગૈ કનહિ ।

પ્રેમ સમ્વન્ધ- પહિવ પ્રેમ સમ્વન્ધ પટનામે સોમના હા સંગે । એક વેન આર કમમે સેવ, સેન વી કમમે એક વેન સેવ । ૧૮૫૧ મે યાગપુના (દનંગા) ક સશકિન્ના સં વ્રિહિ । વી કમ કેન વાદ પદાર સમાપ્ત ।

વ્રિહિક વાદ કષ્ટિ દનિ પટનામે કોનો અપ્પવાનમે પૂનશ્ચનોડન, સેન સચિવોઇમે ઓઅન ડિવોળન ક્ષાત્ક । દનંગા, પટના, દિવિ, મસૂની, સેન કષ્ટકાના । ઓઅરિયેસં મસૂનીક સાવત્રિની સન્માસં પાનાયાન, ૧૮૫૬મે હુનકા સંગ વ્રિહિ, સેન સંતોષ ગામક સૂની (પ્રાપ્ત: સાવત્રિનીક મતીખી) સં પ્રેમ, ગન્માવસ્થામે સાવત્રિનીકેં છોડિ રે જુઠાર ૧૮૫૭કેં મસૂનીસં પચાપન । સેન પટના, દનંગા આ ગવાદા તીન- યાત્રીમાસ યત્રિ આ તપ્પન કષ્ટકાના, હનિદો ઇપ્પક છેદીવઇ ગુપ્તક ગામે પ્રાત્રીક યટિડી ઇસ કસ । વાવૂ સોહેવ યૌધનીક મથિથિ દનસગસં જુડિ ગેવા । સેન માનત્રિ પ્રમાણપીડ (કષ્ટકાના), પત્રી સંગે છઇથિહિ । સેન ગોકની છોડિ તાગંગ વહન કેઇઠહિ મુદા ઓ વન્દ મસ ગેવા । છઠો વપ્પક કષ્ટકાના પુત્રાસમે વહન સાહત્રિ ઇપ્પિવગી સનીન દુવવ, પેટ પન જો ઇન્પ છઇઠહિ સે કષ્ટકાત્રે મે સૂ મેઇઠહિ ।

સેન દિવિ ।

કીર્ત્તિનાયાસ મસિન, ખીવકાન આ હંસનાળ સંગ પત્ર વપ્પવહન હેરઠહિ ।

સેન અક્તૂવન દર મે ઓ પટનામે સ્થતિ મસ ગેવાહ ।

૧૮૬૬, સશિ, દિવિ, મુક્તા, ગીઠ ગવાદાસં મૈંટ કનૈવે દેવપ્રિય ।

વનાસક અઠકા સંગે પાનાયાન, અન્નામિ પ્રેમ પુનસંગ । ગવમ્વન ૧૮૬૬ ક પહિવ સપ્નાહમે ઓકનાસં મૈંટ કનય વનાસ ગેવાહ ।

साम्प्रदायी आधेयक नामवनी सहि एक टा पोस्टकार्डो देव उयागि गै वृहत्तरी, गरै कहगियाँमे मधुकनी गंगाधनीक वक्तव्य छपठि जे गणकमठक बीमानीक इलाज यथीनहठ अछि, ओ अभाव आ उपेक्षाक वहगना कए लोकसँ पार ऐइय याहै छथी। ओ यटिगी छपि किऽ छैनक सम्पादक पुनकास जौन आ मगमोहनीकें सेहो गड़कौठनी। गणकमठ डायनीमे छपिठनि- मधुकनी एम्ड छैन पीपुर्स हैग जोइम्ड हैम्ड्स इग डुटी पुनोपेगोम्ड अगोस्ट नी।

एक दनि ड□ यगुवेदी हुनका कहठकनी जे अहाँक शशिग मे पूनेथी कैंसन गऽ सकैत अछि आ जाँ से गेठ, गप्पन शशिग काटय पड़ि सकैत अछि। गणकमठ डायनीमे छपिठनि- इशु आइ हैग टू कट मार पेगसि, आइ वठि कमटि सूसाइ।

सगसँ वेशी सेवा यगुनीमौठि उपाध्याय हुनू व्यक्तीकें छपनिह, आन्थिकी नूपें सेहो, गणकमठक म□प्युक वहुन दनि वाद यगुनीमौठि उपाध्याय हुनू व्यक्ती आगुमहन्ना कऽ छेठनी। गणकमठक देहाथा हनिके हुनू गोटेकें समनपति अछि। हंसगाण आ आठोक धन्ना देपैछे अवधनिह असुपाठा। गणकमठक यानी गौय पटगामे नहथनिह, नीन गौयकें नोकनी सेहो नहन्हा मुदा एक पार्क दवाइयो अगवाक कष्ट ओ सग गै केठन्हा।

पूग १८६७मे म□प्यु।

गति गवठ गणकमठ - मैथिली साहित्य

गणकमठ एक सय कवनी, नीनटा उपन्यास, इठटा कथा, नीन टा एकांकी आ यानी टा आधेयगागुमक गविग्य छपिठनी। स्वतंत्रगंधामे गणकमठक गवमवनी १८५७ सँ अप्रैल १८५८ धनिकि कठकनी पुनवासमे छपिठ गेठ कवनी संकठि अछि। ओ यानीकें अन्वयायीन हेरनी आयुगिकि गै मागेत छथी। गणकमठ उपन्यास छपिठनि आगुदोठ, पाथनी सूठ आ आदिकथा। छिछि नेक गंगीन पनदा हुनका एमाइठ जोठक उपन्यास छपुजाक समनास कनी।

देवकन्हि नामाथ हा पनम्पनावादी यगितगक कामाँ नामकमठक साहित्यक सम्पूनास शिपिक् कान्मि घोषति कऽ देवकन्हि

वगैत वगिडैत

सुभाषयन्त्र प्राद्वणीक "वगैत वगिडैत" कथा-संग्रहक सग कथामे सँ अघकिंशमे ई भेटा जे कथा प्यसिसासँ वेशी एकटा थीम छऽ आगाँ वढैत अछि आ अपन काज प्यम करि अग्न पुनपुन कएने अछि दोसर वशिषा अछि एकन भाषा। वयनमाक भाषा ओर उपन्यासक मुप्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकात्मक अपन छन्हि आ नर अर्थे ई एकटा वशिष्ट स्वरूप छैत अछि एक दिस कथाक उपदेशात्मक प्यसिसा-पहिनी स्वरूप ग्रहण कएवाक पनपिटीक वनिद्य सुभाषणीक कथाक एकटा सीमति पनमितिमी थीम छऽ यएवाक, भाषाक शिपि जे प्यंटी देशी अछि पन व्याग देवाक सम्मिति कामासँ पाठक एक वर्गकँ ऐ संग्रहक कथा सगमे असोम आनन्द भेटागन्हि संगे-संग प्यसिसा-पहिनीसँ वाहन गै आवि सकै पाठक वर्गकँ ई कथा संग्रह नानास गै कन वन हुनक सगक युक्ति पनषिकाम कन।

कछि भाषायी मानकीकाम पुनसंग- जेना ऐछ, अछि, अरु छ । जऽ काठमे मानकीकाम गऽ नहै छै ओर समय ऐपन व्याग देवाक आवश्यकता नह्य। जेना "जाइत नहि" कँ "जाति नहि" छिओ आ छैन जाति (जा र न) छै पुनगन्सिशनक नानि वनावी तेहने सग ऐछ संगे अछि मुदा आव देनी गऽ जेठ अछि से छेपको कनयिँ-पुनना मे एकन पुनयोग कऽ दिसि देखैत छथि मुदा

દોસન કથા સમયે ઘુનિ ખાંડા છર્થા મુદા એસં ઈ આવશ્યકતા તં સદિય હોરો અછા ખો એકટા માનક નૂપ સ્થાનિ કપ્પ જાપ્પ આ "છૈ" ઇપ્પિવાક અછા તં સેહે ઠીક આ "છૈક" ઇપ્પિવાક અછા તં "અન્નાક 'ક' સાર્થેગ્ઠ અછા" સે પ્નોગન્સાપ્પિસનક ગચ્છિમ વગ્ગા મુદા સે ખર્ધી વગ્ગા આ સન્વગ્ગાહ્ય હુઅય તકન વેગાના હમના વુદ્ધાશ અછા, આખુક ઓકે "પ" ઇપ્પિય જાપ્પ વા "અ" એપન મના ખિગ્ગી ઓવાક સમય મૈ છે, ખો ય્વગ્ગા સદિયાંગ કહેન અછા સે માનુ, ય ય્વંખન થીક આ અ સ્વન, સે એકક વદ્ધા દોસનક સન્વગ્ગામ પ્નોગ અસમ્મવ્વ. આ સેમૈ હુઅય તં પ્નોગન્સાપ્પિસનક ગચ્છિમ વગ્ગા "ગહી" ઓ "ગમી" ઇપ્પિય તં વુદ્ધવામે અથૈન અછા મુદા ગં (અન્નાકિ), ગં (અન્નાકિ) આ ગં (સાકેનાગ્ગ - કાપ્પાનાશિય દાનુમા) મે સં સાકેનાગ્ગ ખો વા પ્નોગ ય્વગ્ગા-વિખિન્ના સદિયાંગ સં વેશી સમીયીગ સદિય હોર અછા આ સે વસિવાસ મૈ હુઅય તં ય્વગ્ગા પ્નોગ સાધા સમક મદના ઇઅ.

"વગ્ગે વગિઠ્ઠા" પોથીક ઈ એકટા વસિષાના અછા ખો સુખાપયગ્ગ દાદવખી અપગ વસિષિટ ઇપ્પન-સૈધીક પ્નોગ કપ્પે છર્થા ખો ય્વગ્ગાત્મક અછા આ માનકીકનસ સમ્પાદકે આગાં ઓ ખોવામે સક્ષમ અછા

સ્વગ્ગાત્મક વાદક પીઠીક કથાકાન છર્થા સુખાપખી. કથાક માય્પમસં ખીવનકે નૂપ દૈન છર્થા શિવિ આ કથ્થ દુગ્ગસં કથાકે અંક ૫ કથાકે સાન્થક વગ્ગેન છર્થા અસ્સાવિવક ઓ સામાગ્ગ ઓકક સંઘનપ તં એ સ્થાનિમિ હનિકન કથા સમયે મેટવ સ્વામાવકિ. કપ્પ દસક પૂનવ ઇપ્પિય હનિક કથા "કાઠક વગ્ગ ઓક" ક વદનપિા સારો સંયોગ હંસૈન નહ્ય. એ કથા સંગ્રહક સગ પાત્ત એને સગ વસિષાના ઓ અછા હંસપીટમે કમૈન-કમૈન સુત્થાક વાદ ઓ કિઝ કોનો પાત્ત સ્થેનસં કાગ્ગ ઓન છર્થા તં કોનો પાત્ત પ્નોમમે પડ્ઠ છર્થા કનિકોમે વખિનેસ સેન્સ છર્થા તં હનિવિસ સગ પાત્ત સેહે છર્થા ખો

उपकायक वदम ससिंठम श्रुंष्टक कायस अपकाय कऽ पाश्न छथि आव
"वगैर वगिडैर" कथा संग्रहक कथा सभपर गहिकी गजनी दौगावी।

कनियाँ-पुतना- ऐ कथामे नस्रामे एकटा वयसि ठेम्पकक परन छानी श्वेन
हुहुनपर माथ नायनिशियनिगि अछि, जेना माएक हुहुनपर माथ नयने हुअय।
नेवो सन कोनो कङ्गान यीज ठेम्पकसँ टकनेउन्हि ई उड़कीक छानी छयि।
उड़की गन्त्रिकान नहय जेना वाप-दादा वा भाय वहरि सऽ सटउ हो। ठेम्पक
सोयैर छथि, ई सीना वनन की द्नीपदी। नावन आ दुनोयनक आसंक
ठेम्पककें घेन छैन छन्हि।

कनियाँ-पुतना पढ़वाक वाद वरह सड़कक यौवटयि अछि आ वरह नेड-
ठाइपर गाड़ी यवैर-नोकैर काठ वाठक-वाठिकी सन देम्पवामे अवैर छथि।
मुदा आव दृष्टमि पनविनान गऽ पाश्न अछि कायक सीसा पोछि पाइ
मंगलहिन वाठक-वाठिकीकें पाइ-देने वा वनि देने, मुदा वनि सोयने आगाँ वढ़ि
जाएवठि दृष्टिकि पनविनान। कनियाँ-पुतना पढ़वाक वाद की हुनकन
दृष्टमि कोनो पनविनान ने होयान्हि? वाठक तँ पैघ गऽ योनिकन वा
कोनो ड्ग काउटेक सभसँ गयिउका सीढ़ी वनन मुदा वाठिकी ? ओ सीना
वनन आकि द्नीपदी आकि आम्नपाठी। जे सामाजिक संस्था, ह्युमन राइट्स
ऑनगेनाइजेशन कोनो प्रेमीक विधिक प्मान्हपर यढ़ि पुनास देवाक
यमकीपर गीयाँ जाठ पसानिकऽ टिपिकैमनापर अपन आ अपन संस्थाक नाम
पुनयानि कजैर छथि ओ ऐ कथाकें पढ़वाक वाद ओर पुनानन दृष्टिसँ काज
कऽ सकनाह? ओ सनकान जे कोनो हॉस्पिटलक नाम वदमि कऽ जयपुनकाश
गानायसक नामपर कजैर अछि वा हान्डगि पात्कक नाम वीन कुँअर सहिक
नामपर कऽ अपन कानूनप्रक शसिनी मानि छैन अछि ओ सभस्यक जड़ि
घनि पहुँचि गव पात्क आ गव हॉस्पिटल वना कऽ जयपुनकाश गानायस आ
वीन कुँअर सहिक नामपर कान आकि दोसनक कएर काजमे "नेड वार मी"

केन स्यात्तु भगवाँ? इ संस्था सन आर यनमिहगसिं वयैत अयवाक आ सनउ उपाय नकवाक पुनवृत्तापिन नोक नै भगवाँ?

असुनक्षति- ट्नेगसँ उतावाक वाद घनक २० मनिटक नसुनाक नागिजोके असुनक्षति नऽ गेठ अछि नकन सयतिन वनसुन ई कथा कनैत अछि पहिने नँ एहन नै नहैक- ई अछि ओकक मागसकि अवस्था मुदा ऐ ननहक समसुया दसि ककनो य्पाग कहँ छै पैघ-पैघ समसुया, उदानीकनस आन कनोक वषिपपन मोडआक य्पाग छै यौक-यौनाहक ऐ ननहक समसुयापन नव दृष्टिअवैत अछि, ऐमे सुटेशनसँ घनक वीथक दूनी नागि अन्वहानमे पहाड़ सन नऽ जाश अछि पुनदेसक नन्काविन कानून-व्यवस्थापन ई एक ननहक टपिपमी अछि

एकाकी- ऐ कथामे कुसेसन हॉस्पिटलमे छथि हॉस्पिटलक सयतिन वनिसस नैठ अछि ओनय एकटा सुनी पनकि मृत्युक वाद कनैत-कनैत पुनयः सुनि गेठि आ शेन ननिन टुटवापन कानय भगवाँ एना होश अछि कथाकान मागव जीवक एकटा सपना दसि रसाना दैत आ हॉस्पिटलक वान-व्यवस्थापन टपिपमी तेना नऽ कऽ नै वनस जीवन्तना देप्पा कऽ कनैत छथि

ओ उड़की- ऐ कथामे हॉस्पिटलक उड़का-उड़कीक जीवक वीथ नवीन नामक युवक एकटा उड़कीक हाथमे ऐड प्यावि कप, जे ओर उड़कीक आ ओकन पुनमीक अछि, देप्पैत अछि उड़की नवीनकँ पुछैत छै जे ओ केम्हन जा नहै अछि नवीनकँ होश छै जे ओ ओकना अपनसँ दव वुहकिप शेकवाक ऐठ पुछैक नवीन ओकना मना कऽ दैत अछि वनियन सन ओकन भोगमे घुनमैत नहैत छै ई कथा एकटा छोट घटनापन आचानि अछि ओ हमना दव वूहियाहक कप शेकवाक ऐठ कहैक? आ ओ दृढ़तासँ नै कहिआजाँ वढ़ि जाश

अच्छा एकाकी जोकाँ ई कथा सेहो मगोवैज्मानकि वसिष्ठेषामपन आधानति अच्छा

एकटा प्रेम कथा- पहनि जाकना घनमे श्लेन नहै छठ एकना घनमे दोसनाक श्लेन अवैत नहै छठ, जे एकना तँ ओकना वजा दसि ठेपकक घनमे श्लेन छठहँ आ ओ एकटा प्रेमिक प्रेमिकाक श्लेन अप्रथापन, ओकन प्रेमिकें वजावैत नहै छथि प्रेमो मोवाइठ कीनितैत अच्छा से श्लेन आयव वगद गज जाइत अच्छा मुदा प्रेमो दुवाना गमवत वदठि ठेठापन प्रेमिकाक श्लेन श्लेसँ ठेपकक घनपन अवैत अच्छा प्रेमिका, प्रेमिक ममयितैत वहनिक सप्पी गति छथि आ ठेपक ओकन सहायताक ठेठ यगितति गज जाइत छथि ऐ कथामे प्रेमो-प्रेमिका, मोवाइठ आ श्लेन ई सग गज युगक संग गज कथामे सेहो स्वाभाविक नूँ अवैत अच्छा

टाइठ कथा अच्छा वगैत-वगिड़ैत। तीन टा गामति पातन। माठा, ओकन पति सतनो आ पोती मुनयिँ। गाम-घनक जे सास-पुतोहुक गप छै, सेहना नहि जेठ जे कहियो गहेठाक वाद प्यार ठेठ पुछति, एहन सग मुदा सैह वेटा-पुतोहु जायन वाहन यठि जाइत छथि तँ वरह सासु कान कौआक टाहिपन यगितति हेमए ठेठ छथि माइग्येसनक वादक गामक यथाथकें यगितति कजैत अच्छा ई कथा। सतनोक संग कौआ सेहो एक दिन वठि जायत आ मुनयिँ कौआ आ दादा दुनूकें तकैत नहैत। प्रवासीक कथा, वेटा-पुतोहुक आ पोतीक कथा, सासु-पुतोहुक हगड़ा आ प्रेम!

अपन-अपन दुःख कथामे पत्नी, अपन अवहेलनाक स्थितिमि, धीप्रा-पुनारें सनापैत छथि। गामि धीप्रा-पुनारक प्येनार, प्या ठेवा उत्तन गनसाधनक गाठा वगद नहवाक स्थितिमि पत्नीक दूखठ नहव आ पनिसामसुनूप पति श्लेखक सुनसँ कुपति हव स्वभाविक। सगक अपन संसार छै। ठेक वुहैत जे ओकने संसारक सुख आ दुःख मात्र सन्तुष्ट छै मुदा से नै अच्छा सगक अपन सुख-

दुःख छै, अपन आशा आ आकांक्षा छै। कथाकान ओहन सत्प्रकै उद्घाटन कएन छथि, जे हुनकर अगुगवक अन्तर्गत अवैत छन्हि। आत्मगुगुर्ता पनविश स्वार्न्त कोन गऽ सकत आ से सुभाष यन्त्र पादवणीक सग कथामे सोहैं अवैत अछि।

आरंभ कथामे कथाकानकें पुनान संगी हनविशसँ कान्पाठ्यमे गैट होश छन्हि। ऐपकक दायि-प्यानि वठा काज ऐ ठऽ कऽ गै भेटन्हि जे हनविशक स्थानान्तरणक पस्यान् ने क्यो हुनकासँ घूस ऐक आ नऽ द्वाजे काजो गै केक। हनविशक वगेवागी घूसक अगेन पारक कानस छठ से दोसऽ कएक अपन पार छोड़त ? ऐपक आरंभ छथि कान्पाठ्यक पनविश, गन्ध्यायन आ एक गोटेक स्थानान्तरणसँ वदवैत सामाजिक सम्वन्ध ई सग एतऽ व्यक्त भेट अछि। आर काउर्हिम आरि अहैं वृष्कमे वा सयविाठ्यमे कोनो काज ऐक जाश छै, तँ यैह ने सुगऽ पड़ैत अछि, जे पार जे माँगत से दऽ देवैक आ नप्पन कोनो दक्कत हुअत तँ कहव ! आ पारक वदवै ककनो नाम वा पैन्नी ठऽ जेवै तँ कन्मयानी ने पारये ऐत आ गहिये अहैंक काज हएत।

एकटा अन्त कथामे ससुनक म्त्तुपुपन ऐपकक सादू केश कटेने छथि आ ऐपक गै, ऐपन कएक नहक गप होश अछि। सादू केश कटा कऽ नसियनि छथि। ई जे सांस्कृतिक समिवोधिम् आयत अछि, जे पकड़ा गेट से योन आ प्याप काज केगहिन, जे गै पकड़ाए से आदऽशवादी। पूना-पूनी तँ गै, मुदा अहू कथामे एहने आस्था जन्म ऐत अछि आ टूट जाश अछि। हनप्रासामे वापो मनवापन ठेक केश गै कटवैत अछि, तँ की ओकन दुःखमे कोनो कमी नहैत छै तँ ? पंजावक महिषा एक वनपक वाद ने सग्नै ठावैत छथि आ ने यूड़ी पहिनि छथि। मुदा पहि वनप कागह यनियूड़ी गनैत नहैत छन्हि, तँ की वप्राहक पहि वनपक वाद हुनकर पानिप्रेममे कोनो घटती आवै जाश छन्हि ?

कवाछु कथा मे यम्पीवठाक ठेप्पक ठा आयव, जाँघपन हाथ नाप्पव। अगिजात्त संस्कारक ठेक ठा वैसठ नहवाक कामासँ ठेप्पक द्वाना ओकन हाथ हटायव । यम्पीवठा द्वाना ई गप वाजव जे छुअठ देहकें छूठामे कोन संकोया जेना यम्पीवठा ठेप्पककें वुहाइय नहग्हि जे हुगका पुवती वुह नह छठग्हि ठेप्पककें ठाँठ छग्हि जे ओ सत्नी छथि आ यम्पीवठा ओकन पुनाग प्रा। गम-कुगम आ समग्र-कुसमग्रक महेग समह यम्पीवठाकें गै छइ, गै तँ ठेप्पक ओतेक गनमीयोमे यम्पी कना ठगिया। यम्पीवठाक दीनतापन अश्वसोय मेठग्हि मुदा ओकन शी-इ-इ कें मोन पाड़ैत वगिष्मा सेहो शुनायडक मनोवशितेपामक वड्ड आठेयना मेठ जे ओ सेक्सकें केन्द्मे नाप्पगप कनैत छथि मुदा अगुमवसँ ई गप सोहँ अवैत अछि जे सेक्ससँ जतेक दूनी वनायव, जतेक एकना वान्ताठाप-कथा-साहित्यसँ दूना नाप्पव, ओकन आकामास जतेक नीव नहए।

कानवान मे ठेप्पकक गैट मसिस्टन वन्मा, सगिहा आ दू टा आन गोटेसँ हेरन अछि वान मे सगिहा दोस्ती आ वजिनेसकें शुनाक कहैत दू टा प्यसिसा सुगवैत अछि सग यीजक मोठ अछि, ऐपन एकटा दोस्तीक वाइशु ठेठ टिबो कनिवाक वाद शुनाजिक उमिगुड अएवाक गप वीयेमे पतम मऽ जाइत अछि दोसन प्यसिसामे एकटा सत्नी पतकि जाग वयवय ठेठ डॉक्टनक श्वीस देवाक ठेठ पूनव प्रेमी ठा जाइत अछि पूनव प्रेमी पार देवाक वदममे ओकना संगे नागि वगिवय ठेठ कहैत छै। सगिहा ऐ कथामे ककनो गठती गै मागैत छथि, डॉक्टन वगि पार ठेठे किए इठाज कनत, पूनव प्रेमी मँगनीमे पार किए देत आ ओ सत्नी जे पूनव प्रेमी संगे नागि गै वगिआओ, तँ ओकन पतमिनी जेतै।

आव वानसँ ठेप्पक नकिछैत छथि तँ दनवागक सठाम मानाठापन अहूमे पैसाक टगक सुगार पडऽ ठाँठ छग्हि पुनायीन मूठय, दोस्ती-यानी आ आदरसक टूटवाक स्थिति एकटा एकाकीपनक अगुमव कनवैत अछि।

कुशी मे सेहे सुनायउ सोहँ अवैत छथा, कथाक पुनामन छुगीपनक सुपायउ कड़गन मेठ दागसँ सुनू होश अछा मुदा गुनगो सुपष्ट होश अछा, जे ओ से दाग नै अछा, वनन घावक दाग अछा छैन हाटक कुशीमे गामक समस्यक गपिदाना, हेथ सेग्टनक वन्द नहव, ओगय ईटाक योनिक यनया अवैत अछा छोट गार कोनो रवागक क्लममे एवोपैथिसँ हटि कऽ होम्योपैथीपन वसिवास कनय छैन छथा, ऐ गपक यनया आयउ अछा छेक सगक घावक समाया न पुछवा छ एगार आ छेपक द्वाग सगक वसिवास वसिवास कहि सुनओगार मुदा उमनमे कम वयसक कएक गोटेकें टागिदिगार, ई सग क्लम एकटा वानावनासक गनिमास कहैत अछा

कैगनी आर्यैसुडक छाने कथामे सुगाप आ उपयि कथाक यनगि छथा एगऽ एकटा वनिव अछा- जेना गनिमय कोसीक वसना जकाँ ममयिग गारक यटिगी, कटानि देगे गारपन पयवाक, गेनुआ पानक यानमे आयव, गारक छोटपन उगाव, छोटक वादो वहुन दून यनि जांघ गनिपानक नहवा घीपठ वाठपन सारकठिकें छैन देपकिथि कहैत छन्हि- "सारकठि ससुनानि देठक-ए? कने वडद जकाँ टटिकान दियौक"। दीदी-पोसा ऐगम ऐ गपक यनया सुनछन्हि, जे कोटक प्यानि हुनकन वेटीक ववाह दू दनि नुकिगेठ छछन्हि आ ईहे जे वेसी पढ़गे छेक वगाह नऽ जाश अछासुगाप याहियी कऽ दू सय टाका नै मांगि पवैत छथा, दीदीक वयवहान असुपष्ट छन्हि, सुगाप आश्वसन नै छथा आ धुनि जाश छथा

नृप्सा कथामे छेपककें अप्पठिन भेटैत छन्हि स्नीठगसँ ओ अपन भेंटक वनिमास कहि सुनवैत अछा पाँयम दनि धुनठक वाद ट्नेगमे ओ नै भेटवीह आव अप्पठिन की कन, वसिपापानगम आ वनिपवाड़ाक वीयक नसनामे यकन काटन आकस्मिक संग दनि काटन।

छोट-छोट गवगानक घटगाक वसिषेस अछि कथा "कैगनी आर्यैसुडक

भोगे" आ "नृषमा"

दागा कथामे मोहन इन्टरव्यू छे गेथ अछि, ओतय सहृदय यपनासी सूयति कएत अछि जे वाहनीकें गै छैत छै, पीएयडी नहियि तँ कोनो वात नहियि। मोहनकें सभ यीज वीमान आ उदास छौत नह्य। खुद्दी आ मैना पावनोटिक टुकड़ीपन यी-यी कएत हपटैत नह्य। पुनर्जायिगी पनीक्षाक साक्षात्कालमे वाहनी आ छेकथ केन जे संकल्पना आयथ अछि तिकन सम्वेदनात्मक वृत्तमान भेथ अछि।

दृष्टिकथामे पढ़ार प्पान भेलाक बाद गोकनीक प्पोज, गाममे छेकसभक तीक्ष्ण कटाक्षा छै। दृक्षामि गान्धीय पानकालक पुनर्मासँ कगियाँक वृत्तीयक वावजूद गाममे छेपकक प्पेतीमे छागव। ई सभ गप एकटा सामान्य कथ्य नहलाक बादो गम-गम सामाजिक सत्य उद्घाटन कएत अछि। एतय गामक छेकक कुटीयाछि अछि, जे काजक अभावमे प्पछि समय वेशी नहलाक कालस अवैत अछि। संगमे आर-काष्ठिक सूतीक सहनी जीवज जीवाक आकांक्षा सेहो पुनर्जाति कएत अछि।

गदी कथामे कथ्य कथाक संगे यवैत अछि आ प्पान गज जाइत अछि। गजगदेवक घनपन वहिनी आयथ छै। सहनेमे ओकना एक साठ नहवाक छै। गजगदेवकें ओकना संग मकान प्पोजवाक कालमे एकटा छेकसँ गेट होइत छै। ओकना छोड़ि आगाँ वढ़ैत तँ ई वृद्धक बादो जे आव ओकनासँ छैन गेट गै होइत ओ उठ्ठास आ पुनर्मक अनुभूतिसँ गनगिथ।

पुनर्वादाक कथा थिक, कोसीक कथा कहथ गेथ अछि। एतय वौकी वृणछेकक इन्तजानीमे अछि। मुदा यानमे पागि वढ़ि नहथ छै। कोसीक वाढ़ि वढ़थ आवा नहथ छै आ एम्ह न मायक नह-हसनासँ हाथ-वेहाथ छै। माथ-जाथ नृपसँ उकिजैत नहै। नामयनक घनमे अन्तर्पागि वेशी छै से ओ सभकें गहक

इन्गणाम छे कहै छै। वौकूक घनसँ कटगियाँ हूँ नहै। मत्स्य आ वृणाश वौकूकें कछेन वना देउकै, मोह तोड़ि देउकै। मुदा वनप्या नुकुं गेछै। वौकू योण सगकें यगिहवाक आ समान कनवाक पुनप्राण कनऽ गगछै।

वाग कथामे सेहो कथाकान अपन कथानककें वाट यथीति नाकहि छै। छथि आ शिपिसँ ओकना आगाँ वढ़वै। छथि गेवो दोकानपन गेवोवछ आ एकटा ठोकक वीयमे वहस सुनै। ठेपक वीयमे कूदा पड़ै। छथि गेवोवछासँ एक गोटे अपन छाना मांगि रहै। अछि जे ओ गीयाँ नयने रह्य। हुपक गप, ठेपकक अगुसान, वेशी दगि घनी ठोककें मोन नहै। छै।

नगा कथामे पुनुष-सूत्रीक वीयक वदछै। सम्वन्धक गीबन गानसँ वृणाश गेछ अछि। पुनुष यावत सूत्रीसँ हूँ नहै। अछि तँ सग ओकना मेनका आ नम्रा देप्या पड़ै। छै। मुदा जे सम्व्राटक पुनानमन हेत अछि तँ वादमे ठेपक कें गेछ। छगह जे ओ वेटीये छी। नस्रामे एक सूत्री अवै। अछि ठेपक सोयै। छथि जे ई के छी, नम्रा, मेनका आका ओकना संग वेटा छै, ओतेक सुगन गै, कानाम एकन वन सुगद नै होएतै। ओ गपसपमे कपगो ठेपककें ससुन जाकाँ, कपगो अपनकें हुनकन वेटी गुप्य कहै। अछि पहिने ठेपककें प्याप गगछह। मुदा वादमे ठेपककें नीक गगछह। मुदा अन्तमे ओकन पएन छूवए छे। हुकव मुदा वगि छूने सोह गऽ जाएव गै वुहमि अएछह।

हमन गाम कथामे ठेपकक गामक नस्रा, कटगियाँ सँ मेगाहि गामक ठोकक छड़िआएव आ वागहक वीयमे अहुनिया काटै। ठोकक वृणाश अछि। कोसकिहक ठोक- जागवतक समाग, जागवतक हावामे। कटगियाँमे ठेपकक घन कटगिछह। ओ गथुनियाँ ऐगम टकै। छथि मछवाह आ याडि वहावऽ छे। गथुनी जोगान कनै। अछि जमीनक हगड़ा छगह, एक हसिसेदानक जमीन यानमे डूमछ छै। से ओ ठेपकक गहूमवछ। प्ये हड़पऽ याहै।

अर्थात् शन आ सत्नीक (!) पाछू ठोक वेहाउ अर्थात्

सत्नीक पाछू वीग कानाम ठेय्क पड़िगे छथि जेना वषिम्सु सन्मा पंयन्तमे
कथा कहै-कहै सूदन आ महविक पाछाँ पड़ि जाश छथि।

प्राप्त सन कमठक घुन उग कपक अनावमे वेना-वेनी याह पवित्र छथि, श्रुति
कटी कऽ सविनक एतऽ यथि जाश-ए हौआ, कास, पटेनक जंगल जयन
नहय, यडि वड्ड आवए, आव कम अवैत अर्थात्
पढ़िया, हनि, माछ, काछ, ओका सन पानम नऽ नहए छै- जीवक सावन
हुनम नऽ गेअ अर्थात् साँहमे जमीनक पंयैगी हेअ अर्थात् सत्नीक वकड़ि मनी
गेठैक, पुनोहु एकन कानाम सासुक सनापव कहै अर्थात् सासु एकन कानाम
वठिगछपोपन पाडी सनकें वेयव कहै छथि। सत्नीक वेटीक जीवक उमानकें
ठेय्क पुनुष सम्पत्क साक्षी कहै छथि आ सकानाम श्रुतसँ महविक पाछाँ
पड़ि जाश छथि, कानाम ई यानामा ठोकमे छै। सत्नीक वेटी अप्पन सासुन नै
वसैत छै। सुकन नामक ऐशम प्याश काठ ठेय्ककें संकोय भेठहै, जकानसँ
उवनवाक छेउ ओ वज्रह- आर तोना जागविना छेउअह। कोसी सन भेदनावकें
पाटी देठक, डोम, यमान, मुसहन, हुसाय, तेथि, प्रादव सन एके कठसँ
पानि भैत अर्थात् एके पटियापन वैसैत अर्थात्

गुठे (हन्दि अनुवाद)

[गुठे हन्दि अनुवाद (आंकि प्रकाशन) क पाठपन आधारित]

पहिले गुठोक हगिदी अगुवाएपन टपिपामी। (सैद्यांगिक वियेयग छेठ देयू हमन पोथी- मैथिली समीक्षाशास्त्रात्मक मैथिली छेठ एकटा अगुवाए सद्यांगन आ अगुवाए साहित्यिक समीक्षाशास्त्रात्मक, ब्रह्म पेटी। हानपूँवद्विहयोनियोहान मे उपव्या।)

जोगा कोनो हटि अविम जोगा कगुडक "कगाना" जँ अहाँ पीवीआन मे देय छे छी तँ की पाँयो नगिट नकन। अहाँ ओटीटी प्छेठ अँमपन देयसिकै छी?

जोगा हानिहण हा केन "कगुवाए"क हगिदी अगुवाए (ब्रह्म नानो द्वाला) देयसिकै हुनकन पुन नानमोहण हा दुप्री मऽ माथ पकड़ि छेठे छथि, सैक्रेड गेम्सक अगुवा कस्यप द्वाला घटिया वेव सीनी नूपागनास देयसिकै छेठे वक्रिम यगुन दुप्री मेठ छथि, सरह अगुवागुठोक हगिदी अगुवाए देयसिकै हमन मेठ।

मूठ यानाक छेठ वगि अगुवाए सद्यांगन पढ़ने अगुवाए कनै, मूठ यानाक वनाहमसवादी आ गव- वनाहमसवादी छेठे सगक जप्पन भौठकि छेठेमे शवद- गाम्भानक सुप्पान नै छै तँ अगुवाएक कथे कोन। अगुवाएक नमस कुमान सहि छ। ने मैथिलीक शवद- गाम्भान छगह आ ने हगिदीका अप्पवानी गामामे ओ गुठोक अगुवाएक पहिले पाँतिमे "गवि सकनांग"क अगुवाए "मकन संकनांग" कनै छथि। की मकन संकनांग मैथिलीक मूठ यानाक वनाहमसवादी आ गव- वनाहमसवादी छेठे सग नै पुन्युक्त कनै छथि, आ गुठोक पहिले पाँतिमे "गवि- सकनांग"कै सुगाष यगुन द्वाएव "मकन संकनांग" नै छेठेसिकै छथि?

से जँ अहाँकै सुगाष यगुन द्वाएवक गुठो कै हगिदी आ मैथिली दुनूमे पढ़वाक श्यछा हुअथ आ गैसद्यगिक सद्यांगक पुन्योग देयवाक हुअथ तँ पहिले हगिदी अगुवाए पढ़ आ सेन मूठ मैथिली पढ़। कानाम मूठ मैथिली जँ अहाँ पहिले पढ़िछै तँ अहाँकै सगिमाकै पीवीआन मे देयवाक अगुवाहिसा, आ जँ पहिले

અહીં મૂઠ મૈથિલિ પઢી ઇવ તં હિન્દી અનુવાદ ્કો પગ્ના ગૈ પઢી સકવ, આ તપ્પન ગૈસવારિગિ કેન પ્રયોગ કેના દેખી સકવ? હમન રચ્છા અછાપો અહીં ૈ પ્રયોગ દેખી।

અહી સન્દર્ભમે ૨૦૨૧ મે ૨૦૧૧- સન્નત્તમકેં પહિવે વેન દેઠ મૈથિલિક સાહિત્ય અકાદેમી પુનસ્કાનક યન્યા કનવ આવશ્યક અછાપિ ળગદીશ પ્રસાદ મામ્ડઉક ઉપન્યાસ "પંગુ" ઓળસેં સુનૂ હેરે ળગદીશ પ્રાત્નીક વચચનમા ળગમ હેરે અછા, આ મૂઠ યાનાક લોક છડપટાપ ળગાપો ળગદીશ પ્રસાદ મામ્ડઉક પ્રાત્નીગી સેં આગૂ કેના વઢીગેઠા આ ઓ સન પ્રાત્નીગી સેં આગૂ વઢવ તં દૂન પાછુર કપિ ળા નહઠ છથા? ૨૦૧૮ મે ૈ ઉપન્યાસ વદિહમે ટં ળમ્ડ મે ૈ- પ્રકાશિતિ મેઠ આ સંકષિતિ મેઠ વદિહસદેહ ૨૧ મે (પૃ ૬૭૭-૭૭૮), સ્થેન ઓ પુસ્તકાકાન આપ્ઠ અહી વન્ય, આ આવ ઓ વદિહ પેટાન મે સેહે ઉપવચ અછાપિ ૈ પોથીક હિન્દી અનુવાદ નામેશ્વન પ્રસાદ મામ્ડઉક દ્વાના કપ્ઠ મેઠ (પૈઠવે પ્રકાશન) આ હમન અનુનોય અછાપો ૈ હિન્દી અનુવાદ અહીં મૂઠ મૈથિલિ પઢવાક વાદ પઢૂ, અહીં પૂના પોથી પઢી સકવા પંગુક મૂઠ આ હિન્દી દુનૂ વદિહ પેટાન મે ઉપવચ અછાપિ

સ્થેન ઘુનૂ ગુલોક હિન્દી અનુવાદ પન, સે અનુવાદ કેના મેઠ આ કેના મૈથિલિક ર્નસારડન વ્પૂ હિન્દી- અનુવાદ વનજનમે આઉસારડન વ્પૂ વર્ગિ મેઠ નવ- વ્નાહમ્મવાદક અનૂદિતિ-સ્ટોગી- સારસક પ્રયોગ સેં, સે ગીયાં ટેવુમે દેઠ અછાપિ વુહા ળમ હિન્દી શવ્દકોષક અકાઉક કાનામ્ શવ્દ ઇઠ શવ્દ ગૈ વનજ વવિનામ્ દેઠ મેઠ અછાપિ સેહે વુહા ળમ અસુદ્ય આ વુહા ળમ અનૂદિતિ મેવે ગૈ કલ્પ, આકા અન્યક અન્યક કનૈા સાવદકિ અન્યાનુવાદ મેઠ

મૂઠ મૈથિલિ "ગુલો"	અનૂદિતિ હિન્દી "ગુલો"
તથિ- સંક્રાંતિ	મકન સંક્રાંતિ

एक्के ससपेन मे मुँह तोड़ि	एक ही ससपेन से मुँह तोड़
ओकना टांसोकै	उसका घी वगाया
घनगियाँ	पत्नी भी
टुकटुम-टुकटुम	किसी नग
कवर्	कवर् मछली
दविया	दाव
देप्पवहक छौड़िए!	देप्पेगी तू,
देठयिह	आपको दिए
अमाठी	आम की टहनियाँ
कनयी	वाँस की छड़ियाँ
कहुआप्र	सुगंधित
दाव-दाव कौन नहै छै	दावा वगाए नपते है
वाग उगटा दखै	वाग को पछट देती है
पनीजाव	पंजाव
मुँह वावकिऽ	ह्लाश
सड़ोह प्युट्टा	घुन छो पूँटे

उपरोक्त	ढूढ़क॑ भई
गज्जग	शज्जग
ओग॑र-ए	देपभा॑ क॑गा है
म॑ग॒हड़ि	अ॑ह॒र
गुँडिआँ	गुँडिआ
कोय॑ भेट॑क	कोई॑ उसे॒ हथे॑री प॑ग॒ड़गा॑ है
भाक॑न	प॑ठकु॒म्भी
प॑ग॒याँ है	गा॑गा दे॒ती है
भोट॑या	सु॒जनी
भो॑महै॒न भौ	का॑ट प्याँ॒गो
ह॑पकु॒गियाँ	उं॒कडूँ
या॒स, स॑मा॒न आ यौ॑की	या॒स, स॑मा॒न औ॒न यौ॑की
टो॑ग क॑र-ए	टु॒कड़े- टु॒कड़े क॑गी है
पां॑ग॒य भ॑ग॒भ	का॑टने॒ भग॑
प्या॑य	उं॒ड भू॑यक॑ स॒यग
गो॑सां॒र डु॒मानी	सू॒य डू॒वने

पछड़ै-पुछड़ै	कसिो ननह
सदिह	भोग की सामग्री
गुठो उकटिदिठकै	गुठो ने कहा
जुमा कर	नशिना साधक
हपसि-हपसि	हँसु हँसु
भासिगिठ	हठि गए
पाढ़ा	छप्पन को टेकनेवाला आया
हटहट	पत्थर
गनिह दहति नहै	गृहस्थ उदात्त था
छोठ-भोग	छोठक
हड़ैथ	हड़ैथ वाँस
पढ़ उछाहदिठकै	शूंस उड़ गई
काठिवंदी सेवा	काठिवंदी की पूजा
कुशक कठेप	कुश का कठेप
पाट	अन्त्याग
आना	वगीया

गाछी	आम के वगीये
गैढ़	काटक
छौड़ी कए समांगे ने होइ छै	उसकी गवीयन गीक नहि है
टाट	घास झूस से वनी दीवान
दोसनी वछिठक	दूसनी वनागे उगा है
आठन	असून
पैनागे	पाड़े
दू गो सुपानी गोत मे आयठ छै	गमिनास की सुपानी भवि है
वाछय उगाठ	अठा कने नयने उगा
टनिसकिए	गुस्से मे
कनगमुँह	नुआँसा
वीट उगाएन	वाँस नोपेगा
ससोहि ठेठके	तोड़ ठे गया
अकिंयन	अकिंयन
ठाट मे हुनयिो नहै	हुनयिो नी थी
अढ़े- अढ़	युपके से

गौ वणे नागमि	दस वणे नाग मे
ओषेण	युगना
हप्प	अश्वसोस जना नहा
उंगेठक	उसे तैयान कपिा
टपप	आगे
जोगौ	नप्पवाषि कौग करेगा
साग-आठ टा नगका पुट्टा काटि	पूँटे काट नप्पे
पपिपि	गेवठा
पजोडने	छेकन
हाक दाए	वुठाकन
पुआपुवै	पुआपुआ हुआ
गठि कए गान गार जेगौ	गठकन गान हो जाएगा
गुम्माँ	गुम्मा
अवाय कथा	वुगी वाग
गूमकम	गूमपूँ

शूकम्प	शूकम्प
ऽऽनी	ऽऽनी
उक	मुप्पागुर्गि
हग्नि	हग्नि
कनर छै केना	वोठना क्या है
अवा- अवाइरँ	अवा- अवाइर
होड़ा	वटुआ
टागकिर	ऐक
अप्पना	अप्पना

“सुभाष यन्द्न प्रादव पत्नी ठेठ घनी आ जगदीस प्रसाद माम् उठ गनसिया
के प्रयोग कनै छथि, हुनू हू- स्थितिमि हू गनहक प्रयोग छै। अनुवादक की
हुनू ठेठ “पत्नी” शब्दक प्रयोग कना?”

“वाकँ पठदिनाइ मेथै घुमा देनाइ, एज छै छुटति उगटा जवाव देनाइ

“अनूदति गै मेठ

“शाब्दकि अनुवाद

“अन्थागुवाद

હિન્દી વાંચનમાં અધ્યાય પાંચમાં સેહે પાના ને યથૈ અર્થ, મૂળ મૈથિલીમાં
નવ પૃષ્ઠસં વર્ણનામ શુન કડ, આ પાના પાઠ પાઠી છે શ્રોત્ર સ્તો પાઠિક
અધ્યાય પાંચમાં સ્પષ્ટ કલ્પ ગોષ છે.

ઉગ્રાચાર શવ્દકોષ વડ વર્ણના છે, પાના: ૨૩ વોલ્યુમ સં વેશીમાં
છે, આપનાસી પાના: શ્રોત્ર ગાગાનિકા ઉઠ ઉડ પાનાવળ ઉગ્રાચાર ગાગાનિકા
પરીક્ષામાં અગ્રાચારનામ ગડ પાના ઘટ્ટા મહા પો ઉગ્રાચાર વર્ણના કેને
નહાનિકા વચ્ચે ઉગ્રાચાર ગાગાનિકા ગડ ગોષ મુદા શ્રોત્ર ઉગ્રાચાર પો ગાગા
પેપા વડ કઠિન હોર છે, ઉગ્રાચાર સેહે શ્રોત્રમાં અગ્રાચારનામ ગડ પાના
ઘટ્ટા પાનાસંપા વા ક્ષેત્રાશ્રુત્ર છોટ નહવ ઉગ્રાચાર વોકાવોષો ઉઠ હાગાનિકા
ને મેથે.

હિન્દી પાના હાસિવે અપગ શ્રુત્ર વડેક અર્થ શ્રોત્ર હાસિવે શ્રોત્ર શવ્દાવળી ને
વડ છે. અમેરિકામાં ૩૫૦ શવ્દક અંગ્રેજીક "હાર પેક્લેન્સી" આ ૩૫૦૦
"વેસિક વાંડ ઇસ્ટ" હાર સ્ક્રીક ઘાત્ર ઉઠ છે પો ક્રામસ: કાંધે આ
ગ્રોગ્રાસ્ટ સ્ક્રી (શ્રોત્ર પોસ્ટ ગ્રોગ્રાસ્ટકે ગ્રોગ્રાસ્ટ સ્ક્રી કલ્પ પાના છે) ધર્મા
પ્રુથ્વિપાન દુગા (ગાના ગાગા શ્રુત્રીક ઘાત્ર ઉઠ) ગડ પાના છે સાહિત્યક
વર્ણનાથી સાહિત્યકાન ઉઠ એ સં દસ ગામા અપેક્ષા હોર અર્થ હિન્દીમાં
અપવાદ, પાના હિન્દીક પુનોયા ઇકર્ણા ઉપહાસમાં આંચકા ઉપગ્રાસ્ટ ઉપગ
કલ્પ ઘટ્ટા આ એક નાનું ગાગાનિકા ઘટ્ટા, કેં છોડ હિન્દીક કલ્પ આ
ઉપગ્રાસ્ટકાન અગ્રા વાંચક ૨૦૦૦ શવ્દક શવ્દાવળીસં સાહિત્ય
(પદ્ય, ઉપગ્રાસ) નય ઘટ્ટા આ મૈથિલીક કલ્પ સાહિત્યકાન એ વેસિક ૨૦૦૦
શવ્દક વાંડ ઇસ્ટ ધર્મા સીમાત્ર નહવ યાં છે, પાના કા પાનાગી
અર્થાવેક યેગ્ર ૫૦૦ ધર્મા પ્રુથ્વિ પાના છે.

પાના ગાગામાં નામોચન શામ ૧૪-૧૫ હામા પાંત્રીક શ્રોત્રાનામયત્રિ માગસક
અગ્રાદ સર્ ૧૮૮૮ (વર્ ૨૦૨૫) ને પૂનામાત્ર નક્ષત્રિ મૈથિલી નૂપમે કેળ્પ

ઓળ સન્ ૨૦૨૧ (વર્ષ ૨૦૭૮) મે ગુણેક એ ૧૧૬૬ હર્ષિદી અગુવાદ મોળકે વ્રપિગ્ન કૈળ અર્ષા

ગુણે કેળ આમુપ્પ "આપ્પાગી વ્રપિગ્ન મળુક્પ્પક ગાથા" - ઢેપ્પક કેદાન કાળન

મૂઠ મૈથાથી ગુણેક પ્નાનમ્મસં પૂત્ત્વ દ્વકટા આમુપ્પ અર્ષા "આપ્પાગી વ્રપિગ્ન મળુક્પ્પક ગાથા" । ઈ અર્ષા મૂઠ યાનાક કળ્લાનોહટ આ એવેન ઓર કળ્લાનોહટક માન ઇર્ણ કેદાન કાળનક કાળ્હપન, આ ઈ ઇપ્પિઠ ગેઠ અર્ષા નિધિ-સંક્નાગ્ના દિગિ!

મુદા સુમાપ યગ્દ્ન યાદવ તં આપ્પાગી વ્રપિગ્ન મળુક્પ્પક ગાથા ઇપ્પિવે મૈ કેને ઇર્ષા ઈ આમુપ્પ સુમાપ યગ્દ્ન યાદવક ઢેપ્પનીકે ઓરપાન ગઢ કનવાક કુત્તસિ પુન્યાસ અર્ષા ઓ તં ઇપ્પિને ઇર્ષા ગુણે મામ્પ્પક ળીવ્વની, ઓ ગુણે મામ્પ્પક ળે કૈળ ઇર્ષા

"હમના યગ્નૈ ઇર્ષિ? ને યગ્નૈ ઇર્ષિ ૧૬ યીગ્હ ષે હમ ઇર્ષિ ગુણે મામ્પ્પક અર્ષિ યૌક પન ઘન ઇૌ હમના સંગે ડેપ્પની કેરહી ૧૬ વૂહિ ષે હમ ઇર્ષિ ગુણે મામ્પ્પક"

આ કેદાન કાળન ક્ક ૧૬૭ ઇર્ષા ડેપ્પની ગુણે મામ્પ્પક સઘા

"વડ્કા-વડ્કા ગેપ-યાળન કપ્પગહિન માષા કે દૂષાતિ કનવ માગેળ ઇર્ષા" - કેદાન કાળન ઇર્ષિ ઇર્ષા

મુદા ઓર ગેપ-યાળન કપ્પગહિનક નામ ઢેવાક સાહસ કેદાન કાળનમે મૈ ઇર્ણા

કેદાન કાળન સઘા ઇળ સાહિત્ય અકાદેમી આ મૈથાથી અકાદેમીક ગેપ-

यागन कयनहिनसँ छैल छथि आ आव जायन ओ गोप-यागन कयनहिन मनगसगन छथि, कहि वार्त्ताक नूपमे मनगि गेथ छथि, तँ ओ अपनकँ ओकनासँ अछा देखावय याहैल छथि।

आ गोप-यागन कयनहिनक वाठ वय्या सभ जाँ केदैन कागनकँ, ग्रीष्मा ङकुनकँ, अशोक अवयिठकँ आ आन ठायक-ठाय टाकाक अगुवाड सम्पादनक असाइनमेन्ट आ साहित्य अकादेमीक वाठ अगुवाड पुनस्काय ठेगहिनकँ क्वाटर कहिनहथ छन्हि तँ ओ हुनका लोकनिक आपसी मामि छन्हि मुदा गोप-यागन कयनहिनक वाठ वय्याक पुनप्पाक क्पासँ हुनका सभकँ ई सभ भेटछन्हि से तँ सत्य छैह।

संगहि जाँ अहाँ गोप-यागन नै कऽ नहथ छी, वा योती-कुत्ता नै वन पेन्ट-शूट पहिने छी वा नव-व्वाह्मसवादी छी तँ अहाँकँ सभ छठ-पुनपत्रक अधिकाय स्वतः भेटिजाय अछि, से केदैन कागनक आमुप सँ जागव भेटैल अछि।

गुठि २०१५ मे पुनकाशति भेट केदैन कागन जाँ केन आमुपक संग।

२०१८क साहित्य अकादेमी अगुवाड पुनस्काय केदैन कागन जाँ कँ हनिदी कविता संग्रह "अकाठ मे सायस" (ठेपक- केदैन गाय सहि)क मैथिली अगुवाडपन देथ गेथ आव अहाँ पहिने हमना वनाउ जे के एहन लोक अछि जे हनिदीक कविता संग्रह नै पढ़ सकैए आ से ओकना मैथिली अगुवाडक पगाल छै? आ ऐ मे केदैन कागनकँ अगुवाड असाइनमेन्ट आ पुनस्काय, उवठ खुदा भेटछन्हि सरह ने। कालस नमना जोगी (२०१८) मे केदैन कागन गपिला छथि, मउन (२०२१) मे कोनो आमुप नै अछि।

मुदा मोट (२०२२) मे केदैन कागन वैक-कलामे ८ पाँति छपिने छथि- मुदा एककोटा क्वाग्निकिनी पाँति ओइमे नै अछि, किए?

आव "गुठो" उपन्यासक सभ साहित्य अकादेमी की केथका

२०१६-२०२० मे पुनकाशति नयनारकेँ साहित्य अकादेमी पुनस्का१ २०२२ मे दे०
जयप्रै। भागे गुठो तेससँ वाह१।

भागे गुठोक कृान्ताकिनी आमुप्य छपिनहिनकेँ साहित्य अकादेमी अनुवाद
पुनस्का१ आ गुठो तेससँ वाह१।

तँ गुठोक आमुप्य वृकमेथि छै? वृहतिँ सए पड़ै।

गुठोक आमुप्यमे आ१ वृह१ नास कन्गानोहट अछि।

'देसवि वयना सव जग मटिग', मूठ यानाक सगकेँ ई १८० छै, से केदा१
कागनकेँ सेहो १८० छह्नि मुदा अवहट्ठ तँ साहित्यकि भाषा छै।



મુદા જ્યોતિર્ગીશ્વર-પૂર્વ વ્રદિયાપતિ સંસ્કૃત આ અવહટ્ક વ્રદિયાપતિ
 ઠક્કુન: સં ગનિગ છથા સમગ્રવા: વસિસ્થી ગામક વાત્વન કાસ્ટક સ્ત્રી મહેશ
 ઠક્કુનક પુત્રા સમાનાગ્નન પનમ્પનાક વદિાપા ગાયમે વ્રદિયાપતિ પદાવધીક
 (જ્યોતિર્ગીશ્વર પૂર્વસં) ગ્ત્ય-અગનિય હેશ અછા જ્યોતિર્ગીશ્વર પૂર્વ
 વ્રદિયાપતિ વ્રિનામ- કસ્મીનક અગનિય ગુપ્ત દ્વાના (દશમ શાવ્દીક
 અગ્ન આ હગાનહમ શાવ્દીક પ્નાનમ્ગ) ઇપ્પિઇ ગ્નગ્થ અછા "શ્વર
 પ્નાત્પ્રાજાપ્તિ- વ્રિનિષ્પામ્મી" ળમે ઓ વ્રદિયાપતિ ઉછેપ્પ કૈ છથા
 સ્ત્રીયન દાસક સદુક્કાકિન્નામ્- (નયગ ૧૧ સુતવની
 ૧૨૦૬, દેપ્પ મધ્યકાઠીન મથિયિ, વ્રિપિય કુમાન ઠક્કુન)- સ્ત્રીયન દાસ

वर्द्धिप्रापक पाँच टा पद एतद् उद्यत् केने छथि जे वर्द्धिप्रापक पदावलीक
भाषा छी। "जाव न माओ कन पगसास तावे न नाहि मयुकन
वर्धिसा" आ "मुग्धता मुकुट कनय मकनन्द"। ज्योतिगीश्वर (१२७५-
१३५०) षष्ठः कर्त्तव्य- ॥अथ वर्द्धिप्राप्त्यन वृत्तम्॥ अष्टमः कर्त्तव्यः- ॥अथ
जाज्य वृत्तम्॥ मे वर्द्धिप्राप केन उद्येय कनै छथि से वर्द्धिप्रापक गीतक
पुनर्लब्ध भऽ गेठ नहथि जे ज्योतिगीश्वर नकन उद्येय गायक रूपमे
केठन्हि। (वर्द्धिप्रापक यतिः वर्द्धि यतिनकथा सम्भागसँ पुनर्लब्ध
पनकथा मस्तु उद्येय)।

केदा न कागन नकन वाद गुठे उपन्यासक सांश ठपि छथि जौए ओ गीकसँ
उपन्यास पढ़ैन्हि नै वा अन्थ वुह नै सकथ। ओ ठपि छथि-
"अनवरनै वृहठ छैक जे वुहयि (सुप्पवाक माय) ठा पार छैक। ओकन कोनो
पुन्यास नान्थक नै होक। ऐठ ठेन" आन की की।

मुदा उपन्यासमे से छैहै नै, अनवरनै आनो पातन एहेन नै कनैए जे केदा न
कागन वृहठवाय याहै छथि पठारवठा पार दैए जायन सनकँ होइ छै जे ओ नै दे
न। पंप्पावठा पंप्पा वदठि कऽ दऽ दैए जायन गुठेकँ सेहो आशंका नहय जे ओ नै
वदठन। अनवरन नै कठोक वेन मदन किठकै, वादमे सान्को
केठकै जे गदिय सन पार ठेठ मड़न। नहठ छै। हँ कनाक वेन पार नै भेटठापन
भेटैमे देनी भेटठापन एक वेन ओ अनठेठे जानू नहै।

गुठे केन भाषासँ केदा न कागन अयम्भानि छथि, मूठ याना केन ठोककँ हेवाको
याहै। मुदा से हुनकन मैथिली साहित्यसँ १५ साठसँ दून हएव मातन दन्शति
कनैए अछि।

केदा न कागनकँ आनो वृहठ योपन आशयन होइ छन्हि, उपन्यासक
एकटा हठाठाक वादक

स्थितिपिन ओ छथि "नथाकथनि महुन समाजमे एगवे टा घटना की सँ की कऽ दैन अछि मुदा सामान्य लोकक धनमे एहन घटना नहऽहौं"।

केदाँ कागनक ऐ नरहक अयमगति होयवाक सूत्राउ कनव हास्य अप्पन क जैन अछि, मूठयानाक ऐडिक रूपमे हम एकना देखैत छी। औन अछि जे ओ कोनो दोसरा गुनहसँ आयत छथि आ सुपौठक एकटा वडका महोमे नहै छथि, दीन-हुनियाँ सँ दून।

ट पन्नाक ई आमुप गुठोक पाठमे वृत्तवाग अप्पन कजैन अछि से अहाँसँ आगुनह जे पऽ सँ

१७ सँ सोहे गुठो पढ़नाइ सुनू कनू। एक नसिसमे उपन्यास पढ़ि जाउ छैन दु नकि ई आमुप वा कनगानोहट हास्य आठेपक रूपमे पढ़ा गुठोक हगिदी अगुवाएमे केदाँ कागनक आमुप "आप्यगि व्रपिन मनुक्यक गाथा" केन अगुवाए उपन्यासक अगुनमे देउ गेअ अछि आ नऽ छेअ गौनगाथ वृत्तवाएक पाठ छथि।

गुठो (मूठ मैथिली)

गुठो मे गनिह आ माथिकक यन्य मात्रा मेअ अछि, जनिहन कठम-गाछी छगह, मुदा वस यन्ये अछि, आ एक वेन वनगा कहिकऽ सम्बोधन अछि, भागे ओ वनाहमास थकि॥

मात्रा गुठोक मनषाक वाह डाकूटन मठकि अवे छथि, जे कागैत कहैत छथि जे आव हुनका माथिक के कहगह, मागि छिओ ओ कायस्थ छथि, मुदा ऐ उ पन्यासमे हुनका जानकि वनिमास नै अछि से एकटा गनिह माथिक दू-

યાનિવેન આ ડાક્ટરન સહેવ એક વેન

આ સમસં પાશ્વર ઘથિ પવાર મઠિક માઠિક- દશનથ મામ્ડર

૬ ઉપન્યાસ મોટા-

મોટી ૧૪ પામ્ડમે વ્રજિકા અર્થા, આ શ્વેશ્વૈક સંગ ગુણે મામ્ડરક ળીવન
ક વ્રજિનામ્ ઓકન ળગક વ્રાનાવનામ્ક વ્રજિનામ્ક સંગ દૈન અર્થા ઉપન્યાસક
ઉદ્દેશ્ય કાઠ-

સ્થાનક વ્રસિનાનપૂનામ્ વ્રજિનામ્ દેવાક નૈ અર્થા, આ સે સમાળ વા અન્યવ્યવ
સ્થાક અન્નનગિરિ સમસ્યાક વ્રસિષેષમ્ ૬ નૈ કૈન અર્થા ગુણે મામ્ડરક
યાન કાન ૬ ઘુમૈન અર્થા ગુણે મામ્ડરક આંખા, ગુણે મામ્ડરક આઠાસી વા
વ્રાસનાવ્રકિ ઉપસ્યથિનાનઽનાનઽ ઓ પાશન અર્થાનાનઽનાનઽ ૬ ઉપન્યાસ વ્રિ
યૈન અર્થા કને કાઠ ળેળ દમ્હન-

ઓમ્હન ગેવો કણે નં શ્વેન આપસા મ્હુક વાદો નામ્ન ળેક અનુકમ્પા ના
શામે અપન હસિસાક ળેળ ળોગાન કઽ નહૈ ઘથા, ળેખક નિનિયો ળગ ઘુનિ
અવૈન ઘથા આ ગુણેક હાક નિનિયોકે સુનાર પડે છે, ઓ વાવાક એકટા આન
હાકક આસમે કાન પથગે અર્થા " અકાઠૈન નહૈ-

પા" આ ઉપન્યાસ પામ્ હેશન અર્થા- "વવા ના યઠિ ગેળશ નિનિયો કાનર-
પા"

૬ પોથી સામાન્ય ઉપન્યાસસં જાનિન શવ્દ આ વ્રાક્યક પાડ્યના (ટેક્સ્ટુરલિટી)
ક નૂપમે વ્રસિષેષમ્ મંગૈન અર્થા ળુણિયા ક્નાસિટોવાક અનુદૈન્ય સમ્વન્ય
વઠા ઘૂનો ળે ળેખક આ પાડકકે ળોડૈન અર્થા આ ઉન્યવાધન ઘૂનો ળે એ પાડકે
દોસન પાડ સંગ ળોડૈન અર્થા

ગુણે અવ્યાયમે વ્રજિકા નૈ અર્થા, ૬ એકટા ધાન સન વૈન પાશન અર્થા, મુદા
ટાશ્પોગ્નાશ્ચીક પ્નયોગસં પ્નમિટ વ્રનસનમે અવ્યાય વ્રા પામ્ડ પાડકક સુવધિ

ऐउ समुगव कएउ गेउ अछा ओना कए वेन पाम्पडक नीलन पैनागुनासु-सुपेस
दऽ कऽ पाम्पडक नीलन उपपाम्पड सेहे वनाओउ गेउ अछा

आव एकवेन गुठि केन पुनपाड कनी।

गुठिक पहिठि पाम्पड

पाड सुन होइत अछा तछि सकनांति सँ, मकन संकनांति सँ गै!
(अनुवादक के ऐउ ई गप अछा)

आउन नीपनिहउ अछा नगियां (गुठिक छोटकी वेटी), गीत गावनिहउ अछा
। की अहाँकँ कनगानोहट वा कोनो हेन गावना गुठिक पनविानमे देप्पा नहउ अ
छा सिगोमेटोगुनासुकि अनुभव छि, सोयू-

गुल्लू, गीत गवैन नीपव, खुन पागकि खाहा जाँ ओस, पछिया हवा, वड्ड
जाड, नगियां पहिने अछा प्याछि सउवान आ सुनाक आ मायक हाक-

"ई छौड़ी हमना जीअय गै देना गे यद्दनी ओढ़ि गे छे" आ कलू ऐदृश्यक
मंयना मुदा नीपै काठमे यद्दनी छेटा जेतै, मैठ छेटाक वाद होतै (अनुवादक
क ऐउ ई गप अछा)

आ आव सोयू जे ई गुठि माम्पड गै तथाकथानि गहन समाजक गुठि कागनक
घन अछा

तथाकथानि गहन समाजमे सेहे अहनि मोन होइ छै, अहनि तछि सकनांति
वाजउ जाइ छै, अहनि नीपउ जाइ छै, आ अहनि माय ययिआइ छै "ई छौ
ड़ी हमना जीअय गै देना गे यद्दनी ओढ़ि गे छे"

गुठिक पनविानक मोनुका आग सभ वात सेहे अहाँकँ एतऽ भेट जायना।

गुठोक दोसऱ प्याम्ड

"हमना यगिहै छहि? ने यगिहै छहि ाऽ यीगह छे हम छए गुठो म्याम्ड छे अहि यौक पऱ घऱ छै। हमना संगे डेडपनी केछहि ाऽ वूहछि। हम छए गुठो म्याम्ड छे।"

श्वेसवैक एक पानागुनाश्वमे, गुठोक वाप मुनीछाछ, गुठोक दूटा छोट वहीन, ओकऱ मायक मऱव, वापक नेछेक नोकनी छोड़व, सहऱसाक नेछेक वड़ावाव वगऱजी सहैवक भोग नै नहै जे मुनीछाछ नोकनी छोड़व, ओकऱ वड़का-वड़का जगिह कवर के देतै? मुनीछाछ जेडकी वेटीक मांग नीन संगानक वाद पोछाय जेछै, मुनीछाछ सगकें अपने छऱ छए आनछका नागि यऱश्वऱ-यवाक नहै (महेन्दऱ) वासडीह छप्पि छेछै। गुठो नागऱ किऽ कोसी यौक, सपौछ आवागिछ वहीन सऱकऱक जमीनपऱ वसगिछ।

नेछे मे नहै। मुनीछाछ छेछ- छकड़क वहुन सामान वनवेने नहय। छोट- पैघ प्युपी, कोदाना, पंगी, दवाया, कुड़हऱ, भाछा, वऱछी। ई सव अप्पनी यो गुठोक घऱ मे छै। इह ओकऱ वपौनी छए वाप- पुऱप्याक छोड़ छौन कुश्छ नै छै।

श्वेऱ नगियांक यंयछा। ओकऱ सूकूछे पाँय सय टाका नेटछ नहऱ, पोशाक नाशा दीदीजी कहने नहऱ- 'जुगऱ कीन छहि' मुदा गुठोक दोसऱ वेगऱनामे से प्यऱय नऽ जेछै, नगियाँ कहै छै सगटा याटगिछ।

गुठोक तेसऱ प्याम्ड

छोटआ (गुठोक छोटका वेटा) आ नगियाँक काजक पुऱगिह्ठिकोमक द् वगद्व।

गुठोक यानमि प्याम्ड

एक मास पहिने गुठोक वडका वेटा अगुणमा पगिआव (पंजाव बै-
अनुवादक छे टपिपसी) यथ गेथै कंदाहावाथि (अगुणमाक वौह) आ सु
जीन (अगुणमाक वेटा)।

नगियाँक पेटमे याथि छै कानस ओ पयपय थूकै छै।

गया साँठ दनि माछ वगैर नहय, कानस गया साँठ आव अत्सवक दनि वगै
गेथ छै सगक छेथ ओर दनि नगियाँ माछ वोक्नदिने नहय। ओना नगियाँक
आगुनह नहै मौस प्येवाक।

गुठोक वगैर मे अगवग एगो कडवना मे वैडर-ए उ सुख्या दै छै। एगो सुख्या दर
के दस टका छै छै।

गुठोक ससुनानि छै वेथ आ ओकन पन्नीक नाम छै वेथवाथि।

पहिले गुठोकें गाणा पोसेन-

पोसेन दम्मा उप्पड़िगैथै भागे यानू कान गाणाक गशाक वृत्तापान होश होतै।
से वेथसँ ओकन सनहोण अपन गनदभागे गुठोक पन्नीकें देप्पय आयथ छै
आ कहै छै- "ई गाणपोआ हमन वहिन कए मानि देथका"

कंदाहावाथि जनना उपेथक (जोगान केथक, नाककिऽ बै अगथक- अनुवाद
कक छेथ टपिपसी)।

गगानिक वयिहक गोन पुनवाक कान, साड़ी, साया, वणिउण आ दू सय ए
कावग टाका दअि पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ नगियाँ संग छै। गुठो
क वडकी वेटी नुगियाँ सेहो सासुनसँ सोहे ओगऽ आयथ छै, वहिन नगियाँकें
अपन सासुन छऽ जाय याहै छै। मुदा ओ मना कऽ देथकै, ठोक कहतै जे वाप
नोगाह गऽ गेथै, दनि टगिगैथै तँ पेट पोसै छए आयथ छै। ओ वडऽ कानथ, गुठो
कें छगुणा होइ छै, छौड़ी ई सव वाग केना वूहै

जेठो कगियाँ दव छै मुदा मगा कनितै तँ कोनो गण्णन वाँकी नहितिअ (कोनो क
नम वाँकी नहितिअ, शण्णन तँ छोट सव्द छै- अणुवादकक छेउ टपिपसी),
"मानियाँ प्यशौ।"

नगियाँ छेउ सोनक कोनो गीनथसँ कम गै कानम ओ अप्पैगयनितेगगाड़ियाँ गै
देप्पने-

ए, मागे यदुठ तँ गहिये अछि, देप्पवो गै केने अछि, मागे मान्नु सुनने अछि।
से दूटा सम्झिया छै।

गुठोक पाँयम प्याम्ड

घुन-

घुँआ। "अगव्रन कोनो जवाव गै दै छै। ओ पहिने कएक बेर मदद केने छै, टाका
देने नहै, दवाइ देने नहै, सुझा देने नहै। गुठो घुनवै के नाम गै छै छै।"

गुठोक छथम प्याम्ड

गाजगिदर डीउर आ ओकर समदाहि शना गागहि। शना गागहिक जोडका
ओमा कनिगा के दोकान कनै छै। दोसर बेरा के पागक दोकान छै, सब गनहक
यान्णन नाप्पने- ए आ एकटा मोवाइर यान्णन कनइ के पाँय टका छै छै। पुनवास
मे वृहन् कए वणिछि गै छै। तेसर बेरा मोवाइर नयिान्णन कनइ- ए, शुविमि आ
गागा डाउनलोड कनइ- ए। श्वोटो एसटेट कनइ- ए। श्वोटो प्यियइ- ए। यानिमि बेरा
वनजोश दवाइ के दोकान कनइ- ए। ओकर कहव छै- ' कोनो डाक्टर आ हमना
मे शुनक एगवे छै जो डाक्टर कए उगिनी छै आ हमना उगिनी गै छै।

गुठोक सागम प्याम्ड

कंदाहावाठिकें मउहदक याँपमे मप्यानक कमौनीक गव- नोपगान भेटउइ- ए।

सुप्यवा अपग माय कए घन सए नकिाँदिठक। ओ छै इना गागहीक पतिपिा
सासु।

सुप्यवा माय कए घन एए आगठक।

गुथोक आश्रम पाम्पड

भूगक वोया वाउग होतै, हनवरा यास, समान आ यौकी दइ के अढ़ाइ सय मां
गै छै।

कठ गीक कनेवाक छै।

"एमपी के एकेसन छए। कांगेस नंजीना नंजन कए गढ़ केने-
ए।" नयेसवा नंजीना नंजनसँ गुथे केँ एक हजान टका दएतै, गुथोक घनमे छ
हटा मोट छै। मुदा नयेसवा नपित्ता नऽ गेथै।
मुदा शुठवा मोदीकेँ जतिनै, मुदा गुथे नै जाएत मोटगिमे "नोना (शुठवाकेँ)
मोटका गड्डी मोटठ होतै। तू कन गे (मोटगि)।"

शेन घनक हगाड़ा, कंदाहावाथी ससनखागी वगेठक आ गानदगिमे शूँसा ठेठक।
कंदाहावाथी वोइगवरा गहूम डनाममे वग्न कऽ नाथ उगा नैहन यथेगिथ।

गुथोक नश्रम पाम्पड

गुथोक दूटा घन नासि गेथै।

वावा कहठकै, घनपन मनखाउन छोट देगे छहा पांन देठकै, मुदा ओ कोनो
काजक नै।

काथिवन्दीक सेवा, नगैत, शुठहासाँ आव कुसक कठेपो नै उगैत।

गुथोक दसम पाम्पुड

छोटुआ काण कनैए पठिअ माथकि दसअथ मम्पुड ओइशमा कथ डीक कनवैठे
१२०० टाका एउवांस मांगौए, १००० भेटै छै मुदा कथ डीक कनेवाक वदथा ओ
साइकठि कीनछैए कानाम अण्णनमा अपन पाइसँ कीनथ साइकठि वेयछिने १
है ओकना देप्पेवाक छै।

अनन १ निगियाँक वोप्पान उतावाक छेठ गोथी देउकइ।

गुथोक दसम पाम्पुड

गुथो केँ दूटा सुपानी दूटा गोठ मे आयथ छै- एकटा ठाठे पाम्पुडि के पोती के
वप्राह, दोसरा साना के पौधी के वप्राह।

गुथोक एगानहम पाम्पुड

गुथो माथकिसेँ ट ० न्य मांगान, ओ नै देतै नऽ एक्को गो आम कठियुयी भोग
नै हुअथ देन।

वाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै, गुथो योना कए वेयन तै एक्के सय मे दई
अथ पड़तै। पाय टा वाँसक पाइ भेटथै, पान सय मे निगियाँ पाडी कनिठका
घड़ए घंटा मे पाडी निगियाँ कए यीन्ह गेथै।

गनिहा टौन्य नै देउकै, अपना पयास टका उगा कए कनिठका।

योनवा सौसे गाछक ठुयुयी सिसोह छेठकै। एकटा डकुनवा सेनयिठ योन छै।

निगियाँ, हुगियाँ आ वनससेनवाथी ठुयुयी योनवैए।

'पकड़कह नै?' - निगियाँ पुछठकै।

'उ वगना हमना पकड़न?' (वनसूसेनवाणी)

गुथोक वड़की वेटी नुगियाँ वीगामे वगिहए छै। अगवनाक मोवाइएपन खोन एवै ओकना। गुथो ओगज जाइए, छोटुआ सेहो सठ जाइ छै। नगियाँवठा छुय्यो सगे स वगिजाइ छै।

मूंगक पहिठि गोड़ नगियाँ साओगेनमाकें देउक, ओ वीस टाका देउकै।

नुगियाँ के दीयन नेनहू एवै, ओ युपयाप नगियाँ के देयैत नहइ-
ए आ मुसुकी छोड़इ-ए।

दसनाथ माम्हाउक साढूक उड़का नेपाओमे छै, नगियाँ छेउ कथा अवे छै। मुदा गुथो यानिमासक टेम मंगैए, अनागुनमा गाथायक छै मुदा तैयो ओकनासँ पुछ तै।

गुथोक वानहम पाम्हाउ

अगवनाक मोवाइएपन खोन एवै अनागुनमाक, ओ नवाड़ि दै छै।

गुथोकें प्योप्यो हेइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओउर के वाग मेथै कतो क गनदा खेखड़ामे गेठ हेलाइ। पौत वाड़िदेउकै, दस टाकाक पंप्या टूटगिठै मुदा गंगाड़ा दोसन वदछिदेउकै।

गुथोक तोनहम पाम्हाउ

एक वेन नगियाँ गछपकू आम छाप कए गेठ नहै नज भाविके पयास गो टाका देगे नहै। मठकिगप्याइ छए देगे नहै।

वेवावाथिक वोप्यान उतानि नै छै। कोन छौड़ा, कोन भौगी काए टा आम छाप गेठ छै।

गुठो मनीनिगिछटपट कनै १६७ दम खुठर आ प्योप्यो होर

"बुढिया कए वोप्या ७७७ छै ओकना (गुठोकै) अपना उठे ने होर छर
छौड़ी असकने कपून घन १५ कपून गाछी दौड़ै १६२ छर छौड़ा आठ वजे य
निसुठे नै छै"

गुठोक अन्तमि पाम्मड

गुठो साग- आठ टा गनका पुट्टा काटकिए नापने-
ए. आव १५ सके ने ठागइ छै जे कुछो कना।

नगियाँक पाठी पार- पोअर नै छै नै जानकी माए गेथै।

आन वेन गुठो नागिओ कए गाछी ओगनै १६५ अर वेन नै ओगनमेथै आव
ओते पैनुप्य नै छै

कंदाहावाठी पुहुंय गेठर ' पपा, कठ वर मसिननी कए वजा आनथनि ठीक
काए देतौ।'

गुठो वाजठ-

' कनियाँ, ओर मे एक हजान ठागौ। हमना हाथ पन एक्को गो टका नै छै।'

' वजा कए आनथनि ने जे ठागौ से देवै।'

अनपुन पनजाव सए घूनीआयठ

मगनि महिनद १ जे वेशमानी सऽ गुठोक घनाड़ी गुठोक वाप सऽ ठपिवा ठेगे १
है से ऽकहवा मगनि सुनठकै जे ममा वेमान छै १ मेट कनय एठै गुठो ओक
ना अवाय कथा कहि देठकै।

મહાનિદ્રા સળંગાણ મગવાળક પૂજા કરેછકા નિગિયાં ઓળંગેછ, મૌખી ના
તમિ નોકાં છેછકે નિગિયાંકે પાના યથે પો ગુણેક મગ વહુન યનાપ છે. ઓ મોને
આવાં ગેછા

એ ઉપગ્રાસક મહા-અગ્નિ કલા દેખૂ

માય નાકા પૂજા દિઆ પુછછકે ઓળાંકા હાથ સુગવર મે નિગિયાં કર મગ મૈ છા
ગાં છે માલ કર કરછક ' માય, પૈસા દહી મે વવા કર ગોલી ઓવદિર દસિ'

નિગિયાં કનહા પકડી કર ડોછેછકે ' વવા! '

કુરુષ મૈ કાગૌ કુરુષ મૈ

' માય, દૌડ ગો દેખહી મે વવા કર કી મેછે ગો! વવા હૌ! હૌ વવા! વવા હૌ વવા
! '

' હંસા ડડગિયૈ'

સેન પાસક અઘાવમે છકડી મૈ આ છકડીક અઘાવમે ગુણેકે ગાડી દિછ પોતૌ.

" શૂનકમ હોર છે હૌ! " પનમેસન વાળછા

શૂનકમ્પ સેન પૈછા

અક દશાણે ના દૂ ગોટે મોટાસાંકાં સર પૈ, કનહૈયા આ પાગદીસા

श्वेत मन्त्र गुणो अस्पर्शात् जायते, ओम् पौस्तमान्म होर्यै, श्रुक्मपसं गु
 ठो मन्त्रे से पहनिहयिसे अस्पर्शात्मे ह्यथा नै, से कागय वनिगै।

श्वेत दोवाग गुणोके असमसाग आगठ गे। उक् देवके छोटुआ, दुगु कोदवाह
 माटिसे गुणोके गोपदिठके।

कछि प्यहू आ गनीगानिगे मुसठमान नै से आगिदैन आ दशुगो होर्यै दे
 प्यिवापै छै- ई हनिगु ह् कमुसठमान हनिगुओ के कोनो वनम ह्! वनम ठे
 के की होर्यै? पैसा होर्यै ह् न वाधेवय्या गुणन कनिह्।

गेगा मन्त्री सगक श्रुक्मपक वाद श्रुक्मपा नाशिदेवाक पुनगिगिगिगि। कोनो
 पुनाकानिक आपदा एधपन केगा मुश्ठ ठेकके श्रुक्मपा नाशिदेवाठे आप
 समे पुनगिगिगिगि होर्यै छै आ से न्यूग मे नहवाक ठेठ, से ठेपक एज देपव
 याहै छथि।

वाड कमशिगन पनह सौ टाका।

एमपी पाँय हगान टाका।

मन्त्री दस हगान।

सगकानी आदमी यानिठिपक येक।

आ श्वेत ओर्यै पार्यै ठेठ नगडा।

गगदीस के ओर्यै सँ एक ठिपक याहि। मुदा ठेपक दुनै छथि नगिगिगिगि।

"नगिगिगिगि उदास अया ववा मग पडै छै। दार्यै गे! कतो साशु अवाग नै। ओम्
 मेठै गे हाक दस्- ववा! हौ ववा!"

૧મળા ખોગી

પ્રાત્ના વ્રતિનામી, ડાપ્તની નૂપમે। ઇષ્પક ઇષ્પિ ઇથા- [૦૫૦૩૨૦૧૮] "નૈથિષિમે અપ્પનયના ઇ પ્રાત્ના સાર્હિય ઇષ્પિ ઇથ અર્થા, નાહિમે અધિકાંસ ગીનસ આ વેખાન અર્થા અગાવસ્યક વ્રતિનામ આ મહાવ્રતિન સૂચનાક ગામ્ડાન અર્થા ઓહિમે શત્રિ□તાત્મકતા વેસી આ આપ્પ્યાનપનકતા કમ છેક। ડાપ્તની શૈથિમે ઇષ્પિ એ વ્ર□તાત્મકતા શહિસ આ પુનાત્તવક વાનીક આ વ્યૌનેવાન અન્વેષામ ગૈ અર્થા વ્રતિનિન દેશક ખીવન-શૈથિ આ સંસ્ક□ર્તિ આલોકતિ કનડ વ્રથા નોયક માગવીય પ્તસંગ અર્થા "

ઇષ્પક આસ્ટ્નેથિયાસં પ્તમાવી ઇથા- ' આસ્ટ્નેથિયા વ્રતિસતિ, સમ□દ્ય, સ્વયંદ્ય, શુદ્ધ આવોહવા આ ઉન્નાન ખીવન સ્તાન વ્રથા દેશ અર્થા, ગીનીવો, અશક્ષિષા આ સામાખિક મેદનાવ ગૈ નહ્થાક કાનામે ઓતૌકા ખીવનમે વ્રુહા શાગ્તિ છેક। '

હમના મોન પડેલ ખો લકટા હમન સંગી કોનો પનીક્ષા દરેદ દનમંગા ઇથ આ પૂનવ્રતિસટી લપિયા ઘૂમકિડ યથાઆપ્ત, કલ્થક ખો દનમંગાસં ગીક સહન તં પૂના વહિનમે કોનો ગૈ છે। ઓના તં ઇષ્પક કહે ઇથા ખો હુનકન એ પ્રાત્નાવ□તાત્મકતા શહિસ આ પુનાત્તવક વાનીક આ વ્યૌનેવાન અન્વેષામ ગઈ અર્થા મુદા ઉપનકા અનુયદેદક આલોકમે હમ લેપન વ્યાન દાઆવડ યાહવ ખો ખપ્પન સ્ત્ર ૧૭૭૮ મે વ્તટિન અમેનકિક ક□લોનીસં હથ યો ઇથક તં અપનાયી સમર્કે પડેવા ઇથ વ્તખીનપિયા આવ ઓકના થા ગૈ નહ્થે। સે કૈપ્તન અલિપિ તીન ખાહાખમે પશુ, વોઆ, મેડા, હન આ દ ટા છોટ ખાહાખ આ ૧૪૦૦ મહાધિ પુનુષ ખરમે સં અદહા અપનાયી નહ્થા, ઇડ કડ રદ ખનવની ૧૭૮૮ ર્કે વ્તખામાન સડિનીક તટપન પુહંયથા, આ આસ્ટ્નેથિયાક યાૂ કાળ સમુદ્ન

નટસું મૂઠ આદિવાસીકેં મીના પની દસિ આસો- આસો યકેઇ દેઇ ગેઇ। મૂઠ
 ગિવાસીક વાટાલેઇ (ખડસોના) પની કવળા કડ છેઇ ગેઇ, આ આસો ખપ્પન
 રદ ખગવનીકેં શોનડ ઑસ્ટેઇયિા દવિસ મનાશોઇ ખાસે, મૂઠ આદિવાસી શોડ
 દગિ શોક દવિસ મનવૈઁ ઘથાિ આવ શો નિખિવેશન (અધૂસયારિ વોળ) મે
 નહૈઁ ઘથાિ મુદા ખેમસ કુક ખપ્પન ગૂપ્પીયેમ્ડ ગેઇ નેં શોતુકા મૂઠ
 ગિવાસી માશોની સગક સંગ ગીક વ્યવહાર કેઇઁહાિ

આવ આડ નમના ખોગી પની-

[૩૦૦૬૨૦૧૮] અપન પુત્ર કુમાન સૌમ્ય સંગે વખિનેસ ક્ષાસમે શો
 મેઇવન વદિ મેઇહા।

પૈઘ વેટા સંગોષ કુમાનકેં પહૂંયઇપન શ્વેટો પડવૈઁ ઘથાિ વેટા કુમાન સૌમ્ય
 સીએ ઘથગિહ આ પુત્રોહ મધુઘિકા (મધુ) સશ્વટવેપન રંગીગયિન, વેટા
 ખાતાયિમે વાપિહ કેઁ ઘગ્હા સે દેખેવા છેઇ ઇપ્પક ગમિન વાક્યક પુત્રોગ કનૈઁ
 ઘથાિ- "શાટા-અદૈનીક તીમન વગઇ છેક। અદૈની મધુઘિકાક મમ્મી
 ખપ્પમાઇ યાદવ" ।

સૈક્યુઅનો ઇકક કછિ જાનીયક દોકાનક યન્યા અછાિ આ પાંખઇ ઊપાદક
 સેહો। યાનિમાસસં સૌમ્ય કૈસન પીડિતિ માપક મત્યોપનાગ્ન સેવા કેઇઁહાિ
 આ આવ પતિાકેં સંગ અનઁ ઘથાિ સૌમ્ય કહે ઘથગિહ ખે સંગોઘકેં
 ઑસ્ટેઇયિામે ઑનૈગ્ન નૈ મેડેનિ કહેઁ છેક। પ્લાસ્ટ કુક મેઇવનક
 પછવનિયા જાગ ઘપ્પેક। લપ્પ રંડયિન આ અશુનીકન વેસી નહૈઁ અછાિ,
 ક્નાશ્મ સેહો હેશ છેક (તેં હેશ છેક- સે ઇપ્પક નૈ ઇપ્પિને ઘથાિ)

સ્વસગિકા ગોયનકા (સીએ) આ આગન્દ ગોયનકા (સશ્વટવેપન
 રંગીગયિન) ક યન્યા અછાિ હગિદિ શ્વિમ 'સુર્યાગા' ઑસ્ટેઇયિામે ઇગઇ
 છે। ડેસા હટમે સવ સુન્દન જાનીય પુવતી વેટનેસ છે। ઇકટાક મુસ્કી

ઠમ્વા છઠે ઇચ્છક સોચેા છર્થા- ઓ કાષ્ટિક મુસ્કાપ્પઠ? ખે હે, સુખાપ્પઠ ખોવનમે હન તાપ આત્મકિ અનુભૂતિ કિષ્ટુ ક્ષમાક ઇથ સુખ દસ ખાસા છેકા.

માતાસં સુખદ સમાયાત્ત ઇથા, યુગવિત્સાટિ પેશનક વકાપ્પા તાસકિ મુગાતાન ઇથ તાપ્પત મેઠા. દૂત-દૂત ખાસવઠા દુગેઠકેં તાસ વધિશ્ચ દુગેઠ કહઠ ખાસા છેક, તાહમે દુત્તઘટના મે ઘટત છેકા. સટિમે દુત્તમ યથેા છેક, કઠકત્તો ટામે દુત્તમ મે છે, મુદા પુત્તકા દુત્તમ ત્રીક છે.

કેદાત કાનનક માતાપિ તાહુઠ વત્સસં ગપ મેઠગા. ઓ આ હુનકત પત્તી અશ્વત્થી, દુત્ત રંખીગપિત્ત ઇર્થા આ મેઠવત્તમે ત્રીકતી કત્તેા ઇર્થા, વેટી અપ્પસા. કશિનપુત્ત અહમદ ત્રીકતીસં સેહે ગપ મેઠગા.

દૂ ટા હવ્સી આ મહાધિક યયિયિપ્પવ સુગત્તહા. ત્રીગ્ગી આ હવ્સી અપમાનખનક શવ્દ ઇર્થા ખેા મધુવત્તીક સમિત્તક ગદિત્તમાડા, ઓકતી વંખાતા કહિયો, ખેા પાકસિતાનમે પશ્ચાત્તકેં અપમાનતિ કત્તેઠેઠ પડન કહે છે, મુદા માતા મે ઇક પડન ટાસ્ટે સેહે તાપ્પેા. આગાં ખા કસ ઇચ્છક મુદા હવ્સી શવ્દક કહઠાસં અપનાકેં દૂત કત્તે ઇર્થા.

સસુત પુત્તોહુક (સાસુ-પુત્તોહુ મે) કેત સમ્વત્ત્ય સ્ત્રીચ્છાપ્પઠ અર્થા "કતોક ગાત્તખન યયિપ્પાતા ઇગ ગેઠ તાસ ઓહિદેસક મુદ્દા પહિત્તિ કીત્તિથેઠકા. અહૂં ખાં ઓહિતિ કત્તિહૂં તાસ હમતા વડ્ડ પ્પત્તિવ ઇગેા. મધુ થોડે આડત સ્પોકેન ઇર્થા "

મેઠવત્તક ત્રીકવૈડક દુત્તગાપ્પા. - દેશમ હસિક કોનો સ્થાન મે છેકા. યાતિ સાઠ પહિત્ત કેદાત કાનન, સુસમિત્ત, દુસસી આ તમાસ કુમાત સહિ સંગે તાતાનન્દ વયિયોગી ઇગ મહાધી મહાઅપ્પત્તી મે ગેઠ તર્થા, માં તાતાક દત્તશન, વઠિ પ્પત્તિદાન, સેત કાત્તથાન, ઇક દૂત યદ્ધવૈા અર્થા વયિયોગી કહેા ઇર્થા- તાતાથાનમે ત્રીકત વહેા છેક આ કાત્તથાનમે દૂત વહેા છેકા!

कान् डाखन वेसी महि।

"ऑसिक सनाव पान्टी, मयु हैगओवनमे छविह। "

सौम्य ऑस्ट्रेलियामे वसय याहै छथि गीन साठ मेठ छग्हि, यानि साठ पूना
हैगहिन गीन गीन। ओठ अप्ठार कनगाह।

एकटा यद्दामि एक दोसनसँ सटठ दू टा सन्नी सङ्कपन यठठ पाइन
छथि वहुन समग्र प्रो वेस्वयिन हो। "

ससि कपून अपन वडिश्क अनुभवमे कहने छथिह प्रो हुनकन दोस्न सन एक
दोसनसँ छुवाकिस हँसी मजाक कनै छथि तँ ओतुक्का ठेककें होइ छथै प्रो ओ
सन गे छथि से छेपक गीके मजयिगे होह।

सौम्य ओतस वसस याहै छथि मुदा मयुकेँ उन होइ छग्हि

छेपकक पुनोखेसन महेन्दन ह। सँ गप मेठगि, पुन-पुठारक पेशन आयठ
छग्हि ओ याहै छथि ओ केदान, कामना, वगिय कुमान ह, वैद्यनाथ ह।
याहै छथि प्रो ओ ओतस पूव साहित्य छिथि मडन उपन्यासक पहि छंश
अंकिमे मान्य २०१६ मे आयठ, सेन गै आयठ। २४१०२०१८ केँ एकटा नव
उपन्यास छिथि पुनानमन केने छथि नाम सुनायठ गै छग्हि
सय्यदिगनद सय्युकेँ 'मडन' के अंश वहुन नीक वागठ छथि नैसेन
पगै छेपकगिह।

छेपकक पुनान्यास (सुपौठ) वठ प्येक घान कटि प्रोतग्हि, वटार देने
छथिह। मनेवाक छग्हि, जँ वटेदान सेन कछु वाउग कड देठकग्हिन सेन
कए भास ठटकि प्रोतग्हि दू गोटेसँ गप नड नहठ छग्हि, पार टागिकड
डकि छेपकगिहकनो यनिगा छग्हि

मयु गीन गीनस ह्वास्ट वारन (देसी सनाव) क ऑम्डन दैग छथिह, स्वादा

गाड़ी जाँचें।

सौम्य एकटा जापागी वृंजण सुसी (वसिया गान आ मुन्गाक वगै) अँडन करैत छथी।

समुद्री माँछ वानामुंडी, मुदा पोप्यनी, यांप आ यानक माछ सग स्वाद नै।
नमाम कुमान सहिकें 'शेनसँ हयिनी' काव्य संग्रहपन कोनो पुनस्कान भेटै
छन्हि (पुनस्कानक नाम नै छथि छै), ओ गुठे केन हिनदी अगुवाद कऽ
नहै छथी (२८१०२०१८)।

२८१०२०१८- यानी पेन छपिछन्हि एतवो नोन छपिछिनाह तँ एक मासमे
उपन्यास तैयार (जापागी उपन्यासकान हनुकी मुनाकामो पुनर्दिनि वनि
बागा केने १० जापागी पन्ना छपि छथि- मोटामोटी १६०० शब्द)।

गान पनषिदकें ऐगम वगिढम कहैत छै। अस्त्रीकी अनाविदग- मुट्ठीपन
मुट्ठी टकैतक। माइकी कान्ठसँ अहाँ भेट्ने, वस आ टनाममे सस्य कऽ
सकैत छी। एकटा स्टेसनक अजीव नाम- एनक्लासुट।

उविबामे एकटा माँजैवाँ यदु, सौम्यकें भेटनि जे ओ डुगस केन प्यानि
मँजैत होयत। शेन नीयामे ओकना देपुछनि, सगिनेट मुँहमे दवेने अवैत,
छातीकें मथैत जेना वाइत नाकनिहै हें नमसिक कामुक रसा।।

छेपककें हेमोग्लोबिनिक सून सामान्य नापक छै मासमे एक बेर एगसो
इंजेक्शन छेवऽ पड़ैत छथी।

आइ नोन अछी वक्रिस, पुन्यिका, अगधिक, गयिआ अस्त्रिणी। वक्रिस
आ अस्त्रिणीक नोकनीपन प्याना छैक। टाटासँ गयिकि मायक श्वेन आयत
छैक।

नौआक दोकान एकटा महिषा दोकानक हिसाव- करिबमे आग अछी नकैत

बुद्धै जे हम पहिनिहसिँ देय्पनिहउ छए। ओ हमना दसि नकउक। हम ओकना दसि नकउए। हमना उन मेठ। ओकना की मेठै?

अशुनीकनकैँ जँ हव्शी या व्छैक कहवै नऽ ओ गानाज नऽ जायना। सव अशुनीकन कानी आ उवा होश अछी। वहुन कममे एहन होश अछी जकर गढ़नीगीक होश अछी। ई संयोगे छए जे जेसूनाँमे महज्जु अशुनीकी पुत्राणी सुग्हन छथी।

सौम्यक भतिन जसवंत सहि, वियाह ईसाइ एंजेलिनासँ। यन्म पनविनान केन कोनो यकन नै, यज्जो हेतै आ यन्यमे पनायना सेहो।

सौम्य आ मय् सुनोनेकेविगिसूवा दुनूमे गाग छै छथी। नीशुक दनसग, वोटक पेनीमे शीसा ठाग छै।

जोस टप्रा आ वेकी व□उ□क एक दोसनसँ गठ भठिग छी। आनम्न जोस टप्रा कनैत अछी। वेकी के आठगिनमे एकटा युम्वकीय नंग छैक।

शुन□गस जेसूनाँमे घड़ियाउ के माउस प्या सकैत छी। कंगानू के प्याउ कीनी सकैत छी। आस्ट्रेलियाई आदिसीकैँ पनायीन उजिनडि व्राट्प वजवैत सुनि सकैत छी।

एनऽ अपनेसँ पेटनोठ नयप पड़ैत छैक।

आइ पहिठि दनि पोन्क (सुग्नानक माउस) प्या नहउ छी।

पैग्वनि पैनेउ

गोने केदान के मैसेज देय्पहुँ। डी एम साहेव गप्प कनऽ याहैत छह। हुनका प्याथी जजिमासा नहनि जे मेठवन्ममे कोना छी। हमहूँ नसियनिग मेठहुँ।

देय्पए दूटा उड़की एक दोसनकैँ कसकिऽ पकड़ने युम्मा-याटी उऽ नहउ

अर्छा वुहाइ-ए ऐस्वयिग अर्छा आसुटेयिमे समवैगकिता वैय छै। जे
जे संगे आ ऐस्वयिग ऐस्वयिग संगे वविाहे कऽ सकैत अर्छा।

अंकुन आयठ छथी ओ मधु संगे पढ़ै छथिह।

दूटा जगनी उविवामे यढ़ी मधु वनेथिई सग नेगठुस अर्छा नशिं वठा
सुखा ठऽ कऽ मसुगी कनैत नैत अर्छा।

दू वीर के गोठमटोठ हवना कोआठा एगो गढ़पिन गवदी माने वैसठ अर्छा
आठसी जीव।

कंगानू सहमठि

एनू यडि उगुन पेठकिगवायन वडु नसुमानिया डेवठिस (ठुपुनपुन)।

असुटेयिसँ कुआठाठमपुन छेन होयी मनिह सति। एक कनोड जगसंयुया
वठा सहमे ७० ठाय द्रुपहिया।

दक्षमि वयिगनाम, मैकोग नदी। पहिठेन यागक कटनी मशीनसँ देयठि।
वयिगनाममे साँपो, कुकुड़ो प्याइ छैक। कुना के माउंस पुंसव वढ़वैत छै
से ओगऽ वशिवास छै।

वयिगनाममे महापुनकास वडुड भोग पड़निहठ अर्छा।

सति टून, यीनी पगोडा, जकना वाठ वय्या गै होइ छै से यडि कीगकिऽ उड़ा
दैत छै। मधु एकटा यडि कीगकिऽ उड़ा दैत छथी।

होयी मनिह सतिं हनोइ, उगुनी वयिगनाम। ओतुकका नदी नेड नीवन।

मधु के सप्पी नुयिआ पगिगौनव ओगऽ भेटठगुही।

पाना व□गानवठा गोटवुक हेना पार छगुह छेन भेट पार छगुही।

नृयि व्नाह्मस छथि आइएस अँसिन्क वेटी, गौनव नाजपूत। पुनेम वविराह केने छथि। नृयकि पतिा ऐ वविराहक घोन वनिय केठगि

कडपुतहि, कप्पगो सोसिगऽ कप्पगो वोय वगैत अछि।

नृयि संगे वदिर के आठिगिग होश अछि।

कम्बोडिया अंगकोन व्राग हगिहू आ वौद्य यन्मक सम्मसिनास अछि। शर प्रोगेन्ट् पाठक व्रियोगी अंगकोन व्रागक वहुत सूक्ष्म आ व्रिन्तान अन्वेषस कयने छथि।

पव स्ट्रीट के यौनाह पैतीस साठक आदमी व्रांट गज्ज सन? थन्टी डाम शुक्ल वग आवन। सकिंसी डाम शुक्ल वग नाइत। नो आइ डोट व्रांट। स्पेगशि महिठि उगोस, दोस, त्नेस (एक हू गीन)

पुछए- दोहे गिगि उस्ते (अहाँ कयन नहै छी?)

कहएक- एसपाग्या (स्पेन)।

नागिगि गज्ज वेग यप्पिग छी।

वैकाक, सुवनामगुमि एयनपोनूट वीयमे समुह मंथन के वम्व गढ़ कनैत मूना। हगिदीओमे येतावनी ठप्पिठ छै कोइ टप्पिस नही। वैकाकक ठम्वा व्राग अगुस मग्दनि।

पटाया कसकाय जगजग वुद्य वुद्यक एहेन मूनागि गै देयने छएएक। नागिगि एक वजे मुम्बई पहुँचव। सम्नाट नसिन्न कनगाह। [०४०९२०९८]

पनशिषिट- अंउमान डायनी

સાતિમ્વન ૨૦૧૨- માદિધિ વાઠક સંખ્ય સપત્તીક પોત્ વ્થેપ્ત પા ૧૬૭
છથા, વખેઠથા હમ સહસાસં ઓમુમ્વર્સં, પોત્વ્થેપ્ત એપ્તપોત્પત મેટ
હોપ્ત।

ટેસ્કો ઇડ કડ અગ્નાદુત્તૈ ઠાઢ અછા, ઓ યેગ્થેમે ઘન વગા ૧૬૭ અછા,
ઓકના હોર છે અંડમાગ કહ્યો સમુદ્તમે ડૂવખેતૈ। ઓકના ગૌયીક ડનારવ્ત
વાદમે અવૈ છે ઉદપ્ત। પોત્વ્થેપ્તમે ગૌયી ગામ્ના ઇકટા મોહ્થે છે।
અંડમાગમે સગસં વેશી વંગાઠી અછાશ્ચેન તમથિ।

ગૌત્થ વે, વસિટકહી ગોટ પન ખે સ્થોટો છપૈત છેક સે અહી ટાપૂક પહાડ આ
ખંગાઠકે। ઇડ સ્ત્રોતકેઠગિ, સ્કૂવા ડારવ્તગિ, સ્પીડ વોટ સગ છે। કોન૭
ગીશ્ચ છે। ગ્વાસવોટ (પેગીમે ગ્વાસ) વૈસઠ-વૈસઠ સાગાતક ખીવગ દેખાસિકૈ
છી।

ખૌઠી વ્વાયમે પ્થાસ્ટકિ પ્તતવિગ્થાતિ છે।

વનટંગા ખાનવા અદિવાસી। મત્તિન ૭૭૭૭ (વ્રગિય કુમાન દા, આર્.ઈ.ઈ.સ) વહુળ
ખોન દેને ૧૬થા, ખાનવાકેં ખનૂન દેખાઈં।

હેવ્થૌક આર્થૌડ।

મડા

સાહિત્યપ્રેમી સમ્પાટ આ ગેહા થેઠ સપત્પતિ ૬ પોથી પુનુષ-સ્ત્રી સમ્વન્થ
આ પુનુષ પ્તતગિયક મદનક સંદેહ કેના ઓકના હ્ત્યાના વગા દૈ છે, તરપન
આધાનતિ અછા શ્ચેન અપનાધી વૈકગ્નાઝમ્ડક સમ્વન્થી ઓકના સનામ દૈ
છે, સે મદનક દુનુપયોગ કલ્પ ખેતૈ ઓર સમ્ભાવગા આ મદનક માગસાકિ

उद्देवगक संगे उपन्यास पाम होश अछा।

मदनक पत्नी नाथा सगिः-शुङ्गः कः कय घन यथा नहथि अछा। ओकन वडकी वेटी सगयिनी सगिःदिनि जगमथ नैह। मुदा ओकन कत्तौ पना नै, गमन्यावाधिक वृथाउप सगिः गेथ छै, से दः अवति तँ वोस टाका भेटतिऐ आ याउ-अछू वेसाहिकः दः अगै। अपने जायत तँ मदन जँ देपिछिछै तँ ओदवाह कः दैतै, ओ नाथाकँ कत्तौ जाय नै दै छै। ओकन माथामे संदेहक कीड़ा घुनघुनाशन नै छै।

मुदा पहिने एना नै नैह, मदन नकतान कजैत नैह जे नाथाक तेथ-सावुन सडै कः छै। ओकन वाप कामेस-आजाह अपन जमागाक झुट-पास। वाप-पतिनी जने नैह, पयास-सगिः वगिहाक जोगदान। मुदा मुदा कामेसक पतिनीक मन्थुक वाह नगि-नगिउप आ कामेसक हसिसामे पाँय वीधा जमोन पडै, दू-वेटा, दू वेटी आ अपने दू पनागी। सामाजिक काज नौगीक श्रमामे कामेसकँ वड भोग भौ। दूनु वेटा जेना-जेना वीए केथक। मदन वन्व नगिः गेथ, ओतः नाथा भोग पडै। ओतः वड्ड पटनी से घुन आथ, नाथा नैह यथ गेथ नैह। ओ सासुन गेथ, नाथा सगिमा देपः गेथ नैह, ओकन जोडका सादू संगे आ अत्तैसँ संदेह सुन भैथै।

नाथाकँ वदिगनी कना कः कामेस-आगथक। सगयिनी भैथै, कनू भैथै। मुदा मदनक संदेह कम नै भैथै, पहना आ मानी-पीट सुन।

मदन आ कशिीन दूनु नाथ नगिः नाथ गेथ। कथमे आडापन एकटा शीसोक गाछ सूपि गेथै, ओकन दाम-छाप केथक मुदा कशिीन अङ्गा भगा देथक, गहिकी नडकि गेथै। सेन वकिथै।

मदन आ कमथामे मानी वहैथै, मदन ओकन काज काटिपडा गेथ। कमथ केस काय देथकै, कामेस २-३ सय टाका दय पुठिसकँ सागत केथक। पीसा मदनकँ टेम्पो जोगान काय देथकै, पपिनासँ सपिथ आ सपिथसँ पपिना

यउवऽ ठागठ। कामेसऽ नाथाकँ व्रदिगनी कऽ कऽ आगिँदुध मुदा माय
ओकऽ ठेसिँदुधकै- "ओकऽ सैग, गै गँ गाक कऽ देगौ। " सुगऽ मागऽ-पीठ
आ नाथा गैहऽ गगिँदुधिया यउगिँदुध। नाथा के पऽ गऽ गऽ गै।

मैटऽकि पास केठ पऽ नाथा इँटऽ मे गऽ गऽ गऽ गै। गऽ गऽ गऽ गै
सुगऽ गऽ गै। ओकऽ सऽ सऽ सऽ सऽ गै। गऽ गऽ गऽ गै। गैगऽ
गऽ गऽ गै। नाथा सुगऽ गऽ गै।

एकऽ एगऽ सऽ गै। मऽ ओकऽ गऽ गऽ गऽ गै। अऽ सऽ वऽ
कऽ औऽ कोगऽ आगऽ गऽ गै। ठेकऽ आगऽ गै। आगऽ गऽ गै
गै। नाथा कऽ गै गै कऽ गऽ गऽ गै। कऽ गऽ गै उऽ गऽ गै।
अओकऽ ओकऽ आँगऽ गै अगऽ ठेगऽ सऽ गै। नाथा कऽ गऽ गै
पऽ गै। कऽ गै गै। कोऽ के गऽ गै गै गै गै गै?

नाथा कऽ कैकऽ ठा गऽ गै गै गै गै। वेगऽ गै गै,
गऽ गै गै, आगऽ गै गै गै। गै गै गै गै गै। कऽ गै गै
अगऽ गै गै। गै गै गै। एकऽ वेगऽ गै गै गै गै गै
कऽ गै गै गै।

इँटऽ के गऽ गै गै। नाथा कऽ इँटऽ मे गऽ गै गै गै (गऽ
मैटऽकिमे गऽ गै गै गै)। नाथा के सऽ गै गै गै गै गै
गै सऽ गै गै गै। पथऽ के गै गै गै गै गै गै गै गै।
गऽ कऽ गै गै गै गै गै गै। गै गै गै गै गै गै,
पथऽ पथऽ के गै गै गै गै गै गै गै गै। गै गै गै
कऽ गै गै गै गै गै गै गै गै, गै ४-५ गै गै गै गै गै
सै गै गै गै गै, ३-४ गै गै गै गै गै गै गै। ओ गै गै गै गै
गै के गै गै गै गै गै गै। गै गै गै गै गै गै गै गै
गै नाथा कऽ पथऽ गै गै गै गै गै गै। गै गै गै गै गै
नाथा कऽ गै गै गै गै।

રંટન કે પત્રીકષા ખાતમ હોશે નાયા કપણો વેટી મેઠ નહર।

નાયા ગૌકની યાદ છેઠકા। આવ મદન ગાન-માન વિસનિગેઠ નહ્ય। મહાવીર
કપણો સસકૂંઠ મે ગૌકની મેટ ગેઠે। ગેપા સેહે ઓતહાંઆવિગેઠે, ઝ નાયાક
વહનિગ નહ્ય, ઓકનો સસુનાનિપથને નહર।

મુદા માનદેયક ખોળ પુછાનીક વહનને મદન નાયાક પહેદાની કન્યા। ઇગો
નઘુનાથ સહની નહર। ઝ સવ કપણો કહને ઘુનર- ગોઢનીક કોનો વિસવાસ નૈ!
નઘુનાથ ગચ્છિય્થ વાહ નહર। મદન વાહ નૈ છે। ગોકની છોડવા દેઠકૈ।
નાયા ઘન વેડ ગેઠ। મદન મમહન ગેઠ મદનિઠેઠ મુદા પાન સપ ટાકા મેટઠે।
માસ્ટનક માનદેય વઢી કડ યાનિહિખાન મડ ગેઠે। નાયા વેસી પછાપ
ઘાગઠ। સ્તેનસં ગોકની મડ ખાસ, મહાવીર કહઠકૈ હેડમાસ્ટન આ મુખ્યા
સડ મેટ કનર છેઠ, હેડમાસ્ટન કહઠકૈ મુખ્યા સડ મેટ કનર છેઠ।
કામેસન મુખ્યા ઇગ ગેઠ, મુદા મુખ્યા સાશ્વત ગકાનિગેઠે કાનમ વહુ દનિ
ગાણ ગેઠે।

મદન મહાવીર સડ નાયાક મેટપન શંકાઠ હોર છે। કામેસન યનયતિ ઘેન નૈ
છે। કો ઘટઠક, કોન દુખ તકઠીશ્વ છે। સસુન સંગે ઓ કપણ પુસુન-શુસુન
કૌણ, મદન પુછે છે। નાયાકે દુખ હોર છે।

મદન વહન ઇગ ગેઠ। વહનોર નાખકુમાન રંટન કૌણેખ મે પઢવર છે। દનમાહ
નૈ મેટ છે। ઠેકનિ ટીસન ખૂવ યૈ છે। વહનોર પુછઠકૈ- કન્યા કપણો ગૌકની
કપણો છોડાપ દેઠે? અહાં વૈ સંદેહ કનર ઘણે।

મદન યૈઠ દેઠકા। ઘન પહુંયઠ નાયા મટયા તેઠ ઢાનકિદ દેહ મે આગિઠગાપ
ઠેને નહર। કામેસન ખે નાયા કે સેવ્રા કેઠકર દુન મે ખાન કોનો ઇટપટ છે।

મદન વહન ઇગ ખાસ નહ્ય તપ નાયા મનમનગાસ નહ્ય- સસુનો- મૈસુન કપણો
છોડકા। આગિઠગા ઠેવ

कामेस-न छौड़ा कए जाए जाइ छै। नाथा ठेठ टाँकिकि कीगै छै। ओकर-न वाप ओरहुनू ठए एतेक यगिना मदन सोयै-न नह-ए। ओकर-न संदेह पक्का भेठ जाइ छै।

नाथा कहइ छै- पपिनाहि बाबि दीदी सए याउ-न जाए ने आवौ।

दीदी पाँय कठि याउ-न देठकै मदन कए नीस उठै। अपन याउ-न नाथ

प्याबि ई मौगी केठक। बुढ़वा गान-न ठा सूतइ प्यागि वैठाइ देठक। वापक हाथमे दवायि देपि शिगयिनी कए उ-न भेठै- माथ कए ने मानहक हौ पप्पा। नाथाक गनहन किटि गेठै।

मदन बकिठि गेठ। नामपुनमे मदन के नामक ससुनानि छै। मना के महुषि सा-न ए अपनाथि सगक सगद-न छए। उ मनाक जोड़का सा-न ठा गेठ जोड़का के कगयि उ-न गेठै। महुषि ओत-न नह-ए। वाज-नै- एकना हम नाथवै। पड़-पड़ कपनू आँपि ठा गेठ-ए। नाथा से-न आय-न छै। उग-न गूआँ पहिने। गठ मे पूँट ठपेटने।

गनि-न टूटि गेठ-ए। नाथा कतौ नइ छै। ठेकनि ओकर-न बुहार छइ नाथा सामने गढ़ छै।

भोट

भोटमे ठेपक- पुनोटिगोनसिट (सूत-नयान) कें गानाणि (ओ पुनोटिगोनसिटक गानाणि छथि-न एक-न पुठासा वादमे होइ-ए) यहुनू, जो वहुन पहिने एमेठे एक वे-न भेठ नह-ए (एक-नो यनूया वादमे छै) कें ठेक वधियकणी कहै छै, के-न ओन अथै-न छन्हा। पुनोटिगोनसिट सुभाषणी क नीक ठेकमे गनिनी छन्हा से

ओ हनिकासँ सहायता माँगौत छन्हि। कनहि पहुँचै छथि। नाए गेता। नाएनिह कहै छन्हि। ओ सबहक ऐगम एक-एक कप याह पीवाँछि। तहिमे वेड़ा पान।

एमेठे युगावमे नाए, एएयू आ कांग्रेस पाटी के गठबंधन छै। यहुँवंश कुमान। याएव पपिना व्रिधिग सभासँ उम्मेदवार छै। ई नाए के हसिसामे पड़ै छै। कनहि पहिने सुपौठमे पड़ैत न्है। अइ वेन कास्ट कए पपिना व्रिधिग सभामे दाए देठकर, व्रिधिगन याएव एतऽ सऽ जाति न्है, तै एतौका वेसी मोटऽ एएयू के छै। नाएनिह याएव एतऽ सऽ मुष्या के ऐकेशन उड़ै न्है। जीत नै सकै, मुदा योग्य आदमी छै, गएन सनकारी कौँएजमे नाम छै, मासमे दू-यातिदिन कौँएज जाइए आ हाजनी वना कऽ यैठ आवइए। जहिया कहियो अगुदाग आवै छै तए थोड़े आमदनी जाए जाइ छै। छोट वना कऽ सभ घूमैए। प्नोटैगोनसिट सेहे सउमे घूमै छथि। हन्दी के प्नोग्राम वना तऽ प्नोटैगोनसिट कामता (एएयू) संगे गकिठि जेता, मुदा नै दीना पाइक (एएयू) केँ कहि पता छै नै एकटा आग कांग्रेसीये केँ। प्नोटैगोनसिट कामताकेँ कहै छथि जे ऐ तन्हें सोयठासँ नाए, एएयू आ कांग्रेसक गठबंधन कमजोर नऽ जेतै। कामता हन्दी जाइछै तैयान नऽ जाइए। छैन हन्दासँ कनहि। ऐकेशनक पनयानक प्नोटैगोनसिटक ई पहिने अगुमव छन्हि। यहुँवंश कहै छन्हि जे पैसा नऽ अछि। प्नोटैगोनसिटकेँ ई यन्त्रिनि कनै छन्हि। वनि पाइक युगाव केना उड़ै? प्नोटैगोनसिट कतेक यन्दा दऽ सकतनिह ५-१० हजार, ओइसँ तँ नीक जे पनयानमे ओतोक पन्य कऽ देथि, याह-पानमे की कोनो कम पन्य होइ छै! सोयै छथि जे कनहिक पन्याक मान उठा छै, मुदा छैन होइ छन्हि जे नै जानिकता पन्य होइ। प्नोटैगोनसिट आ कामता सुपौठमे पड़ैत न्है आ यहुँवंश नश्चिगांजमे, तकर एकटा प्सिसा प्नोटैगोनसिट सुनवै छथि, कामताक सारकठिसँ प्नोटैगोनसिट आ यहुँवंश एकजाना जेथि ओतऽ सारकठि योनि नऽ जेथै, कामता यहुँवंशकेँ मोग पाड़ैत अछि, यहुँवंश आव ओकने कषेत्तक एमेठे वनै, एक दोसन के वेगाना पड़ैत। मुदा पाटी छए कए दूनी छै, शीन्ष गेता सभ

समहोता कऽ छेकै मुदा एके दगिक कटुता गुनगुने भाख जाका केना उड़ा
 जेतै? वगिह्वाउ दास मपौछिया अय। पसिसा सुनवै छै, याह दोकानवठाक
 नाम वोडयिा छै, घूस जे छेकै, से ससपेन जाए जेथै। नहिया सए याह वेयर
 छै। सन भगानो हंसै, वोडयिा मडिथि पास गर-ए। वोडयिासँ
 पुनोटैगोनासिट पूछै छथि, ओ ककना मोट देन, मुदा ओ टेढ़ जाव दऽ छग्लि-
 ककना देवै आ ककना नै देवै, से तोना कहि कए! वोरोपी के कंडीउट
 वसिवमोहन छए, एक वेन एमपी गए १६२, दोसन वेना हानि जेथै, एतुक
 एमेथे ओकन कनयिा सुजाता छए। वसिवमोहन कीयट छए। एक वेन
 दिसन कामत जीत १६, ओहे कीयटे १६२। ओना सोशलिस्ट पार्टी के नेता
 वगिधक यादवक जमाई दीनवन्धु यादव सेहे एक वेन जीत छै। पपिनामे
 कीयट के जगसंज्या वेशी छै। दोसन गन्वपन यागुक आ तेसन गन्वपन
 जादव छै। यागुक जातकि अपन कोनो कंडीउट नै छै, से ओकन मोट वंटौ,
 यौधनी मेथे वगयिा आ वोरोपी मेथे वगयिा पार्टी, उ वोरोपी छोड़िकाय जेतै?
 हँ पार पन कयिा दूध जार तँ समाजवादी पार्टी के कंडीउट सत्यनारायण
 गुप्ता, उ तेथी छए, तेथी के वेसी मोट ओकने जेतै। वामपंथी के उमेदवार
 नागोसन यादवक कोनो यनया नै छै। मुसलमान वोरोपी सए गड़कै छै, उ सव
 छेह गडवंधन के मोटन छए। नहिना वागन गडवंधन सए गड़कै छै। सुपदेव
 वोरोपी मे छै, ओना ओकन उमेदवार सए जगता गता छै। शत्रिजीक याहक
 दोकान छै, नै गीक याह वगवै छै, नशिांमे नै छै, पनधानमंती तक के गाना
 दै छै, पुनोटैगोनासिटकें कहै छग्लिपिनया कनै छे- तोने कोन कमी छह! ओकन
 वेटी छमी जीग्स आ ट□प पगिह्र छै। छट्टी याह वगवर आ गैहकी
 सम्हानमे ओसागा जाए जेठ छै। पुनोटैगोनासिटकें शत्रिजी छमीसँ पढ़ाक
 टेस्ट कनवैत अछि, पुनोटैगोनासिट पूछै छथिन्ह पुष्प माने की? अता-
 शूठ। शत्रिजी, वेटी पढ़ैमे तेज छौ! पुनोटैगोनासिट कंडीउट संगे अपन
 सम्वन्ध सगकें वता देनहि छथि, ता वात पसन छै, दस दगिका वाद सेन
 एता। घननी कहै छथिन्ह- घुयघुय जाय कए की होतै। अहाँ के कहने सेज
 मोट दाए देतै? दाऽ सकसए। सौ-पयास मोट के सुनक पड़तै। नए सैदा होतै
 धुवंध्र कए। अहाँ कए धुवंध्र की देतै? अपन काम कनतै नए दू गो पैसो होतै।

पनया कने सए पेट नगै? सव कुश्छ पैसे गै ने छए। गै छए नए जाउ। ओगहि वैऽए नहए। आर हम गै काम देवै नए काश्छ उ हमना काम देतै? जे मन होर-ए सएह कनू- धनगी आजाणि भेठ कहए।

प्रद्वंश नामांकन दायि केठक। पुनमास पुनगानी छए। युगाव ठागिया गेथै, पुनैगोरासिट कनहि पहुँचै छथी। कामना मन्तीजी के पनया कनय गेठ अय, ओ ओकन पाटी नदय के उमेदवान छए, क्षेत्न वदैठ गेथै, ठेकनि पाटी नए गै वदछै। वनिदू मासुनी कनए। पनाश्चट। पयास टके मेहिना। कोय दइ छइ, कोय नइ दइ छइ। पौह भेटठ, सैह छए ठेठक। याउने देवे, दूवे देवे, जानने देवे। एक वेन उ पनयायन समिति के सदस्य भेठ। मुपयि कए कहि कए पवठकि के कोनो-कोनो काम रगना आवास नए ककनो वनिथा पठिसनि। काम नए गेठ पन कोय दस, कोय बीस। ठेकनि अगि युगाव जातीय गोठवन्दी के ओनह सए हरन गेठ।

मग्नू माठजाठ के पैकानी कनए-ए। प्याथि पनया-पाश्न के शाजान केने जाहक मग्नू हमना मुठह नए ने वूरह नहठ अय। मग्नू गाय, पहनि युगाव को यक्किन आ शाग्न होर नहइ। आव सवान्थ के उठा पटक छै।

आर सगक टांगोट मुसहनी आ डेमनाहि नहै। कनहिमे मुसहनी के दूटा घगगन टोठ छै। सटठे डेमनाहियी छै। सव मोटन के दुआन पन जाउ। हमनो भेठ देठक। हमनो पुछठक। कनहि के दुनू टोठ आ वगिओ के मुसहनी यांगछए। साँह पैड़ गेथै। यंदेसनी याह-पाग के पैसा नए हमना सए ठेवे केठक; मुसहनी के एगो गेना प्यानि सौ टका औन ठेठक। गीतीश कुमान मोटन के नाम जे अपीठ केने छै से, साग नसियय वठा घोषमा-पान, वैष्ट पेपन के नमूना आ कठेडन छए कए नकिछै छी। गारजी गड्डी के गड्डी आगने छह। हम अपन आटा जीठ काए नहठ छी। महिछि कए ठीक सए वुहावहक। कहिहक गीतीश आ ठाठ मठि गेथै। दुनू एक गाए गेथै। अर वेन एनय तीन के नशिग गै नहै। ठाठेम नहै। अर वेन ठाठेमो मे देवहक नए गीतीशे जतिनै। पुछठक-गीतीश मुपमंननी वगै ने? महिछि प्यानि वहुन कुश्छ केठकए। जनीजानि

गीतीश के कटु-समन्थक छै।

सखीना आयल हः! - जमीन सुनवर। सखीना केहन-केहन के आँड़ गायल हः छै। सेन सखीनाक एकटा पसिंसा। मुप्यिमे गढ़ मेथ। ओक यन्त्रिहकै। यंदेसनी सखीना के गढ़ा नह्य, संगे घुमरमे यंदेसनी कए पूव मन लागल। ओकना मोट के देतौ! यंदेसनी सोयस कहिये काम पन मोट देतौ? सखीना वेसी पढ़ल अपिथ भै छै, खोकागियं पास छै, ।

वसिधमोहन के घन करैये छै। ओगय पाग सय टका भेटै छै। संजय आ जयपनकास दुनू बीजेपी के समन्थक छल। अप्पवानमे जोन समायान गड्डी के मोट आ सनाव के वोतल पकड़ल जाइ छै। गगना- दानू आ मांस यै छै। बीजेपी जतिथे छै।

सपौल गहुँ गायी के भाषा नहः। पूना गायी मैदान नगल नहः कहलक मोदी यो न हः दंगा कनै छै, हिंगू-मुसलमान कए उड़ै छै। गड्ढेवने जतिथै। समाजवादी पाटी सत्यनायक साह कामना पौहः मोटकटुआ वसिधमोहनो के हाड़क कामना जदू सेन नाज कहिये बीजेपी कहिये वंगल छाप गीतीश महिथ ए वड्ड काज केथकै, सौ मे गीतीश टा सीट, साइकि देथकै।

पाइक दोर के छै पनया घुनाय देथक। गभटेन भै, कमथ। हम- गभटेन।
उ- कमथ। कमथ।

मोदी की कहलक। गलू कए वदनाम कन वल वाग। अपहनास, वलाकान आ ह्या साँह पड़ैल वेग घन मे वगल ओक मोदी आ गलू के नकल कन छै।

बीजेपी जतिथै नए नजिनमेसन प्पाम काए देतौ। समीक्षा हेवाक याहि से गप मोहन भागवत वाजल। मतलब एक्के मंडल के वीज मे कमंडल।

एमेथसी हनुम नसीद- वागन के जगसंप्रदा कते? दूह- अढ़ार पनसेट ने? आ गौकनी मे सगने नए वए छै!

यंदेसनी सखीगा वेशी गोम गाए गेथ छै सव पाटी पैसा छै छै, तव टफिट दै छै। ओकना छेठ गाए गेथै। ताथैन टफिट वकि गेथ नहस। यंदेसनी सखीगा के अंग-अंग गहिनय भगव। वोजेपी मुसठमान कए गगवय याहय छै। मुसठमान उमठ छै- सखीगा कहठकस। जेगा हटिठन यूहूदी कए कठठ केठकै, नहनि मोदयि मयिाँ कए कास्ट दैतै। अइ देस मे गद्वि उड़तै।

वोजेपी अगयुन पनया काए नहठस। जमोठ मोदी तए एक गम्भन के हुट्ठ छै! नामयन वात ओकस छै।

आइ पनगास आयठ नहस। वूथ-पनया के सात हजान टका दाए गेथस। दूटा वूथ छै।

नाम मग्दनि तए वोजेपीए वगेतै। युनठकै से मंदनि वगवै ठए? हम मोदए कए मोट दैवै। पकयि अंघशकन

सूनुगनायास कौमनसिट नीतीस गगगुआस छए एगो मुँह गाजपा दोसन गाजए।

कमठ दास वोजेपी समनूथक छए। छपपन रंय के छाती पाकसिगाग कतौ गाना मे ऽठठस। यीन के ठगहि गाए जेतै नामदेव के गप पन सव हंसस।

मोट प्यानि मोदी पाकसिगाग पन हमठे काए सकस। वोजेपी ठडस कए कनठस? हगिदुए प्यानि ने कनतै? मुसठमान के पाकसिगाग मेजठ जाए। ठठ पाठक वसिष्ठठ केठकै। नाष्टनवादी ठठ तए आइवए गेठ□! आव मनुवाएए टा के कमी छै। दीगा पाठक मोदी पन गनप्टायात के आनोप नै ठगठ मोदी तए महागनप्टायाती छै। सुयीन याह दहक- कामना के ई उदातना माहौठ कए एकदम वदैठ देठकै।

पनयात प्यतम गाए गेथस। सागत सव यीज गुमहून जकाँ तनेतन सुनतै छै।

थोग एक घाम्मा पहिने ठाउँ मे ठाग्य ठाग्य। वेयगा ककही दाए कए महिथि
मोटन पटयिबैत नहए, सपौठ वजान मे पोथिगि कम ग्राए नहएए। ई समायाग
वोथोपी समन्थक कए यगिनाति केठकर। सहन मे कमठ के मोटन वेसी छै।

सखीगा मोट गजिवै एए आयए छै। काइए एवह- कहिकए यंदेसनी गकिँए
गेथ। सखीगा मुसकुनायए। वहिन गगे यंदेसनी गवटोए गेथ। सखीगा संगे
युगाव के गप होश नहै। गाजपा कहै छै हम जानिवै। गडवचन कहै छै हम
जानिवै। आव जे होश सखीगा दू-तीन दिन मे दियेथि यैठ जायत। यंदेसनी
पुछएकै- एवहक कहियि? सखीगा जाणवै- गाजपाई नोप गया-गया काम्म
कतै छै। यंदेसनी- एग हिया हानगे जगिगी यवतह? सखीगा छगुगैत नहए
ठडैत-ठडैत मैग गेगार गीक छै। मनगए, जगिअ छए।

घनदेय्यि, गाजकमठ भोगोग्नाश्च (गति गवठ गाजकमठ), वगैत वगिडैत,
गुठे, नमता जोगी, मडन आ मोटक पुनपाड

उपन देठ गेठ घनदेय्यि, गाजकमठ भोगोग्नाश्च (गति गवठ गाजकमठ),
वगैत वगिडैत, गुठे, नमता जोगी आ मोटक सैपसँ अहाँकें सुगाप यग्न
यादवक शैथि, पुनीक आ पुनीक यगिहक पुनयोग, सदा पनविनाति होश
वृत्तक केग्न, दक्ष्यात्मक आ व्यव्यात्मक यतिन ई सग सपष्ट गड
गेठ हएत। सठहसक गगाना सग ठेकदेवना ठेय्यकक नीतन पुनवेश कतैत
छग्न आ ओ टीपड ठौ छथा, प्योयानिकड सग योप-वौसुत वहाग आगड
ठौत छथा, अगठियति कनड ठौ छथा।

तँ सुगाप यग्न यादवक शैथि गेठ गगाना शैथि।

मुदा घनदेय्यिक महिमामे (सग १८७५ मे ठपिठ) सुयदेव मोटमे कतोक गोटे

सँ टाका ढकने नहै। से मोट उपन्यास वन २०२२ मे, १८७५ सँ २०२२ मे कछि अन्तर्गत तँ एषै कालास पुनर्जागरित कहै छथि मोट (२०२२ मे) - मन्त्र गाय, पहिने युगाव कते यक्षिण आ शास्त्र होश नहै। आव स्वास्थ के उठ पटक छै। मुदा १८७५ मे सेहो ओ कहै छथि- अछनकटुआ नऽ कऽ सुपदेव केन एतौ कमा छै छै। मोटमे कतेक गोटे सँ टाका ढकने नहै। घनद्वयिक धुंघमे घटगा (सन् १८७१ मे छपिओ) 'वेटिडि शुक्ल गोडो' (सेम्पुठ वेकेट) क मोन पाड़क से कोनो पोस्टमन्डन उपन्यास वन सकैए। हुनक घनद्वयिक तन्त्रात्मक जगदीश पुनसाद मास्डि छपिओहो अपन तन्त्रात्मक घनद्वयिक। से पाड एकटा दोसरे छेपसँ सम्वाद स्थापति केक जे उमेरमे तँ हुनके वनावक छथिन्ह (एक साठ पैघे) मुदा छेपन हुनकासँ तीस साठ वाद शुभ केओहो।

से हुनक पाड काठ-स्थानमे अपन पाडसँ सम्वाद करैए, तँ दोसरे छेपक पाडसँ सेहो।

सुभाषयन्त्र प्रादवक घनद्वयिक-

उड़का होमे कठकानासँ गाम आयत छथे एपन तुनो समाद पडकऽ मडौनाइ पनयाक घन नऽ जेतै। उगनसँ दस दनि पहिने आवाजोतै, जगिका देप्प के होतै, देप्प छेतै।

जगदीश पुनसाद मास्डि क घनद्वयिक ई अंश देप्प-

"हुन जोड योती नागोसन् आन आगामे नय दिकनानि योती देप्प ओम वज्रह ' ' समैय, कानो गनीव छी तँ की मुदा जगाना वया कऽ नयने छी। वेटीक हुआनपन कोना योती पहिनेव? ' टाटक गुनकी देगे छपयिा देप्प नहथि। ओमनक वाग सुन दोगसँ वाजोह ' समैयकँ कहिअनु जे जयन वेटी आओन नयन ने वेटीक घन होनि, नावे तँ हमन छी कोने। हम दैह छिअनि। उहाका दैह ओमन वज्रह ' ' जयन हमन वेटी एहि घन

आओत नयन ने ओ समधीन हेगीह आक'अप्पने?' '

जेना नगियाँ अमाठी, कनयी, पाठो, जहिया भेटाँगेथे अगैए, नहिया सुनाप
यातू कातसँ तथ्य एकट्ठा कर्तै छथि आ आप्पान, महाआप्पान स□जति
कर्तै छथि। से गुठोक नायक गुठो नै नगियाँ अछि, नगियाँसँ प्रानमन,
नगियाँ सँ अन्त। आ से नगियाँ ई स्थान अपनसँ वगेठक, ठेपक ओकना
थेए एकटा सह-कठकानक भूमिका निर्धारित केने नहथि, मुदा ओ अपन
समन्प्राप्तसँ ठेपककें वृत्ति कऽ देठक नायक वनावै थे। गुठोक वेटी आ
गुठोक छोटका वेटाक धनक काजक प्रगटि□ष्टकीलक द्वाङ्द्व। छौड़ी
असकने कम्पन धन तऽ कम्पनू गाछी दौड़ैत नहऽ छऽ। छौड़ा आठ वगै धन
सुठे नहै छै।

मुदा स्तेन नयन वाँस योना कऽ ५०० टाकामे गुठो वेथैए नयन ओर पारसँ
नगियाँ पाछी कीगैए। ठेपक से नै ठपि छथिजे ई वरह ५०० टका छैए, मुदा
गुठो जऽ आसानी सँ नगियाँकें ओ पार दऽ दैत अछि तऽसँ नगियाँक
आत्मवशिसास सोहँ अवैत अछि।

गुठोक वाप गुठो थेए छौड़ागेथे छोट-पैघ पुनपी, कोदानि, प्यंती, दविया,
कुङ्कनी, भावा, वनछी। धून-धुँआ, छठ प्रपंच, आ गुठोकें सनकानी
जमीनपन वसऽ पड़ै।

गुठोक मरठक दुप्पो सनसँ वेशी नगियाँकें भेटै, से ठेपक प्रानमन आ अन्त
दुनूमे नगियाँक उपस्थिति नयने छथि।

गुठोक वड़का वेटाक नोजगान थेए पर्जावाव पठाएन। पूना वजान नाजनिह
जिठनक समदहि शना गानहि आ ओकन यानटि वेटा। स्तेन वजानसँ वाहन
आउ, वेठा, विना आ सोनक। आ नयन गुठो कें दूटा सुपानी दूटा गोत मे
आपठ छै- एकटा ठाठो पम्पति के पोती के वधियाह, दोसरा साना के पौथी के
वधियाह। गुठोक ससुनानी छै वेठा आ ओकन पत्नीक नाम छै वेठावाठी। पहिने

गुठेकें गाणा पीरेत- पीरेत दम्मा उप्पड़ि गेथै। यानू कात मागे गाणाक नशाक व्यापान होइत होतै। गगणिक वयिहक गोत पुनवाक कृम, साड़ी, साया, वणिउण आ दू सय एकावण टाका दअि पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ नगियाँ संग छै। गुठेक वड़की वेटी नुगियाँ वीनामे वयिहए छै। नुगियाँ सेहे सोहे वीनासँ आयए छै, वहीन नगियाँकें अपन सासुन एस जाय याहै छै। मुदा ओ मगा कऽ देएकै, ठेक कहौ जे वाप नोगाह मऽ गेथै, दनि टागिथै तें पेट पोसै एए आयए छै। ओ वड्ड कागए, गुठेकें छगुगना होइ छै, छौड़ी ई सव वात केना वूह गेथै। आ अन्तमिमे वेटी नगियाँकें पना यएथे जे गुठेक मन वूहण पनाप छै। ओ मोने आवा गेथ। माय नुका पूजा दअि पुछएकै। औतौका हाए सुनवर मे नगियाँ कए मन गै ठागथै। माए कए कहएक- ' माय, पैसा दही ने। ववा कए गोठि ठाव दइ छए। '

गगणिक वयिहमे गुठे सोनक जाइए। गुठेक ओतऽ यएती छै ओतऽ ओकन व□डी ठैगएण वदए छै। कनियाँ दव छै मुदा ओ डाँट- उपट्टा दैए, वयिह होतै, गैतऽ गाण्णन होतै।

कोन कोन नोणगान छै से देप्पवैथे उपन्यासकान पुतोहु कंदाहावाठिकें मएहदक याँपमे मप्यानक कमौगीक नव- नोणगान भेटए- ए, ओतऽ एस जाइ छथी छोटुआ काण कतए दसथ मम्मडक पठिइ मठिमे। मूंगक वीया वाउग होतै, हनवठा यास, समान आ यौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै। शेन गुठेक म□त्थुक प्नामन् एना कतै छथी गुठेकें प्योपी होइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओठ के वात भैथै।

पानविानकि सम्वन्ध, व□द्वावस्थाक समस्यक वविनम दैपैथे सुप्पवा ठा जाउ, ओ अपन माय कए घन सए नकिाठि दैएक, शेन वदनामी भेठापन आपस एस गेथ। ओ छै शना गानहिक पतिया सासु।

स्थानीय संस्कृति दैप्पवैथे काठिवन्दीक सेवा, गौत, शुद्धासी आव तका वाद कुशक कएपो गै ठातै।

गुठे माथेकिसँ टौन्य मांगल, ओ गै देतै तऽ एक्को गो आम क'ठियुयो भोग गै हुअय देल। आ एतवी गै आन देयू- वाँस उड़ सय सए कम मे गै भेटै छै, गुठे योना कए वेयल गै एक्के सय मे दअिय पड़तै।

आ योन सेहे छै। योनवा सौसे गाछक ठुय्यी ससिहो छै। एकटा डकुनवा सेगयिठ योन छै। से गुठेक वाँसक योनी आ डकुनवाक योनिमे अगल छै। गुठेक मुप्पय बंधा छै याहक दोकान, वाँसक योनी तँ साठमे एकाय वेन मुदा डकुनवा सेगयिठ योन छै। नगियाँ, हुनयाँ आ वनस्सेनवाठी ठुय्यी योनावैए। 'उ वगना हमना पकड़ल?' (वनस्सेनवाठी) से सगटा गाछी वगना छल छै।

गाछीक माथेक कयिओ आग छै। आदिसी रोकामे ओ सनकानक नहै छै आ शुक्लेस्ट एक्टमे आदिसीकेँ ओतऽ जाड़गि, महुआ, वन्य-उत्पाद वधियाक अयकान देठ गेठ छै। मुदा सपौठमे गाछी सनकानक गै छल। से एतुकका सन्वहानाक सथगि आनो पनाप, शुक्लेस्ट एक्ट एतऽ ठागू गै अछी। से एक वेन नगियाँ गछपकू आम ठाएकए गेठ नहै तऽ माथेक पयास गो टाका देगे नहै। मथेकानि प्याइ ठए देगे नहै।

नगियाँ के दीपन नेनहू एछै, ओ युपयाप नगियाँ के देखैत नहइ-ए आ मुस्की छोड़-ए।

दसथ माम्दठक साढूक उड़का नेपाठमे छै, नगियाँ छेठ कथा अवै छै। मुदा गुठे यानी भासक टेम मंगौए, अनगुनमा नाठाक छै मुदा तौयो ओकनासँ पुछतै। दसथ माम्दठ पाखवछै छै, मुदा एक्के वेनमे गुठे हँ गै कहकै, अनगुनमासँ पुछतै। भागे संस्था वनमान छै।

से नगियाँ तऽ छल छैहे गुठेक, पुतोहु जे हगड़ा कऽ कय गेठ नहै सेहे एकदममे दून गै छै, देयू एतऽ - कदाहावाठी पहुँच गेठ। 'पपा, कठ वठ भसिनगी कए वजा आगथनि। गीक काए देतै। जे ठागतै से देवै।'

ਏਘਕ ਅਹਾਂਕੈਂਦ੍ਰੀ ਆ ਓਹ ਸਭ ਗਮ ਓਸ ਯਾਤ੍ਰਾ ਚਰ੍ਥੀ। ਕੇਨ੍ਦ੍ਰੀ ਕਘਨੋ ਗੁਥੇ ਨਹੈ, ਕਘਨੋ ਨਿਗਿਓ ਆ ਕਘਨੋ ਕਨ੍ਦਾਹਾਥੀ।

ਮਨਾ ਮੋਗੀਮੇ ਸੁਭਾਧ ਧਨ੍ਦ੍ਰੀ ਧਾਦਵ ਕਛਿ ਏਹੇ ਧੀਯਕ ਅਨੁਭਵ ਕਰੈ ਚਰ੍ਥੀਯੋ
ਵ੍ਰਹਾ ਓਕ ਆਗੋ ਗਮ ਕਰੈ ਅਥਾ (ਮਾਨਾਕੈਂ ਚੋਡਿ ਕਸ), ਯੋਗਾ ਯੋਵ੍ਰਾ
ਕ੍ਰੀਸ਼ਿਪਾ ਮਨੁਕਘਕੈਂ ਯਾਤ੍ਰਾ ਏਘਾ ਗਾਡੀ ਸਭਕ ਯੁਕਿ ਯਾਤ੍ਰਾ, ਯੋਗਾ
ਸ਼ਿਗਿਪੁਮੇ। ਧੂਨੋਪਮੇ ਯਾਂ ਅਹਾਂ ਯਾਤ੍ਰਾ ਸੰਤੋਕਕ ਨਿਗਿਓਥਾ ਕ੍ਰੀਸ਼ਿਪਾ ਅਹਾਂਕੈਂ
ਏਘਾ ਏਸਾ ਗਾਡੀ ਸਭ ਗਫ ਗਸ ਯਾਤ੍ਰਾ, ਅਪਨ ਏਸਾ ਓਕ ਅਪਨ ਗਾਡੀ ਆਗਾਂ
ਵਡਾ ਏਏ, ਏ ਆਸਾਮੇ ਯੋ ਏਸਾ ਪਾਛਾਂ ਆਵੈਥਾ ਸਦਾਸਧਾ ਏਘਾਓਨ। ਏਘਕ
ਸ਼ਿਗਿਏ ਵ੍ਰਹਾ ਪੀਵੈ ਚਰ੍ਥੀ, ਸੇ ਫੁਨਕਾ ਏਹੇ ਵ੍ਰਹਾ ਗੇਓਧੀਯੋ ਓਨਧ ਨਥਿਮ ਚੈ ਯੋ
ਧੂਨਾ ਵਾ ਅਥ ਧੇਨਾਵਾਥਾ ਯਾਤ੍ਰਾ ਅਹਾਂ ਸ਼ਿਗਿਏ ਗਾਤ੍ਰ ਪੀਵਿਸਕੈ ਚੈ, ਮੁਏ
ਸਾਨ੍ਧਯਾਕਿ ਸ੍ਥਿਥਾ ਸ਼ਿਗਿਏ ਨੈ ਪੀਵ ਆਵ ਮਾਨਾਮੇ ਸ੍ਵੀਕ੍ਰੀ ਗਸ ਗੇਓ ਚੈ,
ਪਹਿਓ ਓਕ ਅੰਛਿਸਿਮੇ ਸ਼ਿਗਿਏਕ ਧੁੰਧਾਕ ਚਰ੍ਥਾ ਵਨਵੈ ਚਰ੍ਥ ਆ ਆਵ ਯਾਂ
ਵਾਧੂਮੋਮੇ ਨੁਕਾਕੈਂ ਪੀਵਸ ਯਾਹੈ ਯਾਂ ਓਕ ਆਧਿਗੁਨਾਡਿਕਸ ਏਘੈ ਚੈ। ਧਨਏਘਾਧਿ
ਕਥਾ ਸੰਗਾਫਕ ਪ੍ਰੋਟੋਗੋਨਸਿਟ ਸੇਹੇ ਧੂਵ ਸ਼ਿਗਿਏ ਪੀਵੈ, ਸੇ ਸ਼ਿਗਿਏ ਪੀਵਾਕ
ਹਸਿਸਕ ਏਘਕਮੇ ਧੂਨਾ ਵ੍ਰਹਾ ਚਰ੍ਥੀ, ਆ ਯਾਂ ਪੁਨਾਹੁ ਮਧੁਓਕਿ ਸੇਹੇ ਏਓ ਕਸ
ਧਿਨ੍ਧਿ ਹੇਸਾ ਚਰ੍ਥੀ। ਚੈਨ ਸੁਪ੍ਰੀਓਸੈ ਚੈਨ ਅਵਾਧਿ ਨਹੈ ਚਰ੍ਥੀ, ਡੀਏਮ ਗਪ
ਕਰੈ ਚਰ੍ਥੀ, ਧਾਥੀ ਕੇਨਾ ਚਰ੍ਥੀ ਸੇ ਪੁਛੈ ਚਰ੍ਥੀ ਧਧੇ ਯਾ ਕਸ ਨਸਿਧਿਨਾ ਹੇਸ
ਚਰ੍ਥੀ। ਮਾਨੇ ਪੁਓਸਿ-ਪ੍ਰਸਾਸਨ ਕੁਸਓ ਕ੍ਰੇਮ ਪੁਛਾ ਸੇ ਅਧਨੋ ਓਕਕੈਂ ਵਸਿਵਾਸ
ਨੈ ਹੇਸ ਚੈ।

ਧਨਏਘਾਧਿਕ ' ਏਕ ਏਨਕ ਧਨ (੧੯੭੩) ' ਮੇ ਮਨੋਵਸਿਥੇਸਾਨ੍ਧਕ ਪਧ੍ਧਾਕਿ
ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਏ ਗੇਓ ਚਰ੍ਥ, ਧਨਏਘਾਧਿਕ ' ਨੀਧ (੧੯੬੬) ' ਮੇ ਕਥਾਕਾਨ ਓਧਿ
ਚਰ੍ਥੀ ਵਥਾਵਾਥੀਕ ਅੰਗਾਕ ਧਸਿਸਾ। ਕੋਨੋ ਡਾਕਟ੍ਰੀ ਓਕਾਨਾ ਵਾਹਿਨੈ ਕਹੈਕ
ਮੁਏ ਓ ਵਾਹਿ ਅਥੀ।

ਮਧਨ (੨੦੨੧) ਮੇ ਏ ਪਧ੍ਧਾਕਿ ਵਸਿਨਾਨ ਪੇਓਕ। ! ਧੁਨਾਧ ਨਥਿਧ ਵਾਹ

१६२। मदन वगाह गै छै। आ सुनी-वमिन्स, मदनक कनयिँ नायाक सुत्सुट उविणिगमे पास हएव मुदा याहयिँ कऽ अपन शनीनपन अयकिान जावैत मदनकें नोकगै सकव, घुनव, नोकनी छोड़व, मुदा ओकन हएया। आ ओर हएयाक पुप्रासकें नोकवा ठेठ ठेपक शनीयनीकें आगाँ कनैत छथि- "भाय कए गै मानहक हौ पपुपा। " ठेपक मदनकें मुदा वेनीशुट अँसु डाउट गै दै छथि, ओ घोषति कऽ दै छथिजे मदन वगाह गै छै। मुदा ओकना शनस भेट जाइ छै, मामाक ससुनानमि, ओ सन दवंग छर, महीषि साग गए अपनायी सनक सनदान छए। आ ओ शनस दऽ दै छै। ओ कए शनस दै छै, पाठक वहीजाइए, ओकनासँ अपनाय कनवैतौ गै। से ठेपक माहौठ वना कऽ कथाक पाठ आ पुनपाठ कनवा ठेठ पाठकें छोड़ि दै छथि।

आ उनीडाक वपिसुडगवाह गँ छोड़ एतऽ प्येक वपिसुडग सेहे भेट छै- मदनक वाप कामेसन आजाए अपन जमानाक श्मश्टन पास। वाप पतिनी जाने नहै, पयास साइ विगिहाक जोगदान। मुदा मुदा कामेसनक पतिनीक मनुष्यक वाद गनि गनिआ आ कामेसनक हसिसामे पाँय वीधा जमीन पड़ै।

आ से भाषामे सेहे होतै। जे डेडी पयपनयि वाजै वठा पनजावकें पंजाव वाजवे कनत आ ठपिवे कनत आ केदान कागनक कथति अगिजातु वनग सेहे जायन उँग वजै छथि गँ अंगनेजी वाजैवठा ओकना उगी कहिसुधान कऽ दैत छन्हि। पैठनि आ संस्कृत वप्राकनस भाषाकें स्थानि केठक मुदा आयुनकि काठमे संत ज्ञानेश्वरनक मनाडी ज्ञानेश्वरनी पढ़ैठे मनाडी भाषाकें भाष्यक मदन ठेवऽ पड़ि नहै छन्हि।

उनीडाक वपिसुडगवाह भाषाक संगे वननि, शहिस आ संस्कृतकें पाठक अंग भागैत अछि।

गुठमे अहाँकें ठागन जे गे कयिँ शोषक छै गे कयिँ शोषति, आ से भाषासँ ठागन, गुठि एकठो टा पुय्यी भाषिकें भोग गै हुअ दैतै, वाँसो काटि ठेठकें

आदिआदि। मुदा तप्ये अहाँकें वातावरण मोन पड़त जे सपिण्ड तँ शुक्लनेसूट
एगिया छए गै आ वनगा भाकि छए। मुदा पछर भवि दसथ मसूडक
छए, यौक यौगहापन सौसे व्यापान गएन वासन कऽ नह
छै। वावा कहकै, घनपन मनघाउन छोट देगे छह जंगल देकै, मुदा ओ
कोनो काणक गै जंगल मे डका गेबै तमसेवो केबै, अहाँकें भागन जे
अन्धवसिवास प्यतम नऽ गेबै मुदा
शेन काठिवन्दीक सेवा, गौत, सुवहासि आव कुशक कठपो गै भगत। से
संस्कृतमि सेहो पवित्रान गेबै, अन्धशास्त्रमे सेहो।

घनदेवप्रिय काठक वनग ओक अहाँ पढ़व तँ भागन जे गुठो पढ़ नह छी।
घनपसूसीक पार सनकान देतौ। मडनमे देव्ये केवौ जे सूनी वनिन्स कोन
नायाक रसूटमे शेन सुनसूट उग्रीजग गेबैसँ सोहँ आप्रभ भागे मैटनकिमे
आप्रभ होतौ। एकके पाठकें अह~कएक तनहँ पढ़ सकै छी। गुठो मसूडक
जानि गै वनाप्रभ गेठ छै, टास्टि सँ जे अन्दाज ओवाक हुअप्र भगाउ, मंड
कमीशनक मंड प्रद्व नहथि आ पश्यमि वंगामे मंड दठतिमे अवैत छथि।
केदानी कानन गुठोक याह दोकानपन सुभाष यन्टन प्रद्व जौ कें देव्ये छथिन्ह
आ कुमान पवनक 'पड' सन पढ़क मुदा हुनक गौआ सन कहक जे अहाँ
सन ओ कथा पढ़गे छी हम सन सद्यः देव्ये छी, अपन गाममे घटति होश।
मडनमे तँ प्रेयक आनो सनक छथि, कामेसनक वाप पतिनी भग ५०-६०
वगिहा जमीन नहै, मडन केवक वाद मदन मामाक ससुनानी गेठ, ओ सन
दवंग सन छै। तँ गुठोक कएक तनहक पाठ नऽ सकैए आ मडनक सेहो आ
सए जेक्स डेनीडक व्रिप्पिमुडगवाद कहै। दक्षमि गानामे कोक
आदिसी समाजक पुनोहति व्नाह्मस वगि
गेठ, काठिवन्दीक सेवा, गौत, सुवहासि पुनोहति अवैत छथि, गएन
व्नाह्मस हेन व्नाह्मसो नऽ सकै छथि, जे स्त्रीउद्वनक वनि केने वजना से
कहना व्नाह्मस केन गहवन आ गगना वन, मुदा ग्नाम-नुटनपुन (भाया
नुठापनगंज, जठि मधुवनी) मे गहवनक सेवा व्नाह्मस गौत कनैत छथि।

मथिषिमे पसऱै सताऱ (संथाऱ) समुदायमे मुऱ्मु पम्ऱुति ययमे सगिऱु गदी घाटी सगऱ्पाक काऱक गऱन्थक वगिती पढैत छथि, से संथाऱ समुदायक ठेक अहाँकें वतेगा। ई एकटा गीका अछि अपन ठपि, शहिस आ सगऱ्पाक पुनागना आ गनिगऱना सहि कऱवाक। से नहि नहि किऱू टा द्वागद्व आपसमे वान्ताऱप पुनागऱ कऱऱै ठगैत अछि, आ से स्थाग, समय आ ठेकक अगुसाऱ मुदा कोनो स्थानि केन्द्ऱक वदथैत नैत अछि साहित्य, ठेक संस्कृति, मौषिक पऱम्पऱा, शहिस आ वणिजऱग मणिद्ऱ गऱऱा अछि।

अंग्रेजक गेठाक वाद गानक ठेक अपन शहिस, संस्कृति आ एकऱ सैद्धान्तिक आचारक गव पऱगिाषा वगवय ठाऱ। मुदा ऋग्वैदिक काऱसँ गानमे गानासंसीक नूपमे, आप्यागक नूपमे समागऱगऱ पऱम्पऱा नहऱ छै। मुदा मैथिषिमे सगटा स्पेस एकटा प्यास मागसकिताक ठेक ठेवऱ याहऱक। अपन अगुगऱक गानसँ ओर स्पेसकें दऱमऱि कऱऱै याहऱक। मुदा मशिऱ ओकोक ऽसिपिठिगिी संस्था सगक अछैत आव ओ समुगव नै छै, आ नऱऱे अगऱगुठाऱक अपन महत्त्व छै। मुदा देपऱ गेऱ णे महिषि आ वंयतिक अगऱगुठाऱमे उपस्थिति सग गऱषायी स्पेसमे कम छै, से मैथिषिक समागऱगऱ याना ओरपन वेसी काऱ केऱक, आ आर पऱमिाम सगक सोहँ अछि णे मूठयाना समागऱगऱ यानाक गोटसि नै छै छऱ, कोनो-वान नै दै छऱ आर समागऱगऱ याना द्वाऱा गोटसि ठेठ णयवाक आकांक्षी गऱ गेऱ अछि।

आ से आपऱऱ डेमोक्रेसीसँ, आ से अछि गोट आचारगि। आव 'गोट' पऱ आऱा एकनो कएक गऱहक पाऱ गऱ सकै। कोक गऱहक समीकऱाम वगैत देपमे हए ए उपग्यासकिमे कोनो केन्द्ऱ स्थायी नै। णमीगी स्तऱपन सग एक दोसऱाक वगिथी मुदा उपऱमे गऱमय कछि आने गऱ गेऱ।

स्तऱी वऱमिऱस आव पठि माऱऱक, मऱऱमे नाया शुऱस्टे ऽविणक नै छै।

મુદા દવયાસં ગતદગિતિગતિદિગ ગેઠા મુદા ગીતીસ મહિષિ ધેઠ વડ્ડ કઽ ૧૬૭
 છેા શ્વિષ્ટી પત્રસેટ મોટ ઓક૧ છે૧ ક૧િગિ. ૧ગિયાંકે પોશાકક ૫૦૦ ટાકા મેટ૭
 ૧૬૬ સે અહાં ગુણે મે પઢનહયિ ૧હિ. આવ મોટમે ૩૩% ૧ગિત્રસેસન મહિષિ ધેઠ,
 સાંસ્કૃતિ વયયિા સઠ ધેઠા. આ ૧ેં ૫૫૫૧ ૧ા૫૬, કાંગ્રેસ આ ૫૬૫૫ કે૧
 મહાગડવંધનક કૈડીડેટ ડાઢ મેઠે ૧ેં પ્નોટૈગોગસિટ કૈ૬ છથા- ઇઠેગો ૧ેં મોટ
 દેઠાસં ગીતશિ મુખ્યમંત્રી વળ૧૧ સે મહિષિ સઠકેં વોગાર ૫૧૧૧ છેા. મોટ આ
 રેકૃક્ષનમે ઇાપ કમી હેર, મુદા ૬ સઠ ૫ સાંધપ૧ ૬કટા ગવ સામાજિક
 ૧૧૧૧૧કેં હિથિડેટ અછા આ ૧૬સં ૫ે વંચતિ વૃગ્ગ અછા, મહિષિ ૫૬મે
 સમ્મલિતિ અછા ૧ક૧ા સ્કૃતશિષિ હેવાક અનુગવ હેર છેા. મુસમ્માન વોળેપી
 સં મડકૈ છે, વાગન મહાગડવંધનસં મડકૈ છે, વોળેપી વળિયાંક પાત્રી
 છા, સઠ પાત્રી ટકિટ વેયૈ છે, ૬ સઠટા ગપ પપિનાક યાહેક દોકાગપ હેર
 છે આ દિવિધિક ઉટપ્રગસ ૫ોગમે સેહો. ' યથિ૭૧ પાત્રી' શ્વિમ્મક ઓર વાઠ
 મળદૂ૧ક ગપ મોગ પડ૧ ગેઠ ૫ે કૈ૬ા અછા- સઠકેં સપિાપ૭ ૫ા૬ છે ૫ે હૂડ
 ગૈ વાગૂ આદિઆદિ, મુદા પૈવ હેર ૧ેં સઠ હૂડ વાળ૧ આદિઆદિ, ૧૫૫૧ કી
 શ્વ૧ક પડ૧ સાવ ૫ે ક્યો પઢ૭ક આ કયિો ગૈ પઢ૭ક!

ગુણ: કૃષિ આ ગાષા

' ગુણ: કૃષિ આ ગાષા' સમ્પાદિતિ કેને છથા ગવ- વ્નાહ્માસવાદી ૧ાનાગન્દ
 વ્રિયોગી આ વ્નાહ્માસવાદી કેદા૧ કાગન, દુગ સાહિત્ય અકાદેમીસં પુત્રસ્ક□૧
 આ મોટગા૧- મોટગા૧ અસાંસ્ત્રમેસ્ટ પ્નાપ્ત.

આ ૧ેં પયપગિયા વાઠેડી ઇપિનહિ૧ ૬કોટા વ્યક્ત૧કેં ૬ પોથીક આઠેપ્પ ઇપિવા
 ધેઠ ગમિત્ત૧તિ ગૈ ક૬૭ ગેઠ કા૧ાસ ઓ સઠ સમાગાગ્ત૧ યાનાસં છથા ૫ે

सम्पादक द्वयक व्नाह्मसवादी आ गव-व्नाह्मसवादी हुगुक काठ अछि आ तँ हुगु व्रियानयानाक ठेक आपसमे तँ गाना-गानो कतै छथि मुदा समानागान यानाक वेगमे भविष्य छथि, आ तँ ई गानवनी (ई आगाँ जा कऽ आन स्पष्ट कएल जायत) ।

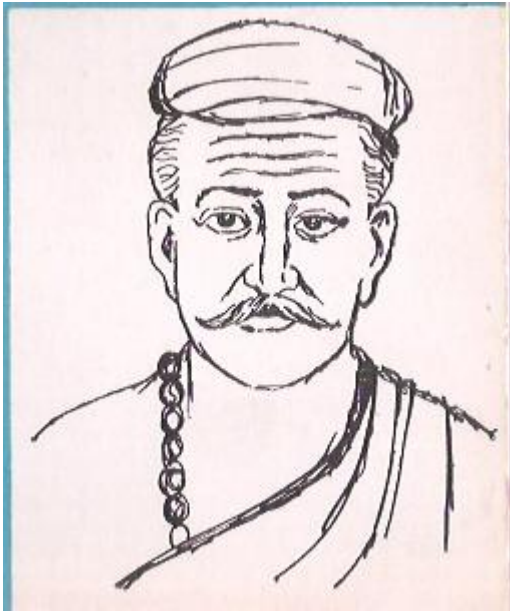
६७ पन्नाक 'गुठो' मे ट पन्नाक आमुप ठपिने रहथि केदाँ कागन (आपनि व्रियान मनुक्यक गाथा), आव से गान 'गुठो: कथा आ गाथा' मे गानागन व्रियोगीक कागहन छन्हि (५ पन्नाक नमोका) । सुगाप यगद्न प्रादवक अगुसाँ गानागन व्रियोगीक व्रियानयाना (आइडियोलोजी) मे स्थानि गै छै, मुदा हमना व्रियाने हुगुक आइडियोलोजी स्थानि छन्हि, आ से छन्हि एह केदाँ कागनक वृष्टमेठिगि वग। व्नाह्मसवादी संस्था सभमे वृहत्ता नास हुगुस छै, आ सए ओकना सभकें वृष्टमेठिगि ठेठ वृष्टमेठिगि वगवै छै। कोनो व्नाह्मसवादी संस्था गै अछि जाकना गानागन व्रियोगी हु-याना भासपन गनियवै गै छथिन्ह आ समान गेटठापन सेन ढाकीक ढाकी पुनःसा गै कतै छथिन्ह। उदाहरण स्वरूप येगना समिति आ साहित्य अकादेमीक उदाहरण देव जा रहै अछि ओ एकगन ठपि छथि- 'व्नाह्मसवादक जगमदाना गने व्नाह्मस होथि मुदा एक गच्छाड मे पयपनयिं सेहो छथि, दठि सेहो। ने तँ ई कोना होशय जे हूँ सौ के कनीव संप्रदा मे दठि- पयपनयिं ओकना भैथि मे ठपि गीक गीक वैह वाग, ओही गंगामा मे ठपि रहै अछि जे व्नाह्मसवादक इष्टसिद्धि मे सायक छैक। एह दठि ओक के अहां व्नाह्मससभा मे अय्यकषणा कतै सेहो देयि सकै छथि, समान पवै सेहो। ' आ अहाँकें ठाग जे ई सभ गप ओ अपनेपन ठपि रहै छथि, हुगुक गाथा, हुगुक साहित्य, हुगुक व्रिय-वस्तु, हुगुक कथि गान सभ, छठ-पुनय, पुनस्काँ ठेठपना, व्यवहार सभ व्रिष्ट व्नाह्मसवादी अछि, हुगके व्नाह्मसवादी संस्थाक सभमे अय्यकषणा कतै सभ देयै छन्हि, आ समान पवै सेहो।

मुदा सुगाप यगद्न प्रादव अठि रहै। कानास हुगुक एकटा आइडियोलोजी

છળ્હી

'ગુણેઃ કલ્યા આ શાષા' ક પ પગ્નાક શૂનકિ સેહે ગુણેક સમીક્ષાકે આગાં ને વઢવૈન અર્થવ્રતન શ્રો વ્નાહ્મમ્મવાદી સંસ્થા સગક વૈકલ્પિક લગ્નમ્મકે આગાં વઢવૈન અર્થ, આ એ વેન હુનકન ઉક્ષ્પ્ત છળ્હી' મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિષ્ટ, કલ્પના' । મુદા એ વેન હુનકન પ્રયાસ વ્યવસ્થા પોતલ્હીકિ સે આગાં સ્પષ્ટ હતા ।

પરિણે હનમોહન હા વ્નાહ્મમ્મવાદી સંસ્થા આ વ્યક્તિક નિશાનાપન નહ્યા, પ્રાત્ની ને । નમાનાથ હાક દુશ્મન નહ્યા હનમોહન હા, સે શ્રો હુનકન ગૈસર્વગિ કેળ્પનિહ આ સાહિત્ય અકાદેમીમે મૈથિલિક પ્રવેશક વાદ હનમોહન હા મૈથિલિ ઉપનિષદ છોડી દેઉપનિહ, પુનસ્કાન દેવાક તં કોનો પ્રસંગે ને! (વ્રશિષ વ્રતિનામ દેખૂ હમન પોથી ઢાળદો માગદાઉ- માતિલિલિ ઔનતિનમે પો વ્રદિહ આત્મકાર્ત્તમે હાતપ્ત્વદિલયોનિપોતલ્હીમ ઉકિપન સેહે ઉપવૃથ અર્થ) ।



महाकवि वदियापति गुरु १३५०-१४३५ (मैथिलीक आदि कवि
 ज्योतिषीश्वर-पूर्व वदियापतिं गनि, संस्कृत आ अवहट्टमे छेयन),
 वदियापति गुरु: वषिष्ठा वसिष्ठी- काश्यप (नागा शत्रुसहिक दनवानी)
 आ संस्कृत आ अवहट्ट छेयक। कीर्तिना, कीर्तिपिनाका, पुन
 पनीक्षा, गोनक्षत्राणि, छिन्नावधि आदि ग्रंथ समेत वपुषि संप्रदाये
 काठजो नयना। ई मैथिलीक आदिकवि वदियापति (ज्योतिषीश्वर पूर्व) सँ
 गनि छथि। यत्निक आचार मथिषि सांस्कृतिक पण्डित, कोठका
 द्वाता कोनो कठकानसँ वगवाओ, कठकानक नाम द०- ७० साठसँ अजान
 कानसँ गुप्त नापठ गेथ अछि।

मुदा ई संस्था मथिषि सांस्कृतिक पण्डित धार्मिक गणदीकी संस्था
 नहन्ही। धार्मिक गणदीकी नामाथ हासँ सेहो नहन्ही आ साहित्य
 अकादेमीसँ सेहो नहन्ही। ओ तँ व्नाह्मसदादी संस्था सगक मुप्य अर्थि
 नहै छथि, व्नाह्मसदादी संस्था सगकँ हानिहन् ह। सँ समस्या नहै धार्मिक

તૈ।

તાનાગન્દ વ્રિયોગી ઇગ મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક કોનો તત્ત્વક
 આનોપક પુનમાસ તૈ છન્હ, સે ઓ ગપાષ્ટક શુનુ કૈઞ છર્થા આ મોહન
 માનદ્વાળક પ્યયપની વઠા માષાક પુનવેસ કૈવૈ છર્થા મોહન માનદ્વાળ
 આ તાનાગન્દ વ્રિયોગી દ્વાના મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક પ્યયપનીક
 આનોપ આ પામ્ડુઠપિ હિના દેવાક આનોપ કૈનિનિઠિ એક્ટ અર્છા મોહન
 માનદ્વાળ વા તાનાગન્દ વ્રિયોગી ઇગ પુનમાસ છન્હ? અત્તન અર્છા તૈ।
 મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક આન વૃહત્ નાસ કૈમી છે મુદા ધાત્ની આ
 માસપિદ્મક સાહિત્યકૈ મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક વર્ગા કોનો સનકાની
 મદતકિ પુનકાશિતિ કેઠક, આ સે તૈત્તિકા તૈ મોહન માનદ્વાળકે છન્હ આ તૈ
 તાનાગન્દ વ્રિયોગીતૈ। મોહન માનદ્વાળ તૈ માશ્ચી માંગૈઠે ડીવતિ તૈ છર્થા મુદા ડૅ
 તાનાગન્દ વ્રિયોગીતૈ કછિઓ તૈત્તિકા વાંકી છન્હ તૈ ઓ અવૈમ્વ મથિથિ
 સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક માશ્ચી માંગર્થા મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક
 તાનાગન્દ વ્રિયોગી અને સમય વ્યયત્થ કડ નહઠ છર્થા, ઓ ઘોષતિ
 વ્નાહ્માસવાદી સંસ્થા છપિત્તહિના ડોના યેતના સમતિ આ વ્રિદ્યાનાથ હા વ્રિદિતિ
 ડાકન ઓ કાળ સુતનઠાક વાદ ઢાકોક ઢાકી પુનસંસા કૈતૈ છર્થા મુદા
 ઓકન આત્થકિ સ્થિતિત્તહિ તૈ છે ડે યટ પામ્ડુઠપિ દિયૌ આ પટ છર્પા
 દેત। વઠયનમાક ઇપ્પક ગાગાત્તુનકૈ ઓર પોથીસં કોનો સમસ્યા તૈ નહન્હ
 ત્તહિ હુનકન પુત્ત શોઠાકાન્ત (ડાકના ધાત્નીડી શોઠા મસિન કૈતૈ છર્થા)
 ઓર પોથીકૈ તૈર્થા પોથી માતૈ છર્થા આ તૈ 'ધાત્ની સમગ્ન' (નાળકમઠ
 પુનકાશન) તૈ ઓ સંકર્ષિત તૈ અર્છા મથિથિ સાંસ્કૃતિક પત્રિપિપત્રાત્નીક યેતના
 સમતિસન પાશ્વઠા સંસ્થા તૈ અર્છા, યન્દા મેટૈ છે તપ્પને ઓ પોથી છર્પૈ છે,
 કોનો કંસપિસી થ્યોની ઇઠ કોનો સ્થાન તૈ। શ્વેન ઓ કશિનીકાન્ત મસિનક
 ત્તહિન પુનમિટગિ પુનસમે એકટા કોઢી માસમે એક વેન માસકિ 'વૈસાન' ઇઠ
 પ્પોઠે છે। તૈ એ સંસ્થાક વૈઠકમેઠગિસં કોનો સમમાનક આશા સેહે વેકાન।
 તેસન ડે ઓ વહિનતૈ તૈ છે, સે વહિનક વ્નાહ્માસ સન વહિનક વ્નાતમાન
 નાળનીત્તિક દેપ્પેત કને મને ડેનાર્યો નાશન અર્છા મુદા કઠકત્તાક એ સંસ્થાકૈ

नकनो मय गै।

आव हुनका भोग पड़ै छन्हि जे ई समीक्षाक पोथी तँ अछि सुभाष यन्त्र
 प्राद्वक 'गुण' पन जगिक पारपन ओ छह-महक १६७ छथि नयन ओ
 गुणपन धुनै छथि- मुदा छै ओ जगदीश प्रसाद मास्टर नाम छे वनि
 (व्नाह्मसवाद आ गव-व्नाह्मसवादमे मे नाम गै छेवाक दूटा काल छै, दू गै
 तीगटा काल छै, पहि सायंस गै हएव, दोस प्रमासक अभावमे कछि ठीक
 आदिकि वाजिक अपन एजोस डी नूपी स्टोनी यथायव आ तेस काल छै
 हेन भावना, जे हन नाम छे छै तँ ओर व्यक्तिकि यती वढ़ि जेतै, तीग
 तीग गति स्थितिमे होइ छै) वा मे आवाज छथि- "जोगा थोक हसिमे
 मैथिली मे उपन्यास वहाइ अछि"। ई अछि तानागन्ध वियोगीक गव-
 व्नाह्मसवादी लेखक एकटा आ प्रमास, हमना अछे दोस जए
 व्नाह्मस केना साहित्य अकादेमी पुस्तक छे छेक, हम तँ टैमस्टेट छी
 जगन, मुदा ओ मुदा नाम गै छे। सर तँ केना काग के छह नयन
 ओ सुनेन ह 'सुमन', यन्त्रनाथ मशि 'अमन', नानाथ ह,
 वदियानाथ ह 'वदिति', मायानन्द मशि आदिकि वनि नाम छे छिछह-
 "वड़का-वड़का जेप-यागन कयनहि भाषा के दूषति कय भागै छथि"
 नऽ सकै आ जा कऽ हुनकामे हिमना एनहो मुदा एमे सँ सन
 सम्पादक द्रव्य कनी छथि नहथि, नयन अपनकै कानिअथ कहव ठीक
 कोना अघन, ई सन नयन शहिसक सुदयना छे अविधि कए जा १६७
 अछि व्नाह्मसवाद आ गव-व्नाह्मसवाद एक १७ छे-प्रपंचक सए एक
 दोसनाकै पठवति-पुष्पति कऽ १६७ अछि, आ दू समानान्त याक
 वियोग कयामे एक दोसनाक सहयोगी अछि।

तानागन्ध वियोगीक ऐ 'गुणः कथ आ भाषा' क नूनाक ५ पन्नामे गुणक
 वियोगमे मात्र ५ पाँती छिछे जे अछि।

केना नाथ यौधनी आवे छिछे अस्मन्था व्यक्त के छहो मुदा
 असीस्त्र नाथ नेसक यट्टीक यन्त्रा नीक जागै।

મંત્રેશ્વર હા પગ્ના પુત્રેઈહી હુનકા ગુઠે મન્મસપત્ની ઇગઈહી, સટીક યત્નિમ વુદેઈહી, મુદા એ ઇઈ કાગળ ખન્ય કનવાક કોનો વેગાના હમના ગે વુદાશ અછી

ગંગાનાથ ગંગેશક પુત્રિ કથાકાન ગાખમોહન હા સેહે નહઈખનિહ અછી, સમ્પાદક દ્વય એમે અડટિ કડ સકૈ છઈ, સનકાન નહયિા ગાખમોહન હા કૈ ૩ દુગુ ગોટે સમ્પાદનિ કનના નહયિા ઇખિવ, મુદા સુગ્રાપો યજ્ઞ દાદવ ગંગાનાથ ગંગેશક પુત્રિ છથનિહ સે દેખી શાશન પાંતી ગે કાટઈખનિહા મુદા ૩ પોથી તં સુગ્રાપો યજ્ઞ દાદવોપન ગે છઈ માત્ન હુનકન ગુઠે પન છઈહી આ આવ અઈ વુદાઈઈઈ હેચે ડે દર્દ પગ્નાક ગુઠેપન ૫ પગ્નાક સમીક્ષા આ રંર પગ્નાક આઈખ સમ્પાદક દ્વય કોના પુત્રેઈહી ઓગા ઓ ઉડ પગ્નાક વાદ ગુઠેપન અચે છઈહી

શોભાકાગળ (પુનાય: શોભા મસિન) સ્વયં સ્ત્રીકાન કનૈ છઈઈ ઓ સાહિત્યિક કોનો વ્રધીક ઇક ગે છઈ, મુદા ઓ ગીક ડાકાં સાગાંસ ઇખિને છઈહી

નામઐયન ડાકુન મથિઐ દનશનમે ગુઠેકેં છપને છઈ, આ સે ઓ સંસ્મનમ ઇખિઈહી, પહિને મથિઐક વ્રધિયમે કછિ નથ્ય દેઠાક વાદ।

અશોક મૂળા: કથાકાન છઈ સે ઓ નસ ઇઈહી અછી, મુદા સમીક્ષા ગે કડ સકઈ છઈહી ગાનાયમગી સંસ્મનમ સેહે ઘોસયિને છઈહી

કેદાન કાનગક સંસ્મનમ ગાપાની ઉપગ્રાસકાન હાનુકો મુનાકામીક 'ગોવેઈસ્ટિ અપ એવોકેશન' ઉપગ્રાસ કેના ઇખિઈનાશ અછી, સન ઇગઈ ઓગા સમીક્ષાક દ□પ્ટસિં એ મે કછિ ગે છે, મુદા પાડકકેં ૩ પાડ સુગ્રાપ યજ્ઞ દાદવ વા આન ઉપગ્રાસકાન દેથી તં ઓ અકટા ગત્રીન ગપ હપા।

નાનાનનદ વ્રધિગી કી ઇખિડ યાહે છઈ હુનકા સ્વયં નકન ખમાન ગે છઈહી પગ્ના પુત્રેસં હુનકન મનઈવ નહેન છઈહી, ઇક, કછિ ઇક આદિ ઇખિકિડ ઓ સ્કોપ વનકનાન ગાખે છઈહી નમાનાથ હા કેન વાદ મેથિઐ સમીક્ષા

वुनवक वाट पकड़क सँ हम आंशकि नूपमे सहमत छी, नमानाथ हाथे सँ मूठयानाक समीक्षा, जसमे नानागन्ध वस्रिगी सेहे सम्मति छथि आहुनक सहयोगी मोहन गान्ध्याज सेहे, (पुनमास- देपू साहित्य अकादेमी पुनायोपति 'मैथिली पुन पुनकि' पोथी जस मे ऐ महानुभाव सगक वनाहमसवादी आ गव- वनाहमसवादी दक्षिणोत्तर आन शुनियिष्ठ गड गेठ अछि, मोहन गान्ध्याज मैथिली सांसक नकि पनषिदपन पयनपनीक आनोप ठावै छथि मुदा सए ओ सग ऐ पोथीमे केठनि अछि), वुनवक वाट पकड़क। (वसिष वसिनास देपू हमन पोथी दाजदौ मागदा- मातिहिलि औनतिनमे जे वदिह आनकास्रमे हातपुवदिहयोनिपोहहिम ठकिपन सेहे उपव्य अछि। एतस सेहे नानागन्ध वस्रिगी आ सुभाष यन्द्न यादवक वसियानाक वसिनीता सोहँ अवैठ अछि, सुभाष यन्द्न यादव गति गवठ नाजकमठमे नमानाथ हा केन समीक्षाकें पनपनावादी कहने छथि, आ ईहे जे ओ नाजकमठ यौवनी संग ग्याय गै कऽ सकठ छवाह।

नमेश ठगति- कसिन्ध- मायागन्ध कहि एक्के नाना पुन सगकें नायादैं छथि, कऽ ठगति आ कऽ कसिन्ध आ मायागन्ध। मुदा वैठैस वनेवाक छन्हि गै तँ आठेय छपवे गै कनगन्धि, मूठयानामे समीक्षा मागे वऽइ।

कक्षमोहन हा 'मोहन' छेन सांश ठगि छथि, वैद्यनाथ हा कें तँ मैथिली उपग्यासकान सग नामो गै वुहठ छन्हि, कुमान मनीष अनवन्दि अप्पने गुठि समाप्त केने छथि आ समीक्षाक नाम पुन ओ वैठैस वनवै छथि- 'उपग्यासक शैथि कोनो वेशी उगन गै छैक। एकन गढ़नि सेहे वहुन संगठि गै। एक दसि सँ सगटा वात कें वेना- वेनी कहि दैठ गेठैक अछि। सांठवाक कोनो पुन्यास गै छैक। मुदा गाथा तेहेन सटीक छैक। " आ छेन वैठैस, ई गाथा ईए गाथा सुय्या। समानागतान यानाक मैथिली गै पढ़वासँ सोहे कठम उग कऽ ठगि व आनम कऽ देठासँ हुनका सग ठेयक अयमन्ति होशो नैह अछि।

ऐ संग्रहक एकमात्र काजक आठेय अछि वदियानन्द हा केन "ठकठ छी मुदा वाँयठ छी: वाँयठ नहवाक महाआप्याग, गुठि", केदैन काजक, नानागन्ध

वर्षोंगी आ अगका मुँहपन ओ पुनहान कनै छथि जायन ओ कहै छथि जे- "दुपक प□नगोग्नाश्चि नै छी। " पोथीक कृषीमकाय होयवापन सान्थक टपिपामी आयल अछि। ई वपिग्न वनगक नै वनग मथिथिक महाआयुप्राग अछि। वृद्धिगनगद ह्य केँ आठेयगामे एवाक याहयिनि मुदा मूठ घानावठा सग द्वाना वानिदेवाक उअँ ओ से नै कऽ सकताह, कानाम ओ सग मागक अग्यासी छथि। मुदा ओ जे पुनहान केठगहि अछि नकन गुँज सम्पादक द्वायकें वहुन दनि यनी सुगाश नहानही।

नमाम कुमान सहि नानागनद वर्षोंगी सग पेटनोगाशजि कनवाक अग्यासी छथि, आठेयक ठेकन ई सोयताह, हनवनिनो मयिगेठ आ "यदा यदा हि यन्मस्य" हए नानागनद वर्षोंगी आ नमाम कुमान सहिक आगमन हए आ संसा नयि जायन। आ जे हुनकन आठेयना समाठेयना कनताह से गेठा व्नाह्मामवादी। आ अही ननहक ठेककें हम कहै छै गव- व्नाह्मामवादी। ई मुप्यनः पुस्तक पनियि ठियै छथि जाकना ओ समीक्षाक नाम दैत छथि, कवन गीक, कथ्य गीक, सुगद नयिनाम, गाथा गीक। सगटा वऽउ गीक वऽउ सुगद।

गव- व्नाह्मामवादी सगक कग्नानोहक वीय मुदा अनाम कुमान सहि ठियै छथि- "१८८३ मे पुनकाशति ' घनदेय्यिया आ २००८ मे पुनकाशति ' वगैत वगिडैत' मैथिली कथा संग्रहक गाथा माटे वृद्धिगन ठेयक सँ हुनक मैसूर पुनवासक

दौनाग हमन जाजिआसोपाना ओ कहने छथि जे हुनक कथा मे गाथाक पाछु जगपदीय माहौठ नहैत अछि, जाकना हम यनीक माहौठ कहैत छी। " से वृद्धिगनगद ह्य केँ समीक्षा सेहो उघान केठक जाकना हम सम्पादक द्वायक मुँहपन पुनहानक रूपमे वनामति केथौ।

सगीश वनमाक "मेहनाकस वहुजग समाजक महाकाव्य" मे ओ दुनयिँक सग रकोगोमकि सद्धिगन के छेठ होश देय्यवैत छथि। ओ उद्धव□न कनै छथि-

गुठोक वेटा छोट आ मुँह मे ऊक देठकै। गुठो केँ माटी सँ गोपी देठ गेठ। कुछ जगी जागी जे ई सब तमाशा देखैत नहै, ओही मे सँ एगो मुसलमान दोसरा मुसलमान सँ वाजए ' ई सब हगिग हई कि मुसलमान? आगो दै हई आ दशुगो कनई है। दोसरा मुसलमान वाजए या अठठाहा तू देखलू न। एक वारा जाड़ के ठे गेठई, छेन से जाड़ के हई। कहाँ हुन पैसा भेटलई। हगिगओ के कोनो धनम हई। ' तेसरा मुसलमान वाजए ' धनम ठे के की होलई? पैसा होई हई त वाओ वयया गुजान कनईई। '

आ अपन गनिमय दैत छथि- "कवीन जाकाँ समाज संगे चान्मकि- नाजगीतिक संवाद सेहो स्थापति कएत छथी। " आ ई गनिमय गीक अछि, मुठठा वांग दे वठा, पहिने मुसलम सुपीनियोनियो ठस कस एक गोटेक वाजव छेन दोसरा द्वाला ओकना पोथि किछी कनेकट कनव, आ ओ दोसरा सतीस चन्माक हसिसे कवीन सुभाष यन्द्न प्रादव छथी।

अनुमात्र सौमन्य ' प्रागप्राप्त व्रपिगताक प्रथातय " मे छेन कनगानोहट सुन। " नैथिथि साहित्य मे उपन्यास कम छपिठ जा नहए अछि। " नस गेठ गनिमय जप्पन कतिथय एकन उठ अछि, आइ कठि कविताक वाद सनसँ वेशो उपन्यास छपिठ जा नहए अछि। मुदा हुनका शंको छन्हि जे कहि छपिअनो होतै तँ से तकनो रगताम- " जौ छपिठे गेठ अछि त ' पाठकक भोगक कछमछी आ छटपटी सँ सोहै जाड़वा मे वृहत् समन्य नै वृहाए। " वनि पढ़ने वनि अय्ययनक आठेय छपिवामे ग्रह सन समस्य छै। दू गीन पन्नाक कनगानोहटक वाद हनिको भोग पड़ैत छन्हि जे गुठोक व्रपिअने सेहो छपिवाक अछि। गठनी हनिकन नै सम्पादक द्रव्यक छन्हि जे सम्पादकें मात्रा पुनश्च नोडिगि वृहत् छथी। तकन वादो कनगानोहट प्पाम नै गेठ अछि जे हुनका अय्ययनक अनावकें देखान कएत अछि प्यास कस समानागत साहित्यक अय्ययनकें।

आशीष यमन छपिठ छथि- " ऐ कथाक जे पक्षधर्म अछि से ' समाजक आप्पनि व्रपिग आदमी ' कथा सँ आयठ छैक ओकन चन्माग हू- व- हू ओकने

સગક મુંહ સં કણ ગેઠ છેક। " હમ પહનિહયિ ઇપ્પિને છી ખે ગુણેક કેદાન કાનગક આમુપ્પ ગુણેક પાડકે વાયતિ કૈત અછા, સે વાયતિ ને વ્રક્ષિ□ન આ પુનઝાવતિ સેહે કેઠક અછા સે આશીષ યમગક આઘેપ્પસં દેપ્પવામે આઓ।

નઘુનાથ મુપ્પાપ્પિ ' ગુણેક વહ્નગે મૈથાથી ઝાપા પન વ્રિયાન' કૈત અછા મુદા સગટા ઝાન છગ્હ સુઝાપ યન્દન પ્રાદવ્રક કાગ્હ પન આ સમાનાગ્ગન યાનાક કાગ્હપન, નઘુનાથ મુપ્પાપ્પિ અપને તાનાગ્ગદ વ્રિયોગી સગ ' વ્રશિદ્ધ' મૈથાથી ઇપ્પિન નહાહ।

તાનાગ્ગદ વ્રિયોગીક મોન ને ઝનઇ છગ્હ, ઓ એકટા આન આઘેપ્પ "પયપનપ્પિ મૈથાથી: એક ખમીની પનયિન્યા- સ્થેસવુક પોસ્ટ આ તાહિપન પુનત્તિનપ્પિ આ વ્રિવિદ" ઇસ કસ અવૈત અછા, ઓગા ઓ કોગ ગોકની કૈત અછા સે ને ખાગા, ઝનિદિન સ્થેસવુક ઓગાને નૈત અછા। મુદા મૈથાથીને સ્થેસવુકપન ઓ કોગે ડસિકસગ કૈત ને અછા, ઓ તુનતો કગ્ગા-પ્પાણી કનસ ઇગા અછા, ખે ડસિકસગ હેશો છે (મુઠયાનામે) સે તરમે ૫-૧૦ ટા સં વેશી કમેસ્ટ ને, વ્રદિહ સ્થેસવુક ગુનુપમે ૨૦૦ સં વેશી વ્નાહ્માસવાદી આ ગવ-વ્નાહ્માસવાદી આરડી હમ સગ વૈન કેને નહી, આ આરક તથિને ઓ સગ રૂએક્ટોવે અકાઉસ્ટ છે, કાનામ યોનિ પકડી ઇઇપિ, મુદા ૬ સગ કહયિ એક્ટવિ મોડમે આવી સકે, સે એ સ્થીપન સેઇ સગપન સમાનાગ્ગન યાનાક ગખનિ છે। મુદા સ્થેનો વ્રણ ગપ ખે વ્નાહ્માસવાદ આ ગવ-વ્નાહ્માસવાદ કોગે કાખ તં કૈત ને અછાપ્પાથી માહૈઇ વેનેવાપન વ્રશિવાસ કૈત અછા આ તકના દેપ્પાન કનવા ઇઇ હમ ૬ અઘિપ્પતિ કસ નહઇ છી ખે ૫-૭ ટાસં વેશી ઇક કોગે ડસિકસગમે ને નૈ છે આ ૬ પુનત્તિનપ્પિએ વ્રિવિદ કહવ આ અપન પોડ અપને ડેકવ મેઇ। આ સ્થેન વ્રણ ગપ હમના દોહનાવડ પડી નહઇ અછા- "મુદા સગટા ઝાન છગ્હ સુઝાપ યન્દન પ્રાદવ્રક કાગ્હ પન આ સમાનાગ્ગન યાનાક કાગ્હપન, નઘુનાથ મુપ્પાપ્પિ આ તાનાગ્ગદ વ્રિયોગી વ્રશિદ્ધ મૈથાથી ઇપ્પિન નહાહ। " મુદા અપનાકે વ્રિક્ટમિ દેપ્પાયવ આ અપનાકે પયપનપ્પિ મૈથાથી સંગ ખોડવ, સુઝાપ યન્દન પ્રાદવ્રક ખે ગૈસઇરટગિ કેઇગ્હ તકના સંગ મથિપ્પનપંચ આ તરપ્પો અપનાકે સુઝાપ

यन्द्न प्रादवक व्रियायानाक कहव, से कतेक हूँ हनिका वाण्ड पड़ै छन्हि आ तऽ छे छतेक गन्धिज्जना याहि, से सभक छे सभजव गै। तानागन्ध व्रियोगी टा सँ से सभजव अछि। ओना व्नाह्मासवादि आ गव-व्नाह्मासवादीक वीयक ई कनगानोहट अहाँकें पढ़वाक याहि। ई हुनू व्रज सुप्पठि पुरसनेछीक शिकान अछि, आपसमे गजडघस कतै नहै अछि, आपसमे गाना-गानी कतै नहै अछि (कानास गानपिन अछि) मुदा समागानान याकाक व्रदिह मैथिलि साहित्य आन्दोलनक व्रिन्द्य ई सभ एक मऽ जात्र अछि। व्नाह्मासवाद आ गव-व्नाह्मासवाद छे-पुनपंयमे ताना-उपनी अछि मुदा हुनू एक दोसनाकें पठवति-पुष्पति कतै नहै अछि।

आ अन्तमे "पयपगयि मैथिलि" मे सुभाष यन्द्न प्रादव पुनः साहित्य अकादेमी पुनस्कात प्राप्न सन्पादक द्वापन प्रहान कतै छथि जाप्यन ओ छपि छथि-

"एक वेन पुनोखेसऽ इन्दनकाना हा ओन केठनि अहाँ केँ साहित्य अकादेमी पुनस्कात पहनिह भेटा जेवाक याहि छथि। अहाँ उज्जिव कतै छी। अहाँक कथाक हम पुनसंसक छी। अहाँक 'वगैत-वगिड़ैत' नेस मे शीष पन अछि। मुदा एकन भाषा ठीक नहि अछि। पुनस्कातक छे अहाँ केँ एकटा औन संग-नह दवय पड़त, जाकन भाषा दोसना हो। "एहि पुनसंग मे उठेपनीय तथ्य ई अछि जे 'वगैत-वगिड़ैत' मे पहि कथा अभाजिान मैथिलि आ शेष समस्त कथा पयपगयि मैथिलि मे छपि छे अछि।

आ समग्र मोन पड़ै? ई वरह समग्र छे जाप्यन वरह साहित्य अकादेमीक एठ "व्रदिनि"क नेतृत्वमे गठे गायनह छे, आ ओहि समग्र मे तानागन्ध व्रियोगीकें वरह एठ पुनस्कात केने छे, हुनका 'व्रिन्द्य' मैथिलि भाषापन, आ ओर व्रदिनिक ढाकीक ढाकी पुनसंसा केने छथि जे तानागन्ध व्रियोगी। ओर "वगैत-वगिड़ैत"क आमुप्य छपिने छथै हम, जाकन वरि-पुनदान कए छे छे।

ओ छथि "काँक वगैर ओक" कथाक छेपक जे हम पढ़ने १९८३ आ १९८४ मे गौमा आ दसमाने, ओ अड़ै १९८१। घनदेय्याक बाद वगैर वगैर २५ साँक बाद ओ अड़ै १९८१, आ आव गुँगे, मडन आ मोटा आ देय्याओ वीर, इन्टरकांग हा केन गौपन समयाकिक पुनर्गणन पड़ै जयन जगदीश पुनसाद मसुँडकें डेरी पयपन्या वनगी ५१ 'पुंगु' उपन्यास छै मैथिलीक साहित्य अकादेमीक मूठ पुनस्कान २०२१ देठ गेठ।

आ अन्तमे "पयपन्या मैथिली" मे सुभाष यन्द्न यादव पुनः साहित्य अकादेमी पुनस्कान पुनर्गणन सम्पादक द्वायपन पुनर्गणन कयै छथि जयन ओ वीर छथि-

उ० १मागन्द् हा '१मास' अपन गोटवक मे टपिगे छैरह 'वनाहमास कहै छथि सोश छै, सोरहकन कहै अछि वागन छै। हम की कहै जे की छै?' एहिटीप मे सोरहकन छै जे गनिएन वयकन मेठ अछि से आन कछु नह; जालीय वद्वेष आ व० हाक भाषाक अभाविकता थिक।

सुभाष यन्द्न यादवकें उन्त देठपनिह १मागन्द् हा '१मास' १० दसिम्बन २०२२ कें हमन वद्वेष मे 'गति नवठ सुभाषयन्द्न यादव (भाग-१)' ०१ दसिम्बन २०२२कें ३ पुनकाशति मेठक बाद आ नकन वनीय केठपनिह नेपाथसँ दगिष यादव आ समन्थन केठपनिह गानासँ ठगिष मसि।

१मागन्द् हा '१मास' - वगैर पढ़ने अभीगी:

येनक नापी अभीन कयै छथि अभीगी गीत नह थिक जे केओ गावाँछा वा ननिआ छै। ओ एक वद्वेष थिक, वगैर अभीगी वद्वेष सोयने जडी कडीक महान्त्र की छै, से नह वद्वेष सँ छै। एक कडी एमहन ओमहन मेठापन मास मास मे कपन ओडीअरि गए जाश अछि ओहनि भाषाक नापी केनहिनकें भाषाशास्त्र वा भाषावाग्मिक ज्ञान अन्तर्गत कन पड़ै छनि ओर कह सँ छै छथि ई भाषा थिक ई भाषा थिक ई मसिभाषा

मेठ, ई कृ-अथिठ थकि आदी ओएह कहि सकैत छथि जे उच्य-निति भाषा आ
 छपिति भाषा, सामान्य भाषा आ साहित्यिक भाषा, पान्थक भाषा आ
 छेपकक भाषामे की अन्तर्गत छैक।

नमानाथ ह। माबौत छथि जे ' मथिछि भाषा आणक भाषा नहि थिकि। जकन
 स्वरूप काठकन सथि होएत। छथो सए वनषसँ छपिठ जाश पनपन।
 एमहए आवएहि पियास वनषमे हनिदीक पनभावसँ गनषट मेठ जाश अछि
 छपि पहिने जेठ, आव भाषाक स्वरूप गषट होएवा पन अछि भाषा एक
 जोटाक थिकैक नहि जे सग वचकन सग गंगक छपि, नयन भाषा नहि
 नहि। '

सामाजिक सम्पत्ताक सुनक्ष्मा आ उपयोगक छेठ एक अनुशासन होश छैक।
 जेना जेनाक पटौनीक छेठ पौटी आवस्यक अछि ओहिना नाष्टनीय
 अन्तर्गत नाष्टनीय मंथपन भाषाक पनपिठ आ सुवीकान्तराक छेठ पौटीक
 महान्तर अछि मथिछि भाषाक अमोन सग ई काज कएने छथि।

जान्ता अन्तरिम गनअनसन मथिछि भाषाकें भाषावैज्ञानिक आधानपन
 यनिह एक स्वरान्ता भाषा घोषति कए ओकन भाषाक सगक वसिषा
 नित्यानि कएएनि महवैद्याकनस दीनवन्धु ह। मम उमेश मशिन्
 आयाय नमानाथ ह। जे सुगह ह। पम्पडति स्त्री गोवनिह ह। जे
 नामावता एहव, उदयनायास सहि' नयकिता, योगेह पनसाह एहव,
 जे सुनीठ कुमान ह। आदि ओहि सासनाक अवयवन कए वैस्रकि सनपन
 मथिछि भाषाकें व्यापन आ पनपिठ दिसिठनि कनि, सम्पत्ता एहन
 वृक्कन उठ अछि वा उठाओ जेठ अछि जे केओ ककनो मोजान नहि हिन
 अछि ने ओ पम्पडति स्त्री गोवनिह हाकें माबौत छथि आ ने जेनामावता
 एहवकें। ओ मैथिलिक कवि छथि, कथाकान छथि, उपन्यासकान छथि,
 आख्यक छथि, नाजनीति पनेति सामाजिक कान्यकन छथि, आ सवसँ
 वढा विना सासना पढ़ने भाषावैज्ञानिक वनिजे छथि।

दशिय धादवक अण्ण देयू:

सन्तुपन्थम, माषा पौका सभके प्योणी कयउ जाए, नषिकृष पन शविन पुहुंयवाक आसानी होए। व्याकनस याहि मुदा केहेन, मानक याहि मुदा नान्यानस कोनाके कनी? वगनौटी शैथी, माषय कविा मानक आव ओकणन असुवीकान कए देथैथ। मैथिलीमाषी ओकणन आव पहनि जाका गछिह मुन्प गै नहए, सभ पुण्णक गड गेठ अछी। हम मैथिली ठपिण आ पढैए छी, मुद्दा हमन वोथी, शैथी आ माषकि के मानक जानाविठ महनुमाव ओकैन मानयना नय दैए छैथ! नई अइएनहे पुनाएन सोय, आ दनदिन मानसकिनाके पनानियाग कनैए नय सनिा सऽ आगा वढवाक जाननी छैक। आव सुनाए, गामेश पनकिना कके पुनसुक□न होमेवावा पनपिठकि अण्णयेषी कनैए पड़ए। समाजसासानीय, मनोवर्णिमानसासानीय द□षट्कोस जायन गै वना, नायन मैथिली जानाये दनसन, मानयना आ वनियनके घेनावन्दीमे नहए। जौ घेनासऽ मैथिलीके मानन कषण आ कषण होए। वैण्णानकि सोय, समान वृषवहा, सन्तुपानाये मानयना, वनियि माषकिसऽ समेटनार आदि मैथिलीके हुकहुकी वयेवाक दवाई थकि, एकना अंगकिन कके आगा वढए जाय न अप्पनो वठिमन गै गेठ अछी। मैथिली यमकन आ दमकन!

मुदा उठिगि सन्थिक समन्थन गेटए नमानन्द हा 'नमान' कँ, मुदा हुनकन कुठिना, जे ओ एहेन सुवांग कनै छथी जे ओ ई सुमाष यन्द्न धादवकँ गै नवतुनियि श्वेसवुकिया दियि कहि नहए छथी। तँ हम हुनकन ऐ वृषवहाकँ "पौनासकि समीकषा" क नाम देगे छी, मंय सापेकष। जेहेन मंय तेहेन समीकषा, गुनुड पुनासमे गुनुड वनहमा-वषिसु-महेशसँ अपन आ मन्स्य पुनासमे मन्स्य वनहमा-वषिसु-महेशसँ अपन।

उठिगि सन्थिक नमानन्द हा 'नमान' क समन्थन

सभह के माना दनसनक अवस्यकना नह छनि ओएह जण अपनोक माना दनसन क' देनाह ओ ओकना सभ वषियक वेणना स्वयं के मानौए छथी कोनो

માધાવદિક હુનકા પુત્રપોળન ગઈ મૈથિલીક વેસ વાકાસ મેથેક અઘનિવ પાનાન સંપન્ન યુગ અણેક અઘાશિવ નાસા દેખ્યવાક જાનનાનિ ગઈ છેક પાનાન વપ્પાનવ ગાળન કે આમનાનિ કનવ હોવા

મુદા હમન માયો કમ ગૈ- મૈથિલીક ઊકોકાકિ કાનાવમે ઊપિઠ નૈ- "દસ વ્નાહમસ દસ પેટ, દસ નાડ એક પેટ" નેં ઓ સપિઠગઈ ડો ડાઘા છે, ડે વ્નાહમસ કૈ છે, વ્નાહમસ ઊઠ દોસન વ્નાગ કૈ છે- "દસ વ્નાહમસ એક પેટ।" "નમાનદ હા 'નમાસ' આ ઊઠિસ મશિનકેં કોન નાનક શક્ષિ મેટ ઇગઈ ગૈ જાનાં

મુદા દુગુ ગોટે કો કડ નહ ઇથાં સે હુનકા સગકેં વુહ ઇગઈ, આ નકના લાગડ ઉઘાન કલ્પ જા નહ અઘાં નમાનદ હા 'નમાસ' ઊપિ ઇથાં- **ઓલ્હ કહ સિકૈા ઇથાં ડે માધા થકિ ડે માધકિ થકિ ડે મશિનમાધા મેઠ, ડે કનશિઠ થકિ આદા** અહાંકેં કોનો ષડયંત્ર એ દેખા પડે? નેં દેખૂ ડે કોન ષડયંત્ર અઘાં

અંગ્રેજી સેહે વાળ ડાસ કલ્હ નાનક માન□માધા આ દ્વિતીય માધા કેન નૂપમે, આ નકન અનિકિત કલ્હ નાનક પડિગાનિ અંગ્રેજી આ ક્નેયોઠ અંગ્રેજી સેહે છે। પડિગાનિ અંગ્રેજી સેહે દૂ વ્નાગમે વનિકા છે- અટઘાંકિ પડિગાનિ આ પુનશાન પડિગાનિ। અટઘાંકિ પડિગાનિ અંગ્રેજી પશ્યમિ અશ્વનીકામે વનિકસાં મેઠ આ દાસ- વ્પાપાનક માય્યમસ વેસ્ટ રમ્ડીળ આ અમેનિકા પુહ્યંગિઠ, મુદા એ કષેત્રમે પડિગાનિ વાળનહાનકેં મૂન્ય આ સુસા માળ ડેઠ। મુદા સે પુનશાન પડિગાનિ ઊઠ સત્ય ગૈ અઘાં, ડે હવાર, પાપુઆ ગ્યુ ગાનિ આ દોસન વ્નાટિસિ ઉપનિશમે વનિકસાં મેઠ, વ્પાપાનક વનિકસાનાક કાનાસ, ગ્યુ ગાનિમે ક્નેયોઠ ઓકન નાષ્ટનયિ માધા છે, કાનાસ ડે વનિકસાં મડ ડેઠ, અપન શવ્દ મામ્ડાન વઢા ઊઠક આ વાક્ય સંનયના સેહે। આ પડિગાનિ ઇથે કો? ડે એકડા સંયાન માય્યમ અઘાં ડે દૂ નાનક ઊકક વીયમે, ડે દૂ વનિકિન માધા વજૈન ઇથાં, સંયાનક માય્યમ વજૈન અઘાં, પડિગાનિ કકનો માન□માધા ગૈ અઘાં કાઠાનનમે પડિગાનિ કછિ ઊકક માન□માધા

વળી ખાણ અર્થા, આ નખન ઓકના ક્યોયોઈ કહો ખાણ અર્થા ંગ્ગોળી
 આયાનિ પડિગિ આ ક્યોયોઈ વ્નટિસિ ઉપનિસમે પસન ખાણ ંગ્ગોળ
 માઈકિ આ સ્થાનીય ઓકક મય્મ સંયાનક માય્મન વળઈ પડિગિ આ
 ક્યોયોઈકે ંગ્ગોળીક અમાનકીક □ નૂપ કહો ખાણ અર્થા ંસન સીમનિ
 વ્યવસ્થા સન અર્થા, ખાણ સંનયના આ સ્વદ માસડાન સેહે સીમનિ નહૈ
 અર્થા આવ હમ વૂહા નહો છો ખો અહાંકે નમાસક અખાનનાપન હંસો ઊગા
 નહો હપા, ખો ૨૦૦૦ સ્વદક સ્વદ માસડાન આ ૫૦ ટા વાક્ય સંનયનાક
 આયાનવઈ મૈથાઈકે મૂઈ આ ઊપ્ય સ્વદસેં ઉપન સ્વદ માસડાન આ હપાનસેં
 ઉપન વાક્ય સંનયનાવઈ સમાનાનના યાનાવઈ મૈથાઈકે ક્યોયોઈ કહા નહો
 છર્થા મુદા અહાં પેટ પકડી કિડ વૈસઈ નહૂ કાનાસ અહાંકે નમાનદ હા
 ' નમાસ' આ ઊગિસ મસિન અખાનનાપન આન હંસો છૂટયવઈ અર્થા

હવાર કેન પડિગિ

અંગ્ગોળી- સમટાસમ્સ દેયન રા અ ગુડ નોડ

હવાર કેન પડિગિ- સમટમ, ગુડ નોડ ગોટ

અંગ્ગોળી- સમટાસમ્સ થેયન આન થનિગ્સ ઊરક વેમ્ડ્સ, ઇંગ્ડ્સ, નાસ્ટ?

હવાર કેન પડિગિ- સમટમ, ઓઇસેમ વેન ગોટ, ઇનગુનૂ ગોટ, નો?

કૈમનૂન કેન પડિગિ

અંગ્ગોળી- ગો

કૈમનૂન કેન પડિગિ- ગો (કોનો પનિનિન નૈ)

અંગ્ગોળી- ડ□મ્સ્ટ ગો

કૈમલૂન કેન પડિગાનિ- ગો ગો

અંગ્ગેળી- દે કૈન ગો

કૈમલૂન કેન પડિગાનિ- ઉમ સ્કટિ ગો

અંગ્ગેળી- દે કામ્પટ ગો

કૈમલૂન કેન પડિગાનિ- ઉમ ગો સ્કટિ ગો

અંગ્ગેળી- ગોવડી કેમ

કૈમલૂન કેન પડિગાનિ- ગો મૈન ગો વનિ કામ

ગાશ્પીનયિન પડિગાનિ

અંગ્ગેળી- ગાવ્ત્તમેમ્પટ! ઑઞ આવ્ત્ત નોડ્સ આન નુક્કડ કમ્પ્વીટી

ગાશ્પીનયિન પડિગાનિ- ગોશ્ત્તમેમ્પટ! ઑઞ આવ્ત્ત નોડ્સ ડોન ધામ્પટ સ્થનિસિ

અંગ્ગેળી- પ્વીળ મેક સમવડી કમ સ્ત્રીમ દ ગાવ્ત્તમેમ્પટ ર્વન ર્શ્વ ર્શ્વ ર્શ્વ
સ્ત્રીમ કાગો

ગાશ્પીનયિન પડિગાનિ- વાકો મેક સમવડી ગોશ્ત્તમેમ્પટ ર્શ્વન ર્શ્વ ર્શ્વ સ્ત્રીમ
કાગો કમ સેશ્વ

અંગ્ગેળી- અગીવ્ત્ત હૂ ર્શ્વ અવ્ત્તેવ્ત્ત સન, ષેટ હમિ ળાસ્ટ ગેટ સમથાગિ ડન

ગાશ્પીનયિન પડિગાનિ- અગીવ્ત્ત્સ ર્શ્વ ઑઞ અશ્વભાવુરુ સા, મેક ર્શ્વસ શ્વાશ્મ્પડ
સમટનિસ ડન સ્ત્રીમ

અંગ્રેજી- ઑઠ દીખ નોડ્સ આન રન અ વોશુઇ સ્ટેટ

વારૂનીપ્રિયન પડિગિ- ઑઠ દસિ નોડ ડેમ વે ડન વોવો શુનિસિ

યોગક નટીય પડિગિ

અંગ્રેજી- હી રૂ વ્રાખ વેની સકિ

યોગક નટીય પડિગિ- હી પ્લેસ્ટી સકિ

અંગ્રેજી- આર એ દ યોશુ વ□ય

યોગક નટીય પડિગિ- મૈ વ્લેન્ગ ગેમ્વન- વ્રાન વોખ

અંગ્રેજી- દસિ રૂન એન એક્સેપ્સન્ટ વુક

યોગક નટીય પડિગિ- દસિ અ ગોમ્વા વ્રાન ગુડ વુક

(ક્લૅસિટ ડી: દ રંગ્લેસિ ટૅગુલન, પેગુરન વુક્સ, રંગ્લેસ, ૧૮૮૦)

આવ આઉ ષડયંત્રપત્રા સે નમાનન્દ હા 'નમાસ' કહ્ડ કો યાહે છથા? માઠકિ નોકનક સમ્વગ્ય ત્રાપામે, વા પડિગિ મૈથાઈ ક્રોયોઇ મૈથાઈ વર્ના ગેઇ અર્થાસે? વા ઓ કછિ નૈ કહ્ડ યાહે છથા કાગાસ એ વ્રિષિપપન હુનકા કોનો ખ્માન છન્હયિ નૈ, અખ્માનગાસ માત્ર દઇમઠિ કાસ યાહે છથા? એ નાનક ગાપકેં હમના ગામમે વકથોથી કહ્ડ ખાર છે આ નોક નૈ માનઇ ખાર છે. આ તે નમાનન્દ હા 'નમાસ' ખે વર્ના પદ્મે અમીની કડ નહઇ છથા આ અપના પક્ષમે ખે નામાવતાન યાદવ, યોગેન્દ્ર પુનસાદ યાદવ, સુનીઇ કુમાન હા આદિક ગામ ગનીને છથા (ખકના દિવિધમે નેમડ્ન પગિ કહે છે આ નોક નૈ માનઇ ખાર છે)

સે ૬ સદિય કૌત અર્થાતે ઓ વાનિ હુનકૌ સમ પોથી પઢને વવિઠિયોગ્નાશ્ચી વનૌને છર્થા, ગુગાઇ સન્યમે કીવૌડ દસ કસ। યોગેન્દૌ પુનસાદ ધાદવક તૌ અંગેની આઘેખ વદિહમે સેહે ૬- પુનકાસીતિ મેઇ અર્થા, સપ્ત પઢિયેને નહિતર્થા તૌ દૌષ્ટા કિછુ સ્તુતિયિષ્ મેઇ નહિતર્થા, સુગ્રાપ યન્દૌ ધાદવક પક્ષમે નામાવનાન ધાદવક શોય અર્થા, નપ્પન વાનિ પઢને અમીની કે કસ નહઇ અર્થા સે સપ્ત મેઇ।

સુગ્રાપ યન્દૌ ધાદવ ઇપ્પે છર્થા-

મૈથાલિક વૈયાકનામ સમ સંસ્કૃત્ત્વા આ હદિશિહ વ્યાકનામકિ ઢાંચા તૈયાન કપ્પળા ઓ સમ દર્શિ મૈથાલિક વસિષ્ઠિના આ મર્ગિના કે વચિના યોગ્ય ગર્હિવુદ્ધર્શિ ઉ નામાવનાન ધાદવ એકમાનુ દ્વન માષાસાસ્ત્રાની છર્થાતે સર્વપિ થોડે વચિના કપ્પને છર્થા

સુગ્રાપ યન્દૌ ધાદવ પુનઃ ઇપ્પે છર્થા-

એક વેન શ્રુગ્નાત્ત ગાનાયમ સર્ગિહ સામાળકિ સંસ્થાન, પટના મે એકટા કાન્યકુનમ મેઇ। કેન્દ્રનીય માષા સંસ્થાન, મૈસૂન સર્વ કાન્યકુનમક આયોગન કપ્પને છર્થા। કાન્યકુનમક મૂઇ યનિના મૈથાલિ માષાક વર્કિસ છર્થા। વર્કિસ કોના હે, નાહપિન અનેક વર્કા અપન અપન વર્કા ના દેશર્શિ ઉ મેઘન પુનસાદ સેહે અપન વચિના નપ્પળર્શિ હુનક માષા મે ઓતેક આદનસૂચકા ગર્હિ છર્શર્શિ, ળોતેક વદિવના સમૂહ કે અપેક્ષા નહર્શિ સ્તુ ૬ મેઇ ળો હુનક માષકિ સપ્પળ ળેઇ માષામક વચિયર્શિ મે વુહા અસર્ષિટાપૂનવ્રક હુનકૌ હંસો ઉડાઓઇ ગેઇ। ૬ દૌ સ્વ હમના વચિર્શર્શિ કપ્પને છર્થા આ સર્વ નાહક માષકિ અસર્હિષ્મનાક પુનર્કિના હમ નાત્કપમ કપ્પને નહી।

અહી કેન્દ્રનીય માષા સંસ્થાન, મૈસૂન ક સેમીનાનક એકટા આઘેખ ળે મેઘન પુનસાદ પઢને છર્થા, સે નમાનન્દ હા 'નામ' ક કર્થાતિ ઇટિનેની એસોસિયેસનક પાનર્કિ 'ઘન વાહન' મે વાનિ પર્હિ પૈનાગ્નાશ્ચી છપઇ (એ

કાળમે નમાનન્દ હા 'નમામ' ઉસ્નાદ છથી, મુદા ઓ આઘેપ્પ અવકિં ૧૫મે વ્રદિહમે વાદમે ૬-પ્રકાસિતિ મેઠા. આ અહાંકે વૂહ્થ અચિતે ઓર કુટિયા દ્વાના કોળ નથ્પ સેસન કલ્પ ડેવાક પ્રપ્રાસ છથ? મેઘન પ્રસાદ ઇપ્પિને છથા ડે ઓ કલ્પ વેન સાહિત્ત્ર અકાદેમીસં અનુવાદ અસાન્નમેહ્મટ ડેઠ ર્ય્થ્થા વ્યક્ત કેને નહ્થા મુદા સાહિત્ત્ર અકાદેમીકે હુનકાસં પ્રેમ છે સે કોળો અસાન્નમેહ્મટ કહ્યો મે મેટઠનહી આવ અહાંકે વૂહ્સ મે આવાગેઠ હ્પા ડે મૂઠવાના આ સાહિત્ત્ર અકાદેમી ડેઠ મેઘન પ્રસાદ આ સુઘાપ યન્દ્ન પ્રાદવ્વ કપિ વાનઠ છથી આ નાનાનન્દ વાયોગી કપિ સ્વોકાન્ય.

સુઘાપ યન્દ્ન પ્રાદવ્વ ઇપ્પે છથી-

પાગ-દોપટાવ્થા મૈથથિ યથ પાપા, ડેકનિ ગોઠાઠાવ્થા મૈથથિ ડીવેન નહા.

આ ગોઠાઠાવ્થા વ્રદિપાપાકિ યત્તિ ડે એ વ્રિવિન્થમે અહાં દેપ્પઠે સે વનાઓઠ ગેઠ વ્રદિહ સમમાનસં સમમાનિતિ પનકઠાઠ માહ્ડઠ દ્વાના, પદાવ્થિવ્થા વ્રદિપાપા, ડ્યોતગીશ્વન-પૂન્નવ્થા વ્રદિપાપા, ડે અચ્ચિ વ્રદિહ્ક ઇગો.

સંસ્કૃત આ અવહ્ડ વ્થા પાગ-દોપટાવ્થા યત્તિ મથિથિ સાંસ્કૃતિકિ પનપિદ, કોઠકાના દ્વાના કોળો કઠાકાનસં વનવાઓઠ ગેઠ, આ ઓર કઠાકાનક નામ ૬૦-૭૦ સાઇસં અપ્રમાન કાનમસં ગુપ્ત નાપ્પઠ ગેઠ અચ્ચિ

સુઘાપ યન્દ્ન પ્રાદવ્વ હમના હમન પાતિ મોળ પાડિ દેઠનહી મન્નુયુક ૨૭ વન્થ વાદ, પાના મે કાડ સં ગોન ઘુનિ આપ્પઠ અચ્ચિ હમના આંપ્પમિ-

પાતિક સ્ત્રાપ્પકે ઇવિન દેપ્પમે નહી સ્થિતિપ્રપ્રમાને

નહિયે વૂહ્થે નહી ડે

પ્રપાગ મે કલ્પ હ્પા

નસાના ફે અઘળો ખાદિયોહવથા।

માય નાકા પૂજા દશિ પુછકૈ ઔતૌકા હાઇ સુગવર મે નિગિયાં કલ મન નૈ ઓ
ગલૈ માલ કલ કલક - ' માય, પૈસા દહી નૈ વવા કલ ગોલૈ ઓવદિશ ઘસિ '
(ગુલૈ, ૩૫૫૫૩ ૨૦૧૫)

૧૮૮૫, હમ ટુનેગાઉ સં વાગો કોનો કાનામ ઘન આવાગોલૈ, મોન ઓટગોઇ
ઘલૈ માય પુછક ટુનેગાઉક વાષિયમે, ઔતૌકા ગપ કનૈક હમના મોન નૈ
મેઇ પાગિક મોનક વાષિયમે પુછકલૈ। ઓ પાટપન સૂગઇ ઘથાગિ ૩ વળે યાહ
પશિવૈઇ ઓવગહા પાડે પનસઇ થાની, હમ દોસન થાડીસં હાંપકિડ નાપા
દેઇલૈ પાગા સૂગઇ ઘથાગિ નાગિ દિનિકા દુપહનિયા। ઓ ઓના નાપન હમ
પાપવા મોન ડીક ઘગહાનૈ। ૩ વળે યાહ ઓ કડ પાગિકૈ માય ઓવૈઇ ગોલૈ
પાગા નૈ ઓઇથાગિ (હમના સડ ઘટઇ સનય ઘટના, ૧૮૮૫)

(સુમાય યગ્દન પ્રાદવ પીક અનુમાગિસં હુનકન સમસા સાહિય વાદિહ
પેટાન હાનપ્રવદિહયોગિપોતહલિમ પન ઉપવવ અઘાગિ)

અપન મંત્રપ્રે દતિોનાઇસાગાડડવદિહબામાઇયોમ પન પડાડ।

રૂઆયાન્ય નામાનંદ મંડઇ- નગિયા ગાપિાનોન



आयातृ नामांश मंडल

नशिवा नशिवा

कही से आके एगो नशिवा पुनपुन मुप्यापु गोपापु वस सट्टे में रहे
 वागवा वो दुधिया गोम गंग के पयिस वस के खुशी रहे। दुव पान शनी
 रहे। वो वांछा अंग से पोथिया गुनगुनी भी रहे। वाया पैर से थोड़ा घसिया के
 यो न वाया हाथ भी छूँछे रहे। वो वस सट्टे में के होठ सभ में मांग के प्यास
 रहे।

हम स्थानीय वृत्ति रहि स्मृति काठे में उमिगसट्टे रहि। वस सट्टे
 के वाग में बाड़ा के मकान में रहि। काठे आस जास हम वोकना देप्पी। वस
 सट्टे के कनिये नूखा पन आठ योठ गुहनी पन कभी पन न कभी वैठ
 रहे। कभी कभी होठ पन प्यास छे पड़ा रहे। होठ वाया वोकना प्यास देवे
 न वोही जमन वैठ के प्या छे आ कठ पन जा के पानी पी छेवे।

एक वाग और नहे जो वो साश्च सुथना से नहे। वस सूटैड के वगैर मे के पोपनी मे गहाय आ कपडा भी पीय छेवे। कनिगा दुकागदान से सावूग भी मांग छेवे। वस सूटैड के सग दुकागदान बोकना से सहगुनूगानिये। दुकागदान सग बोकना नगिया कह के पुकारे।

एक दगि बोकना वस सूटैड मे गगैर पाथि वस से उगैर देपथि। हमना आशयन्य गगैर। हम जो होटल मे पाइबोइ होटल ब्राथ मगोहन के २ वाग कहथि। १ वो कहथक - हं। दयागंद वावू। नगिया वस मे हांनू माये छैय। वस के साश्च कै दैय छैय १ कंडक्टन बोकना कुछ पैसा दे देइ छैय।

कुछ दगि वाद देपै छी कनिगिया मे शानीकि पवित्राग आ नहै हए। बोकन शनीन धीने धीने शुभल जा नहै हए। गगैर गगैर गगैर होके उगन नहै हए। छाती के उगन भी उगन हो नहै हए। केश भी प्यो छे कम १ क ठटके छे नहै हए। होइ पन मुस्काग नहै हए। कुछ अजीब पन हमना गगैर गगैर।

कुछ और दगि वाद बोकना पेट मे उगन देपथि। हम छेन होटल ब्राथ मगोहन के नगिया के वागे मे वगैथि। १ होटल ब्राथ मगोहन कहथक-२ सग वस के कंडक्टन के कनैगि हए। कंडक्टन नगिया के धौग शोषाम कने छैय। पनय नगिया के मग गगै छैय।

हम कहथि-कि कंडक्टन नगिया के संगे वगैरकान ग १ कैछे हए। होटल ब्राथ मगोहन कहथक-कंडक्टन वगैरकान ग कैछे हए। हम सग वस सूटैड मे नहै छी। वगैरकान कनैगि १ नगिया हो हगैर जानू कनैगि आ हमना सग के जानू वगैर तैय। वस सूटैड के सग दुकागदान सग नगिया के मागे छैय। कंडक्टन नगिया के शुसवा के आ बोकन गानी गगैर कामवासना के गगैर के धौग शोषाम कने छैय। नगिया के गवागि आ बोकन शानीकि गाय के सायदा कंडक्टन उगै नहै हए। देपैय ग छथि नगिया आवाकिते पुस नहै हए।

नगिया के पेट काश्चि वढ गेथ। वस सूटैड मे पुसन शुसन होय। स्थागीय

पुठसि दानोगा, संभानां ठोग सभ देखे वगशिया पनय वगिथ मे कुछ न वोठे।

नव महिना पुन गेठ। नगिया पुव सुंदर गोन पैरका के जगम देखे। आविबो माय वग गेठ। कोई महिना कोठुक वस पैरका के मांगे न वो पैरका के बोकना न देखे। हन समय वय्या के पहना दैन नै।

एगो नानी जौ माय वगै छैय न वो सगिश्च माय होय छैय। याहे वो वय्या पुनम के होय! कौनसोषम से होय! आ कविठाकान से होय!

आइ जौ कौ अवविहति माय समाज के उन से अपना वय्या के शेक दैय छैय! मान दैय छैय। पनय नगिया अपना वय्या के पुनान कनै छैय। गेठ वो वय्या अवैध गेठ होय।

पनय नगिया के वय्या नगिया के शरीर के हसिसा ठौय। हन समय वय्या के गधियाँ आ युम्भैत नैहै नै। न कभी सगपान कनैत नैहै नै। नगिया मे मां के रूप सत्य, वात्सल्य शक्ति आ ममता सुन्दर ठौ छैय। नगिया आइ पुनम नानी ठौय हए। नगिया आइ गम्पिनीन गै नानी ठौय हए।

नगिया आवि वस सुटेउ छोड़ के कही दोसरा जगह यठ गेठ।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक यतिक सीलामढी।

-आचार्य नामानंद मंडल, सेवानिवृत्त प्रध्यापक, माता-युद्ध देवी, पति-स्वन्नाजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमोदि देवी, जन्म तिथि-१ जगन्नी १८६० प्रोद्योगिता- एम-एससी (न्याय शास्त्र), एम ए (हिन्दी) न्याय- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविति - कहानी लेखन आ आठेप प्रकाशति पोथी - मैथिली कविति संग्रह भासा के न वांटियी २०२२ प्रकाशति नयना - सह्या कविति संग्रह पोथी - जनक नंदिणी जगकी आ शौन्य जग

૨૦૨૨ પાનકા -મથિથિ સમાજ, ઘન-વાહન શ્રીપૂત્રા (મૈસામ) અપવાન
-દૈનિક મૈથિથિ પુન્યાગામ પુનકાશ સામાજિક-સામાજિક યોગિ,
દાપ્રતિવ- પૂત્ર જાથિ પુનગિયિ પુનથમકિ શક્ષક
સંઘ, ડુમના, સોનામઢી સ્થાયી પાના- ગામ-પપિના વસિનુપન થાના-
પાહિનજાથિ-સોનામઢી વનમાન પાના-પપિના સદન, મુનિયોયક વાન-૦૪
સોનામઢી પોસ્ટ-યકમહથિ જાથિ-સોનામઢી નાપ્ર-વહિન પનિ-૮૪૩૩૦૨

અપન મંત્રુદે દર્શિનાથિસનાડડવદિહાબામાથિયોમ પન પડાડા

रूढ़िआयातृ गामांगद मंडल- वानसि



आयातृ गामांगद मंडल

वानसि

महेन्द्र पुराण छप्पनपुर गांव के जमीन 1891। वो तीन सौ बीघा जमीन के भाँके 1891। जमीन तीन गांव में रहे। तीन गांव में कयही रहे। सन कयही में जोड़ैयन रहे, जो वही गांव के रहे। महेन्द्र पुराण या नहीना पन मुयागा कौन 1891।

महेन्द्र पुराण पटना वसिष्ठवर्द्धिप्राप से एमर कैठे 1891। हुनकन वसिष्ठ गंगानपुर के जमीन वसिष्ठवर्द्धि पुराण के एकवैती वेटी मेनका से मेठ रहे। मेनका मुजसुखपुर के वहीन वसिष्ठवर्द्धिप्राप से एमर कैठे रहे। शादी

के वाद दूगू गोने नाग सी जीवग जीयत रहे।

मेगका के मगध जवागी पन महेद्वन पुताप दवागना रहे। मेगका पुपुठ व्रथियान
वाघी युवती रहे। गांव के लोग मेम साहव कहैत रहे।

शादी के पांय साठ के वाद महेद्वन पुताप अपन पतिगिजी तेज पुताप के मगध
के वाद जमीदानी कने ठागन। अव वो सनाव पीये ठागन। अव हुगकन गजन
मेगका के पवासगि पानो पन रहे। पानो मेगका के समप्रसूक रहे। उ सुंदराना
मे मेगका से वीस रहे। मेगका जहां गेहूंआ रहे, वहां पानो दुययिा गोन रहे।

धीने-धीने महेद्वन पुताप पानो के गजदीक आवे ठागन। एक दगि मेगका,
महेद्वन पुताप आ पानो के एक साथ आठगिन वद्व देय्य ठेठक। पतिगि मान के
मेगका रहे गेठ। अर वाते मे केकनो से कुछ न कहठक।

ठेकगि वोहे नामा प्यठेठ, मेगका वान वान देय्ये ठागठ। एक दगि नाग मे मेगका,
महेद्वन पुताप के ३ सग वान कहठन-हम पंदेह दगि से अंहा पानो के यथेठ
संवध के देय्य रहठ छी। एना न कनूं। हमना मे कगि हय, जे पानो मे हए। एगो
औना सग कुछ देय्य सकै हए। ठेकगि अपना पति के दोसन औना के संग न
देय्य सकत हए। अव अंहा संगठ जाउ। महेद्वन पुताप हां हूं कहकि मेगका के
अपना वाहे मे ठे ठेठन।

पनय महेद्वन पुताप के आंय मे न वासना के भूत सवान रहे। पानो अव
सुगदनी गै आसुंदनी ठागे ठागठ रहे।

अव न हन समप्र पानो के संग रहे के कामेक्षा जागै ठागठ। अव न दूगू गोने
हवस के भूय मटिवे ठागठ।

एक दगि मेगका, महेद्वन पुताप आ पानो के एक साथ व्रिष्टावन पन आठगिन
वद्व देय्य ठेठक। मेगका पानो के उपटैत महेद्वन पुताप के कहठक-अंहा के
का वुहई हय का हम जमीदान के वेटा छी, न हमहु जमीदान के वेटी छी। अंहा
एन ए छी न हमहु एन ए छी। अंहा सनाव पीये छी न आर से हमहु सनाव पीये।
अंहा हमना पवासगि के साथ नै छी न हमहु अंही के पवास जाउ नहव। जे जे
अंहा कनै छी वोहे हम नी कनव। अव अंहा देय्यव।

महेद्वन पुताप नी गैस मे कहठन- अंहा के जे मन हए से कनूं। हम न पानो के
साथ ही नहव।

मेनका भूवा सांस छै, गेहूमन जेका सुशुक्ला आ सुगन्धना दोसन नून यथ
गेथ।

अव मेनका महेन्द्र पुताप के पवास पन जेना जने ठाठ। पवास नाम
बुहावन महेन्द्र पुताप के ही तुनियि रहे। गांव के ही सूकूठ से पांयत्रा पास
रहे। भूवा यौड़ा जवान। सुप्रामठा नंगा। यौड़ा सीगा। वडका मोछ।

मेनका के नंगा ढंगा आ पुनेमक वृषवहान से वो मेनका के मोह पास में वंधाय
ठाठ। एक दगि मेनका साश्व साश्व महेन्द्र पुताप के साथ अपन संवंध में
वना देठक। आ कहठक-नू गसियति हे जा। हम अव तोना से प्यान कनै छी।
हमना मन पन आ तन पन तोहन अयकिन है। आ २ अयकिन तोना हम देय
छियौ। आ २ कहैना नामबुहावन के अपना वाहे में छेठेठन। नामबुहावन महसूस
कैठक कमिठकगी सनाव पीछे हए आ मदहोस हए।

जवान मन्द के जव कोई जवान मदहोस औना अपना वाहे में जकडन न गथ
उ मन्द जकडन के गोड़ सकै छैय।

धीजे-धीजे मेनका आ नामबुहावन वासना आ पुनेम में आगे वढैत यथ
गेथ। समय अपन याथ में यथेन रहे। मेनका गन्गवती मे गेथ।

महेन्द्र पुताप के ज्वादा सनाव पीछे के कानाम छिवन पनाव हे गेथ। एक
दगि अयागक दुनियि छोड़ देठन। मगथ के साग महीना के वाद मेनका के
ठडका पैदा भेथ। सग ठेग कहे कमिठकि महेन्द्र पुताप वानसि देके अपने
असमय यथ गेठन। ठेकनि ठेग वानसि के नाज के न जाग पायथ। साना नाज
काज वानसि वाठगि होय तक मेनका आ पवास वावू नाम बुहावन देखैत रहे।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक यात्रिक सीतामढी।

-आचार्य नामानंद मंडल, सेवान्वित पुनर्वासाध्यक्ष, माता-यगद्ग
देवी, पति-सुवन्नाजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमथि देवी, जन्म तथि-१
जनवरी १९६० प्रोद्योग- एम-एससी (न्यायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)

રૂઝમહાકાળ પુત્રસાદ- નિપોત



મહાકાળ પુત્રસાદ

નિપોત

દત્તિંગા, ૨૦૧૨૦૨૨



હિન્દી સમાહાર મંચ દર્શકો આર સ્વર્ગાત્મા સેનાની કુશળ વૈદિક સ્મૃતિ
 ઉત્સવ અપરિચિત કુમાર યૌવનીક અધ્યક્ષતા મે શંકુ અગ્રેહી સ્મૃતિ
 પુસ્તકાલય, શુભંકરપુર દર્શકો મે મનૌક. મુખ્ય અર્થિ અમરેશ્વરી
 યાત્રા સર્ગી કહ્મી - "વૈદિકીક સ્વર્ગાત્મા આંદોલન મે મહાત્મા શ્રીમતી
 છતાં. આ પુત્રાતિયુપગમના વ્યક્તિત્વક સંગ ૧૯૪૨ કે ૧ આંદોલનક
 દર્શકો મહાત્માક છતાં. આ માત્ર દેશક સ્વર્ગાત્માક હિત ગર્હ અપરિ
 દેશક લોકે એકસૂત્ર મે વાગ્દેવાક સૂત્રપ્ર પુત્રાસ અપર ગુનુવત કમરેશ્વરી
 યાત્રા સર્ગીક માત્રાદર્શન મે કૌત છતાં. " દામોદર કમારુપુત્રી કહ્મી-
 'કુશળ વૈદિક દેશ સૂત્રક સ્વર્ગાત્મા સેનાની છતાં. આ દર્શકો ગૌત્ર
 સંગ છતાં. '

વૈદિકીક પુત્ર વેદ પુત્રાસ વૈદિક જગૌત્રી પે "વાલુગી કૌત ગૌત્ર છતાં
 પે પે ક્યો પેઠ યાત્રા કહ્મી આ ધાર્મી મેઘા, મુદા અગામી આંદોલ લોક
 મેઘ પે નાષ્ટ્ર ગાવના સંદ હર્ષ નાષ્ટ્રીય યાત્રા મે ગાગ લેઘી પંચ હુનક
 ગાત્રો સ્વર્ગાત્મા સેનાની સૂત્રી મે ગર્હ છત્રી, જગત્ર દુઃખ હમના અર્થી. "

મૈથીલ સાહિત્યકાન યન્દ્રેશ કહ્મી - આંસ્ય આ સંગ ક્રાંતિકારી છતાં.
 મૈથીલ કવિ મહાત્મા પુત્રાસ અપર કાવ્ય નયના "હમ માત્રાક લોક" કે ૧
 માધ્યમ સંદ દર્શકો યના પૌ સ્વર્ગાત્માક અપર જગૌત્રી સેનાની
 સંગ પુત્રાસમાગ આ ગૌત્ર પુત્રક કહ્મી. હર્ષ અવસન પૌ યન્દ્રેશ
 મોહન પોદ્દાન, અમીત્ર કુમાર સર્ગી, સંગોષ દલિત, શેખર કુમાર

શ્રીવાસુદેવ, ડૉ. સતીશ ચન્દ્રન જગન, શ્રીમત કુમાર વત્સા, પુત્રી કુમાર સન્ધ્યા, મંડા સદિદીકો, હિનાઇ સહી, ડૉ. ગવિન કુમાર, શંભુ ગાનામ્મ યૌધની, મુશ્તાક અકબર, સંતોષ શ્રીવાસુદેવ આદિ અપ્પન વચ્ચે વ્યક્ત કરેલું છે.

કાર્યક્રમનું સંચાલન સચિવ શ્રીમત કુમાર સન્ધ્યા શ્રી વલ્લભાદિત્યનાથ સંપૂર્ણ સચિવ મહાકાળ પુનઃસંસ્થાપન કરેલું છે.

અપ્પન મંત્રણે દર્શિતોત્સાહવિદ્યમાન થયો પડે.

સંતોષ કુમાર નાથ 'વલ્લભ' - ડાયરી 'ઇલ્યુટ'.



સંતોષ કુમાર નાથ 'વલ્લભ'
ડાયરી 'ઇલ્યુટ'

૨૫-૦૧-૨૦૧૩ સુધી ૨૫/૧૨/૨૦૧૪ થી

જામણિ : હમન માથ-વાપ

जामिया मठिया रसुमिया हमन जगिगी केन यमन सुथर अछा। हमन जगिगी केँ पटनी पन अगवा मे अर शक्तिषम संस्थान केँ वड़ि पैघ भूमिका छै। २००७ सँ २०१३ यनी जामिया केँ कैम्पस मे नहिकस माननीय गहजीव सँ नू-व-नू भेटहुँ हम। जामिया हमन माय-बाप वगैर। वहिन केँ एकटा छोट गाम 'भंगौना' सँ जामिया केन ससुर सनपिहुँ अदुखान नहै अछा। २००७ मे केन्द्रीय विश्वविद्यालय जामिया मे हर्दिय वषिय सँ वीए हर्दिय अँगरेज केँ एन्ट्रेस टपन हम गयहुँ अछा। पढ़वाक हमन जगिगी केन मकसद नहै ; तकने २ पन्नाम छयिय जे गाम सँ जयपुर , जयपुर सँ दिल्ही केन यात्रा कनस पड़ै ।

हमन पानिग्रीक महौठ हमन। कवनि। आओन कहानी सँ दोस्ती कना देठक। सातम-आठम क्लास सँ हम कवनि। ठपैत छहुँ, तकने पन्नाम छयिय जे हर्दिय सँ उगाव वढ़िगै। जामिया केँ कैम्पस अर केँ गप्पिने मे सहयोग देठक। कवनि छेपन आओन वायन कनैत जामिया मे कहानी सेहो ठपिस उगहुँ। ठेक गीत गायन पुनर्गिति मे हम गाग छैत नहैहुँ अछा। भाषम पुनर्गिति, गविष छेपन पुनर्गिति आओन सेमिनार आदि मे गाग छैत नहैहुँ अछा। वड़ नास पुनस्कात आओन स्पोर्ट्सक्रेट भेटैत जामिया मे।

संजय कुमार पौद्दाल हमन मतिन वनीगैरह जामिया मे। २ मतिन। अप्पनो यनी कायम अछा। वीए हर्दिय अँगरेज मे तीस क्लासमेठ छै। हर्दिय सँ अँगरेज क्लियन कएवाक वाद एम ए हर्दिय मे जामिया मे दाखलि छहुँ, पन्थ जामिया के वीएड एन्ट्रेस सेहो क्लियन गस गेठ छै तहि दुआने वीएड मे दाखलि कनवा कस एम ए हर्दिय केँ दाखलि केँ कैसठि कनेहुँ अछा। २ हमन पैघ गन्नाम छै जे वीएड कयहुँ अछा।

वीएड संस्कृत। पूनक पूना केवाक वाद हर्दिय एम ए केन छै जे एनयू मे एन्ट्रेस देठहुँ, पन्थ जे एनयू हमन। अवस नहै देठक। सेन जामिया मे हर्दिय एम ए

ਕੈਂ ਏਂਟ੍ਰੇਸ ਕ੍ਰੋਧਿਯੰ ਕਸਕੇ ਪਛਾੜਿ ਕੰਟਗਿਯੂ ਕੇਓਹੂੰ ਅਥਾ। ਏਮ ਏ ਹੀਦੀ ਮੇ ਕੇਥਾਕ
 ਏਮਯਿਯਾਗ ਹੀਦੀ ਸੈਂ ਗੀਕ ਯਾਕਾ 1-ਵ-1 ਮੇਓਹੂੰ ਅਥਾ। ਉਪਯਾਸ, ਕਹਾਨੀ, ਗਾਟਕ,
 ਗਵਿਧ, ਪਿਪਿਤਾਯ, ਡਾਧਰੀ ਥੇਘਰ, ਸੰਸਮਾਜ, ਧਾਨਾ-ਵਧਾਨਾ, ਕਾਧੁਧ,
 ਆਥੇਧਰਾ ਰਾਗੇਹ ਰਧਿਯਾ ਸੈਂ 1-ਵ-1 ਮੇਓਹੂੰ ਅਥਾ।

ਯੋਯਯੂ ਮਾਨ੍ਕਸਵਾਦੀ ਰਧਿਯਾਧਾਨਾ ਕੈਂ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਏਮ ਥੈ। ਏਮ ਥੇਘਰ ਕੇਮ ਕਥਾ
 ਮੇ ਮਾਨ੍ਕਸਵਾਦ ਗਹਿ ਆਵਿਸਕਥੈ। ਏਮ ਏ ਹੀਦੀ ਸੈਂ ਪੂਨਾ ਕੇਥਾਕ ਵਾਦ ਏਮਥੁਥਿ ਥੇਥ
 ਯੋਯਯੂ, ਡੀਯੂ ਆਥੋਮ ਯਾਮਧਿਯਾ ਕੈਂ ਏਂਟ੍ਰੇਸ ਏਓਹੂੰ, ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਅਰ ਵੇਮ ਯੋਯਯੂ, ਡੀਯੂ
 ਕੇਮ ਏਂਟ੍ਰੇਸ ਕ੍ਰੋਧਿਯੰ ਗਹਿ ਮੇਥ। ਯਾਮਧਿਯਾ ਕੇਮ ਏਂਟ੍ਰੇਸ ਸੇਥੇ ਕ੍ਰੋਧਿਯੰ ਗਹਿ ਮੇਥ।
 ਸ਼੍ਰੇਮ ੨੦੧੪ ਮੇ ਏਮਥੁਥਿ ਥੇਥ ਯੋਯਯੂ, ਯਾਮਧਿਯਾ ਆਥੋਮ ਡੀਯੂ ਮੇ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਕੇਓਹੂੰ ਮੁਦਾ
 ਏਮਥੁਥਿ ਕੈਂ ਥੇਥ ਯਾਮਧਿਯਾਕ ਏਂਟ੍ਰੇਸ ਕ੍ਰੋਧਿਯੰ ਮੇਥ। ਏਮਥੁਥਿ ਸਗਿਧ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ
 ਟਪਕਿ ਯਾਮਧਿਯਾ ਮੇ ਸ਼੍ਰੇਮਧੁਧ ਟੀਮ ਕੈਂ ਗੀਕ ਗਹਿ ਯਾਥਾਗਹਿ ਆਥੋਮ ਏਮਨਾ ਏਮਥੁਥਿ
 ਕਾਨਾ ਸੈਂ ਗੀਕਥਾ।

੦੧੦੮੨੦੧੩

ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਸ਼੍ਰੋਧ: ਵਧਿਯੋਸਕ ਅਭੁਭ

ਵਧਿ ਗੀਕ ਗਪ ਥਧਿਯਾ ਯੋ 'ਆਨਾ' ਸੈਂ ਟਯੋਧਿਯੰ ਕੰਥੇ ਟ ਸ਼੍ਰੋਧ ਮੇ ਪਛ 1੬੭
 ਥਧਿ। ਯੁਗਕਾ ਮਾਧਕ ਥਧਿਯਾ ਪੂਨਾ ਗਸ 1੬੭ ਥਧਿ। ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਅਰ ਸ਼੍ਰੋਧ ਕੇਮ
 ਮਾਸ਼੍ਰਟ ਸਾਥਵ ਵਧੈਮ ਨਹੈਮ ਥਧਿਗਿਹ। ਪਾਨਾ ਕਾਨਿਵਕ ਏਮ ਏਧਿਕਿਸ ਆਧਿਯਾ
 ਯੋਧਿਯਾ ਯਾਧਾ। ਧੁਧਮ-ਧੁਧਾ ਯੁਧ 1੬੭ ਥੈ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਸ਼੍ਰੋਧ। ਪਛਾੜਿ ਕੇਮ ਗਮ
 ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ। ਯਾਧਾਕ ਥੇਥ ਡਾਧਰੀ ਮੈਟਗ ਧਕਿਕਗ-ਧੁਗਮੁਗ ਨਹੈਮ ਥੈ। ਸਗ ਕਥਾਸ
 ਮੇ ਪਛਾੜਿ ਮੇਥ ਰਾ ਗਹਿ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਡਾਧਰੀ ਮੇ 'ਹੋਮਵਾਨ' ਥਧਿਯਾ ਨਹਿ ਥੈ।
 ਵਧਿਯੋਸਕ ਪੂਨਾ ਗਮਏਮ। ਕਹਿਯੋ-ਕਹਿਯੋ ਧਿਯੰ ਕੇਮ ਅਧਾਵ ਮੇ ਕੋ-ਕਾਨਿਯੰ
 ਏਧਿਯਾ ਥੈ ਪ੍ਰਾਸ਼੍ਰਧ ਸ਼੍ਰੋਧ ਮੇ - 'ਸ੍ਰਾਵਾਗੀਸ਼ ਰਕਿਸ'।
 'ਅਵਾਨਾਓ ਏਧਿਯਾ' - ਸਗ ਨਾਹੈ ਰਕਿਸ। ਧੁਧ ਧੁਧਿਕਿਸ ਸਗ ਨਾਹੈ ਰਕਿਸ

कोना न' सकैत अछी।

शिक्षा आव ससुता नहि रहि गेलै। गरीब आदमी केन कौह जाह नहि छै। मजदूरक संगान मजदूरी कके मनी जाह एक पैघ षड़यंत्र न युक्त अछी। समाजवाद केन नाम पन पूँजीवाद केँ नाजपोस न रहै अछी। समाजवादक नाम पन गौंटकी केनहि न सन कौवा जाँका टुकुन-टुकुन नाकि रहै छथी। सनानि छुटि मयै छै। के कौक छुटि सकैए। ओ ओक नीक कमौवा कहै जा रहै अछी। औपन छुटै सन सँ पैघ कठकानी वना युक्त छै।

वर्द्धिप्राप्ति मशीन वन रहै अछी। मिमिट दवाउ सन कछि हाजि। जाके टाका प्यय कनै ओनवे सेवा देन। टाटा छुटाउ नमाशा देपु। मशीन वनवाक वाद कोक वर्द्धिप्राप्ति मशीनगन वन रहै अछी। 'संवेदना' मनी रहै छै। 'संस्कार' मनी रहै छै।

ओ वर्द्धिप्राप्ति कनिको मोजने नहि दै छथिन्ह। मशीन वनवा सँ नोकवा छेउ कोनहु वेवस्था कनस पड़ै।

मशीन वनवाक वाद सन कयिो माय-वापक ठान-दुठान गुठ रहै छथी। अइ सँ ग्रहण नहि वयाउठ गेलै तँ सनकान केँ सन सँ पैघ प्यय 'वर्द्धि-आश्वासन' पन कनस पड़ानहि। सन सँ वेसी गाम मे वर्द्धि-आश्वासन प्योस पड़ानहि। आव उठवाँसी सन कयिो गौताह - पढ़-ठपिठ केँ ठगि व्यये कपाड। गाम मे गान्हटि धियापुता सन वंदूक-वंदूक प्येठानि रहै अछी।

(डापनी केन शेष अंश अगाधि प्येप मे)

छप्पक :- संतोष कुमार नाथ 'वटोही'- ग्राम : मंगलौरा

पाठक केन सुझाव लेल संतोष कुमार नाथ 'वटोही' क बहिरमे अपन धरि पत्रिकासि डापनी नीयाँ देठ जा रहै अछी - सम्पादक

સંગોષ કુમાર નામ 'વટોહી' કેન (ડાયરી) 'ઇવ યૂ ટૂ'

૨૪૦૪૨૦૦૭

૭૩૨ મીનસ પનેમ

આર હમ ખામણિ મે વૈસઇ ર સોચિ નહઇ છી ખે ૭૭૭ી કૈં હમ ગહિ બુહિ પિરઇયૈ।
ઓ શકૂનપુન છોડકિસ કછિ ગહિ ખગૈન અછી દુગણિ કાસ સં કાસ યૈઇ
ગેઠૈક અછી, પનમ્ય ઓ અપ્પનો યનગિામ મે ડવઇ છચી। પહિવિ પનેમ ડીકે મે
ઠોક ગહિ મૂઠિ સકૈ। પહિવિ પનેમ 'ડુમનો' છયૈ। ખનિગી કૈં તમાશા વગૈઇ
ખાણ છે। રસકૂઇ મે પઢૈન ઓ સીપ્પીહીખે હમ ઓકન પહિવિ પનેમ છયૈ।
ઓગા તસ ર સમાખક ષેઇ હખમ કનૈ રખી ગહિ છે કકિતિાવ મે પઢૈઇ ચીખ
પુનૈકટકિઇ હેવાક યાહી। સગ યનમ મે કહઇ ગેઇ છે કપિનેમ સગ સં ડપન
હોણ છે, પનમ્ય ર દૈહકિ ગીક ગહિ હોણ છે। હમ તસ ટુટગિઇ નહી। ૭૭૭ી
કે પઢૈવૈ હમ ઓકના ષેઇ અપગ દિવિ કહણિ હાનિ ગેઇહું સે હમના ગહિ બુહઇ
અછી દિવિથી કૈં સનદી મે કુકુકુન ખંકા કુકુઆર નહી હમ ।

દુગણિ મે યનમ છે -" માઇ છેનખ ખગ મુઆ। " દૈહકિ પનેમ કનૈ માઇવ
તઇવાન કૈં યાન પન યઇગૈ વુહૂ। નસપ્પાગ અપગ નયના 'પનેમ વાટકિ' મે પનેમ
કે ષેઇ વડિ નાસ ઇપ્પિઇકનૈ -

"પનેમ પનેમ સવ કોડ કહા, પનેમ ગ ખાગા કોપા।

ખો ખગ ખાગૈ પનેમ તો, મૈ ખાગા ક્યો નોપા । "

૨૫૦૭૨૦૦૭

एकटा अनाम सौ ठेकनविमान

नोक उड़की देपठा सँ सन कयि कँ आँप्यि हुनके पन टकिठ नैह छन्हि।
 जपन ओ गवि सँ नकैठ कस इस्कूठ दसि जाएन छविह नँ कनहा-कोन। सन
 कँ आँप्यि यौययि जाएन छवैह। सन उखं। इस्कूठ यनहि हुनकन पाँछा जाएन
 छठ। इस्कूठ कँ छुट्टी कँ समय गिक दू वजो उखं। सन इस्कूठ कँ गेट पन
 आँप्यि टकिठ नैह छठ। इ दैहकि प्यियाव छवैह। उठ्ठि इ द^२ स्य देप्यि
 कस शनिशान छविह। ठेकन पनेमक अ आ नहि वुहठ सेहो हुनका पीछा
 कनैह छठन्हि।

इस्कूठ मे आइ शंक्सन छवैह - 'गीन-गादक आओन न^२त्यक'। सन उड़की
 घने सँ सज-यजकिस गेट छविह। उठ्ठि आइ न^२त्य ठेठ अपन तैयारी केने
 छविह। ओ गनोक वढ़यि गयविह। जे मैडम हुनका पहिठि स्थाग देवाक ठेठ
 कनकि पाँछा नहि जेविह। इस्कूठ सँ अवगिह मातन ओ हमन श्वेग केविह -

"आज हमन पनोनाम वृह अय्य नह। मुह न^२त्य मे पनथम स्थाग
 भविह। आप वयाई नहि दोगो?"

हम वड़ियुश जेठुँ अछि। उठ्ठि हमन जान छविह। हम हुनका श्वेग पन
 कहयिह - "मै तुमसे भविकन वयाई देना याहना हूँ। तुम कव भविगी?"

"अय्य गिक है, अभी मममी नीये आ गयी है। मै श्वेग नयती हूँ। आपसे वाद
 मे वाग कलंगी, नव वनाउंगी। वाय आइ ठव यू।"

"ठव यू टू" - मे हम जवाव देयिह।

पानक मे हम वैसठ छी। २ पजिनावाद केँ अशोका पानक छयिप्र। धांस ह□स्पीटठ केँ वगठ ब्राठा पानक। हमना गहिबुहठ छठ जे वेठेटासठ डे' सेहे कछि छयिप्र। नोण डे, टैडी डे, य□कठेट डे हग डे, पु□मसि डे वगैरह कछि छयिप्र की ? गाम सँ दठिठि सग सहन मे आयठ हम गोवने छठहुँ। की पनेम मगावै ठेठ स्पेसठ दठिस सेहे होएत छै ? हम पुष्ट सँ पुसूण केठहुँ अछि। मथिठि मे मधु सूनावसी पनव तँ होएत छै। पनभ्य देखक नाणयानी मे २ गवका शव्ह हमना ठेठ वड़ि नाशि नोमांयक छठ। जामयि केँ कैपस मे पुनेमी युगठ केँ देप्यकिस हमनो भोग गयठ जे हमहुँ अर शव्ह के गणा कस देप्यि।

पनेम कनवाक ठेठ दू आदमी याहि। पनेम ठैकिकि आओन पानठैकिकि होएत छै। गगवाग सँ पनेम हमना एहेन गासठकि नस गहिकस सकैत अछि। ओहगायो गगवाग सस पनेम दठिप्र ठेकनकि नैत छथि। काठिका मंदनि मे उमड़ठ ठेकनकि नकन आँपकि देपठ हठ कहि सकैत अछि। हम नस गनक ब्राठा पनेम के ठेठ वौनायठ छी। हम ठैठा-मजगू जाँका पनेम गहिकस सकैत छी।

'पनेम न वानी उपजै, पनेम न हाट वकिप्र।' पनेम केन वनि दुगयि सूग्य अछि। मधु सूनावसी मे पनेम केन पनीकषा होएत छै। मसिनामी टेमी सँ हाथ केँ दागठ जाएत छै। हम वैसठ छी। आकास दसि ठाकनिहठ छी। आकास मे मेघ केँ नूखा जाँका नूप देपनिहठ छी। ठठि केँ मुँह सग मेघ ; गगनिहठ अछि मेघ ; श्वागनक हवा अगयि वेठाठ मेठ छै। 'हवा हूँ हवा हूँ वसंती हवा हूँ' केन गीत गवैत सनसैत पछुआ हवा। ठठिक पनेम दैहिक गहि छठ। गैसगकि योनुकवा पनेम जाहि मे पनेमी वगुठा वगठ रहति छथि।

श्वनक गिगि टोन वाजठ 'ओ ठम्हे' । हम हवडहवड श्वन नसिब केठहुँ। 'हठेठे' । २ मडिगन वोठि केँ सुनकिस हमन कनेण श्वाटिठेठ। हमन श्वा गेठ 'अहाँ वनि सजनी' । " कैसे हो आप ?" हम अर पुसूण केँ सुनकिस

नमनमा गेछुँ, पनभ्य दधि पन वंदूक नागकिस आहसिना सँ कहय़ि, " मै गीक हूँ। " भोग नस अपन कव्वा मे छठ गहि आओन की कहय़ि!

३ 'वेष्टेशन डे' वगेनहिन पुनविक छवह। नगिसाँध योनुकवा पनेमक गेम पेठाउ आओन माघक जाड़ मे हाठाहा, पदवाहा 'हा डे', 'कसि डे' मगाउ। मथिषि कँ ठोक ३ गहमिगाउ। उठ्ठि हमना सँ ठागग छह महीना वाद गपुप केविह अछि। कोन ३ वेमानी छय़िसे हमना गहिवुह। वेष्टेशन कहय़ि 'वेष्टेशन द ग्रेट' गहिनस सकैत अछि।

२००३२००८

उपेखन टू ग□ड

उठ्ठि आर व्हिसन मे याह मे नून डाव दैठकै। हुनकन पापा कहथनिह, " वेटा नवीयन गीक है, न ? " लोक कहकिस ओ गांगवेई ड्यूटी गकैठ गेथनिह । उठ्ठि अवाक् नहि गेठ छविह। पापा ड्यूटी सँ साँह मे एवाह नँ उठ्ठि कँ माए हुनका सँ पूछथनिह, " व्हिसन मे की गेठ छठ ? "

मूय्छन के हँसि-हँसिकिस हावत पनाव नस गेथनिह। ओ वाहावेठ होएत वणवाह अछि, " याह मे यीगी गहि, नून देगे छविह उठ्ठि। "

काएहिणपन साँह मे हम उठ्ठि कँ ओग निसीव गहि केथनिह। नपने सँ हुनकन भोग मगुहैठ छैठनिह। हुनकन य्वाग हमने दसि छैठक। ३ 'ओ' पनेमकि छविह ! काएहि सँ कोनहुँ काण मे हुनका भोग गहि उगैठ छैठनिह।

ओ आर हमना यानिपेणक उप्पिठ कछि कागण पकड़ा देवाथि। हम काँपनि ओकना पेटक पोवी मे ठुसि दैठय़ि। नपन जे व□क जाकस ओकना पढ़ावेठ वैसछुँ नँ ओर मे महीन महीन नूननूकैत आपन मे 'हीन-नाँहा' उप्पिठ छैठे।

તપ્પન તં હમ ગહિવુહ્મયિ, પત્ર્ય અગિથિ દનિ ઉર્વિ શ્વેન કેવિહ , "હવે ! ક્યા હુઆ ? આપ ડીક હૈ, ન ?"

"હમ અકવકા કે કહ્મયિન્હ , " ક્યા ડીક તૂંગા ? અવ તો તોગ ઊ ગયા હૈ । "

૨ યટ્ઠિ છેવૈક ળકના આળમ્મ હમ ગહિમૂર્થિસકૈન છી। ઘેટન હમના ઘેઠ ઇપિઠ છેવૈહ, પત્ર્ય પના મે 'ઉવ ઘેટન ટૂ ગ□ડ' ઇપિઠ છેવૈહ।

૦૭૦૪ ૨૦૦૮

ઊઠી વીચે કપાડ

આર ઉર્વિ કેં પઢા કસ હમ ગકિર્થિગેઠું અછા। ગવની હમન ૨ છઠ ખે હમ હુનકા પનામોહિતિ ળસ કસ 'કસિ□કસ ઘેઠવિન્હ। ૨ ગુનાહ મહા પડઠ। ઉર્વિ અપન માદ કેં ૨ ગપ્પ કહિદેઠથિન્હ। વસ આવ કી મેઠૈહ - વેઠ સં પોટઠ ગેઠું। હુનકન માદ કનૌચ સં પજના મે માનિહી ૨ છયિય પમેનક શ્વઠ। પમેનક ગશા અનાગિઠ। પમે મે યોપ્પા મથિઠ।

ઉર્વિ અર 'કસિ' કેં હવસ કેં સંખ્મા દેઠથિન્હ। ઓ ઉવ ઘેટન આશોન ઓહી મે ઇપિઠ ઘૈઠા - મળૂ' કેં માઠવ હમ આર યનિગહિવુહ્મયિ। માનિપ્થિઠાક વાદ હમ અર ઉવ સ્ટોનો કેં અંત વુહ્મિહ્મ છી।

૨૭૦૮૨૦૦૮

અમ□ના યુવુવિ

संग, अमना, पुशू सक्सेना आओ हम गावि पाक नामि मे वैड
छी। वषि कछि गहि छै। 'टास पास कस नह छी। दधि हम टुट गे
अछी। हम पहि पगेम के गुठि गहि सकै छयि, पन्य एकना प्रादो नयनै
उयति गहि गेन अछी। एक सप्ताह सँ गीक जाँका गोणन गहि केहुँ अछी।

पगेम मे घोषा पापठ संसाग छी हम। आव हम हमिना गहि अछि जो कनिको
सँ पगेम कयैगह। २ इथि हम क्वासमेट अमना। हनिका दसि हुकाव न
हमनो छ, पन्य संग हुका पसंद कौन छ।

हमना हुकन युवुठापन गीक गेन छ।

०३०२२००८

आई एम सनीआई एम सनी

नागि केँ साढ़े आठ वाजि नह छै। हम जो वृक मे छन पन ओछान कस केँ
सुते छे पन्यासन छहुँ। वज मे एकटा ड्वायन छथी। हम हुनू गोटे
गेपा मे माओवादी वषि पन वयि कस नह छी। माओवादी गेपा मे
गीक छयि वा गहि ओ नस गवषि नय कनौ। ओहि वीय हमन ओनक नगि
टोव वाज। हम ओन उठैहुँ। ओनस सँ आवाज आय, - " आई एम
सनीआई एम सनी।"

कनेक दे हम वसिनि मेहुँ। ओ ओन वाजिह, " हमे मासु गहि कनो। "
हम वुहै छेयि- हमन पगेम सय्या पगेम छ। हम जवाव देयिह, - "स्ट्स
ओके। हमने कव का तुम्हे मासु कन दयि है। ओनस सँ ओ ओन कार्ट
देहि।

२५०७२०१०

સેકેમ્ડ ડિવિઝિન

આર વીએ કે સ્થેન ડિવિઝન ગર્કિઠવૈ। યાનિટા વ્રદિયાનથી પાસ મેઠ છે। હમન તેસન ગંવન અર્ધા - 'સેકેમ્ડ ડિવિઝિન ૫૦૫%' । અર ડિવિઝન પાંચાક કાનમ છઠ - પહિ ગનીવો, દોસન પનિવિનક ઉચ્ચ શક્ષિક વૈકગ્નાંડ ગર્હ, તેસન ગમહન પનિવિન, યાનિ પનિવિનક કઠહ, પાંચમ સમાપક ગનિઠ માગસકિના આઓન અંતિ ઇઠ્ઠી સંગ પનેમ આઓન યોપ્પા।

નાનિ કેં ગૌકની આઓન દનિ કેં જામયિ। અસંતુઠિતિ જાનિગી અર્ધા હમન। પર્કિકસ કછિ ગીક કની સે વ્રિયાન અર્ધા। જોન્યૂ કેં એનસ કોક વેન દેઠયિ, પનિય હમ ગાંધીવાદી ઠોક આઓન ઓ માનુસવાદી વ્રિયાનયાનાક સંસ્થાન, તૌ એનસ ક્ષીપ્તન ગર્હ મેઠ। જામયિ મે વીએડ મે દાપ્પાઠિ ઇઠ્ઠું અર્ધા।

૧૨૧૨૨૦૧૦

દનિયાંગાંજ વાપ્પા જામા-મસજિદ, દિઠ્ઠી

આર 'પહિ ઇસન પ્ઠાન' ગવાવ પટૌદી મય્ય વ્રદિયાવ્ય, દનિયાંગાંજ મે ડિવિઝિન કેઠ્ઠું અર્ધા। હમના હેડ વગા કસ જામયિ અર રસકૂઠ મેજાગે અર્ધા। હેડ કેં કુન્સી કેં સમ્માન દૈન હમ 'ઇસન પ્ઠાન' ડિવિઝિન કસ નહ છી। આર અઠી મુહમ્મદ સન હદી કેં ક્ષાસ મે હમના સુપનવાશન કેઠાથી। ર પય્ચીસ ગંવન કેં ઇસન પ્ઠાન છઠ। ઓ કોક ગંવન દેઠયિહ હમના ગર્હ પના।

નિવિસી એકટા દ□પ્ટિ વાધાનિ વ્રકિઠાંગ છેઠાથી। હુનકન જાનિગી કેં ગાંઢી અઠી મુહમ્મદ સન પટની પન સં ઝાનિદિઠયિહ। હમ સન કોક પ્નયાસ

केथियेनह जे ओ ऐसन पुगन उठियेन कस सकैत, पनअय अथि मुहम्मद सन
सँ ओ तोक ने उना गेवाह जे ओ जामिया छोड़ि देथयन्ह। ३ छयिय
वेकान्ताकि देश मे गसिाश्च।

०४०६२०११

गो डकिटेनशिपि

वदिसक वैक मे व्ठैकमनी कँ जमा केगहिन आओन सकान कँ आँप्यिपोठेठे
पूना देश कँ यात्ना कजैत एवं जगसमन्थन जुटवैत योग गुनु स्वाभी नामदेव
वावा नामथिमा मैदान, दियेथि मे अग्नशन सुनू केवथि। इंदिया गांधी एनपोन
पन हुनका मगमोहन सकान कँ पैघ मंत्नी पुनासव मुप्यन्जी, पी यदिवनम
आओन कपठि सविवेठ अग्नशन गहिकजै ठेठ मगवै कँ पुन्यास केथयन्ह।
पनअय वावा नामदेव आर अग्नशन पन वैठ गेवाह।

कानून मंत्नी कपठि सविवेठ वावा नामदेव कँ सहयोगी वाठकषाम कँ
दस्ताप्यन केवहा एकटा यटिटी मोडिया कँ देप्यौकीहिन जार्ह मे एक दनि योग
ठेठ पनमशिन गेटठ छेठेन्ह। नागिमे कनीव वानह वजे गह मंत्नी कँ आदेश
सँ आर पुठिसि कँ ठागि यात्ना हेम ठाठै। पुठिसि कँ ठागि सँ अपनाआप कँ
वयेवाक ठेठ ओ मंय पन सँ नीया कुदवाह। दोसन दनि उताप्याम्ड मे
सठवान-सूट मे मोडिया कँ समक्ष देपेवाह। वावा नामदेव के गहन जाणवाठ
वावा कँ वयेवाक क्म मे घाप्रठ मेठीह आओन अपन पुनास पुन्याग देथयन्ह।

प्राग कँ टाका दोसन देश मे गुकौठ गेठ उयति गह छयिय। कयि अर ठेठ
वापौत छथि, तँ अहाँ ठागि मानवै से वेकान्ता छयिय डकिटेनशिपि गही
हटिठनसाहि गहियठाग्ह अर देश मे।

३१०८२०११

मै अन्ना हूँ

२ नामीठा केन मैदान छयिए। गयो दठिठि गेठवे सटेसन, दनियोगांज, दठिठि गेट वगैरह गणदीके मे छै। कमठा मात्कटि केँ गोक वगैठ मे २ मैदान छै। दशहना मे नामीठा केँ मयनक छेठ २ मैदान जागठ जाएत छै, पनय नामीठाके पान्थी अपन गैठि छेठ अतस अवैत छथी।

१६ अगासत केँ दठिठि पुठसि केँ स्पेसठ सेठ मयून वहिन सँ अन्ना हजाने, मनीष ससोदयि, अनवर्गिद केजनीवाठ केँ वहिसने गनिशुताम कस तहिङ जोठ गेठ दैठथहिण। जगठोकपाठ आओन म्नाष्टायाम केँ प्यठिफ २ आंदोठन केँ समन्थन पूना दैस सँ मठिठगहि।

हम १८ अगासत केँ 'मै अन्ना हूँ' वाठ टोपी पहिन कस नामीठा मैदान पहुँच गेठहुँ। २ आंदोठन सङक सँ सुनू गेठ छै। पूना दैस मे जगता सङक पन छै। गनीव-गुनवा, मण्डून, सगिस्टान सग कयिओ अर आंदोठन केँ समन्थन दैठथनिह। पहठि मउगी आईपीएस कनिम वेदी मय सँ तनिगा हंडा शहनवैत छथिह।

०५१०२०११

मुसठमान वगैठिठुँ अछा

मुसठमान हेनै गोक गप्प छयिए या नहि से हमना नहि पुहठ अछा। पनय जहिया सँ जामिया मे दायिठि छेठहुँ नहिया सँ कछि ठेकनि हमना मुसठमान कहस ठगठथी। २ कोन मानसकिता छयिए ? हगिदुसाग मे अर सोय केँ डेन

नास ठेक छथी। कहि ठेकनहिमन मजाक उड़यैत छथी - " देखियौ, संतोष मुसठमान बस गेलाह। "

जामिया मे दायावि ठेकाक बाद कहि ओछी मागसकिताक ठेकनहि 'अससठाम वठैकुम' कहिकस हमना श्रुतिशिरा कनैत छथी। हम जामिया सँ हँदी अँगुस , वो०ए०० कस १६७ छी। कोनहुँ धनम आओन ब्रिगादनी केँ ठेठ हमना भोग मे पोट कहियौ गह १६७।

हमन वावूजी केँ ढोठकिया मुसठमान छथनिह। मंगलौना मे सवजी बाँधी काकी मुसठमान छथनिह। मुह०नम केँ समय हमन माए ह०नी प० जावै बाँधी गीत जावैत छथनिह। द०मिगा मे सी एम सांस क०ठेठ मे वड़िनास सहपाठी मुसठमान छथनिह। हमना भोग मे कनिको ठेठ कहियौ पाप जगम गह ठेठक। जामिया सँ हम नीक संस्कार ठेठहुँ अछी। अवे बाँधी समय उ०साइड क०नी कहि कोना मुसठमान वनिगेठहुँ अछी।

२७१२२०११

अपवर्तिन आप्पमान बाबा नागघाट

ठठठि आइ नागघाट प० आप्पठ छथिह। हनिका न०थ केमपस, डीपू वस स०टैम्स सँ निसिब केठियैनिह। वस सँ औ० कस ओ हमना दसि अरथिह। हम दोसन वस एठ प० ओहि वस मे यढ़िगेठहुँ अछी। ओहि ओई वस मे यैढ गेठिह। नागघाट वस स०टैम्स प० हम दुगु गोटे औ० गेठहुँ।

नागघाट वड़िनीक सँ सजीठ गेठ छै। गांधीजी केँ समाधिपन 'हे नाम' ठपिठ छै। नाथुनाम गोडसे जप्पन गांधी जी केँ गोठि मानठपहिनि, तँ हुनका मुप सँ नकिठठ अंगमि बाक्यांस छठैह ' हे नाम' । २ गांधीबाद केँ मूठमंगन 'नामनाप्य' केँ प०किठपना थकैक।

उठ्ठी एकटा गोक जगह देखि किस वैस जेथिह। अपन वैग मे सँ 'कुछ मोड हो जाय' के मूड मे 'मद उयनी' केँ चौकछे नकैठ कस हमना दिसि वढौथि- 'थिजाए'। २ प्रेमिका केँ नग्न सँ प्रेमी केँ मुँह भगिई कनेवाक नग्न छथ। हम गदगद भोग सँ हुनका गच्छि केँ सतीकाँ केथिह। ओ कनपी आँखा सँ हमना देखिह। अपन वडिनास पसिसा हमना सुगौथिह। कछु प्रेमक छथ, कछु पत्रिकाक आओन कछु समाजक आओन देखक।

०२०१२०१२

आँखि गो

आइ हम मसुए छी। भोग होए अछि शिष्टकानिमानिकस कानी। ओ नाजघाट पन आयुठ न छथिह, पनय हमना कनेजा मे सूईआ गोककिस यथि जेथिह अछि। हम पानपुन केँ अइ मग वडिउगि मे पड़ठ टेसन मे छी। जगिगी वडिपनीक्षा छै। एकटा गँ गनीवी सँ मानछ छी, दोस पनेमिका केँ कछुआ स्वाभाव सँ शनिशिग छी हम।

उठ्ठी केहने प्रेमिका छथिह !! तीन-यानिभिनग कोनो अना-पना नहि। नहि शोन-खान, नहिछेन ! प्रेमी के धीनज केँ पनीक्षा छथ ई वा प्रेमी केँ कुहना-कुहना केँ मानवाक उपाय। मानवाक मोडान हथियान !

हम अवोध वाठक जाँका ब्रेट एंड वाय' केँ मुद्ना मे वछिग पन ओघनप्राह मानी नहथ छी। ओनस उठ्ठी दूध-नाग पैग छथि। ई छथिए 'छेन-मंजु' के घोविया घाट। प्रेमी कपड़ा जाँका घोए अछि प्रेमिका जूगक नौद मे प्रेमक अँयान केँ सुपावैग अछि।

आव धीनज टुटिगिह हमना। हमन कनेज जगिह अछि। माथा श्वाटिह अछिहमन। गगनिह अछि आव हम नहिछी। तीन दनि सँ देह नापिह

અછાં જામયાં કૈં કૃપાસ મસિ મસ નહૃ અછાં હે દેવ ! ઈ કો મસ નહૃ
અછાં આંખાંડવડવા ગેૃ અછાં ગો નહૃ નહૃ અછાં આંખકિ ગો નમોતી
ખાંકા ઢાંક નહૃ અછાં

૧૫૦૧૨૦૧૨

વેદનાદી વાઘમ

આર દવિયાં કૈં નોહાંમી અમ્વેડક ન સ્પીટૃ મે જાનમ મેઘેનહા. ઈ વ્થ ક
કે દોસ ન શ્વે ન પ ન હ નૂમ મે ઘેટૃ છી । સોય નહૃ છી - અર જાગિગી કે ન
કો હૈ ? કોનું નસા નહૃ સુદા નહૃ અછાં આવ ।

અમ અમે દાખાં ઇસ ઘેઠું અછાં હમ । ઇઠી હંસનાં મે પઢૈાં છથાં દવિયાં
કૈં આર છઠ્યાં છથેનહા. આર ઈ વ્થ ક કૈં અર વઠિડગિ મે ઇધુ પાન્ટી મસ
નહૃ છે । ઇઠી સેહે આપૃ છથાં હમ નાં સં કનીવ પાંચ મહિના સં હુનકા
ગપ્પ નહૃ હોલાં છનહાં ઓ પાન્ટી સં યઠગિઠીહ ।

હમ છા ન વાંછાન કેને છી । ઘેટૃ છી । યાંતિ મે છી કહિમ ના પનેમ ક નકસ
યાહી વા નહાં ઈ સંસપ્ત વનગિઠૃ અછાં પનેમ મે સંસપ્ત પૈઘ દનાં કહૃ જા
સકૈ । હમ ના વનહમ શાંસ ઇગૃ અછાં ઓનસ ઇઠી કૈં કછિ નક ન શ્વક
નહૃ પઢૈાં છનહાં

વડી મસ ગેઠૈ રૂનાંહિન પનેમક । હે દેવ ! આવ કોક સોવહક અર ગનીવ
કે ? હમ સકાંવિહિન મસ યુકૃ છી । 'પ્યાં ક્યાં તો ડનાં ક્યાં' ર સનિશ્ચ
મુહાવનાં છથે અશ્રો ન કછિ નહાં વાઘમ કૈં વાંનહ મે હમ પાઠૈ છી ।

गागमती हम गेठ छी। जायसी तँ हम छी गहिजे वाहमासा छप्पिस कस
गागमती के वनिह केँ संग अपन वनिह केँ अमन बना छी।

हे देव ! वेदनी हमन वाठन । कोन गछी गुकायव हम ? कोन जाहू- येना कनव
हम ? कोना नहव आव हम ? के डायन हमन वाठन केँ हमना सँ दून केठक ?
दहमहदह ! !

२७०२२०१२

हवस : मुदा पनेम

३ हम की केठिये ? कछि गहिबुहठिये हम । पनेम मागे कवीन साहवक पनेम -
'गनिका' । नृपहीन, गंधहीन पनेम ! हवा माखकि पनेम ! अइ पनेम मे जसिम
केन कछि दाई गहि गठगही वसिद्ध आत्मा-पनमात्मा बाठा पनेम !
पनज्य मनुष्य आओन मनुष्य केन वीय पनेम तँ जसिमागी होए छै ; जाहि मे
देह भविष केन उठेय गेठ छै । ३ 'वैककि' पनेम छयिय ।

ठठ्ठी हमन पनेम केँ 'हवस' केन संज्ञा देठक । ओ कहथिह -" आप पागठ
हो । "हम सपिहँ पागठ छठहुँ ओकना पनेम मे । उ पनेम 'पानवैककि छेठैक
आ कजसिमागी ' से इतिहास आओन समय पन छोड़ि दैठ छयिय । अगन
मनुष्य-मनुष्य के वीय अथवा न- मादा केन वीय जसिमागी पनेम छै, तँ ओ
गठ गहि छै । जसिमागी पनेम मे दैहकि आगा केँ वुहैगै गठ गहि छै । हवस
ओ शव्द थकि जाहि मे वठजोनी जसिमागी मेठ होइए ।

सहमति मागे आँप केन इशाना एवं मोगक गतिशव्द सहमति 'वैककि' पनेम
छयिय, 'हवस' गहि ठठ्ठी हमना पन हवस केँ आनोप ठगौथिह । नाति मे

મૈસેજ મે ઓ 'હવસ' કેં આનોપ ઓઊઠિહા. હમ વડગિનિશ મેઠું અછા મોન દુખા મિપ્પા. ૨ હમ કી કસ દેઠિયિ. વડપૈઘ પાપ હમના સં મસ ગેઠ મને। પનમ્ય ઓઊ હમના વીય તં ડસિમાની મેઠ ગહિમેઠ છઠ। હમ ઓઊ કેં 'કસિ' ટા કેને નહિયિ. તં કી ઓઊ ઓકને 'હવસ' કહિ નહિ અછા આઓ હમના પન મથિયા આનોપ। હમના દૂઝમૂઝ કેં હવસી વગા નહિ અછા।

હમ અપના કેં પાપી માનકિસ 'શ્વાંસી' પન યઢવા ઘેઠ તૈયાન છો, અગન અપન પુનેમકિ કેં 'કસિ' કનઘે માને હવસ હોણ છે તં ? હમ કમ્પનહું ૨ પક્ષ મે ગહિ છઠું ડો ઓઊ કેં દેહ સં હમના ખેઠવાક અછા, ઓકના અપવાગિન કનવાક અછા। ઓકના મોનક અપમાન કનવાક અછા। ઓકના કોનહું શ્વનિશિન કનવાક અછા। હમન પનેમ વસિદ્ય પવાગિન છઠ। કોનહું દૈહિક સંસનગા ગહિ। 'કસિ' ગમસો- સઘામ કેન દકટા ગાષા છયિય ડો માનગીય આઓ મૈથિઐ ઓકનકિ કેં વુહવા મે અપ્પનો ધનિ ટાઈમ ઓઊગ્હા. ઓઊ વાદ મે વુહા ડોગીહ ડો હવસ કછિ આઓ હોણ છે। ઓ મુનદા હોણ છે। હવસી મ□ન ઓકનકિ છથા - ' સંવેદનહિન' મનુષ્યક દેહ મે માઠગાઠ છથા ઓ હવસી ઓકનકિ

૨૩૦૪૨૦૧૨

ઓઊ માઈ હન્ટ

હમ ઓકના ગહિ મૂઠા સકૈન છયિય। ઓ હમન સગ કછિ છથા। માં કેં સમાનગન તં કયિયો ગહિ છથા અર દુનિયા મે હમન, પનમ્ય માં કેં વાદ ઓકન ડગાહ હમન દિઐ મે ડનૂન વગાગેઠ છે। ઓ હમના ઘેઠ શ્વનિશિન છથા, તં હમ ઓકના ઘેઠ શ્વનિશિન છો। ૨ કુન નોગ છયિય ડકન રઘાન વાહન ગહિ છે। ઓકન રઘાન અંદન છે। મઠિન ઓકન રઘાન છયિય માને। વ્રિછોહ ઓકન વેમાની। સયહે કતૌ ગનક હોણ છે।

નાળઘાટ હમનો ખનિગી મેં જાહિસ ઝસ ગેઇ અછી હમન દુગ્યા સં પુશી ઓહી દગિ વધિ ગેઇ ખહિયા ઓ કહીહી - " અવ કમી નહી મીઠીગી । " નાતિ મેં ઓકન મૈસેખ હમના વેદના કેન સાગન મેં ડૂવા દેઇકા હમન વહિસન ઓકના ક□ઇ કેઇયે, પનખ્ય ઓ ક□ઇ નીસીવ નહી કેઇહી ઓકના હમન કોનું પનવાહ નહી છે । હમ મન્યા પીવસે હમ વુદ્યો । ઓક કમી !! મહા-કમી !

ઓ હમના ઇપ્પીહી □ □ થાકે યાનેડ યોનસેઇડ □ ઓ હમના સં પનેમ કનૈન છીહ ; હમના સગ કછિ માગેન છીહ । આખુ ઓ નૂસગેઇ છથી ઓ આવ હમના સં ગપ્પ નહી કનૈન । ઝસ સકૈન અછી ઓકન નવકા દુગ્યા મેં હમન કોનું ખાહ નહી છે । ઓકન અર દુગ્યા મેં સગ કયો હેવાહ- હેતીહ, પનખ્ય હમ ઓકન આવ નહી હોવ કછિ ।

ઓ વગાવટી દુગ્યા હૈૌ ખાહ મેં ઓ ખીવૈ કેન ગાટક કનૈન । ઓ સગહક સોહા મેં હંસવાક અગિય કનૈન । ઓ હંસગાર્ ક□ન મિ હૈૌ । અસી પુશી ઓહી મેં નહી હોસૌ । પતિં ઓકના મેટૌ, પનખ્ય પ્યાન નહી સનિનૂન કેં કાનસ હક તં મીટૌ, પનખ્ય પનેમક હસાસ નહી ર ખનિગી દોખ્ય સગ હોસૌ । સમય વઇવાગ હોન છે । સમય ઓકના ' સય ' વૌતૌ ।

-

અપન મંત્ર્ય દતિનાઇસનાડડવદિહબામિયોમ પન પડાડા

રૂઢિપગદીશ પુનસાદ મામ્-ઉ- વુઠગદી



પગદીશ પુનસાદ મામ્-ઉ

વુઠગદી

પહિના દગિ-નાતિ સંગ મથિ વાનહે ઘન્ટા સંગ નહિ ચૌવીસો ઘન્ટાક વાનહે મૌસમક વીય વસનત ગીત ગવૈત અઘા પહિના અસૂસો વનપ્પક નૂપયગ કાકા નૂપૌથી ગામમે, પે મધ્ય મથિથાક વીયક ગામ છો દગિ-નાતિ સમય વતિવૈ છેથા. વાઢિ-નૌદી, સુખાન-દુખાન આર્યે નહિ, સગ દગિસં અપગમા સગ આગે ગામ પાકાં નૂપૌથીમે સેહે નહેવે કણ અઘા ઢુમકમ, ડગકા રે નેં કહયોકાઠ હેરે, નેં વસિનવો નોક નહયોં હણ મુદા અગિવાન્ય નૂપમે નહયોં માગઠ પા સકૈ. ૧૮૩૪ રસૂવોક પગવનો માસક તથિસક નાંરતસં એક દગિ પૂનવ, ઓર સમયમે નેં ઢુમકમક ગાપ-ગૂપ નહિ છવ, મુદા નોકસાગક પૈમાના નેં કણે પા

સકૈં। ગેપાઠક કાઠમાસુડૂ, ખે પહાડક અપન વસઠ સહન છો, તેકનો છાતી
 હિથેવે ગર તોડવો કેઠક। તૈસંગ ગેપાઠક તપાસું ઇડ કડ વહિનક મુંગેન
 ખાધા તકક યનતીકેં સેહે તેગા હિથેઠક ખે ઘન-દુઆન, ગાઘ-વતીઘ, ખીલ-
 ખગુ સમક અવધાન મેઠ। ઓહિગા દોસન વેન ધુમકમ મેઠ ૧૮૮૮ રસૂત્રીમે।
 તાવૈન ધુમકમક ગાપ-ખોપ આવી ગેઠ છઠ। મુદા ખહિગા ચૌતીસ રસૂત્રીક
 ધુમકમ તહિગા અટગસી રસૂત્રીક ધુમકમ ખં માળી ઇર છો તં શ્રૌસાન પયાસ
 વન્યપન ઓહન ધુમકમ હવ માળી ઇશિ। સે માળી ઇશિ વતિલાહ, માને
 મેઠહામે, એઠાક કોનો ગાનંટી વેપાતીક ખથિયા ડવિવા ખાં ગહયેં દેઠ ખા
 સકૈં। ૩ તં મેઠ એક ગમ્વન ધુમકક, તરસં ગયિયૌં ગઅ ગમ્વનક સંખ્યા
 અછા। એક ગમ્વનસં દોસન ગમ્વનક આકૂનમાસ તોસ હખાન ગુનાક અછા।
 પાપન, ઓગા ૩ મેઠ અપના એઠાક ધુમકમક ઘટગા। એહન-એહન આશ્વદ-
 આસમાતીકેં મૈથિઠિ આ મૈથિઠિની મોખન કહિયા દેવેન ખે અખનો દેના કદિતી।
 અપના ગાત્રિ ખહિગા પૂનક□તિ યથૈ તહિગા નૂપૌઠી ગામો યથૈ આ નૂપૌઠી
 ગામક નૂપયન કાકા સેહે યથિ ઘૈથ। વાઢકિ રૂઠાકા છોહે। કહવ ખે યાને-
 યાન વાઢકિ અવૈ આ યથિ ખાસ સે ગહી, મથિઠિયઠકેં પહિયાકડ અત્તનસં શુન
 કૈૈ આ દયઘનિમે ગંગામે ખા ડેકા દર। વરહ ગંગા ને ખીલનક વૈતનમી સેહે
 પાન કૈૈ ઘૈથ। વુહૈ વાન અછા ખે સત્તાસીક વાઢમિ ગંગાસં અત્તન હંદાનપુન
 તકક પાનકિ એક ઇમેઠ ઘડ ગેઠ ૧૬૩। માને એકંગ ખાલે-દીપ છઠ। ૩ તં
 મેઠ વાઢકિ ગાત્રિ, મુદા તૈસંગ હાંટ-વહિડિ સેહે અછા। મૌસમક હસિવસં
 ઘનગિનમી માને માન્યસં ગવમ્વન તક દૂ નૂપમે હાંટ-વહિડિ અવૈ। સુખાનક
 સમયમે સેહે આ વનસાતક સમયમે સેહે અવતિ અછા। અપ્પન નૂપક ડેકાન
 એકનો ને અછા, માને કેતે વ્રિગાટ નૂપમે શ્રૌ આકા સાયાનમાસ નૂપમે।
 તૈૈ કહવ ખે મૈથિઠિ એ સમસં ડેના ખેના સે વાન ગહી અછા। મથિઠિ-ઘૂમી
 અખનો વરહ ઘૂમી અછા ખે પનિવાન ગયિખન સન સનકાનક યોખાકેં કોનો
 મોખને ને દર, આ અપ્પન ખનસંખ્યાક વઢવાનકિં વે-ઘામ ઘોડા ખાં છોડી
 દેને અછા। એકન માને ૩ ગર વુહવ ખે મથિઠિયઠ મનુકખેક ઉપખા ટાક ઘૂમી
 છો। મથિઠિક ઘૂમી ખીલનક વ્રિયાનક સંગ ખીલન-ગનિમાસક ઘૂમી સેહે
 છોહે। વુહૈ વાન અછા ખે ખેતે મન વઢન તેતે ઓહની ખનિગીમે સેહે વઢવે

કનન।

ખાપી પો અર્થ, અપના એકમ હાંટ-વહિડિ માત્ર સમુદ્દેશ સં ગહી, યતીસં સેહે પૈદા ઉર। યૌ-વૈશાખ સૂત્રાક તાપસં તપાતિ યડ યતી વનિડો-વહિડિક સંજાન સેહે કૈયે। પોકન શુભશુભ મથિથિંયઈકે ૬ મેટા ૧૬૭ પો ગામક-ગામ યૌ-વૈશાખ આ પોઈક આગમિ સ્વાહા યડ યાદ છઈ આ ઠોક ગાઘ-વૈગૈષ્ઠક સંગ-ગૌદ-તાપમે માસો-માસ ધોલન-પ્રાપન કૈયે છઈ। તહિના વનસાતક સમયમે સેહે હાંટ-વહિડિક પૂનકોપ હોર, તરે સગકે વુલે અર્થ પો હથિયાક હાંટ કેહેન હોર આવા ૧૬૭ અર્થ, ગામ-ગામક ઘન-દુઆન ખસા પડે છઈ આ ઠોક હાંટ-વહિડિ ખુબ અસમાનક વીય માસો-માસ દિન ગુદસ કૈયે છઈ, અપનો કૈયે છેથ। યાદ છો મથિથિક સાયના મૂમિ પો દુનિયાંમે કેતો ને અર્થા ને મથિથિંયઈ પાકાં ઉપજાડ મૂમિ અર્થા આ ને મૌસમ। અગનસં ઇડ કડ તીમન-તપકાની, શુભ-શુભનીક પો વદવાન મથિથિંયઈમે અર્થા ઓ આગમ ગર અર્થા અપના એકમ તહિના અગનક પેતી વાનહે માસ હોર, તહિના તીમન-તપકાની, શુભ-શુભનીક સેહે અર્થા વનહમસિયા તહિના શુભ અર્થા તહિના શુભ સેહે અર્થા।

પૂનક તાતિ તહિના નંગ-નંગક ધોલ-પગતુસં ઇડ કડ યત-અયત ગનિમવૈ તહિના મનુક્ય વુધસં ઇડ કડ વેવહાન સેહે ગનિમૈવો અર્થા અહી પૂનક નિયાક વીય નૂપૌથી ગામક નૂપયન કાકા છેથ। કૌથેન છોડા પછાશ નૂપયન કક્કાક મન વ્રિયાનસં પો મનિગિથેન પો ગામક વીય લકલ્લ પાકાં અપન સાયના મૂમિ ગનિયાનિ કેથેન। ઓના, કૌથેન તક નૂપયન કક્કાક ધોલનમે કોનો ગવપન ગર આપ છેથેન મુદા કૌથેન-ધોલનક પછાશ અપના ધોલનકે તીન દિશિમે વ્રિજાપાતિ કેથેન। પહિ અપન વેકતીગા ધોલન કેના પાનિવાનિક વગા આ પાનિવાનિક ધોલન કેના સામાનિક ધોલન વનિ પથ-પૂનદનસન કનન।

મયમ સ્ત્રોમીક કસિન પનિવાનમે નૂપયન કક્કાક પગમ મેઈ છેથ। શુનમે પતિાક વેવહાન માને નૂપયન કક્કાક પતિાક, ઓતો ગીક ગહી છેથેન, પોતેકક પાનન પનિવાન-સમાનમે અર્થા મુદા વેટાકે માને નૂપયન કાકાકે, પાપન કૌથેનમે નામ ઇપ્પા દેઇપ્પાનિ પાપન વ્રિયાનક સંગ વેવહાનોમે વદવાન અગથેન।

વદલાવ અઘૈક પનસ્થિતિ િ વનઘૈન ખો વેટાકેં ઘનસં વાહન પઢેઘે પડાવવ, એક સમાખસં દોસન સમાખમે ખાખ, કેના મેઘ-મધિનસં નહા શ્યાદાદિ ઓના, તૈવીય ખો સંઘનૂપ નૂપયન કાકાકેં મેઘૈન ઓ ગીક ખાકાં એકપીઢી-એક વુહુકૈન। ખોના, મધ્યવ્રત્તીય કસિન પનખાનમે કૌઘેખક શક્ષિ કોતેક માની છઘ, ઓ પછઘે પીઢીક એક મે દેખ-વુહુકિડ વા મોગનહિને મે ગીક ખાકાં ખાનનિહા અછા।

નૂપયન કાકા અપ્પન ખોવનક શુનુઆન કસિની કાનૂપસં કપ કસિનક નૂપમે ખોવન સ્થાપતિ કેઘૈન। દુન્યાં દસિ તાકવ છોડા અપના દસિ ગખોન ગખિનઘૈન। ઓના, કૌઘેખક ખોવનમે નૂપયન કાકા એ સુનકિડ સીખ મેમે છઘ ખો શૂન-સં-મવષિય યનકૈના મન દૌડે। મુદા અનુકૂઘ સ્થાન ગહિમેટમે વ્રિયાનકેં વ્રિયાનેક પૌતિમે સૈતકિડ નખમે નહા।

ખહિના કોનો ઘટના સ્થપન દેખઘ ઘટના, મહિનો-સાઘે વાદ યક-દે મોન પડા ખાસ નહિના નૂપયન કાકાકેં અપન ખોવનક દસિ યક-દે મોન પડેઘૈન। કસિન્યાંક તં વ્રિનાટ નૂપ અછા। તમે અપમે વસા વનખાસી ખાકાં કેના ખોવ, ધરહ મૂઘ પનશન છો।

હ્યિયા નક્ષત્ર ન યઈ નહઘ અછા। અત્રાનવાનિ ટોઘ કોવી વશિ આન એઘ નહિ। ટોપન વાનહિ મેઘ ઇટકઘ છઘ, મુદા ગામેક કાખ તં કપિ પનહેખ કનિતી। મેઘે છો, વૈસયો સકૈ એ ગહિયો વૈસ સકૈ। મુદા સે મેઘ ગહિ, નૂપયન કક્કાક ઘન ઇખ ખખન ગેઘૌ કવિસાક વૂન તોખ મેઘ। દૌડકિડ નૂપયન કક્કાક દનવખખાપન પૂંચ્યૌ।

નૂપયન કાકા દનવખખાપન વૈસઘ એકટા વાઈટીન આખમે નખમે નૈથ। ખસ વાઈટીનમે દનવખખાક યુવાડ-પાનિટપ-ટપ છનસં ખસૈન નહસ। દનવખખાપન પૂંચ્યો નૂપયન કાકા વખા-

"તૂં સમ તો નવકા એક મેઘહ। દેહપન ગમછા નખતિ મે છહ। "

કહિ, નૂપયન કાકા એકટા ગમછા દેહ પોછેઘે, માને પાનિ ખો પડઘ નહ તોકના પોછેઘે, દેઘૈન।

દેહ પોછા, ગમછા નાખા નૂપયન કાકાકેં હ્યિસ એઘૌ। દૂ ઢંગસં હસિસ કન એઘૌ। પહિ ખો નૂપયન કક્કાક પનખિ અપન વ્રિયાન કેહેન અછા આ

दोसऱ, जीता वा आध्यात्म सोय जाकां आध्यात्म आ जीवनक सम्वन्ध नूपयन कक्काक केहेन छै। नऱ वीयमे नूपयन काका वजा-

"याह पीवह?"

ओगा, अपना मनमे मेठ जे कहि दएिन 'नऱ पीव', मुदा अपने मन नोकैत ब्रियान देठक जे जां कही नूपयन काका अपना याह नऱ पीवे हेथि आ हमना देय अपना याहक आगऱह मेठ होइत। तँ, समाजक छेक जाकां अपना ब्रियान मेठ जे सजसँ मठा युपे नहव नीक। युप तँ मऱ जेवै मुदा मन दू-वटयिमे छँसि गेठ। एक दसि देयि जे नूपयन काका अपन पुआगीक नावमे वाजा नहव अछि, पुआगीक नाव मेठ नित्य सज्जनमान सकता जागव। आ दोसऱ दसि देयि छी जे अपन नक अपना नहैठे दनवजा जे मेठेन अछि। देयि जे वाठेन आगऱमे नयने छैथ, जऱमे छप्पनक पागि युवा नहव छै। कवी नवाक दू पाठक वीय जाकां अपना मन छँसि गेठ। नऱ वीयमे नूपयन काका वजा- "एवे नथिया नक्षत्र वीज या नितिक पछा न दूगापूजा सुन हए। "

अपने ग्रह वुहै छी जे हथिया आ आसिक दूगापूजा संगे-संग यैए। नऱ वीयमे नूपयन काका की वाजा देठेन। अवाक् मेठ वैसठ नहवै। नूपयन कक्काक ब्रियान कोनो मांजोप न यदठ। हथिया नक्षत्रक या नितिक पछा न दूगापूजा सुन हए, तेक न यजान अपन कोन अछि। अपन तँ यजान अछि जे वनसाक पागि जे दनवजाक वीयमे युवा नहव अछि तेक न नितिक नसक। मन नऱ माठक। वजा- "काका, आव तँ अनामि समझमे पहुँच जेवै। अपनो नक दनवजाक ग्रह जा न अछि। "

हम न वा न सुन नूपयन काका नसियी नानि नमाह नह मेठ। अपन नमाह नऱ मेठ नयन घवडाइक जानते की। जेना जीवन-पद्वनिक अनुकूठ अपनाकें पेव नहव छव। गाम-समाजक नीते अछि जे एक-दोसऱ जे कागियौ-कागि आ हँसियौ-हँसि वजावे-मुकवे कएए। ऐगम ई नऱ वुहव जे महिठि जे कँ कहै छएिन आ पुन्यकें नह कहै छएिन। मौजमेहना पुन्यकें संप्रदा किक न अछि। नितिक जान कहै छएिन। नूपयन काका वजा-

"वैआ, की कहवह। नितिक नूठे जेना छेककें छुटठ अछि, जऱसँ जीवन सेहे

दुनुह मध्ये गेठ अर्छा। तप्यन तँ?"

मने-मन वरियाए ठाउँ जे जगिगीक मूठ की भेठ? वज्जौ-

"से की काका?"

वुठन्दीसँ नूपयन काका वज्जौ- "वौआ, जीवन्तक मूठ आवश्यकतामे भोजन अर्छा। तौही कहू जे केतोक ठोकै उयति भोजन भेटैए। हम ई नर कहै छथि जे केतोकै उयतिाँ सेसी भेटैए। तौडम जाँ धनक छन गहियँ वनठ अर्छा तँ की हेत। जएह अर्छा तौहीसँ ने जगिगीक गमिनाजना कनव। "

नूपयन कक्काक वरिया तौन जाँ ह□दयकै वेय देठक। अगाध्यास मुहसँ नकैठ गेठ- "हँ, से तँ अर्छाए। "

हँसै नूपयन काका वज्जौ- "वौआ, जहनि अपने वुठन्दीसँ जगिगी पान केँवौ तहनि तौहँ वुठन्दीसँ जगिगी पान कनह, जएह हमन शुभकामना छह। "

-

- जगदीश प्रसाद माझडठगीक जगम मुखवनी जगिक वेनमा जाममे ५ जगई १८४७ ईस्वीमे भेटैए। माझडठगी हगिदी एवं नाजनीति शास्त्रामे एमएक अहना पावा जीविकोपानजन हेत क□षा कान्यमे संलग्न मऽ नूयिपूत्रक समाज सेवामे लागी गेठ। समाजमे व्यापन नूढविदी एवं सामन्ती व्यवस्था सामाजिक विकासमे हनिका वायक वुहनि पडैए। श्रमः जमीनदात, सामन्तक संग जाममे पुनर्जान ठडाइ गढ मऽ गेठैए। श्रमः माझडठगी अपन जीवन्तक अयकिाँस समय केस मोकदमा, जहठ पाननादमे व्यतीत केठह। २००१ ईस्वीक पछास साहित्य छेपन कषेनमे एठ। २००८ ईस्वीसँ वनिगिन पान-पानकिादमे हनिक नयना प्रकाशति हुअ ठाठैए। जीन, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास श्याद साहित्यक मौषिक वरियामे हनिक अगवना छेपन अद्वितीय सद्य मऽ नहठैए अर्छा। अप्यन यनि दनजन मनि नाटकएकांकी, पाँय साएसँ उपन जीनकाव्य, उन्नेस गोट उपन्यास आ साढे आऽसाए कथा-कहानीक संग कछि महत्वपूर्ण वनियक शोधाछेप आदकि पुस्तकाकान, साएसँ उपन गान्थमे प्रकाशति छैए। मथिषि-मैथिलीक विकासमे स्नी जगदीश प्रसाद माझडठगीक योगदान

अवसिमान्नीय छैन। ई अपन सान कान्तिशीला ओ नयना यन्मनिक छेउ
 वसिनिन संस्थासक द्वाला सम्मानितपुनस्का ११ लेख १६७ अछि, प्रथा-
 वदित सम्पादक माहउठ द्वाला गामक पानिगी ७६ कथा संग्रह छेउ 'वदित
 सम्मान- २०११, 'गामक पानिगी व सम्मान योगदान हेतु साहित्य अकादेमी
 द्वाला 'टैगोर एटिमेयन एकाद- २०११, मथिषि मैथिलीक उन्नयन छेउ
 साक्षर दान द्वाला 'वदित सम्मान- २०१२, वदित सम्पादक माहउठ
 द्वाला 'नै धाँस उपन्यास छेउ 'वदित वाठ साहित्य पुनस्का- २०१४,
 साहित्यमे सम्मान योगदान छेउ एसएसएस गठवठ सेमिनेरी द्वाला 'कौशिकी
 साहित्य सम्मान- २०१५, मथिषि-मैथिलीक विकास छेउ सान कान्तिशील
 १६वाक हेतु अप्पि माननीय मथिषि संघ द्वाला 'वैदयनाथ मसि 'पान्नी'
 सम्मान- २०१६, नयना यन्मनिक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु पद्मश्री-
 माहउठ द्वाला 'कौमुदी सम्मान- २०१७, मथिषि-मैथिलीक संग अन्त
 आक ५८ सेवा छेउ अप्पि माननीय मथिषि संघ द्वाला 'सुव वाव साहेव
 चौधरी सम्मान- २०१८, योगा समिति, पटनाक पुनसंवि 'पान्नी योगा
 पुनस्का- २०२०, मैथिली साहित्यक अन्तर्गत सेवा आ स १११ हेतु मथिषि
 सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वाला 'नाणकमठ चौधरी
 साहित्य सम्मान- २०२०, मान सनका द्वाला 'साहित्य अकादेमी
 पुनस्का- २०२१ तथा साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान छेउ
 अमन सहित नामसुठ मंडल विया मय द्वाला 'अमन सहित नामसुठ मंडल
 नाष्टनीय पुनस्का- २०२२

नयना संसा: १३६६१५०५ अकास, २ १११-६६६, ३ १११ १०६ एकादम माघ,
 ४ सानि, ५ गीगाण, ६ सुप्पाए पोप्पनिक ११३, ७ सानवे, ८ युगौरी,
 ९ १६सा यौनी, १० कामवेण, ११ मन मथन, १२ अकास गंगा- कविति संग्रह।
 १३ पंचवटी- एकांकी संयन। १४ मथिषिक वेटी, १५ कम्पनोमास, १६
 हमेयि वसिह, १७ ११गाक ७६, १८ सुवयन गाटक। १९ मौवाइ
 गाछक छेउ, २० अथाव-पान, २१ पानिगीक पान, २२ पानन-मान, २३
 पानन संघन, २४ नै धाँस, २५ वडकी वहनि, २६ मादक आठ अन्त,

૨૭ સચવા વધિવા, ૨૮ ડૂડ ગાછ, ૨૯ રૂપાળા ગમા રૂપાળા વંચેથી, ૩૦ ઉહસળ,
 ૩૧ પંગા, ૩૨ આમક ગાછી, ૩૩ સુચાગી, ૩૪ મોડપન, ૩૫ સંકરપ, ૩૬ અગામિ
 કૃષામ, ૩૭ કુસાગ ઉપગ્યાસા, ૩૮ પપસુવર્ગી પનવગ્ય નવિગ્ય
 સમાવોચના, ૩૯ કૃષ્યામી, ૪૦ સગમાલ, ૪૧ સમહૌળા, ૪૨ નામક નમદૈઠ,
 ૪૩ વીનાંગના લકાંકી, ૪૪ નયેગન, ૪૫ વળગના વુહંગના વીહૈન કથા
 સંગ્રાહ, ૪૬ સંગ્રાદાસ, ૪૭ નટની યદ- દીનઘ કથા સંગ્રાહ, ૪૮ ગામક
 ખાગી, ૪૯ અન્દયાંગી, ૫૦ સામૈયા પોખૈ, ૫૧ ગામક શકર સૂના, ૫૨
 અપન મન અપન યન, ૫૩ સમનથાસ્ક મૂળ, ૫૪ અપપન-વીનાન, ૫૫ વાઠ
 ગોપાઠ, ૫૬ શકમોડ, ૫૭ ઉઠવા યાડન, ૫૮ પાદાડ, ૫૯ ગઢેગાન હાથ, ૬૦
 ઇપાવળી, ૬૧ ઉકડ સમય, ૬૨ મધમાછી, ૬૩ પસેગાક યનમ, ૬૪ ગુડા
 પુદ્દીક નોટી, ૬૫ શુદ્ધાન, ૬૬ યસૌ ગાછ, ૬૭ હાગ્યછા આમક ગાછ, ૬૮
 સુમયગીનાક, ૬૯ ગાછપન સં યસઠ, ૭૦ ડમ્યાલગ ગામ, ૭૧ ગુલેની દાસ,
 ૭૨ મુડ્યાલગ ઘન, ૭૩ વીનાંગના, ૭૪ સમ નાશિષ, ૭૫ વેટીક પૈનપ, ૭૬
 કાનાગાધીંગ, ૭૭ નાકિઠદ્દાસી, ૭૮ પૈનીસ સાઠ પછુઆ ગેથી, ૭૯ દોહની
 હાક, ૮૦ સુમમિની ખાગી, ૮૧ દેપ્પઠ દાનિ, ૮૨ ગપક પધાહુઠ ઠોક, ૮૩
 દિવાઠીક દીપ, ૮૪ અપપન ગામ, ૮૫ યાઠિગોડ મૂમ, ૮૬ યાગિવગક શકિત,
 ૮૭ ચૌનસ યોગક ચૌનસ ઉપા, ૮૮ સમયસં પહનિ યોગ કસાન, ૮૯ મૌક,
 ૯૦ ગામક આશાટુડગોઠ, ૯૧ પસેગાક મોઠ, ૯૨ ક પધીંગ, ૯૩ હાનઠ યેહના
 ખોનઠ નૂપ, ૯૪ નૈ ખોકન પાવિન, ૯૫ કાનાક નંગ કામક સંગ, ૯૬
 ગામક સૂના વદૈઠ ગેઠ, ૯૭ અગામિ પનીકૃષા, ૯૮ ઘનક યનપ, ૯૯ ગીક
 ડકાન ડકેથી, ૧૦૦ ખોવગક કામ ખોવગક મનમ, ૧૦૧ સંચામ, ૧૦૨ મનમિન
 કાળ, ૧૦૩ આલઠ આશા યઠગોઠ, ૧૦૪ ખોવગ દાન નથા ૧૦૫ અપપન સાગી-
 ઇધ કથા સંગ્રાહ.

૨ નયનાપન અપન મંત્રવ્યે દિતીનાથિસનાડડવદિહાગામાથિયોમ પન પગડા

રૂઝગાદીશ પુત્રસાદ મામ્ડો- મોડપન (યાત્રાવાહકિ ઉપગ્રાસ છશ્રમ પડાવ)



ગાદીશ પુત્રસાદ મામ્ડો

મોડપન (યાત્રાવાહકિ ઉપગ્રાસ)

છશ્રમ પડાવ

वाह वन्यक पछाश, तैवीय देवनक मातो-पति। मनी गेठपनि आ पानी, हू
 वय्याक संग नव पनविनो वनयुक्त छैथे। वाह वन्यक वीयक जे सम्वन्ध
 देवन आ वनजीदादाक वीय रहैथे ओ दनि-नातिकि वीयक सम्वन्ध जहनि
 होइ रहनि रहैथे। देवन गोदामक मटिया रहिनि, व्रियानो आ वेवहनोसँ
 सोछैथे। नव मनुकूपक रूपमे गढ हुअ याहै छथि, मुदा जीवनक जे मूठ
 प्यागा अछि, जेकरा पुनवैमे दुनियाँ वेहाथ अछि, देवनोक संग तँ छैथे।
 ओना, वनजीदादाक अपन जीवन छैथे, नयिमति वेगन छैथे। तैवीय
 अपनकेँ वाहन-नाप्य यिथै छैथ, मुदा देवनक तँ से नहि छथि कठकता। ए
 पछाश देवन यानि-पाँय वन्य एक वनजीदादाक व्रियानेँ सुगै। रहि मुदा
 अपन व्रियानेँ जगह अन्ध रहने देखा नहि पड़ैथे। मुदा पाँय वन्यक पछाश
 वनजीदादाक मुँहक सुगठ वातकेँ मने-मने देवन पोट-वेद करैत-करैत नव-
 नव व्रियानो आ काजो देय्यै छथि। जइसँ अपन जनिगीक जातिक सभ अनुभव
 हुअ छथे।

आव व्रियानिकि दौड़मे देवन वुह गेथ जे गामक जीवन वनि पाइयो-कौड़ीक
 यथै, मुदा सहन-वजानक जीवन तेना नहि यथै सकै। सहन-वाजानमे एक
 दनि वनिाएव माने वनि पाइ-कौड़ीक, जीवनक दुनू वनियेँ जाइ। तँ
 पनविनकेँ गाममे नापव जीवनानुकूल अछि। धीरे-धीरे देवनक व्रियानमे ओ
 शक्ति जागि युक्तैथे जे अपन जीवनक नवसिकेँ हयिसाँ सकै छैथ। जयने
 नवसिकेँ हयिसाँ शक्ति व्रियानमे आवै छैथ। जयने ने मनुष्य अपन
 मनुष्यत्वक सीमा नित्यानिकि करै छैथ। जीवनक मूठ पाँय नान्व- मोहन,
 वसन्त, आवास, स्वास्थ्य आ शिक्षा एक-एक मनुकूपक जीवनक आधान
 छैथे। ओना, अहूँ पाँयो नान्वमे सभ समागे नहि अछि। एक-दोसरासँ कम-वेसी
 अछि। जइसँ जइ नहक जीवन रहै ओर अनुकूल अपन जीवन नित्यानिकि

कश्ये ७२९, मुदा ओ जीवण मागवीय जीवण गहि नहि पशुवण जीवण वणठे नहि जाइए। पशुवणो जीवण केना ने वणठ नहण? जहणि पशुकेँ प्याइ-के, नहै-के आ वीमानीक मय वणठ नहैए जहणि ओकनो नहवे कयैए। मठेँ ओ वुहह वा गहि वुहह। मुदा मनुष्य तँ से गहि छयि। वुहैक शक्ति नहने मोजणो आ वसन्त, आवास, स्वास्थ्य आ शिक्षाक महण सेहे वुहति छैथ। देवणो जीवणक मूठ नान्वकेँ सदकिठ मगने नोप विनियान कयवे कयै छैथ जे अपन समाज-पवित्राक वीथ एकाकी जीवण वणठे अछि, ओकना सम-गम वगाएव तँ अपना संग पवित्रावे लोकक ने काज भेठैग।

एक-एक नान्व, जीवणक पाँयो मूठ नान्व, ओना ऐ पाँयोक अनिक्तिओ अनेक नान्व अछि, मुदा से अप्पन गहि, अप्पन एवे जे जइ पवित्राक जीवण देवण गूढस कऽ नहण अछि ओ यानक वहैग यानाक गाहपन यढठ मठवाह जकाँ कोन नूपेँ समझनि नहण अछि। सगकेँ अपन-अपन जीवणयात्रा कयैक छैन्ह। अपन कमाइकेँ मागे अपन मजदूरीकेँ पुनर्निर्माणक आवश्यकताक पुनर्निर्माणक हिसाव जोड़ने देवणकेँ स्पष्ट देख पड़ैग जे जीवणक पहिओ आवश्यकता, मागे मोजण, जे अछि तेकनो समुयति ढंगसँ पुनर्निर्माणक सकेँ छी। मागे भेठ जे एहनो जीवण अछि जे मोजणक मूठ नान्वकेँ गहिपेव जीवैठे, मागे प्रामाणिक शिक्षा-से, जे भेटठ तहिसँ जीवण गन्वाह सेहे कश्ये नहण छैथ। ओना ऐ वीथ एकटा वात आनो अछि जे ओहन जीवण जीवहिणो ओहने छैथ जे मोजणक गुण-अवगुणकेँ वुहवो गहियेँ कयै छैथ। मुदा जेना-जेना समय आगू वढैए तेना-तेना विनियामे पवित्राग नइ अवैए सेहे वात गहियेँ अछि, सेहे अछि। मुदा जे जेना अछि से तेना नहऽ तइसँ देवणकेँ कोन मतभय छैग। मतभयो कए नयना। दुनियाँक वगावटो अजीब अछि। जे जेतेक नक्षक अछि से तेनवे ने नक्षक सेहे अछि, तहि वीथमे ने देवणो नहै छैथ।

देवण अपन पुनर्निर्माणक आमदनीक हिसाव पुनर्निर्माणक मोजणकेँ भठैठैग तँ

वुह पड़ैत जे समयति भोजन कयै-जोकन अपन गह भेठौ हेन। मनमे उठैत, यानि गोजेक पनविन अछि आ सगुठति भोजनक जे मूय अछि तेते कहौ कमा नहै छी? मुदा जीवनी गूढस तँ अहे हुषैत आमदनीमे कनवाक अछि आ समयसँ यथवाको तँ अछि।

सामंजस कयैत देवत रहन-वाजान आ गाम-देहातकें समुत्पन्न कयैत मजगूतीसँ वीथी-गिछी जे पनविनकें गामेमे नाप्य कठ्प्राप्तकारी हएत। अपन तकक जे अपन जीवनी नहै, तस्मे अपन वसिह-दानक संग पनविनमे दूटा मजगूत पपड़ैत घन वगेठौ। ऐशम घन युवै आकषिड़िकीसँ पानि-विहिड़िकि हटका मात्रै से गहिवुहवा ऐशम अपन ओहनि वुहू जे जहनि ईटा-सोभेगटक घन वनवैकाए एकटा समय गनियानि कयै छी। तहनि। तपन मारुटकि देवाए आ पपड़ाक छाड़वठा घनक भागे भेठ पयास वन्य गढ नहैवठा घन। तेहेन घनो वगेठौ। तस् संग सजसँ पैघ काज ई केठौ जे जहियासँ कमाए छगठौ तहियासँ माता-पतिाकें कहियो कछु पपए गहदिठएन जे आँपसँ गोत पसतिन। मुश्त पछातिगि कन्या-कनम सेहे ओहन कश्ये देठएन जे सश्यो मुँह जस देवे केठेन। देवत जहनि पनविनक संग सामंजस कऽ जीवनी वगेठैत तहनि पयास वन्यक औनुदाक दूटा घन सेहे आँपकि सोहमे देपयि नहै छठ। जससँ जीवनीक पुनर्निगमे तपुपासिहे उपकठे छेठेन। वसुतन ओहन समसुत्राकें समसुत्रा गहियै वुहै छैथ, किए तँ आर गठे ठोक अपन वसुतनकें वेहिसाव किए ने वना छिअ मुदा देवतक पनविनक तँ अपन वरह जीवनी नहैत जे साठ ननपिन जहनि योती तहनि पनविनमे साड़ी वदछै छैथ। साठमे एक वेत गाम जाइकाठ कठकानेमे सज वसुतन कीनकिऽ छऽ जाइ छैथ आ साठ ननगियन नहै छैथ। दवार-दानू तँ अन्हा-गाहिस अछि। जूनान नश्यो सकैए आ गहियौ नऽ सकैए।

अपन जीवनीक हिसाव देप जपन देवत गामक समाजकें हिसासकिऽ देपठ। तँ वुह पड़ैत जे वुह नोक गह तँ वुह अघठे गहियै छी। तँ मजगूतो वनी जीवै

छी तँ अपन वाँहकि वषे ने जीवै छी।

अपन वाँहकि वषक गुष्टसँ देवगक मगमे सगुष्टा जागैग। देवगक मगमे सगुष्टा अवाति वगुनीदादाक पाँय साध पूनवक व्रिया। यक-दे मोग पड़ैग। मोग पड़ति मग वहिसँ गिऐग। वहिसैक कामास भेऐग अपन। सोहामे वेटाकें मागे कामेसगकें धुनहाड़ कतिव पड़ैग देय नहए छैथ। आइसँ पाँय वन्य पूनव वगुनीदादा देवगक जीवगकें देय सुषक माध। जाँ गँथैग कहने छैऐग-

"देवग, पनविन गामेमे नहए दियौ। कएि तँ मथिषिक गाम छी। आएव-जाएवक अपनो सम्वन्ध वगए नहए मुदा पैछरा पीढ़िमे जे भेठ से भेठ, नीक भेठ सेहे वढ़ियौ आ अथरा भेठ सेहे वढ़ियौ। कएि तँ ओ भूग वगि भूगधिएए मुदा ऐग। पीढ़िप नीक जाँ व्रियाग नायू।"

वपैक कनभमे वगुनीदादा वागि गेए मुदा पछास मोग पड़ैग जे जीवगक तँ वगन-वाँट कनैवरा सेहे अछएि कयनो ऐ नोटीकें हवक मानि हूस वग। दइए तँ कयनो ओइ नोटीकें, आ प्यास-प्यास सगटा वएह प्या जाइए।

वगुनीदादाक ओ व्रिया देवगक हृदयकें युहैत कऽ पकैड़ छेठकैग। अपनो पाँय वन्यसँ पनविनक सगिकें गव सगिसँ व्रियानए गग। वगि वगने देवग वगुनीदादाक सोहामे मगे-मग संकषप केऐग, मागे मगमे नोपैग जे वेटाकें कठकाने आगि पढ़ा कऽ एकटा पढ़-छपिठ मगुप्य वग। पनविनमे गढ़ कनवा। जइ वय्याक माए मनि जाइए कि पिता ओकना केनौ-के शुक अवै छैथ आकि अपन पति क दायित्वकें पुनवग गनिवहग कनै छैथ। हमहूँ अपन दायित्वकें ओहनि। वृहतिवै नमिहव जावै वेटाकें गव रूपमे युगागुकूठ मगुप्य गहिवग। ऐवा ग्रह ने भेठ पनविनकें समग्रक संग जोड़वा। एक-एक मगुप्य अपन यीतागुकूठ घटैग-वढ़ैग नहए। अछा। पनाक ुकि सकानि ऐ पुनवठ अछए जे जीवग नकि कनईकें क्षमासे क्षमाक कऽ दइए। घन-पनविनक सेवामे अपन जगिगी पपवै छी, मुदा क्षमासे वाढ़ि, क्षमासे शुभकम आवा ओकना गोड़िकऽ

नष्ट कऽ दऽर, तँए आगूक पीढीक जीवण केहेन आ केना वनए?

अपन व्रौआश्र व्रियागँ जहनि कऽक्षम नथक सागो घोडाक छोन एककेवेन
पयि, अपन जीवण छग आनि गढ केसैन नहनि देवनो अपन मनकेँ केवाह
देवन अपना आगूमे देप्य नहए छए जे पढै-छपिँक नंग-नंगक जे संस्थान सभ
अछि तऽमे हमनो सग लोकक वेटा तँ व्रिद्यालयमे पढ़ति अछि, तप्यन हम अपना
वेटाकेँ संजीवयिगि कौथेजमे किए ने दायिनि दयि सकेँ छी सभ वेवस्था
व्रिद्यालय केनहि अछि परह ने जे प्यन्य हएना ओना, प्यन्यो तँ सभ नंगक
अछिए कोनो व्रिद्यालयमे वेसी प्यन्य अछि आ कोनोमे माने साधानम
व्रिद्यालयमे कम प्यन्य अछि गँ वढकि पठाडकि पागयिँ जकाँ जडपिगयिँ
किए ने हुअए मुदा मेथ तँ वाढयिक पागि

जऽर दनि वनजीवादाक व्रियानसँ देवन पुनरावृति मेथ नहैथ, तऽर दनि
कामेसक उम्र कम नहने काजमे वाया देपयिँ नहए छए मुदा गीय दऽष्ट
तँ अपन वेटाक व्रिषिमे नहवे कनैना तीग साठ पुन्र वन जे मने अँटक
छेथैन ओ पुन्रकिथेना संयोग वन, संयोग कविन जे समय पुन्र पछाश्र
कामेसकँ कठकना आनि देवन व्रियान केवाह जे नहनि प्रसोदा मैया
कऽक्षमकेँ मोन-साँह वेटा वुहँ गँट कनै छेथि, नहनि मोन-साँह अपनो जा
कऽ सभ दनि सभ वागक हसिाव सेहे वुहँ नहवा पुछवै जे वौआ आर की सभ
पढ़ैए एवे नहि जे वौआ पासवुक गिक छौ कनि दनि-दनिक काजक रूप ने
जनिगीकेँ गढ कनैए यथेए

आर तीग साठ कामेसकँ पुन्र नहए अछि अपन ओकाकि अगुकूँ, माने मेथ
अपन शक्ति अगुकूँ, कामेसकँ देप्य देवनक मने एतेक पुश्री उपैक जेथैन
जे वेटाकेँ कठकना अवैक तेस साठ-गीनहपन मोज कनैक व्रियान मेथैन
मोज कनि व्रिद्यालयक सभ शिक्षक मेथ आ गोदामक सभ स्नमकि ओना,
जवावदेहीक पदपन नहनि अपनकेँ वनजीवादा स्नमकि मानै छैथ देवन
वनजीवादाकेँ कहएपनि-

"दादा, कामेसनीकें कठकनाक माटिपागि घाई गेठा वेटाकें देय्य मन तनिपीत अछि तँए समानोहपूवक मोल कनवा"

देवगन मनक उद्गान देय्य वनजीदादाक अपनो मन उद्गानि गऽ गेठैग। किए तँ जेहने दाता तेहने मोकना अपनकें देय्य वनजीदादा वगठा-

"जोते टाका प्यन्य कनवह नहि अगुकूठ ने सन कछि कनवा"

मने-मन वनजीदादा व्रियाए ठाठा जे कामेसनीकें ऐगम तक एवामे माने आइ यनीजे मेठ नश्मे अपनो व्रियाक ननिवहन तँ मेवे कएथ अछि, तँए प्यन्यक आया सहयोग कऽ देव, जइसँ मनक उद्गान सेहे दोस गइये जाएना।

समानोह नीक मेठा कामेसनी सेहे दोसनी वदियाथमे पहुँच्य गेठा कामेसनीक पढ़ैक जात देय्य जहनि शक्तिषक नहनि देवग अपनो छथि।

समय वीतैत गेठा कामेसनी सेहे एक इंजीनियर युवकक रूपमे तैयार गऽ गेठा। कामेसनीक संग हजानो इंजीनियर कठकनामे तैयार गऽ गेठा। सनकें गोकनी याहिएन, सनकनीक संग गोकनीक समसूया उठै। अन्तमे समहौता मेठ जे पुनत्येक इंजीनियरकें दू-दूटा ट्रेक्टर् अगुदानक संग वैकक माध्यमसँ देठ जाएना।

आइ कामेसनी ओइ सीमापन आविगिठ मेठ अछिजोतए एक दसि छह मास पूव पतिाक मृत्यु मेठ छेठैत तँ दोसनी दसि अपन विशाह मास दनि पूव मेठैत, माइक मृत्यु दू साठ पहिनि गऽ गेठैग।

वनजीदादाक सम्पत्कमे नहने कामेसनी अपन उज्ज्वल-उपटठ गाम-समाज दसि हुकियुक्त छै, जइसँ मनमे आसो-आसो गोपा नहै छै जे अयन तक कठकना सन सहने, इंजीनियरिगि कौठेजक वदियान्थीक रूपमे जे मान-पुनर्पिठ नहै ओ गाममे थोड़े हएत। एक तँ इंजीनियरक काज नहि नहने गामक ओक इंजीनियरकें नीक जकाँ जानि नहि नहै अछि, तैपन हम तँ सहजे गाम-समाजसँ सन दनि हटै नहौ। अयन तक जे गाम जेवो-एवो कनै छै तँ वस पाहुन-पनीक जकाँ अपना घन-अंगनामे वैसठ नहै छै आ समय

वोतभापन उर्किऽ व्रदि गऽ कठकर्त्ता आविजाइ छैवै!

महागानक कौनव-पासुडवक उडाइ जाकाँ कामेसक मगमे गाम-सहनक वीयक दूनीक द्दवन्द्व उर्कि युक्त छै। मुदा मगक द्दवन्द्व गामक पुर्ता कामेसकें एते जागियुक्त छै। एते गर जाइक सग वाधाकें नहनि पोड़ो-सागक उर्तीकें हँसुआ प्पड़ै। कऽ काटी दइए नहनि व्रियानक हँसुआ प्पड़ै। कऽ काटी दैए। एकाएक कामेसक मगमे व्रियानक गव उताह जागए एते नहनि पति। गामसँ पडाकऽ मागे जीवग गर यठे, कठकर्त्ता एते नहनि हमहूँ कठकर्त्तासँ रंजीनयिन वगिगाम जा नहवा मुदा हमनो तँ वुहए पड़न एते पैगम अपन जीवगकें स्थापति कए याहै छै। तैगम अगुक्त पनविश केग वगए? अगेको पुनश्चक संग अगेको उर्तान कामेसक व्रियानकें घेनहनि छै। तैपन पत्नी सुगदना वगानोन्मुप्यो छथनि। नहवो कए ने कएनि। सुगदना जाविसनक आँसुसिक पनविानक पठि-पोसनि छै। ओग, मगक संकठपो तँ ओहन वग्यन छीह एते अगका तोड़ने नहि, अपनटा तोड़ने टुटै। तहूमे व्रिद्यापसँ गकिठ टटका गवपुवक संकठप।

कठकर्त्ताक अगनि व्रिदिक गैटक नूपमे कामेसक वगन्जीदादासँ असनिवाड ठिअ हुगका ऐगम पहुँचै।

साग साठ पहनि वगन्जीदादा सनकानी सेवासँ गविर्त्ता गऽ गेठ छै। समग्रक अगुक्तना पेव मागे वेगनक वढोत्तनी मेगे वगन्जीदादा अपनो पेशनक नूपमे ओते नूपैआ मासे-मास उँवते छै। एते सुनूमे सेवान् वेगन उँवै छै। मुदा महगाइ वढगे, कछु कम तँ मेवे केँ। ओग, जापन वेगनगोणी जीवग छै। एन जापन पनविानक गानो वेसी छै। एन जोकना गमिहव अगविान् नहै, से आव नहि नहै। तहूमे दूग वेटा तेग कमाइ छै। एते मुँहंग। पाइ दइए तैयान नहै छै। मुदा अपनहनि पेशन ओते गेट। जाइ छै। एते वेटाक मँद। कि प्पगते ने छै। तँ ए सदकिठ पुशी-पुशी कहै। नहै छथनि एते वौआ, अपन कमाइसँ अपन जीवग गऽ।

आणुक् पनविशमे पगाना नहि छैन, कने कठिन सन पुनसू अछि। आणुक् तेहेन आनूथकि पनविश वना गेठ अछि। ते सनकेँ माने धनीक-गनीव सनकेँ, पाइक पगाना सदकिठ नहि अछि, कएि तँ पगिगीक आठू आवस्यकता तेते वढि गेठ अछि। ते अनेनो लोक सनमकेँ हेन वना भोगकेँ अपना नहए छैथ। मुदा से वनपुगिदादाकेँ नहि छैन। सुनूहेसँ जीवनक गठन तेना गढि छेने छैथ। तेने उ पाकाँ गठिया गेठ छैन, तँए साँह-भोन गाप्रतिनी पाप कनेमे सनपट दौड यथे छैन।

वनपुगिदादाक ऐडम कामेसन पुहुँयछ। तँ पना छगछैन। ते अपने दस वने दनिसँ वौडाए छैथ, केनए छैथ तेकन कोनो ठेकान नहि। वागहए पगिगीक ने ननियानति जीवनी हेइए आ पगहो ननियानति नहए, मुदा पुठए-पठिठ जीवनक आङि-चुन अछि नहि। ओना, कामेसनक मनमे उडि युक्त छए ते पपन काठकिठकता छेड़ि पाएव अछि। पपन दोहना कऽ अवैक आशा कनव नीक नहि। एहेनो तँ समनव नश्ये सकैए ते व्रदिशक तैपानीमे वसै। पाइ तैवीय वनपुगिदादाक पत्नी सुनछैन। ते एक गोटा मँट कनए आएछ छैन। सुनति सुवोधनी कोठनीसँ नकिठ कामेसन छग आवि वगछि-

"यए, दनवपुपापन वैसा ते घड़ी ते पहन ने अपने पुहुँयछ अछि।"
ननिगीक नऽ कऽ सुवोधनी वागछ छेछि, कएि तँ मन गवाही दश्ये देने छेछैन। ते नसियतिकेँ ने समन हेइए मुदा अनसियतिकेँ समन की हए। कहछे पाइ छै, 'उढाकेँ गामक ठेकान।' अपनो आवि सकै छैथ आ दू घन्टाक पछातियि आवि सकै छैथ। हम अनुमानसँ वगछै अछि। आकि हुनकन माने पाकि, काज समनानैत वगछै अछि। ओना अपना नथिथियठ आ वंगठक महिषिक वीय दूनी अछि। कागस अनेको अछि, सहन-देहानक हुअए कि साक्षन-ननिकषनक दूनी, कि सम्पन्न-वपिन्नक दूनी हुअए आकि जीवनक मन्मक संघनपमय जीवन हुअए। मुदा से अपन नहि।
कामेसनकेँ दनवपुपापन वैसो सुवोधनीक पोती, याहो आ पागियि नेने पुहुँयछि।

તૈવીય વગ્નજીદાદા સેહે પહુંયછા દગિ ઝનકિ થાકઠ, તંપ મનમે નહેન ખે પહિને
ગહાલવ, પછાફા ખે હલન સે હલના

વગ્નજીદાદાકે દેખ્ખો કામેસન વાખઠ-

"દાદા, કાઠ્હા કઠકત્તા છોડિ ગામ યઠિ ખાલવા ખહિના પતિાખી ખીવેથે
કઠકત્તાક વાટ પકડિથેન ખહિના હમહૂં ગામક વાટ પકેડિ ગામ યઠિ ખાલવા

ખીવેક નાસના મેટ ગેથ, દુગધિંમે કેતૌ સ્વતંત્ર નૂપમે ખીવ સકે છી."

અકસંગ કામેસનક વ્રિયાનમે વગ્નજીદાદાકે સઘ કછિ મેટ ગેથેના સઘસં પૈઘ
વ્રિયાન ' સ્વતંત્ર ખીવન પલવ' છેથેના વગ્નજીદાદા અકે સ્વદમે વખઠ-

"અહાં સંગ હમન સુઘકામના અછા, કામેસન!"

-ખગદીશ પ્તસાદ મામ્ડઠખીક ખગમ મુવવની ખાધિક વેનમા ગામમે ૫ ખાઠાઈ
૧૮૪૭ રસ્ત્રીમે મેથેન। મામ્ડઠખી હગિદી અં નાખનીા શાસનમે અમ્પક
અહના પાવ ખીવકોપાનખન હેા ક□ ધા કાન્યમે સંઠગ મડ નૂયા પૂત્રવક
સમાખ સેવામે ઠાગા ગેથ। સમાખમે વ્યાપા નૂઢિવિદી અં સામગી વ્યવહાર
સામાખકિ વ્રિકાસમે હગિકા વાયક વુહા પડથેન। સ્થળ: ખમીનદાન,
સામગાક સંગ ગામમે પુનખોન ઠડાર ગઢ મડ ગેથેન। સ્થળ: મામ્ડઠખી અપન
ખીવનક અધકિંસ સમય કેસ-મોકદમા, ખહથ ધાનનાદમે વ્યાપીન કેથહ।
૨૦૦૧ રસ્ત્રીક પછાફા સાહતિય ઠેખ્ખન ક્ષેત્રમે લથ। ૨૦૦૮ રસ્ત્રીસં
વ્રિગિનિન પાન-પાનકિદમે હગિક નયના પ્તકાશતિ હુઅ ઠાથેન। ગીા,
કાવ્વ, ગાટક, અકાંકી, કથા, ઉપગ્યાસ ર્યાદા સાહતિયક મૌઠકિ વ્રિયામે
હગિક અગવના ઠેખ્ખન અદ્વગીય સદિય મડ નહથેન અછા અખ્ખન ધના
દનખન ઝના ગાટકપકાંકી, પાંય સાપસં અપન ગીાકાવ્વ, અંગેસ ગોટ
ઉપગ્યાસ આ સાઢે આડસાપ કથા-કહાનીક સંગ કછિ મહાવપૂત્રા વ્રિધિયક
શોયાઠેખ્ખ આદકિ પુસાકાકાન, સાપસં અપન ગાનથમે પ્તકાશતિ થેન।
મથિથિ-મૈથાથીક વ્રિકાસમે સ્ની ખગદીશ પ્તસાદ મામ્ડઠખીક યોગદાન

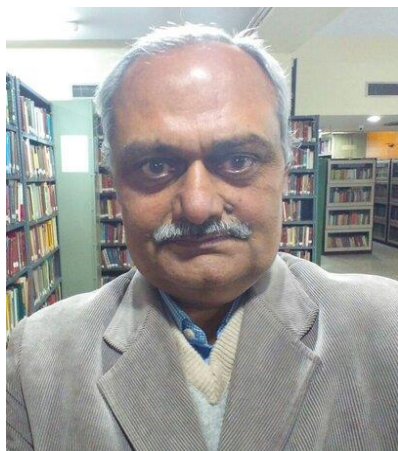
અવસિમામીય છેવળા. ૬ અપન સળા ક્ષાપિસીશીળા ઓ નયના ધનમાનિક છેવળા
વચિગિન સંસ્થાસગક દ્વાના સમમાનગિપુનસકાન હેસા ૧૬૭ અઘા, પ્રથા-
વદિહ સમ્પાદક મામ્ડઉ દ્વાના "ગામક પાનિગી" ઉદ્ધ કથા સંગ્રાહ છેવળા "વદિહ
સમમાન-૨૦૧૧", "ગામક પાનિગી વ સમગ્રા યોગદાન હેા સાહિત્ય અકાદેમી
દ્વાના "ટૅગોન ઇટિનેયન દ્વાના-૨૦૧૧", મથિથિ મૈથથીક ઉગ્ગયન છેવળા
સાક્ષી દનગંગા દ્વાના "વૈદેહ સમમાન-૨૦૧૨", વદિહ સમ્પાદક મામ્ડઉ
દ્વાના "નૈ ધાનૈ" ઉપગ્રાસ છેવળા "વદિહ વાઇ સાહિત્ય પુનસકાન-૨૦૧૪",
સાહિત્યમે સમગ્રા યોદાન છેવળા દસપણદસ ગાઇવઇ સેમનિની દ્વાના "કૌશિકી
સાહિત્ય સમમાન-૨૦૧૫", મથિથિ-મૈથથીક વકાસ છેવળા ક્ષાપિસીશીળ
૧૬૭૧ હેા અપ્પાઇ માનગીય મથિથિ સંઘ દ્વાના "વૈદ્યગાય મસિન "ધાનની"
સમમાન-૨૦૧૬", નયના ધનમાનિક ક્ષેત્રમે અમુઇય યોગદાન હેા
પાપોત્સના મામ્ડઉ દ્વાના "કૌમુદી સમમાન-૨૦૧૭", મથિથિ-મૈથથીક સંગ
અગ્રા ડાકા પટ સેવા છેવળા અપ્પાઇ માનગીય મથિથિ સંઘ દ્વાના "સવ વાવ
સાહેવ યૌધની સમમાન-૨૦૧૮", યેળા સમગિ પટગાક પુનસદિય "ધાનની
યેળા પુનસકાન-૨૦૨૦", મૈથથી સાહિત્યક અહનગસિ સેવા આ સપાળ હેા
મથિથિ સાંસકાનિક સમગ્રા સમગિ, ગુવાહાટી-અસમ દ્વાના "નાપકમઇ
યૌધની સાહિત્ય સમમાન-૨૦૨૦", માન સનકાન દ્વાના "સાહિત્ય અકાદેમી
પુનસકાન-૨૦૨૧" તથા સાહિત્ય ઓ સંસકાનિ મહાવપુનામ અવદાન છેવળા
અમન સહીદ નામસુઇ મંડઉ વચિાન મંય દ્વાના "અમન સહીદ નામસુઇ મંડઉ
નાપટનીય પુનસકાન-૨૦૨૨"

નયના સંસાન: ૧૩૬૬૧ધનુષી અકાસ, ૨ નાનદિનિ, ૩ નીન પોડ દ્વાના ૧૬ માઇ,
૪ સનગિ, ૫ ગીનાપાઇ, ૬ સુપ્પાઇ પોપ્પનિક પાસ, ૭ સાવેય, ૮ યુનૌતી, ૯
૧૬૭૧ યૌની, ૧૦ કામયેન, ૧૧ મન મથન, ૧૨ અકાસ ગંગા - કવગિ સંગ્રાહ
૧૩ પંચવટી-દ્વાના સંયયન, ૧૪ મથિથીક વેટી, ૧૫ કમ્પુનામાસ, ૧૬
હમેઇયી વચિા, ૧૭ નાનકાન ડકૈ, ૧૮ સવયવન નાટક, ૧૯ મૌઇસુઇ
ગાઇક સુઇ, ૨૦ અપાન પાન, ૨૧ પાનિગીક પી, ૨૨ પાવન-મામ, ૨૩
પાવન સંઘન, ૨૪ નૈ ધાનૈ, ૨૫ વડકી વહનિ, ૨૬ માદવક આઇ અગ્રા,

૨૭ સચવા વધિવા, ૨૮ ડડ ગાઘ, ૨૯ રૂપાળા ગમા રૂપાળા વંચેથી, ૩૦ ઉહસન,
 ૩૧ પંગ, ૩૨ આમક ગાઘી, ૩૩ સુચાગી, ૩૪ મોડપ, ૩૫ સંકૃપ, ૩૬ અન્નામિ
 કૃષામ, ૩૭ કુમ્મળા ઉપગ્યાસા, ૩૮ પયસવર્ગી પુત્રવગ્ય નવિગ્ય
 સમાવોચના, ૩૯ કૃષ્યામી, ૪૦ સગમા, ૪૧ સમદ્દી, ૪૨ નામક નમદેઇ,
 ૪૩ વીનાંગના લકાંકી, ૪૪ નયેગ, ૪૫ વળગા-વુહગા-વીહૈન કથા
 સંગ્રાહ, ૪૬ સંગ્રદાસ, ૪૭ નટની યદ-દીન કથા સંગ્રાહ, ૪૮ ગામક
 પાનિગી, ૪૯ અન્દ્યાંગાગી, ૫૦ સામૈયા પોખૈ, ૫૧ ગામક શકૃસૂના, ૫૨
 અપન મન અપન યન, ૫૩ સમનથાસ્ક મૂળ, ૫૪ અપપન-વીનાન, ૫૫ વાઇ
 ગોપાઇ, ૫૬ શકમોડ, ૫૭ ઉચવા યાડ, ૫૮ પાદાડ, ૫૯ ગઢેનગા-હથ, ૬૦
 ઉપાવિગી, ૬૧ ઉકૂડ સમય, ૬૨ મધમાઘી, ૬૩ પસેગાક યન, ૬૪ ગુડા-
 પુદ્દીક નોટી, ૬૫ શુદ્ધા, ૬૬ યસૈ ગાઘ, ૬૭ હાગ્યઘા આમક ગાઘ, ૬૮
 સુમયગિનાક, ૬૯ ગાઘપા સં યસઇ, ૭૦ ડમ્યાલઇ ગામ, ૭૧ ગુણેની દાસ,
 ૭૨ મુડ્યાલઇ ઘન, ૭૩ વીનાંગના, ૭૪ સ્મ-નિશ્લેષ, ૭૫ વેટીક પૈન્ય, ૭૬
 કનાગાધિગ, ૭૭ નાકિઠદ્દી, ૭૮ પૈનીસ સાઇ પદ્યુઆ ગેથી, ૭૯ દોહની
 હાક, ૮૦ સુમમિની પાનિગી, ૮૧ દેખઇ દનિ, ૮૨ ગપક પધિહઇ ઓક, ૮૩
 દિવિધીક દીપ, ૮૪ અપપન ગામ, ૮૫ યાધિગોડ મૂમ, ૮૬ યાગિવગક શકિા,
 ૮૭ યૌનસ યોગક યૌનસ ઉપા, ૮૮ સમયસં પહનિ યેન કસિાન, ૮૯ મૌક,
 ૯૦ ગામક આશા ટુટી ગેઇ, ૯૧ પસેગાક મોઇ, ૯૨ ક-પધિગ, ૯૩ હાનઇ
 યેહના પીનઇ નૂપ, ૯૪ નૈ પોકન પનિા, ૯૫ કનાક ના કનમક સંગ,
 ૯૬ ગામક સૂના વદેઇ ગેઇ, ૯૭ અન્નામિ પનીકૃષા, ૯૮ ઘનક યન્ય, ૯૯
 નીક ડકાન ડકેથી, ૧૦૦ પીવગક કનમ પીવગક મનમ, ૧૦૧ સંચામ, ૧૦૨ મની
 મનકાળ, ૧૦૩ આલઇ આશા યઇગેઇ, ૧૦૪ પીવગ દાન નથા ૧૦૫ અપપન સાગી-
 ઉધ કથા સંગ્રાહ.

અપન મંત્રાણે દર્શિનાઇસાડડવદિહાગાધિયોમ પન પડાડા

रुद्रवीरगुप्त गायत्रिभक्ति- भाग्यश्री (उपन्यास) - १८८ पृष्ठ



नवीन गानाधाम मसि

माना गाना (उपन्यास) १८म पेप

१८

आनविना टोमे पाकड़कि हमटाग गाछ छथ । ओकने छाहामि सौसे टोठक ओकसगक वैसाग छथ । गोब्रदि आ मायव ओहि वैसागक अगुआ छथ । ओगा ओहिगिम कोनाग कनवाक हेतु साँहमे ओकसगक पुटाग हेतु नैहो छथ । मुदा ओहि दगिक वाग कछि वसिष छथ । गोब्रदि आ मायव एकटुगिआ छथ । इसकूठसँ छए कए कोषग बनै एकहि संगे पढ़थ । एमए पास केवाक वाद गौकनी गहि कनव , समाजक सेवा कनव , गहि वयिगसँ पुनैगि गए गाम वापस आवै गेथ । एहग ओक कमे होएग जे मेथ गौकनीकें ठाग मानै गाम-घन घुनै जाएग । मुदा ओ सग से केथ । गाम आवै तँ गेथ , मुदा एहिगिमक स्थिति तँ वहुग पनाव नैहैक केओ ककनी सुगवाक हेतु तैयार गहि सग अपगा-आपमे पनपूना ।

"गनीव छो तँ छो, मून्प छो तँ छो, हम ककनी की वगिाड़ै छएक? जे भोग होए से कनीव । हम ककनी गौकनी छएक की? हमनासगकें जे वुहवैक अछि से पहिने अपने घनी सम्हानी छथि तँ वुहवैक जे वहुन केठक।" ननह-ननहक शुकनासग ओक वजौन नहै।

ई सग सुनवाक हेतु गोब्रदि आ मायव पहिनेहसँ तैयान नहथी । गाम केहन होइत अछि से ओ सग स्वयं देय्यगे-भोगगे नहथी समाज सुयान कनीवाक हेतु सहनशीलता याहवे कनी । दस ननहक ओक छैक, सगकें भवि कए एए जएवाक हेतु चैत्य याहवे कनी । से सग सोय-वयिनी कए दुगुगोटे गाम वापस आएए नहथी

गोब्रदि आ मायवक सग प्रयाससँ गाममे वहुन पनविनान भेए । ओकसगक शिक्षाक प्रानि आकृषम भेठैक । ननह-ननहक नव व्यवसाय ओक शुनु केठक । एहिसगसँ ओकसगक आर्थिक स्थितिमे सुयान भेए गोब्रदि आ मायवक एहिमे वहुन योगदान नहएनि । जार्हिकानामसँ उतनवनिआ टोठक ओकमे ओ सग वहुन ओकप्रयि नए गेएह।

पाठशाळा ककनी व्यक्तानि वस्तु नहि होइत अछि । सेन ई कोनो आहुक तँ अछि नहि । कैक पुस्तकसँ इकाक ओक एहिगि शिक्षा पैग नहएह अछि । उयति तँ ई छए जे सुवाकनी स्वयं एहि कानकें आगू कनीथी दखनिवागिठेठक ओकसग हुनकनी संग दैग । मुदा भेए उठए । सुवाकनी पाठशाळाक जगहकें कोनो स्थितिमे छोड़वाक हेतु तैयान नहि छथि, अपनि ननह-ननहक षडयंत्र कए जयनकें गामसँ गगा देवए याहै छथि जार्हिसँ ओ नस्यति नए हुनको हिससाक पेन-पथानकें कवना कए सकथी । छैक ने अग्याय? सेन पाठशाळा नहैसँ सगक श्रद्धा होैक । गामेमे ओक उय्य शिक्षा प्रान कए सकत । जयन सग ब्रिटिश व्यक्तिसँ शिक्षा ग्रहम कनीवाक

ଗୀତ ଅବସରକୁ ହେଲା ଓକଣାହିଥାଇଁ ଗହାଜାଏ ଦେବେ । ଏହିହେଉ ହେଉଛନ୍ତି ଜାଗପନ
ଫେର ସକେନ ଥି । "ଗୋବିନ୍ଦ ବାଜେ ମାଧବ ଓକଣ ବାଜେ ସମନ୍ତେ କରୁ ଆଶୁ
କହେକ-

"ଜାଣି ନାହିଁ ଜାଣୁଛନ୍ତି ଅପଣେ ଓକଣେ ନାମ କର ନହେ ଥିଆଁ ଓ
ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମାଜକୁ ହେଉ କହେକ ବାଜ ଅଥବା ଅପସାଦକ ବାଜ ଅଥବା ଓ
ଦୁଷ୍ଟିବାଦୀଓକ ଓକଣେ ମୁକଦ୍ଦିଶକ ବନେ ଥିଆଁ।"

"ଓ ସଜ ଆବ ଥିଆଁ କେନ ଜୋଗ । ନାମ-ଦାନୁଁ ଶୁଣିବାହିନୀ
ନାମେ କହୁ ଆଶ୍ରମ ସୋପାନାହ" -ବୈଶାମେ ସେ କେଶେ ବାଜେ।

"ସମ୍ପଦ ବ୍ରତନ ।" -ଦୋଷୀ ଗୋଟି ବାଜେ ।

"ମୁହାଁ ହେଲା ଓକଣାଧିପ ଗହାଜାଏ ସକେନ ଥି । ଝିଗାବାବାକ ଡେଉ ଅଥବା
। ଓ ଝିଗାବାବା ଓ ସୌକ୍ଷେ ଜାଗକୀୟାମେ ଅପଣ ଜାଗାରେ ଥିଆଁ ଜାଣୁଛନ୍ତି ଜାଗ
ଝିଗାବାବା ବ୍ୟକ୍ତିରେ ଥିଆଁ" -ନୋଷୀ ବାଜେ ।

"ସେ କେଶେ?" - ଧ୍ୟାନି ପୁଷ୍ପକେକ ।

ଝିଗାବାବାକ ବୁଝେ ଥିଆଁ । ଗାହାଣ୍ଡିଆମେ ଜାଣୁଛନ୍ତି ଘନକ ପ୍ରାସ୍ଥିତିଆଁ
ନାମ କର କର ଧ୍ୟାନେ ଡୁବେ ଜାଣ ନହେ । ସଂଯୋଗୁଁ ଝିଗାବାବା ହୁଣ୍ଡା ଦେଖି ଥିଆଁ
ଆ ବୁଝା-ସୁଝା କର ହୁଣ୍ଡା ଅପଣା ସଂଯୋଗ ଜାଗକୀୟାମେ ଥିଆଁ ଝିଗାବାବା । ଓହ୍ଲ
ହୁଣ୍ଡା ନାମ ଜାଗକୀୟାମେ ପ୍ରାସ୍ଥିତି ଆନନ୍ଦାକୁଳେ ଥିଆଁ ଝିଗାବାବା । ଝିଗାବାବା
ଗହାଣ୍ଡିଆମେ ଗହାଣ୍ଡିଆଁ କହାଗହା ଜାଣୁଛନ୍ତି କି ହେଉଛି?" - ପାଞ୍ଚମ ଓକ ବାଜେ

"नयन तँ जयन्तपन हमना ओकनकि अयकान सद्धि अछि ओ अपनसभक ओक छथि। हुनकन नक्षा अवस्थ हेवाक याहि।"

"एवमस्तु! "-सभ एकस्वनासँ वाजथ।

नकन वाद सन्वसन्मनसिँ पुनस्ताव पास भेथ जे गामक युवकसभ पान भगा कए जयन्तक सुनक्षाक देखबाथ कनाह। हुनकन गतिप्रपनाकि आवश्यकता हेतु गामेसँ व्यवस्था कएथ जाएत। इहे गतिप्रपना भेथ जे पाठशाळा ओहयिथ जतए यवैत नहथ अछि। नाहिहेतु जे कए पढ़ाईक से कएथ जाएत।"

छैतसभ सभटा समायात सुधाकनकेँ देखकनि। सुधाकनक सीटीपीटी गुन्म छथ।

आव की कएथ जाए?" - सुधाकन छैतसभकेँ पुछथनि।

"अहाँ यतिा नहि कनू। हमना भगमे एहि समस्यसभक सहि स्वाध अछि"-एकटा छैत वाजथ।

"तँ वजैत कएक नहि छह?" - सुधाकन कहथक।

"जयन्तक जाग ओहि शोधग्रन्थमे अछि। जँ ओकना योना छी तँ जयन्त वनाह नए जाएत, अपन गामसँ पढ़ा जाएत वा नए सकैत अछि जे योनेमे कुदा जाए।" -दोसरा छैत वाजथ।

"ई बात तँ हम पहिनेसँ बुझैत छी। हम तँ जागकीयाममे कहने नहि जे शोधग्रन्थ छेने यतू तँ अहाँसभ ज्योतिषीजीकेँ दए देखएक आ ओ पढ़ाओ जेथ।"

"ਓ ਵੀਗਿਓ, ਸੇ ਗੇਓ । ਆਵ ਕੀ ਕਲਓ ਯਾਏ ਨਾਹਿਪਿਨ ਵਰਿਆਨ ਕਰੈਨ
ਯਾਏ ।"-ਸੁਥਾਕਰ ਵਾਯਓ ।

"ਲਹਿਮਿ ਵਰਿਆਵਾਕ ਕੀ ਥੈਕ? ਯਯਗਾਕ ਸਨਿਮਾਸੈਂ ਕਹੁਨਾ ਕਲ
ਸ਼ੋਧਗ੍ਰੰਥਕੈਂ ਯੋਨਾਏਓ ਯਾਏ । ਸ਼ੇਨ ਏਯੈਨ ਨਹੂ ਨਮਾਸਾ ।"-ਨੋਸਨ ਓਏਨ ਵਾਯਓ ।

ਯਾਨ ਓਏਨ ਆ ਸੁਥਾਕਰ ਏਕਮਾਸੈਂ ਲਹਿ ਪ੍ਰਸੰਸਾਵਪਨ ਸਹਮਾ ਮੇਓਏ ।

-ਵੀਗਣਨ ਗਾਨਾਯਾਸ ਮਸ਼ਿਨ, ਪਾਨਿਕ ਗਾਮ: ਸੁਵਗੀਧ ਸੂਨਧ ਗਾਨਾਯਾਸ ਮਸ਼ਿਨ,
ਮਾਨਾਕ ਗਾਮ: ਸੁਵਗੀਧਾ ਏਥਾਕਾਸ਼ੀ ਏਵੀਓ ਵਲਸ: ਫਰੰ ਵਰਖ, ਪੈਨ ਕ ਗਾਮ:
ਅਓਨ ਓਹ, ਮਾਨ ਕ: ਸਨਿਥਾਸ਼ਿ ਓਯੋਓ, ਵਾਨ: ਗਾਨਾ ਸਮਕਾਨਕ ਉਪ ਸਥਾਵਿ
(ਸੇਵਾਨਵਿਨਾ), ਸੁਪੇਸਓ ਮੇਟਨੋਪੋਓਟਿਨ ਮਾਨਸਿਟਨੇਟ, ਏਥਿਓ(ਸੇਵਾਨਵਿਨਾ),
ਸਾਕਿਥਾ: ਯਗਣਨਯਾਨੀ ਮਥਿਓ ਮਹਾਵਰਿਥਾਓਯਸੈਂ ਵੀਲਸ ਸੋ ਗੈਨਾਕਿ ਵਾਨਿਮਾਨਮੇ
ਪ੍ਰਨਾਥਿਓ : ਏਥਿਓ ਵਸਿਵਰਿਥਾਓਯਸੈਂ ਵਰਿਥਿ ਸੰਗਾਨਕ, ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਿਨਿ ਕਾਨ:
ਮੈਥਿਓਮੇ: ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ ਵਰਖ:੨੦੧੭ ੧ਗੋਨਸੈਂ ਸੌਏ ਧਨਾ (ਆਨਮ ਕਥਾਓ੨
ਪ੍ਰਨਸੰਗਵਸ (ਗਵਿਥਓ੩੨੨੧) ਲਾਹਿ ਅਥਾ (ਧਾਨਾ ਪ੍ਰਨਸੰਗ); ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ
ਵਰਖ:੨੦੧੮ ੪ ਸ਼ਿਸਾਏ (ਕਥਾ ਸੰਗਾਨਹ ੫ ਨਮਸਾਨਸਥੈ (ਉਪਨਧਾਸਓ ੬ ਵਰਿਥਿ
ਪ੍ਰਨਸੰਗ (ਗਵਿਥਓ ੭ਮਹਨਾਨਾ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੮ਓਧਾਕੋਟਨ(ਉਪਨਧਾਸਓ); ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ
ਵਰਖ:੨੦੧੯ ੯ਸੀਮਾਕ ਓਹਿ ਪਾਨ(ਉਪਨਧਾਸਓ੧੦ਸਮਾਧਾਨ(ਗਵਿਥਓ ਸੰਗਾਨਹ)
੧੧ਮਾਨ ਗੁਮਾ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੧੨ਸੁਵਪਨਓਕ(ਉਪਨਧਾਸਓ); ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ ਵਰਖ:੨੦੨੦
੧੩ਸੰਧਨਾਏ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੧੪੨੨ਏ ਥਾਕਿ ਯੀਨਾ(ਸੰਸਮਾਨਸਓ੧੫ਓਹੈਨ
ਏਵਾਓ(ਉਪਨਧਾਸਓ); ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ ਵਰਖ:੨੦੨੧ ੧੬ਪਾਥੇਧ(ਸੰਸਮਾਨਸਓ ੧੭ਲਮ ਆਵਾ
ਨਹਓ ਓਹ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੧੮ਪ੍ਰਨਧਕ ਪਾਨਾ(ਉਪਨਧਾਸਓ); ਪ੍ਰਨਾਕਾਸ਼ਨ ਵਰਖ:੨੦੨੨
੧੯ਵੀਗਿਓ ਸਮਧ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੨੦ਪ੍ਰਨਾਵਿਮਿਵਾ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੨੧ਵਏਓਨਹਓ ਅਥਾ
ਸਥਾਕਥਿਓ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੨੨ਨਾਥਟਨ ਮੰਏਨ(ਉਪਨਧਾਸਓ ੨੩ਸੰਧਾਨਾ(ਕਥਾ ਸੰਗਾਨਹ
੨੪ਗਾਧਾਨਹਓ ਓਥਿ ਵਸੁਥਾ(ਉਪਨਧਾਸਓ) ।

ਅਪਨ ਮੰਨਥੇ ਏਨੀਨਾਓਸਨਾਓਓਵਰਿਥਾਓਯਾਓਓਯੋਮ ਪਨ ਪਯਾਓ।

रुद्रं नमिषा कृत्स्न- अग्निसिद्धि (भाग- १२)

नमिषा कृत्स्न- अग्निसिद्धि (भाग- १२)



गन्धर्व **कृष्ण** (१८६०-), शिक्षा - एम् ए, गैहल - पन्नाजपुर, दमरुगा, सासुन - गोदियानी (वधवा), वन्तानमा न गविस - गायी, हानप्याड, हानप्यंड सनकान महवि एवं वाठ वक्रिस सामाजिक सुनक्षा वगिग मे वाठ वक्रिस पनयिगण पदायकानी पद संस सेवानविर्त्तानि उपनाग्न सव्रान्त ऐप्पन

मूठ हगिदी- सव्रगीय गतिगुद कुमान कृष्ण, मैथवि अनुवाद- गन्धर्व कृष्ण
अग्नशिपि (भाग - १२)

पून्व कथा

गाणा पुनूवा संग वविह हेतु अनेकानेक सुंदनी ठावापति छविह । मुदा गाणा पुनूवा एहिसंस गन्धर्वि गाणकाण मे व्यसत छविह ।
 आव आगू

सव्रग के सहिसन पन पुनंद देवगाम के समूह मे वैसठ छविह ठ हुनक मुप्य माडठ पन गहन यति पनविप्राप छठ ठ दिनि पुना दिनि के नाक्षसक आकनमस संस ओ टूटा युक्त छविह ठ दागवगाण केशि के अयोगा ओ स्वीकान कस युक्त छठथा ठ एकन आनक्ति अग्य कोनो माग हुनका नहि सुहायठ छठैन्ह । एकन कामस ठागग पुनादिनि नाक्षस गाम के मनोमविपति वस्तुक आपूनाहुनका कनस पतै छठैन्ह ठ दागवक अनुयति मांग के पूना कतै-कतै हुनका मोग मे अपना पुनाहिन गावगा नगठ जा नहठ छठैन्ह ठ

देवगुन वृहस्पति ग्रह एहि अवसन पन सव्रग ठेक मे नहतिथिप्यन देवगाम के दागव गाण संस पनाजति नहि होमय पनतिगहः मुदा गुनुदेवक अनुपस्थिति पनाजय के कामस वगिठेठ ठ कछि आवस्यक कात्य संपादति कनवा हेतु गुनुदेव वृहस्पति मे वगिगा संग पनामन्स एवम अग्य अनेको

वर्मिन्स हेतु गेठ छवह ठ हुनक अनुपस्थितिकि ज्ञान नाक्षस नाण के नस गेठ छठ, आ एहि अवसर्न के ठान उठ छेठक दानवनाण केशिठ गीन वृक्षक घमासान युद्ध मे इंदु के स्थिति सोयनीय नस गेठनि । ओ पनाजति मेठह, संगहि हुनक मनोवठ टूटि युक्त छठ ठ देवत्वक तेज समाप्तप्राय नस गेठ छठनि ।

शांन वैसठ इंदु के कर्मा गह्वर्न मे - "गानायाम-गानायाम" के यनि-पनयिति आवाण आ व्रीह्याक मधुन गह गुंजति नस उठठ ठ इंदु के मुप्य कमठ पुनसर्गना संस पुनश्चुठति नस गेठठ अपन सहिसन संस उगनि ओ गानक पुनसर्गना पुनर्वक स्वागत केठनहि, एवम गांनि-गांनि संस हुनक पूजा अग्र्यन्थना केठ उपनाग्न अपन समीप एक मामा भोमाक्षिप जडति स्वर्ग-सहिसन पन हुनका सादर वैसाओठ ठ

गान स्वर्ग ठेकक नाकाठिन स्थिति संस पुनर्मा अवगत छवह तथापि ओ जाणिआसा पुनर्वक इंदु संस पुछठनहि - "कोन कानस थकि अमनपनि ! स्वर्गठेक के श्नी-शोभा ब्रह्मिण पार्वी नहठ छी ? सन देवगाम के मुप्य पन अजान नय पसठठ अछि ! नहि कोनो पुनर्काक नास-गं नस नहठ अछि, आ नहि कोनो उत्सवक आयोजन अछि ! अमनपुनी मे नस पुनर्दिनि कोनो ने कोनो पुनर्का के उत्सव मगाओठ जाइ नहै छठ ! अनवरत यहुं दशि मे पुनसर्गना व्याप्त नहै छठ ! स्वर्ग अवैत काठ माग मे असुन सन के मंदाकिनी के तीन पन स्वयंछंद वियिमा कतैत देयठहुं ? एक असुन पानिजान पुष्पक हान पहिने छठ ! स्वर्गक ई असुन-वृक्षन वृक्षस्थ ! आहांक उपस्थिति मे ! हम आश्रयन्त्र यकी छी, आहांक एहि अकर्माम्पना पन ! यदि अपनेक शासन के पुनर्निष्ठै उदासीनता नहठ तप्यन ओ दिनि दू नहि जायनि अमनपुन मन्त्र्यपुन वनि जायेत या असुनपुन" !

दुःप्पी हेतु इंदु वज्रह - "देवर्षि आहां नस अंत्यामी थकिहुं ! सव कछि जनिहुं हमना अकर्माम्पनाक उपाधिदिस नहठ छी ! की आहां के ज्ञान नहि थकि की असुन देवठेक के पनाजति कस देठक ? हम दानवनाण केशि संस पनाजति नस गेठहुं ?

"हूं ! ई वांन हमना ज्ञान अछि । मुदा ई मेठ कोना ! की आहां मे असुन गाम

के स्वर्ग लोक में एही प्रकार स्वयंछंद आगमन प्रियता के लोकवाक शक्ति गही ? आहां एवम समस्त देवताओं के वाहु-शक्ति मिल गस गे ? हमना ज्ञान अर्थात् देव गुण व हसपानि एवम स्वर्ग लोक में गही थकिह, मुदा की आहां हुनके शक्ति पन स्वर्ग के अधिपति छी ? हुनके अनुपस्थिति में स्वर्ग के सत्ता असुन गस के हाथ प्रकिय कस देउहुं ?

"हमना कछु गही सुहास अर्थात् देवर्षी ! हम ककिताव्य प्रमिद गे छी ! कपया हमन मातादृश कए जाय देवर्षी" ।

"आहां के माता अपन शक्ति पन अपन गत्व अर्थात् । यैह काम थकि जे आहां कनिको सहायता ऐमय में असमर्थ छी । मुदा आहां एक सूत वस्त्रिनाम कएन छी, जपन हिस्मन के समक्ष अपन शक्ति कम गस जाय जपन कोनो शक्तिशिथी गहन जन के सहायता अवश्य ऐमक याहि । एहि संस गुणेन गही कामवाक याहि । मुदा आहां अपन समक्ष अग्य कनिको शक्ति सम्पन्न सहायता ऐमय योग्य गही वुहैन छी, जपन तस यैह ने होय ! की आई तक देवता नूनंउ के गेश्वर के सहायता अगेको वेन गही छैथि, ऐन अपन आहां के अपन शक्ति पन लोक गत्व कयिक गे छ अर्थात् ?

"पथ्वी पन एहन कोनो नगपति गही अर्थात् देवर्षी, जेकना संस हम सहायता एस सकी" ।

"हूँ ! त्रिषिक में माता एक अही तस पन पनाक भी शासक छी ! देवेन्द ! आहांक पनाक के समक्ष पथ्वी के नगपति गे कोना गढ गस सकत ? ?

"गही गही ! एहन कोनो वात एहन गही अर्थात् देवर्षी" !

"आहां मथिया आवता के अपन मुय एवम हृदय संस ह्य दयि देवेन्द ! हम सब वुहैन छी । आहां सपिहुं छठ-कपट आ दमन के सहायता ऐन नहउहुं । पथ्वी के तपस्या ऐन मानव एवम ऋषि गस संस गयगी नहउहुं । आहां में ओ वशिष्ठ हृदय कहां, जे पथ्वी गवासी में पाओ जाइ अर्थात् ! पथ्वी के तस एक-एक गेश्वर आहांक सहायता कवा में समर्थ अर्थात् ऐकन अपन सहृदयता के काम ओ स्वर्ग के दशा में देवता तक गही छैथि" । इंद के मुय पन आशाक कगस ऐनाय छ ओ पुछाह - "देवर्षी की अपने

प□थ्वी के कोनो एहन ग□प्रा के नाम वनायव जे पनाकूनम मे हमना संस वढे-यढे होय?"

"अवश्य ! कीएक गही ! प□थ्वी पन एहिसमय एक एहन यकूनवनी सम्राट छथि, जातिक समता आहां सग सहस्रान् ईन् समन्धिति मस जायेव नयनहु गही कस सकव"।

"की अपने हुनक वषिय मे कछि आन वषिय जागकानी देवाक क□पा कनव देवन्धि"?

"अवश्य ! कीएक गही ! हमन कान्य अछि अगवना त्वाधिक-गुनमास कनैत नहनाई ! हम एक स्थान पन स्थानि गही नहि पवैतछी, मुदा एहि वेन गुनमास के कूनम मे गुनउठ पन हम कछि दनि इहानिगिठ नहि ठ कहु नस वषिय मस गेछुं ओनस कछि दनि वषियाम कनस के छेठ ! ओहसिस एयन हम आवानिहठ छी । ओनस के अदुगन शासन वृषवसथा संस हम अत्यन्त पुनमावति मेछुं ! ओह ! कनैक शांतिपनविद्यापन अछि ओनह" !

"ऋषियन गानद ! शांति ! प□थ्वी पन ! असमन्व ! शांति के साम्नाय्य प□थ्वी पन सोय कस वषियमे होईत अछि ! ई केहन असमन्व वाग मेठ अपनेक" ?

"आहां मठा स्वर्ग मे वैसठ-वैसठ कोना वृहव प□थ्वी आ आन कोनो गुनहक वाग ! आहां नस वस अपनहगित्व मे छपि छी, नाहिसंस आहां के कनिको महाना, कनिको वीनता देयाईत गही अछि ! आव आहां य्प्राग सस सुनव जे हम वानै छी आहांके" ।

ईन् उन्सुक मस गानद ऋषि के आप्प्राग सुनस उगाह । सग मंडप मे कछि आन देवता-गाम आवानिगठ छठह ठ संगे कछि अप्सना-गाम पत्यन्त आवानिगठ छठह, ओ सग ईन् के गंभीर मुदना मे देयामौन गाव वेगे एक कान मे वैस गेछहि ठ देवन्धि गानद के ओषड कांपनिहठ छठ आ हुनक मुय संस नाजा पुनवाक पुनसंसा के शवद अम□न वृन्द सग छटकि-छटकि कस सग के कान गह्वर मे पुनवषिट होश जा नहठ छठ ठ

ક્રમસં:

અપર મંત્રણે દર્શિતિસાગરવદિહામાધિયોમ પૃષ્ઠ ૫૧ પડાઉ

રંગગદ વ્રણિસ નાયક ૪ ટા કથા- કથા-૧ ૫૩૫૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા
અંગ્રેજીમે સમ્પાદકીય પૃષ્ઠ ૫૧

वर्दिहक छेपकक आमंतीति १यना आ ओइपनी आमंतीति समीक्षकक समीक्षा सीरीज मे अप्पग यनीअहाँ पढ़वै-

१ कामगिक पांय टा कवति आ ओइपनी मधुकाग्न हाक टपिपामी

वर्दिह ०१ ०८ २०१६

२ जगदागन्द् हा "मुगु" क "माटकि वासन" पनी जोगेन्द्नी गकुनक टपिपामी

वश्यएहअ ३५३

३ मुगुनी कामनक एकांकी "जगिद्गीक मोठ" आ ओइपनी जोगेन्द्नी गकुनक टपिपामी

वश्यएहअ ३५४

ऐ स□प्पठामे आगाँ समानाग्ननी यानीक कछि गाममान्य कथाकनसँ हुनका गजनि हुनकनी अपग सन्वसेष् ५- ५ टा कथा आमंतीति कए गेठ अछी कथाकानी ठेकनी छथि:-

१कपठिसुत्रनी १अज

२उमेश माम् ७७

३नाम व्रधिस साहु

४नाजदेव माम् ७७

५आयान्य नामगन्द् माम् ७७

६गन्द् व्रधिस नाय

७जगदीश पुनसाद माम् ७७

८हुनगागन्द् माम् ७७

ऐ अंकमे पुनसूत अछि गन्द् व्रधिस नायक यानीटा कथा आ एकटा एकांकी जइपनी हमनी समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय प□ष् ५ पनी अछी - सम्पादक



गन्ध व्रधिस नायक यागटि कथा

कथा १

उक्कट-वेडा

नामकुमान यटसि सगळें पढा अंगणा एवा तं पत्नीकें कगत देखैवै। देखते
ओ अकवका गेवा। पुछपनि-

"की भेव?"

पत्नी कगति कहैकैव-

"छटिहिसँ वावूजी शोन केने नह्यनि, माएकें ठकवा मानदिठक। वागवो-मुकवो
ने कतै छश। "

नामकुमान पुछपकैव-

"कहियि ठकवा मानठक?"

पत्नी कहैकैव-

"पनसू नागमि। वावूजी वजै छेपनि जे वँयत कगि तेकन कोनो ठीक नही।
अपना सगळें पनसू नागएसँ शोन ठावै छेपनि मुदा शोने ने ठावैवै। "

गामकुमान वाजपे-

"तप्पन तँ आसए छटिही जाए पड़त। माएक उमेरो तँ असूसीसँ कम गै होतैग। कोन ठीक कप्पन यथि जेती। यहुँ दस वजीआ वस पकैड छी। ओगा तँ गहुँमक दौगी कनव जूनूनी अछा। नहि-नहिकिऽ मेघ अवे छर। जँ वन्या मऽ जाएत तँ वुहूँ गहुँमक प्पिजिगैत मऽ जाएत। थुनेसवध सभ्भु कछुका गाओ कहने नहैथ। मुदा अपना गै नहने दौगी केना हएत। संभुकेँ ओग छी कहिदि छएत जे हम काछी गै नहव अन्तए जा नहए छी। ओतएसँ एष पछाश दौग कनएव। अय्छा जे हएत से हएत। माएक जजिआसा कनव तँ जूनूनीए अछा। हुनका सभकेँ के छैग। एकटा वेटी छैग जे पटगामे डकटनी कनै छथनि, पनियामे षऽ कऽ ओत नहै छथनि। "

छटिहीवाघी वजपे-

"एकटा काज कनू, प्पेप्पनाकेँ वजा गहुँमक वोह कड़ीआ दियौ आ ऊपनसँ तनिपाठ ओढ़ा हाँपि दियौ। वनयो हएत तँ नोकसाग गै हएत। छटिहिसँ कहियौ आएव तेकन कोन डेकाग। "

गामकुमान कहैकैग-

"ठीके कहै छए। तनिपाठ तँ अछए कनी मेहनत कनए पड़त। दसवजीआ वस गै पकैड वनहवजीआ पकड़ए पड़त। गहुँम हाँपठ नहने यनिता गै नहए। "

सएह केछैग। गहुँमकेँ सेनआ हाँपदिठ गेठ। गौनकेँ पड़िसीआक जमिमा ठगा, घनमे ताठ माना दुनू पनागी वेटाकेँ षऽ छटिही वदि मेठ।

गामकुमान एकटा छोट कसाग। मातू दू वधि प्पेनक माठकि। ओगा तँ एमए पास छैथ। मुदा वेनो जगान। कतेको वेन सनकानी नौकनी छेठ पनियामे केछैग मुदा ऐ जुगमे गगवान भेटव असाग अछा मुदा सनकानी नौकनी कछनि। की कनता, प्पेनिक अठावा यटिया सभकेँ टशिन पढ़ा कोनो यनागी अपन गुणन कनै छैथ। पनियामे मातू तीनए जेते। दू पनागी अपना आ एकटा दस वन्यक वेटा कन्हैया। माघे जाठक गाओपन एकटा मातू गौन। पत्नीओ मय्यमा पनीकषा पास केने मुदा उहे वेनो जगाने। नौकनी हेवो केना कनतिग। तप्पन वीए, एमएवध सभ हय मातए तप्पन मैटनकि-मय्यमाक कोन गप।

નામિ ખેં પસઘી સે પસઘે છૌ। કપ્પનો-કપ્પનો આંખાંખોથિયાનૂ દસિ નકે
છૌ। ડેનો પટપટવે છૌ મુદા મુહસં અવાળ ગે નકેન પવે છર। "

પતિક વાળ સુનિ સુમતિના વોમ શાડી કાગલ ઊઠી। નામ કુમાન સસુનસં
પુછ્છપ્પનિ-

"ઉ□કૂટન મૈપાકેં શોન ગે કેછપ્પનિ?"

નવકાગળ ખાવા દેછકેન-

"પનસૂ પપ્પન અહાંક સાસુ ગાનિછ નપ્પને સૂઝવાવૂકેં શોન કેઠૌ તં ઓ કહ્છક,
અપ્પન વડ વાળો છો, ઘંટા નનપિછારા શોન કનવ। અહાં સનકેં ઊઠૌ તં
સુચ્ય ઑંછ કહ્છક। "

નામકુમાન કહ્છપ્પનિ-

"હં પનસૂ મોવારૂક વેટની યાનૂ ગે નહ। કી કહ્વેન, હમના ગામમે ને
વપિથીદ છે આ ને ખેનખેટો। નનહિયા ગે તં નનિમ્મી ખા મોવારૂક યાનૂ કનવે
છો। કાછ્હનિનિમ્મી ગેછ નહિ તં ઓતર યાનૂ કનૌથિ। અચ્છા તં, નામિ
ઉ□કૂટન સાહેવસં વાળ મેઘેન?"

નવકાગળ કહ્છપ્પનિ-

"નામિ શોન ઊઠીથિ તં સુચ્ય ઑંછ કહ્છક। નનિસન મેને પપ્પન શોન ઊઠૌ
તં કનયિં ડઢવેન કહ્છી ખે અપ્પન દકટા નોગીમે ઊઠ છેથ। વાનહ વખે કનીવ
શોન કનવ કહ્છી। વાનહ વખે શોન કેઠૌ તં સૂઝવાવૂસં ગપ મેઘ। કહ્છક, કોનો
ઉ□કૂટન વખા માલકેં દેખા દપ્પિનુ આ ઉ□કૂટન ખે કહના સે હમના શોનપન
વનાવવા। ખૌ પાર-કૌડીક અનાવ હુઅ તં તાવર રંખામ કડ કાળ કનવ પછારા
હમ પડા દેવા। ચૌકપન સોમ આ સુક્ક દનિ દકટા ઉ□કૂટન અવે છથનિ।
ઓના તં હુનકન ક્ષીનીક સમિનાહી વખાનમે છેન મુદા હાટે-હાટ નમમ ખીક
દવાર દોકાનપન નોગી સનકેં દેખે છથનિ। કાછ્હી સોમ નહેન ઉ□કૂટન સાહેવ
ઊઠૌ તં દેખ્થિથિ થાડી થોડ। નોગી સનકેં દેખેન-દેખેન સાંહ પડીગેથેન।
સમિનાહીઓ ખેવાક નહેન। મુદા નમમખીકેં કહ્છપ્પેન તં ઉ□કૂટન સાહેવકેં
કહ્છપ્પનિ ખે હનિકો વેટા ઉ□કૂટન છથનિ નપ્પન અપના દેશમ દા। આઠ
ઊઠા દેખ્છપ્પનિ, વ્ઠડપેસન સેહે ખંચપ્પનિ આ કહ્છા ખે વઢછ છેન ખસં
દકવા માનિદેછકેન। દવાર સન ઇપ્પિકહ્છપ્પનિ યથ દપ્પિં। કાછ્હસં આર

यन्दिस् वोग पागि यङ्गि गेथैग मुदा कोनो सुधान ने मेथैग। प्याथि कय्पनो-
कय्पनो आँप्यिपोथिगि कैग नहै छथिगे जेग केकनो प्योपौग हुअ। "

ई कहैग कहैग नविकाग्नकें वुकौग उगि गेथैग। आँप्यिसँ टप-टप गोग हहगए
उगिथैग। पतिगकें कहैग देय्प सुमतिग सेहे कागए उगिथि। नामकुमान सेनो
पुछथकैग-

"उ□कूटग मैय्पकें सेग सेग केथएग आकनिह?"

नविकाग्न कहथय्पनि-

"नागएमे सेगपग सभ वाग वगौथए। तैपग सुठवावू कहथक, काएहूँ दू वगौ
समिगहि जा उ□कूटग सोहैवकें सभ वाग कहहिहक। मुदा अपगसँ सुठवावू
सेग कऽ माएक हाएगि ने पुछथक। जेते वेग सेग केवै हमहि केवै। "

वयिथेमे सुमतिग पतिगकें पुछथय्पनि-

"भौगयिगे ने सेग केथक?"

नविकाग्न वगिथ-

"जै वगहि, जौ अपग जगमथ ने पुछथक तँ आगक कोग वाग। तोग तँ सभ
गप वुहथे छै जे केते कऽगिसँ ओकग पढ़ैवै। "

सुमतिग वगिथ-

"से कोनो हमग ने देय्पथ अछि। अहाँक कमाऽसँ पूग ने मेथ तँ माएक सगटा
गहग-जेवग वेयि कऽ दऽ देथएग। तहूसँ ने मेथ तँ जगिगे वेयि दऽ
देथएग। हँ तँ समिगहि वगि उ□कूटग उगि गेथए तँ ओ की कहथैग?"

नविकाग्न वगिथ-

"कहथैग जे थकवा मागने छैग। उमेगो असूसीसँ उपने होग से आव उठव
भोसकथि छैग। अपग जगिगे सेव कऽ सकवैग से कयिगु। "

नागमि सुमतिग सवहक प्येगऽ वगौथक। प्येगऽ प्या नामकुमान कन्हैया आ
नविकाग्न सुठेथे यथि गेथ। सुमतिग माएक पाँजगमे वैसथ छेथि। नागमि
एगगह वगे वुढीक सगीगमे हकगि मेथ। आँप्यिगक वगिथ-

"वौआ ने आएथ? डकडग वौआ है डकडग वौआ?"

सुमतिग टोकथकैग-

"भाए हम छयिगे, सुमतिग गोग उगै छयिगे। "

"के, वुय्यी? कयन एँह? पाहुनो एउपुन हेन?"

"हँ उहे आएछ छथि आ कहैयौ आएछ अछि। "

तयने त्रिकाग्न एउपनि आ नाम कुमान सेहे।

"गोन छौ छएिन मार। "

नामकुमान वुढीक परन छुवैत कहैपनि।

"नौके रह्यु। जुग-जुग जीव्यु। डकडन वौआ गै आएछ। आव ओकन मुँह
गै देखैवै। पोताक देखैक सहिगा नेनहि मनि जाएव। "

नामकुमान कहैपनि-

"हिनका कहि गै होतै। हम निसने उकटन गैयौ ओन कऽ गाम
वजाएव। "

वुढी कहैपनि-

"अय्यछा!"

अय्यछा कहति वुढीकें हयिकी उठैत आ गनदनी सिनापनसँ गनि पडै।

सुमतिना माए-माए कहैत कागए छाठी। नामकुमान वुढीक गाने देखैत
वज्रपनि-

"माए यथीगिथी!"

ऐ नयनापन अपन भगवत्ते दितिनीसिता उडवैत हावाभाषियोम पन पडाउ।

२११ गण्ड त्रिंशत्तमः पात्रक ४ टा कथा- कथा- २ ण्डपन सम्पादकीय समीक्षा
अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ ५१

वैदिक ऐपकक आमंत्रति १यना आ ओइपन आमंत्रति समीक्षकक
समीक्षा सीरीज मे अप्पन यन्त्रिहँ पढ़ौ-

१ कामगीक पांय टा कवति आ ओइपन मधुकाग्न हाक टपिपसी

वैदिक ०१ ०८ २०१६

२ ण्डागण्ड हा "मनु" क "माटकि वासन" पन गण्डेन गकुनक टपिपसी

वैदिक ३५३

३ मुग्गी कामनक एकांकी "गण्डगीक मोठ" आ ओइपन गण्डेन गकुनक
टपिपसी

वैदिक ३५४

ए श्रृंखलामे आगाँ समानाग्नन यानाक कछि गाममान्य कथाकनसँ हुनका
गणनमे हुनकन अपन सन्तानेष्ट ५- ५ टा कथा आमंत्रति कए गेठ अछि
कथाकान ठेकनी छथि:-

१कपठिस्वप्न १।३।
२उभेश माह् ७७
३नाम व्रधिस साहु
४नाणदेव माह् ७७
५आयात्त नामागन्ध माह् ७७

६गन्ध व्रधिस १।५
७नागदीश पुनसाह माह् ७७
८हुनागान्ध माह् ७७

ऐ अंकमे पुनसूत अछि गन्ध व्रधिस नायक यागटि कथा आ एकटा एकांकी
णरपन हमन समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पन अछि - सम्पादक



गन्ध व्रधिस नायक यागटि कथा

कथा २

कटही सांस्कृति

"केतोक दनि ऐ पुनगका कटही सांस्कृतिपन यढ़वह। कहह दुनयिाँ केतए-सँ-केतए यथीगेथ आ तूँ वीस-वाइस वन्यक ऐ पुनगका सांस्कृतिपन यढ़ै छह!" - गेनाथाथ जयिाथाथकें कहथकैन।

जयिाथाथ हँसैत वज्ज-
 "है भाय, तोहन वेटा सभ जे कमाइ छह ने, तँए तोना हनयिनी सुहै छह। "

तैपन गेनाथाथ वज्ज-
 "आ तोना जे कोयजि सेन्टन आ यटयिा सभकें टीशन पढ़ेसँ आठ-दस हजानक महिग्वानी आमदनी होइ छह से की कहै छहक। कमतीमे एकटा सकेम्पुडे हेम्पुड श्रुटश्रुटयिा कीनकिड यढ़ह। है मनवह तँ कछि थड कड दुनयिासँ नै जेवह। जेनवे सुप्य-मौज ऐ यनीपन कनवह ओनवे संग जेनह। "

जयिाथाथ वज्ज-
 "है भाय, अप्पन हमना वड समस्य़ा अछि तँए अप्पन हमना अहि सांस्कृतिपन यढ़ह दएह। "
 याहक दोकनदानो दुनू संगीक गप सुनैत नहए ओ वाज्ज-
 "मनू! ऐ वेहाक सांस्कृतिकें कटही सांस्कृति कए कहै छए?"

तैपन गेनाथाथ वज्ज-
 "ऐ सांस्कृतिमे पारडिथि दैयै छए, काइक छी आ ऐ सांस्कृतिपन जप्पन यढ़वै तँ जहनि कटही वैथगाडीक युनामे सोन-गेथ नै नहएपन यथैकाथ को-काँए, पो-पाँएक अवाज नकिथै छै तेनाहयि ऐ सांस्कृतिसे अवाज नकिथै छइ। "

याहक दोकनदान पुछथकैन-
 "से अहाँ केना वुहथए?"

जेनाथाथ जवाव देथयनि-
 "एक दनि हम ननिमथि वसेसँ जेथ नहि। एक वोना गोन कीनअहि सांस्कृतिपन

નાખ્યા વિસ સૂટેમ્પડપન ગેઇ નહીં। વસ સૂટેમ્પડપન ગોન નખ્યા જાખન સાસ્કાધિ પૂહ્યાવ નખ્યાઇક કોયગિ સેન્ટનપન ગેઘૌ તં વુહાણે ખે ૩ ઘેહાક નહીં, કાઠક સાસ્કાધિ છી। નહિયસં હમ નખ્યા કઠહી સાસ્કાધિ કહે છાણે। "

જાણ્યાઇ વખા-

"હૈ જાખ કનેકો પઠપૈત નૈ મેટાણે ખે સાસ્કાધિકે જંગડિયો કના ઘેવ। દૂ દગિ જંગડિ કનૈઘે મસિત્તી શ્રોત ન સાસ્કાધિ છોડિદેઘાણે મુદા સાંહમે જાખન સાસ્કાધિ ઘાવ ને ગેઘૌ તં સાસ્કાધિ શ્રોહનિક-શ્રોહનિક નાખ્યા। "

તૈપન ગેનાઘાઇ હંસૈત કહૈકૈન-

"ધુન વુડિ, તોના કપાનમે સુખ ઇપ્પિઘે ને છૌ। કમા-કમા પાસ વૈકમે જાના કન મુદા મોગ તં તોના વેટાકે ઇપ્પિઘે છૌ। "

જાણ્યાઇ હંસૈત જાવા દેઘખનિ-

"ઠીકે કહૈહી જાખ, હમના જાગમે સુખ નૈ ઇપ્પિઘે અછાણે। "

૩ ગપ-સપ્પ ગેનાઘાઇ આ જાણ્યાઇક વીય જૂનાહા યૌકપન યાહક દોકાનમે હેશ નહીં।

ગેનાઘાઇ આ જાણ્યાઇક હાસ સૂકૌસં ઇડ કડ કૌઘેજ ધનકિ સંગી। ગેનાઘાઇક ઘન હટિકી ગામમે જાખેન કા જાણ્યાઇક ઘન નવટોઘી ગામમે। દુનૂ ગોનેક છડા કાઠિસસં ઇગાનહમ કાઠિસ ધન વિનગામા હાસ સૂકૌમે સંગે પઢૈથ। સંગે મૈટનકિ પાસ કેઘેન। મૈટનકિ પાસ કેઘા પછાશ દુનૂ ગોને નિમિઘી કૌઘેજમે રૂન્ટનમે નાશ્રો ઇપ્પોઘેન। નિમિઘી કૌઘેજમે વીર ધન દુનૂ ગોને સંગે પઢૈથ। ગેનાઘાઇ પાસ કોત્સક વદિયાત્થી છઘા જાખેન કા જાણ્યાઇક અંગોજી આનત્સક છાત્ત।

વીર પાસ કેઘા પછાશ ગેનાઘાઇ નૌકનીક ઘેઘ પનખિસ કનૈર ઇગાઘા। મુદા તોન વનખ ધન પનખિસ કેઘા વાદો જાખન નૌકની નહીં મેઘેન તં ખેતી-ગાહસતીમે જોન ગેઘા। શ્રો અપના વાપક નકૌઘીના વેટા। પાંચ વધિ જોતસીમ જામોનક માઠકિ। ઉપનસં ગાઘ-કઘમ-વાંસ-પોખૈન સઘ કછિ। નૌકની નહિયો મેઘાપન ગુખન-વસનમે કોનો દિક્કા નહીં હેશન। ગેનાઘાઇકે દૂટા વેટાટા। ખે મૈટનકિ કેઘા પછાશ દિઘીમે કાજ કનૈ છેન આ દનમાહ મેટાપન અપન ખન્યા નાખ્યા વાપક વૈક-ખાતમે પડા દર છેન। વેટા સવહક કમાર આ ખેતક ઉપજાસં

गेगाथा आनन्दपूजक जगिगी वतिवै छैथ। सुप्यक जगिगी वतिवैक काम
ई जे पनविन छोट छैण। हुनू वेटा अप्पन अवविहति छैण जे दधिषि पटै छैण।
घनपन मात्र अपने आ पत्नी। पेतो सभ मनकूतपन ठाँने छैथ। हँ, दूय
प्यार वासो एकटा दोगा गाए जानू पोसने छैथ।

गेगाथा अपना वेटा सभकेँ मैट्रिकिसँ आगाँ ऐ दुआने ने पढ़ौप्यनि जे पढ़-
थिपि आदमीकेँ नौकरी नै भेटतापन समाजमे जे दुजौन होए से दैपेन
छथनि। जप्पन कि किमो पढ़-थिपि ओक दधिषि, मुन्वर, कठकानामे
पुनश्चेतो नौकरी कऽ सागसँ अपन जगिगी वतिवैक अछि। मुदा जगिगाथक
सोय ऐसँ वधिकुठ भनिन छैण। हुनकर कहव ई जे जऽ पढ़-थिपि वेकरीमे
टाइगेन्ट नहण ओ ब्रिटिषाथीके ट्यूशनो पढ़ा अपन जगिगी सागसँ यवैण।
पठनामे एकसँ एक कोयगि संस्था अछि जेकर आम्दनी ठापोमे अछि।

जगिगाथ सोमान कसिगक वेटा। हुनका वावूजीकेँ मात्र अढ़ार बीघा पेत।
जगिगाथ दू भाँस। जेठ जगिगाथ अपने आ छोट पन्नाथा। पन्नाथा जप्पन
मैट्रिकिमे पढ़ैत नहैथ जप्पने हुनकर पतिजो पनोकर यठ जेठा। मुदा
पन्नाथाकेँ पतिजोकर स्वर्गावासक वादो पढ़ा-थिपिमे कोनो दिकिफा नै
भेटैण। जेठ भाय जगिगाथ ट्यूशन पढ़ा छोट भाएकेँ मागे पन्नाथाकेँ एम्ए
धन पढ़ौकैण। एम्ए पास केवाक तीनयि मासक पेसण पन्नाथाक वहाथी
शिक्षा भतिनक पदपन ढऽ जेठैण। शिक्षा भतिनमे वहाथ भेटाक दू मासक
मीन पन्नाथाक वबिह एकटा डीथनक वेटीसँ भेटैण।

जगिगाथ अंगेजी आनसक संग वाए केवा पछाइन नौकरीक ठेठ काश्ची
पनयिास केथपनि मुदा सखता नऽ भेटैण। जऽ सभमे सनकान शिक्षा
भतिनक वहाथी केथक ओर सभमे जगिगाथक उमेन याविस पान कऽ जेठ
नहैण। तँ शिक्षा भतिनमे वहाथी होइसँ वंयति नहै जेठा।

जप्पन सनकान शिक्षा-भतिनकेँ मागदेय पनह साएसँ वढ़ा कऽ यानि हजान
कऽ देथकैण आ एगानह मासक नौकरीकेँ साठ वन्यक उमन धन स्थायी कऽ
देथकैण तँ पन्नाथाक पत्नी अपना दुहाकेँ सप्या-पढ़ा पनविनमे मीन-
भगौण कना देथकैण।

जप्पेन जगिगाथ आ पन्नाथामे मीन-भगौजी ढऽ जेठैण तँ जगिगाथकेँ एक

वधिया जोतसीम प्येन आन घनाड़ी आ कथम-गाछी मथि कऽ पाँय कट्ठा हसि
मेठ नहैन। हुनकन पाँय गोतेक पनविन। जेठ दूटा वेटी तैपन सँ एकटा वेटा
आ दू पनानी अपने। एक वधिया जोतसीम प्येनसँ जप्पन पनविनक गुणन-
वसनमे कऽगिर होमए ठाउँन तँ जप्पिठाठ ट्यूशन पढ़ावैपन वेसी जोन
देउपनि। ओना तँ एस वन्य पहिनिहिसँ गनिमिमे एकटा कोयगि संस्थामे
अंग्रेजी पढ़वैत नहैथ। कोयगि आ ट्यूशनक कमाइसँ जप्पिठाठ अपन दुनू
वेटीकेँ पढ़ा-ठप्पि कऽ वीआह कऽ देउपनि। दुनू वेटीयो आ जमाइयो टीइटी
पास कऽ शिक्षकमे वहाठ छैन। एकटा वेटीकेँ नीक पढ़ाइ प्यानि पटना
वीएनकौंठामे नाओ ठप्पिने छेउपनि। वेटी वविक पढ़ेमे यत्नसगन। ओ
पटना वसिष्ठवद्विद्यालयसँ मैथिलिमे एमए कऽ प्नायोगिता पनीक्षाक तैयारीमे
लागठ छथनि।

आइ स्टेन जेनाठाठक गेट नूतन यौकपन याहक दोकानपन जप्पिठाठसँ मऽ
गेठ। जेनाठाठ याहक दोकानपन पहिसँ वैसठ नहैथ। जप्पन जप्पिठाठ
गनिमिसँ टीशन पढ़ा नूतन यौकपन एठा तँ याह पीवैठे याहक दोकानक आगूमे
साइकलि गढ़ कनि नहैथ कि जेनाठाठक गणैन जप्पिठाठपन पड़ैठेन, ओ
वजठा-

"कह नाथ, समाया। आवो यनि विए पुनक साइकलिपन यढ़े छै। नौ पूना
दुनियाँ सुबैत जेतै मुदा तू नहि सुयनवै। हे मनीहँ ने तँ सन कछि ठाथि कऽ
बेने जइहँ। पयपन-छपपनक उमेनमे ऐ कऽहि साइकलिपन यढ़े छै। नौ तोना
बुहाएव आ दिठि पएने जाएव नवैत अछि। आ-आ याह पीव ठे। "

जप्पिठाठ हँसैत कहठकैत-

"तोहने जे वेटा कमा-कमा पाइ पडा दइ छौ ने तँए तौ मोछमे घी लावै छै। "

तैपन जेनाठाठ वजठा-

"आव तँ तोनो वेटाक पढ़ाइ प्यन मऽ गेठ छौ। तौ तँ तेसने साठ कहने नहँ
जे वविक पटना वसिष्ठवद्विद्यालयसँ एमएमे श्रुसूट क्लाससँ उतीर्ण भेठ हैन। "
इ गप-सप होशे नहए कि एकटा स्कानपयि गौड़ी आवी याह दोकानक वजठमे
नूकठ। ड्नाइवन गौड़ीसँ नकिठ वीयठा गेट प्योठक। एकटा युवक गौड़ीसँ
नयियाँ उतारठ। ओ पैन्ट-कोन्ट-टाइल ठाँने नहए। जप्पने ओइ युवकक गणैत

ખાંધાભાવપન ગેલેન ઓ દુનુ હાથે પાન છુવાંહુનકા ગોન ઓઠકૈન।

"વૌઆ વ્રવેક! અચ્છા કાકાકૈ ગોન ઓઠુન। " ગેનાભાવ દસિ રસાના કૈન
ખાંધાભાવ વખા।

વ્રવેક ગેનાભાવકૈ પાન છુવાંગોન ઓઠકૈન આ વખા-

"વાવૂગી, હમન યૌથે દનિ ટુનેગિ ખાનમ મસ ગેઠ। પનસૂ વોનપુન ડીઅસપી
પદપન યોગદાન કેઠૌ હેન। કાઠહિ પટનામે મીટગિ છઠ। અખન પટનેસં
વોનપુન ખા નહઠ છી। એ ડામ ઇઠૌ તં મનમે મેઠ મસ સકૈઅ વાવૂગી ગનિમઠિસં
ધુમઠ હેના। "

ગેનાભાવક વોઠતી વનદ। ઓ કખ્ખનો ખાંધાભાવકૈ દેખૈથ તં કખ્ખનો વ્રવેકકૈ આ
કખ્ખનો ઓર સ્કાનપયિ ગાડીકૈ।

ખાંધાભાવ વ્રવેકસં પુછવખ્ખનિ-

"માઅસં અસનિવાદ ઇવઅ કહયિા અવૈ છહક। "

તૈપન વ્રવેક કહઠકૈન-

"મનમે તં નહઅ ખો પટનાસં ધુમતીમે અહૌ સમસં આનુશીવાદ ઓ ઇવ મુદા
દનમંગેમે નહૌ તં વોનપુનક અસડીઓ સાહૈવ શોન કેઠૌન। ઓ કહૈઠેન ખોતેક
ખઠદી વોનપુન પહુંચ સકી પહુંચૂ। તંઅ વોનપુન ખઠદી પહુંચવ ખાનૂની મસ ગેઠ।
નર્વાદનિ ગામ આવી નહઠ છી। "

૬ કહૌ ઓ ખાંધાભાવ આ ગેનાભાવકૈ ગોન ઓગિગાડીમે વસકિડ યઠગેઠા।

ગેનાભાવ વખા-

"માપ્પ ખાંધાભાવ, તોહન કડહી સારકઠિક માન નહૌગેઠૌ। તોહન વેટા પઢ-ઠપ્પિ
કડ ડીઅસપી મસ ગેઠૌ। વ્રાહ માર વ્રાહ! "

તૈપન ખાંધાભાવ વખા-

"માપ્પ હમન વેટા કી તોહન વેટા નર છયિૌ। "

૬ સુનિ ગેનાભાવ, ખાંધાભાવકૈ મનિ પાંખ કડ પકૈડ છાતીસં ઓગા ઇવખ્ખનિ।

-

અપન મંત્રવ્યે દતિંગાઠિસનાડડવદિહાબાઠિયોમ પન પડાડા

વચ્ચપ્રશ્ન ૩૫૪

એ સંખ્યામાં આગાં સમાનાગતી યાત્રાક કહિ જામનાગતી કથાકાનં હુગકા
ગતીમિ હુગકા અપગ સત્વશ્ચેષ્ઠ ૫- ૫ ટા કથા આમંત્રીતિ કલ્પ ગેઠ અછી
કથાકાન ઓકગીચ્છિ:-

૧.કપિશ્વર ૧ાગ

૨.ઉમેશ મામ્ડ

૩.નામ વ્રિસ સાહુ

૪.નાગદેવ મામ્ડ

૫.આયાત્રી નામાગત્ મામ્ડ

૬.ગત્ વ્રિસ નાય

૭.ગાદીશ પ્રસાદ મામ્ડ

૮.દુર્ગાગત્ મામ્ડ

એ અંકમે પ્રસૂત અછી ગત્ વ્રિસ નાયક યાત્રી કથા આ એકા એકાંકી
ખરપ હમ સમીક્ષા અંગેગીમે સમ્પાદકીય ૫૦૦૫૫ અછી - સમ્પાદક



ગત્ વ્રિસ નાયક યાત્રી કથા

કથા ૩

જાન

नामगान गाम। भोतुका समय। सात वज्रौ। ठाठवावू आओन हुनकन
वहोरे गूगवावू दुगू गोरे दानमैग कुन्ना- आयमन कऽ दठानपन वैसवे केठा की
ठाठवावूक पुनोहु अंजली दू गणिस पानि आ दू कप याह एकटा टनेमे नेने
पुहुंयथी। जप्पने ठाठवावूक नपौन अंजलीपन गेथैन कीओ ह्माग नऽ कऽ
प्पसठा। हुनक मुँहक युहयुही जोगा वधिए गेथऽ। ओ उदास नऽ गेठा।
अंजली सश्वेद वसन्त पहिने, ने हाथमे यूनी आ ने गनदैनमे मंगठसूत आ ने
मांगमे सेनू। येहनापन उदासी। उमेन ठायक २२-२३ वन्य।

ठाठवावू अंजलीसँ पुछथ्यनि-

"सासु-माँ, अँगनमे नै छेथी?"

तैपन अंजली वऽ असथनिसँ वज्रौ-

"मं गहा नहथी हेन। "

ठाठवावू वज्रौ-

"डीक छै टने देवुठपन नप्पिदहक आ जा दूटा पान ठाँगे आवह। "

दुगू सात-वहोरे पानि पीव याह पीवए ठाठा। कनेक काठक वाद अंजली एकटा
नसानीमे दू प्पिथी पान, सुपानी, जन्दा आ पानी दऽ गेथी।

अंजलीकेँ गेठा वाद गूगवावू वज्रौ-

"भगवानो वऽ वेस्मान छथनि। कनयिंक संग वऽ अग्न्याय केथ्यनि!"

तैपन ठाठवावू वज्रौ-

"हमने संगे भगवान कोन ग्न्याय केने छैथ। एकेटा वेठा छेथए ओकनो दुनयिसँ
उठा छेथैन। आरु जँ एकटा वेठयिँ नहैत तँ संतोष कनितौ। यनिता तँ ऐ वातक
अछा जे हमना दुगू पनानीकेँ दुनयिसँ गेठा वाद ऐ अवठाकेँ की हेन!"

वज्रौ-वज्रौ ठाठवावूकेँ वुकोन ठाँ गेथैन आ ओम्पिसँ दहे-वहे गोत जाए
ठाठैन।

गूगवावू ठाठवावूकेँ तोष दैन कहथ्यनि-

"की कनवै भैया हेनीकेँ के टानि सकैत अछा। नहै वात कनयिँक तँ ऐ
वधियपन गमनीनतासँ व्रिया कनए पड़त। अहाँ कानू जुनी ऐ वधियपन
व्रिया कनू जे की केठासँ कनयिँक जनिगी पुसीसँ कटन। अप्पन हम जाइ

छी, पनसू नवीछी। पनसू आर्विकऽ ऐ समसूयापन दुनू गोने व्रियाव। "

ठाठवावू वज्ज-

"जठमै प्या ठिअि नप्पन जाएव। "

तौपन गूगूवावू कहठप्पनि-

"नै नैया अप्पन जठमै नै कनव। गामपन जाएव सुगान कनव आ प्पेगार प्या
दोकागपन जाएव। दस वणे नक दोकाग प्पोठि देव। "

ई कहैण ओ साइकठि ठऽ वदि नऽ गोवाह।

गूगूवावूकें गोठाक वाद ठाठवावू सोयमे डुमिगोवा। हुनका दू वन्य पहिनुका सन
वात भोग पड़िगोवैन।

केतोक युमयामसँ वविकक वशिहक वनयिागी साजगे नहि। पननहटा
यानयिकका गाड़ी आ मयून गायक संग वैड वाजा नहए। वनयिागीमे सामठि
धुवक सन वैड वाजापन पूव गायठ नहए। उड़कयिीवठा जाण उपैछ कऽ
प्पन्य केने नहैथ। केहेन मव्य पाम्माउठ ठगौने नहए नरमे नोशनीक केतोक नीक
वेवस्था नहऽ। प्यागो-पान की कोनो आजी-गुजी नहए। दनगंगासँ कानीगन
मंगा कऽ प्पेगार वनवौने नहैथ। वैष्मवक ठेठ अठा वेवस्था आ सक्कट
सन ठेठ नीन वेवस्था। वनयिागी सवहक मव्य स्वागत भेठ नहैन। हमहूँ की
कोनो एकटा छेदामो दहेण नेने नहए जे नीक वेवस्था नै कहैत। हमना णँ भोगो
नहए जे कम-सँ-कम दुठहनिक् सन गहगा वेटीवठा दौउ। मुदा हमन वेटा वविक
मगा कऽ देठक। ओ वाजठ जे वावूजी हम अपने आत्मीमे नौकनी कहै छी।
कहुंगा प्या-पीव कऽ पयास हजान टका नऽ जाइए। दस-वानह वोगह जमीनो
अछए। नप्पन दहेण ठऽ कऽ की कनव। वनिा दहेणक वशिह कनि मैथठि
समाजमे एकटा गजीन पेश कनव। वेटाक व्रियावपन हमना गन्व भेठ। आ
हम वनिा एक्को पार नेने वशिह कनए ठेठ तैयान नऽ गोवै।

वड़ वढ़यिं णकाँ वशिह सम्पन्न भेठ। दोसन दनि कनयिं क वदिगनी
कना गाम एवै। शुनीयनसँ ठऽ कऽ सम्पानी-पेटानी दूटा पीकप गाड़ीमे
आएठ। कनयिं क नूप-नंग देप्प वविकक माए केतोक प्पुस भेठ छेवी। सन
मेहमान प्पेगार प्या नेने नहैथ। हम आ वविक प्पेगारप्पो प्याशन नहि आ टीनीमे
समायानो देप्पैत नहि। नप्पने टीनीमे समायान आएठ-

"कानगाँवमे पाकसिनागी शौण गानगीय नू-गानपन कव्णा कन ठयिा है।
इसवए सग सैनिको की छुट्टी न्हए कनो हुए तुनगन कामपन आपस छैठने
का आदेश दयिा गया है। "

समायाग देय कऽ ब्रिक्क पेगाइपन सँ उर्गिगेठ आ देवाठमे टांगठ घड़ी दसि
नकठक। हम पुछवए-

"मनू! की नऽ गेठह जे पेगाइपन सँ उर्गिगेठह। "

ब्रिक्क वाणठ-

"वावूजी समायाग तँ अहूँ देयवो आ सुनवो केवए। हमना आव एक पठ गी
नूकनार उयगि नहहिएन। नअ वपौन अछा। साढ़े नअ वजे हंदागपुनमे ट्येन
अछा। वएह ट्येन पकैऽ नकैठ जाएव। जेतोक जठ्ठी नऽ सकन वीन्डनपन
पहुँयवाक कोशीष कनव। "

हम आ ओकन मारक अठवे वआहमे जेतोक सन-कुटुम आ घी-सूवासीन आएठ
नहैथ सग ब्रिक्ककें समहैठक जे कम-सँ-कम आइ नागानूकणिा, भोजे अपन
ड्यूटीपन यथिजहहिए। मुदा ब्रिक्क एकेटा वाग वाणठ-

"गानग मागाक अस्मिताक सवाठ अछा। तँए अपने ठेकैगक वाग नै मानी
नहठ छी। ऐठठ क्षमापनान्थी छी। "

इ कहैत ओ हमना सगकें जोड़ ठागि विदि नऽ गेठ। ब्रिक्कक मनयिौन नाथ
ओकना छुटछुटयिसँ हंदागपुन टीसन पहुँया आएठ।

ब्रिक्ककें जेठक एक सप्ताह वाद हंदागपुनसँ आर्विकऽ दठगपन वैसठे नहि
नयने यागपिपयटा यनयिकका गाड़ी आर्वि दठगक आगाँ सड़कपन
नूकठ। एकटा गाड़ी हंदागपुन थागाक सेहे नहऽ। ओइ गाड़ीसँ हंदागपुन
थागाक थागा पुनगानी उतगठ आ वणठ-

"ठाठवावू गकुन आप है?"

हम कहवए-

"जी सन, हमहि छी ठाठवावू गकुन। की वाग?"

थागा पुनगानी वणठ-

"आपका वेटा शौणमे नौकनी कनगा था। "

हम कहवए-

"जी सन। सागे-आड दगि तँ ओकना गेना भेठ हेन। "

थागा पुनरानी वज्ज-
 "आपका वेटा कानगाछिमे शहेद हे गया है। "

तावेतमे एकटा पीकप गाड़ीपन सँ कछि पुठसि एकटा मंजूषा उगाना किड
 पोठठक। ओइमे तगिगा हंडमे ठटपटाएठ व्रविकक ठास नहए। जंगठक
 आगाजिक □ ई समायाग पूना गाममे छैठ गेठ। मनए, जगजानाकि संग यधिया-
 पुताक कनमान ठागा गेठ। हम ककिन्ताव्यप्रमिड गड गेठ। ई समायाग
 जप्पन अंगना पहुँचय तँ व्रविकक माए पछाड़ प्या गनि गेठ। हुनका दंती
 ठागा गेठैन। गामक जगजानासि सन हुनकन दंती छोड़ैकैन। व्रविकक
 कनयि □ अंजलि ननि पंज सासुकेँ पंजयि ययिधिए ठाठि। कछि
 जगजानासि सन कनयि □ केँ वोठ-ननोस दधि ठाठि।

मधुवनी जठिक पुठसि अघोक्षक हमना कहैछैन-

"अंकठ आपको गन्तु होना याहिए। क्योकि आपका ठाठ मान □ भूमि के नक्षा
 के ठिए शहेद हुआ है। "

हम कनयि आ अपन पत्नीक हाठन देप कड अपनकेँ सम्हनवै। हम एसपी
 साहैवकेँ कहैछैन-

"हजून दुप एकटा वातक अछाणे हमना दोसन वेटा गै अछा। जँ दोसन वेटा
 नहतिए तँ देसक नक्षा प्यानि ओकनो छौजमे नगती कनावति। "

हमन वात सुगएसपी साहैव हमना सैठ्यूट मानगे नहैथ आ वाजठ नहैथ-

"सन, मै आपके जण्वाको हजान वाग नमन कना हूँ। हुनके सवहक
 उपस्थितिमे व्रविकक दाह-संस्कार सम्पन्न भेठ। "

अंजलि गैहनासँ ओकन पतिगो आ वड गाय आएठ आ अंजलि केँ गैहना ठस
 जेवाक ठेठ हमनासँ आग्नह केछैथ। हम कहैछैन-

"जँ अंजलि गैहना जाएत तँ ठस जाइयौन। हमना ननश्चसँ कोनो कनिनु-पननु
 गै अछा। "

मुदा अंजलि गै गेठि। हम आ हमन पत्नी केतवो समहौठयि जे जा, कछि दगि
 गैहनामे नहि आवह। जप्पगे भोग हेनह यठि अवहह। मुदा अंजलि गैहना गै
 गेठि।

"यै गउयै नेगे आवी?" ठाठवावूक पत्नी- यगद्दूकठा दठानक नयियाँसँ वण्ठी।

गप्पन ठाठवावू अगीतसँ नकैठ वनूतमागमे एठाह। पत्नी पुछठकैग-

"की सोयैत नहिए। गीन-यानिवेन हाक देवौ गप्पन जा कऽ अहाँक गक् पुण्ठा। "

ठाठवावू वण्ठा-

"दू वनूप्प पहिछिका वात भोग पड़ गेठ नहए। "

तैपन यगद्दूकठा वण्ठी-

"आव पहिछिका वात सोयिकऽ की हएत। सोयवाक अछाति कनयिं क वागेमे सोयियौ। ओकन पहाड़ सग गनिगी केना कटनऽ। "

ठाठवावू वण्ठा-

"कनयिं कें देयै छी तँ वड़ पीड़ा होइत अछा। अप्पने गूगूवावू पाहुन गेठा हेन। ओहो ग्रह वात कहै छथ। कहैथे जे नविदिनि अवै छी तँ ऐ वातपन व्रियात कनवा। कनेक ठामे आऊ एकटा व्रियात पुछऽ याहै छी। "

यगद्दूकठा ठा आविपुछठप्पनि-

"कहू की पुछए याहै छी। "

ठाठवावू वण्ठा-

"हम सोयै छी जे कनयिं कें दोसन वआह कऽ दिए। "

यगद्दूकठा वण्ठी-

"हमहूँ तँ ग्रह सोयै छी। मुदा जातिसमाज मागत। वड़का वपेड़ा गढ़ कऽ देत। दोसन, कनयिं सेहो मागत कनिहा। "

ठाठवावू वण्ठा-

"हमना जातिसमाजक कोनो डन नै अछा। जे हेतै से देय्य ठेव। अहाँ कनयिं कें समहावयौ। जाँ ओ वात मानिजाएत तँ जेतेक प्यन्य कनए पड़ए, एकटा योग्य ठड़का प्योजिकऽ वआह कऽ देव। "

यगद्दूकठा वण्ठी-

"ठड़का तँ सोहरेमे अछा पनसु आएथो नहए। "

ठाठवावू वण्ठा-

"કેં છીં ઓ ઇડકા। કળીં શુશિા કડ કહૂં ને। "

યન્દુનકભ વખભ-

"અભેક માગભિં આભેક। પનસૂ આભે ૧ભે। કહૈન ૧ભે ખે અભે સપ્નાભે
વહાભેક યટિંબી નકિભન। "

ભાભવાવૂ વખભ-

"આભેક વશિા કનૈ ભેભ નાખી ભન નખ્ખને ને। "

યન્દુનકભ-

"અભેક વાન ઓ માનખખાન। કભિક નં મૈટુનકિ ધનિં ઓ અપને ભેગમ ૧ભિં
કડ પઢભક ભેન। ભમના વસિવાસ અભિં, ઓ અભેક વાન નૈ કાટન। "

ભાભવાવૂ વખભ-

"સે નં વીભડ કનૈભે સેભે પય્યાસ ભખાન ટકા દેને ૧ભિં। આભેક કભેને ૧ભે
કમાભ ભખવ નં દોવન ભગા કડ પૈસા આપસ કડ દેવ। "

૩ ગપ-સપ્પ ભેશે ૧ભે નખ્ખને સાશ્વકભિંસ આભેક આભે આ ભાભવાવૂ આ
યન્દુનકભકેં ગોડ ભાભક।

ભાભવાવૂ વખભ-

"આવહ! આવહ! વહુન દનિ ખીવહ। અખ્ખને નેમે યન્ય કનૈન ૧ભિંભિં। કહડ
વહાભેવભ યટિંબી મેટભહ। "

આભેક વાખભ-

"હં મામાખી। આશ્વે મોનમે ડાકપડિન યટિંબી દડ ગેભ ભેન। અભે ગામક ભાં
સૂકૂભે વહાભે મેભ ભેન। આં નીક દનિં છીં નં આશ્વે યોગદાન કનૈવ। સોયભી
ખે મામા-મામી ભમના ભેભ ભોક કેભેન પભિં હુનકા સવભક આશીનવાદ ભેવ
નખ્ખન ખ્ખાંશન કનૈવ। "

યન્દુનકભ વખભ-

"મગલાન નીક કનૈથુન। "

આભેક વાખભ-

"મામા ખાવે કોનો દોસન વેવસૂથા નૈ મડ ખાન નાવે અભેગમ ૧ભિકડ સૂકૂ
કનૈવ। "

ભાભવાવૂ વખભ-

"एमे दोसरा वेवस्थाक कोन प्यगता छै, जावे यनी नामगगन हरसूकूमने रहवह, अहिगम रहिकऽ सूकूम कहीअ। हमना की कोनो वेटा-वेटी अछी एकटा पुनोहु अछी सोयै छी ओकनो कोनो नसूना उगा दए। गोटे वेटा बुहवह। जेहने वेटा तेहने भागनि। "

आथोक वाजि-

"भामा हमहूँ वेटा वगिकऽ अपने सवहक सेवा कनव। "

ठाठवाव वजि-

"अयुछा पहनि जठपै कऽ एह आ सूकूम जा कऽ योगदान दऽ आवह। "

आथोक वाजि-

"भामा हम सुगान-जठपै कऽ बेने छी। हँ, टश्चिनिमे आविकऽ पेगार प्या जाएव। यानी वजे आपस गाम यथि जाएव। काउहि दिस वजेमे वोगिया-वसिना उऽ कऽ आव। "

ठाठवाव आ यगदकठा एकके वेन वजि-

"वड वढियि। "

आथोक यठ गेवा।

ठाठवाव वजि-

"अहाँ नागमि कगयिंकेँ समहावयिओ, जाँ ओ भागिजेती तँ हम आथोकसँ वाग कनव। हमना पूना वसिवास अछिआथोक हमन वाग बै टान। "

यगदकठा वजि-

"थीक छै। हम कगयिंकेँ वाग कनवै। "

नागमि जयन दुनू सासु-पुनोहु पेगार प्या गयिन मेथि तँ यगदकठा अंजलिसेँ कहउपनि-

"वेटी हम अहाँसँ कहि कहऽ याहै छी। जाँ मनमे दुप्य बैहुअए तँ कही। "

तैपन अंजलि वजि-

"मं एहेन कोन वाग छै जे अहाँ कहव तँ हमना मनमे दुप्य हए। ऐदुगयिंकेँ अहाँ सगकेँ छोड़हिमना के अछी। हमन भास्यो-वापदुगयिंकेँसँ यथियि गेवा। "

ई कहि अंजलि काए गेवा।

यगदकठा वजि-

"वेटी कागू जुगो। हमन वाग ययिगसँ सुगू। वावूणी कहै छथो जे कनयिं एहेन पहाड़सग जगिगी केना काटनी। "

अंजली वज्रि-

"मंजो, हमना ग्राग्रमे जे वपिठ छठ से भेठ। दोसन उपास्ये की अछी। "

यगद्वैक वज्रि-

"वेटी उपाय तँ छै, मुदा अहाँ भागी नव। "

अंजली वज्रि-

"की उपाय छै मंजो, कनी सुनिछि कऽ कहू गे। "

यगद्वैक वज्रि अंजलीक माथपर हाथ सुजैत वज्रि-

"वेटी, हम आ अहाँक वावूणी याहै छी जे कोनो योग्य ठऽकासँ अहाँक वञ्छि कऽ दी। "

तैपन अंजली कनैत वज्रि-

"मंजो, हमनासँ कोन एहेन गठनी नऽ जेठेन जे अहाँ सभ हमना ऐ घनसँ गगवए याहै छी। गहि माँजो गहि, हमना अहाँ सभ अपने यनासमे जगह देगे नहू। "

ई कहैत अंजली आओन कागए छाथी।

यगद्वैक वज्रि समहावैत वज्रि-

"नै वेटी अहाँसँ कोनो गठनी नै भेठ हेन। आ ने ऐ घनसँ हम सभ अहाँकें गगवए याहै छी। अहाँकें हम सभ पुनोहू नै पुनऽअपन वेटी पुनऽ छी। कहू वेटीक दुप कोनो भी माए-वाप देप सकैत अछी?"

अंजली वज्रि-

"मंजो, हमना ग्राग्रमे पतिक सुप वपिठ नैत तँ हमन पति हमने छ। ने नहिए। ओ कएक गगवानक घन यठ जेठ। "

यगद्वैक वज्रि-

"देपू वेटी, जे नऽ जेठ तेकना वसैत जाऊ आ जे कहै छी तैपन वयिअ कनू। हम सभ अही वासते ने कहै छी। कहू हमना दुगू पानीक वाद अहाँकें देपएवछ के नहए। हम सभ पाकठ आम भेठै। कयन जानसँ पसकिऽ यनीपन अवाजाएव तेकन कोन ठेका। "

अंजली-

"नहिं मंजली, अहाँ सजकें होइत अछि जे अंजलीसँ कोनो उन्गैस-वीस गे नऽ जाए। तँए अहाँ सज हमना अपनासँ अछा कएए याहै छी। "

यन्त्रकला-

"नै वेटी से वात नहि अछि। अय्छा आव सुनिहू, वऽ नागि नऽ गे। काँह भोने वात कए। "

दोसर दनि भोने छववावू याह पीवए अंगे एछा। ओना, आन दनि ओ दंगेपन याह पीवै छथ। मुदा आर अंजलीसँ कहि गप कएए याहै छथ। तपन छववावू अँग एछा तँ पत्नी यन्त्रकला एक गविस पाणिआनिकऽ देवकै आ पुतोहूँ कहथनि-

"वेटी, वावूजीसे याह गेने अवयौन। "

अंजली याहक गविस गेने एषी आ छववावूक हाथमे याहक गविस दैत वजली-
"वावूजी, हमनासँ कोन अपनाय नऽ गेथै जे अपने सज हमना अछा कएए याहै छैथ। "

अंजली कानए उजली।

छववावू वजली-

"नै वेटी, अहाँसँ कोनो अपनाय नै भेठ हेन। "

अंजली-

"तपन मं कएिक हमना पाछं हाथ योऽ कऽ पऽछ छथनि?"

छववावू वजली-

"एकटा वात कहूँ तँ वेटी, हम सज अहाँकें वेटी वुहै छी कि पुतोहूँ?"

अंजली वजली-

"से तँ अपने सज हमना वेटी वुहै छी। आ वेटीए एक वं वंहाओ कए छी। "

छववावू वजली-

"तपन अहि कहूँ जे कयौ माए-वाप अपना वेटीक दुप देप सकत? देपू वेटी, अहाँ अपना पुसी प्यानि नै तँ हमने दुनू गोनेक पुसी प्यानि हमना सवहक वात मागिथि। हमना सवहक माथसँ मात उगाइ दथि। "

वजली-वजली छववावू कानए उजली। हुनका ओम्हिसँ दहो-वहो गोत जाए

ਭਾਓਨ।

ਭਾਓਵਾਥੂੰ ਕਹੈਣ ਦੇਖ ਅੰਯੀ ਸੇਹੇ ਕਾਨਏ ਭਾਓ। ਓ ਕਹੈਣ ਵਯੀ-
"ਵਾਥੂਜੀ, ਹਮਾ ਸੋਧੈਓ ਕਛਿ ਸਮਝ ਦਭਿ। "

ਤੈਪਾ ਭਾਓਵਾਥੂ ਵਯੀ-

"ਵੇਟੀ, ਗੀਕ ਯਕੁ ਸੋਧਿਓਭ। ਹਮ ਸਭ ਕੋਨੋ ਵੇਯਾ ਵਾਹੁ ਨੈ ਕਹੈ ਥੀ। "

ਅੰਯੀ ਨਾਮਿ ਯਯਨ ਸੁਨਾਏ ਗੇਥੀ ਤੰ ਫੁਲਕਾ ਗੰਗੇ ਨੇ ਹੋਭਨ। ਓ ਸੋਧਏ ਭਾਓ।
ਅਯਨ ਵੀਸੇ-ਵਾਹਸ ਵਧੁ ਅਮੇਯੇ ਭੇਥੇ ਹੇਨ। ਏਟਾ ਪਛਾਡੁ ਸਭਕ ਯਯੀਯੀ ਕੇਨਾ
ਵਾਯਾਵਾ। ਸਾਸੁ-ਸਸੁਨਕ ਮਾਥਾਕ ਵਾਹੁ ਹਮਾ ਕੇ ਦੇਖਯਾਓ ਕਾਨਾ। ਅਪਨ ਮਾਏ-
ਵਾਧ ਵੇਟਯਿਕ ਸੋਗੇ ਸੋਗਾ ਕਸ ਫੁਲਯਿਕੁ ਸੈਂ ਯਥੇ ਗੇਥੀ। ਯਾਧ-ਯੋਯਾਧ ਕੇਨਾ
ਫੁਲਯਿਕੁ ਮੇ ਭੇਥੇਏ ਪੋ ਹਮਾ ਹਯਾ। ਅਯਨ ਗਵ-ਧਵ ਥੀ ਤੰਏ ਥੋਕ ਕਛਿ ਨੈ ਵਯੋਯਾ
ਅਥੀ ਕਾਥੁਲਿੰਗ-ਗੰਗਕ ਅਵਥੁਟ ਭਾਯਾਯਾ। ਯੀਅਵ ਹਮਾ ਕਸ ਦੇਨ। ਮੋਨ
ਪਭਓਨ ਗੈਨਾਕ ਵਾਹ। ਯੁਟੀਨਾਵਾਥੀਕ ਪਾਇਓਯਿਯੇ ਸਭਕ ਫੁਲਧਟਨਾਮੇ ਮਾਯੀ
ਗੇਥੀ। ਓਕਾਨਾ ਫੁਟਾ ਵਾਥੀ-ਵਧੁਯਾ ਥਯ। ਗੀਸ-ਵਾਧੀਸ ਵਧੁ ਅਮੇਯੋ ਹੋਯ। ਓ
ਸਾਸੁਯੇ ਨਹੀਯੇ। ਕਛਿ ਦੰਗਕ ਵਾਹੁ ਗਾਮਯੇ ਹਵਾ ਭਯੈਯੇ ਪੋ ਯੁਟੀਨਾਵਾਥੀ ਦੀਅਨ
ਸੰਗੇ ਸੁੰਧਥੇ ਅਥੀ। ਏਕਯੇ ਓਕਾਨਾ ਪੇਟਯੇ ਦਾਏ ਭਯਾਯੇ। ਗਾਮ-ਧਨਕ
ਭੁਕੁਟਾਸੈਂ ਦੇਯੀਥਕ ਮੁਢਾ ਗੀਕ ਨੈ ਭੇਥੀ। ਥੋਕ ਸਭ ਕਹਥਕੈ ਪੋ ਸਭਸੈਂ ਗੀਕ
ਦਾਯੰਗੇ ਯਥੀਯਾਏ। ਓਨਾਏ ਅਥੁਨਾਸਾਭੁਕ ਕਾਨਾ ਥਹਿ ਸਭ ਪਾਯਾ ਯਥੀਯੋਨਾਏ।
ਓ ਦੀਅਨਕੈਂ ਸੰਗ ਕਸ ਰਥਾਯਾ ਕਾਵਸ ਦਾਯੰਗਾ ਗੇਥੀ। ਏਹਨ ਗਾਮਯੇ ਹਵਾ ਭਯੈਯੇ
ਪੋ ਯੁਟੀਨਾਵਾਥੀ ਵਧੁਯਾ ਗੰਗਿਯੈਥੇ ਦਾਯੰਗਾ ਗੇਥੀ ਹੇਨ। ਅੰਯੀ ਆਗੁ ਸੋਧਥਕ ਪੋ
ਧਟਨਾ ਯੁਟੀਨਾਵਾਥੀ ਸਾਥੇ ਯਾਸ ਨਹਥੇ ਕਾਥੁਲਿੰਗਨੋ ਸਾਥੇ ਯਾਸ ਸਕੈਏ। ਦੋਸਨ
ਵਾਹੁ ਏ ਸੋਧਥਕ ਪੋ ਕੇ ਕਹਥਕ ਕਾਥੁਲਿੰਗਨਾਸੈਂ ਕੋਨੋ ਭੰਗੈਸ-ਵੀਸ ਧਟਨਾ ਯਾਸ
ਯਾਏ ਤੰ ਫੁਲ ਕੁਥਕ ਗਾਕ ਕਟੀਯਾਯਾ।

ਅੰਯੀਕ ਏਕ ਮਨ ਕਹੈ ਪੋ ਸਾਸੁ-ਸਸੁਨਕਕ ਵਾਹੁ ਮਾਯੀਥੀ। ਦੋਸਨ ਮਨ ਕਹੈ ਸਾਸੁ-
ਸਸੁਨਕ ਵਾਹੁ ਮਾਯੀਯੋ ਦੋਸਨ ਵਸ਼ਿਯਾ ਕਾਨਵ ਤੰ ਯਾਨੀ-ਵੇਨਾਦਨੀ ਵਭਕਾ ਵਧੇਯਾ ਗਯ
ਕਾਨਾ। ਸੁੰਧ ਮਨ ਕਹੈ ਪੋ ਗੈਨਾਕ ਥੋਕ ਕਹਾ ਪੋ ਥੀਨੀਕੈਂ ਯਾਵਾਨੀ ਵਾਦਾਸ ਨੈ ਭੇਥੇ
ਤੰਏ ਦੋਸਨ ਵਸ਼ਿਯਾ ਕਸ ਥੇਥਕ। ਸਏਹ ਵਾਹੁ ਸਾਸੁਨੋਕ ਥੋਕ ਕਹਾ। ਕੀ ਕਨੀ ਕੀ
ਗਹੀ। ਸੁੰਧ ਮਨਯੇ ਹੋਯ ਪੋ ਸਭਸੈਂ ਗੀਕ ਪੋ ਮਾਫੂਨ ਯਾ ਕਸ ਮਾਯੀਯਾਯ। ਸੁੰਧ ਸੋਧਏ
ਪੋ ਮਾਯੀਯੀ ਯਾਏਵ ਤੰ ਥੋਕ ਕਛਿ-ਨੇ-ਕਛਿ ਅਵਥੁਟ ਭਾਯਾਯੇ ਦੇਨ।

प्रएह सभ सोयैत-सोयैत अंजलि नीनूत पड़ि गेथ।
 सपनामे देखैत जे पति व्रिषिक एत हेन। ओ तनिगा हंडा हाथमे नेने छैथ।
 अंजलि हुनका गोड़ उठाकैत। तैपन व्रिषिक आत्सीवाह दैत कहैत- पुस
 नहू। अंजलि व्रिषिकसँ कहैत- हम पुस केना नहव। अहाँ तँ हमना उठासँ
 गवागक घन यथ गेथौ। हम तँ व्रिषिवा मड गेथौ। कहू तँ व्रिषिवा केतौ पुस
 नहथ हेन। तैपन व्रिषिक वाजत- देखू अंजलि, अहाँ हमना माए-वावूक वात मागि
 छथि। माए-वावू अहाँक हाथ देख वड़ दुखी छैथ। दोसनी वात अप्पन अहाँक
 पहाड़सभ जनिगी काटैत अछथि। वाहमे ठेक नंग-नंगक अवधूट उगारत।
 तेसनी वात जायैत अहाँ दोसनी व्रिषिवा नै कड सेव हमना आत्माकेँ सांगति नै
 भेटत। हमनी आत्मा मटकैत नहव। कहू अंजलि अहाँ हमना आत्माकेँ सांगति
 याहै छी किनहीं।

तैपन अंजलि कहैत वजत- हँ याहै छी।

व्रिषिक वाजत- तप्पन माए-वावूक वात मागवै ने?

अंजलि कहैत वजत- हँ मागव।

अच्छा हम जाइ छी। अहाँ अपना वातपनी कायम नहव।

व्रिषिक यथ गेथ।

"कनयि□! कनयि□!! की भेट कएि कबै छी। " यन्तृकथा अंजलिकेँ देख
 पकैड़ ओठवैत पुछैत-

अंजलि नीनूत पड़ि गेथ।

"नहिमि□ कहाँ कबै छी। एकटा सपना देखै छेथि। " -अंजलि वजत।

यन्तृकथा-

"एह, अहाँ तँ पूव कहै छेथि। अच्छा कहू सपनामे की देखैत जे एना कबै
 छैथ। "

अंजलि सपनाक सभ वात सासुकेँ वता देत-

भोनामे यन्तृकथा नौतुका सभ घटना ठाठवावूकेँ वता देत- तैपन ठाठवावू
 पुछैत-

"कनयिसँ पुछैत- नै जे आव की कनी। अपना सवहक वात मागती कि
 नहि?"

यन्द्नकथा वण्ण-
 "हम तँ गै पुच्छयैग हेग, मुदा हमना वसिवास अछि जे नौतुका सपनासँ ओ
 अपन सवहक वाग मागिजोगी। यँ अँगनेमे याहो पयिब आ पुछयौ छेवः। "

ठाठवावू वण्ण-
 "अहाँ यँ हम दामैग केने अवै छी। "

दामैग-कुँठा-आयमग कऽ ठाठवावू अँगना एठा। यन्द्नकथा अँगणिसँ
 कहय्यनि-

"वेटी वावूजी-छे याह वना दियौग। "

अँगणि याह वना कऽ ठाठवावूकेँ देमए एठयनि तँ ठाठवावू याहक कप पकड़ैग
 पुछय्यनि-

"वेटी, हमना गपपन अहाँ की सोयथिए?"

अँगणि वण्ण-

"वावूजी, अपने सवहक जे आदेश होतै, पाठन कएव मुदा हमनो एगो सन्तान
 अछी। "

ठाठवावू वण्ण-

"वावू, अहाँक कोन सन्तान अछी। "

अँगणि वण्ण-

"अपने हमना जऽ उड़कासँ वसिह कएव हुनका अहाँक वेटी वगैकऽ अहाँ
 सवहक सेवा कएव पड़तैग। "

ठाठवावू कहय्यनि-

"हमना अहाँक सन्तान मंगूनी अछी। एकटा वाग कहू जे आठोक-दे अहाँक की
 व्रियाँ अछी?"

तैपन अँगणि वण्ण-

"वावूजी, हमन कोनो व्रियाँ नही। अपनेक आदेशक पाठन कएव। "

एठावा दनि दस वजे दनिमे आठोक अपने वोनिया-वसिहान उऽ कऽ नामगगन
 मामा ऐशम पहुँचवा। सग समाग नय्यिओ सूकूथ यठ गेवाह।

आठोक पुगानशिथ व्रियाँक पुक्क। ओ व्रिकसँ छह मासक छोट। देयवा-
 सुगवामे वऽ नीक। नामि जय्यन दुनू मामा-मागनि पेगार प्या कऽ

द१व१११११ सु१ै१े ए१ा १ँ आ१ेक व१११-

"भा१ा १ँ व१ि१ि१ी गॠि, १ँ एॠ व११ कॠी। "

१ै११ १ाॠवावू कॠॠ११ि-

"एॠे व१ि१ि१ाक को१ व११ छ३। १े कॠवाक छॠ ग१ीक कॠॠ। "

आ१ेक व१११-

"भा१ा, अ१११ी गॠीकें वॠिॠ कॠिॠि१ी। "

ॠाॠवावू व१११-

"के कॠ१ ओॠॠासँ वॠिॠ। १ोॠा ग१ै१ॠे को१ो १ो१११ ॠ१का हुअ १ँ कॠॠ। "

आ१ेक व१११-

"ॠ१का १ँ एॠ-११-एॠ गेट१ मुॠा अ१११ी गॠी १ै१११ हे१ी १११ गे। "

ॠाॠवावू व१११-

"ई हॠ१ा११ छो१िॠिॠ। अ१ॠा ई कॠॠ १े १ोॠ१ की वॠि१ा१ छॠ अ१११ीक १ॠ१ा?"

आ१ेक अॠ१का३१ व१११-

"भा१ा, अॠँक व११ गै वुॠिॠकॠै, कॠी अ१ॠिॠ कॢ कॠू। "

ॠाॠवावू व१११-

"१ो अ१११ीसँ वॠिॠ कॢ सॠै छॠ?"

आ१ेक व१११-

"भा१ा, हॠ१ा सो१वाक सॠ११ ॠिॠ। मुॠा हॠ१ा सो१ॠासँ की हॠ१। अ१ॠे हॠ१ा वावू१ीसँ १ुछॠिॠिॠ। हु१क१ केॠे१ वॠि१ा१ छै१। "

ॠाॠवावू-

"१ीक छै, हॠ १ाहु१सँ व११ कॠवै१। "

१ॠिॠिॠ १ॠा१: आॢ व१े गू१ूवावू १ाॠ१११ एॠा। आ१ेक सॠिॠिॠ ॠिॠ १ाॠा व१े गॠॠ १ॠिॠिॠ छॠ। १ाॠ १ीॠा १छा३१ ग११ सु१ू केॠे१।

गू१ूवावू व१११-

"ओ३ ॠिॠ कॠॠे १ॠी १े कॠ१िॠक १हा१स१ ११ि१ी के१ा कॠ१३, ऐ व१११ वॠि१ा१ कॠू। "

ॠाॠवावू-

"अपनेक की व्रियां अच्छी?"

गूगुवावू-

"कनियिं क दोसन वश्राह कनी दियौ। "

ठाठावावू-

"एक तँ जाति-बेनादनी ऐ पुनसंगपन वडका वपेड़ा पपड़ा कनी दित। कएक तँ अपना सवहक जातिमे वधिवा वश्राहक यैठेन बै छर। मुदा तेकन हमना यगिना बै अच्छी मुदा कोनो योग्य ठडका अंजलीसँ वश्राह कनी?"

गूगुवावू-

"कएक बै कनी। ओकनामे की कमी छर। पढ़ै-ठपिठ अच्छी देखवा-सुगवामे सुगबैनी आ सुशीठ सेहे अच्छए। "

ठाठावावू-

"कमी तँ ठीके बै छर। नव एकटा वात छै। "

गूगुवावू-

"कोन एकटा वात?"

ठाठावावू-

"सगळै अपन-अपन सोय अच्छी सवहक अपन-अपन व्रियां अच्छी नयन एक वात। "

गूगुवावू वयियेमे वजठा-

"कोन वात?"

ठाठावावू-

"अहाँ अपना आठोकक वश्राह अंजलीसँ कनी सिकै छए?"

आव तँ गूगुवावूक वोठनी वग्न ढाड गेठेन। ओ गुम्न ढाड गेठ। सत् पुछू तँ ओ अकवकाए ठाठा। सपनोमे गहि सोयने नहैथ जे ठाठावावू हमना एहेन पुनसंग पुछा दित।

ठाठावावू, गूगुवावूकें युप देख आगं वजठा-

"एना युप कएि ढाड गेठौ। जाति-बेनादनीक उन होइए कनि?"

तैपन गूगु वावू वजठा-

"बै से वात बै छर। "

ठाठवावू-

"तप्पन?"

तावेतामे गूगूवावू अपणाकें सम्हाना गेबे छथ। वज्ज-

"हमना एक सप्ताह सोयैक मौका दथि आ दोसरा वात ऐ व्रियानपन अहाँक वहनि प्राणी आठोकक माएसँ सेहो व्रियान पड़न कनि। "

ठाठवावू-

"ठीक छै, एक सप्ताह गै दस दैनिक समय दइ छी। व्रियाना छैव जाँ व्रियान भऽ जाए तँ पवन कऽ देव। "

गूगूवावू-

"वड़ वढियि। "

गूगूवावू जठमै प्या कऽ गाम ब्रदि भऽ गेथ। नसुतामे सोयए ठाठ। कहू तँ, एहो होइ। नाह देया तँ आगू यथ। ई कोन वात भेथ। हम जे कहथ्यैन जे कनियि क दोसरा वसिह कनी दियौ तँ ठाठवावू ई ठेठ हमने गनैहमे वानहैथे व्रियान कनए ठाठ। दू-दूटा कुमाना वेटी अछी। जात-वेनादनीवथ तँ जोगाइ हनाम कऽ देत आ वेटीक वसिहमे तँ गानी सुनीशानी उठवए पड़त। वाप ने वाप, ठाठवावू तँ वड़का आँसमे हमना दथि याहै छैथ। वुहँए, आठोककें पढ़वै-अपियेमे हुनकर वड़ प्रोवादान छैन एकन भागे ई नहि गे जे ओकरा ठाठमे सुँस ठाठ दियौ। ई सभ सोयैत गामपन पहुँचथ। पत्नी सुठेयना ठाठ एठैन तँ पत्नी मुँहक सुनपीसँ वुहँ गेथि जे कछि ओहनीमे पड़ि गेथ हेल। पुछथपनि-

"भन! मग वड़ पसठ देयै छी। की भेथ?"

तैपन गूगूवावू वज्ज-

"आठोकक वदथि नामगान सूकूठसँ कनवए पड़त। वदथिमे तँ समय ठाठ, मुदा ओकरा डेना मामा ओइमसँ हटा दोसरा जगह नापए पड़त। जाँ कोनो वेवस्था गै हएत तँ सूकूठमे डेना नपथि। "

तैपन पत्नी पुछथकैन-

"कएक, मामा ओतए नहैमे कोन दक्कन भऽ गेथ। ठाठवावू भैया अपना वेटा जक भानै छथनि। ब्रह्म मैटनकि घनी अपना घनपन नपि पढ़वो केथपनि

आ वोएऽ सेहे कजेठे ढौआ देउपनि। "

गूगुवावू-

"तँए ने आठोककें गजदैनमे शुं स उगावए याहै छथनि। "

सुठोयना-

"की शुं स? गै वुहवौ कनी सुनछि कऽ वापू। "

गूगुवावू-

"ठाठवावू याहै छथनि जे आठोक हुनका पुतोहु अंगठिसँ वश्राह कऽ ठाँए। "

सुठोयना-

"एहेन अगठिसँ हम अपना वेटाक वश्राह कनव! जे वश्राह होशे सँ एकेँ प्याए ठेठकै। कहूँ तँ ई मैयासन केहेन भेटै। जँ पुतोहुकेँ दोसरे वश्राह कनए याहै छथनि तँ की दुनयिंमे उड़काक आछन नऽ जेठै हेन जे एहेन कनमजगठिहिकेँ हमना वेटाक कपानमे साटए याहै छथनि। की मैया अहाँसँ कहि कहि कहै हेन। "

गूगुवावू-

"हँ, हमही कहिछै जे कनयिं क दोसरे वश्राह कनदिथौन, तैपन वजगठि अहाँ आठोकक वश्राह अंगठिसँ कऽ सकै छी। "

सुठोयना-

"अहाँ की कहिछै?"

गूगुवावू-

"हम की कहिछै। हम कहिछै अहाँक वहनिसँ व्रियागि कऽ समाद पठा देव। "

सुठोयना-

"नहि-नहि, हम अपना वेटाक वश्राह एहेन अठकष, हनाशंप्पसँ गै कनव। "

गूगुवावू-

"आठोककें कहियौ अपन गहैक वेवस्था इस्कूठेपन कनछि। ठाठवावू ओतए नहव गेक नर होन। "

सुठोयना-

"हँ, गेके कहै छै। "

ठाठवावू हंहापुन गेठ नहैथ। स□हमे गामपन एठा तँ आठोककें दठागपन गे
देप्पैग। ओ पत्नी यन्द्नकठाकें पुछठप्पनि-

"मन, आठोककें गे देप्पै छै। गाम गेठ हेन की?"

तैपन पत्नी यन्द्नकठा वण्ठी-

"गह, गाम गश् गेठ हेन। ओ अपन सग समान ठस कऽ सूकूठपन गेठ हेन।
कहठक ठो सूकूठेमे डेना गप्पव आ ओतै यटपिा सगकें पढेवो कनव आ प्पागा
वगा कऽ प्पेवो कनव, नहवो कनव। "

ठाठवावू-

"हूँ! तँ ई वाग छी। वुह गिठै। "

यन्द्नकठा-

"की वुह गिठै?"

ठाठवावू-

"पाहुनसँ पुछगे नहैएन ठो अहाँ आठोकक वञ्छिह कनपिाँसँ कन सिकै छी। "

यन्द्नकठा-

"तँए आठोक अपन डेना अगए-सँ सूकूठपन ठस गेठ हेन। माए-वाप सोयगे
हेतै ठो मामा-मामी ओइगम नहए तँ हो-ग-हो मामा-मामीक वाग मागि वञ्छिह
कऽ ठअिए। तँए आठोककें कहठक हेन, डेना सूकूठपन ठस ठेवा ठेठ। "

ठाठवावू-

"गाए दपिौ। दुगपि□ वडिटा छऽ। "

एक दनि ठाठवावू यौकपन याह पीवैत नहैथ। गप्पगे मंगठ आ जंगठ अपनमे
गप कतैत नहए। ठोकना ठाठवावू सुनए ठाठा।

मंगठ-

"है जंगठ भाप, सुनै छी ठाठवावू पुनोहुकें दोस-न वञ्छिह कनए याहैए। "

जंगठ-

"हँ है भाप। हमहूँ सुनठैए हेन। हे भाप, वेयानीक दोस-न वञ्छिह नऽ ठेतै तँ
वुहक ओकन जीवग सुष्ठुठ नऽ ठेतऽ। कहह, पहाड़ सग जनिगी केना
काटना। "

मंगठ-

"है भाय, कहलक हेन तँ गीके मुदा हमना तँ होइए जे ठाठवावू पुनोहुक दोसन वश्राह कनीअपना यन-सम्पैक सुनकषा याहै छैथ। "

जंगल-

"की सुनकषा, गै वुहउग्रिह। "

मंगल-

"देयह जावे यनकिनयिं नहन गावे यनीठाठवावूकें जते गी यन-सम्पैक छै सनकें वानसि वरह छी। ठाठवावू याहैए जे कनयिं क दोसन वश्राह कऽ सगटा यन-सम्पैक गानगिकें छपि दी आ वुहयि (ठाठवावूक पत्नी) याहैए जे कहि जमीन अपना गानीजकें दी। "

ई सन वाग सुनि ठाठवावू छगुनगामे पड़िगे। पानो गै जेथैन आ सोहहे अंगल एठ आ पत्नी आओन पुनोहुकें तैयान होइए कहयनि।

यगदकठा पुछयनि-

"की वाग छऐ। हम आ कनयिं तैयान गऽ कऽ केए जाएव?"

ठाठवावू वजल-

"हंहापुन नजष्टनी अँछसि यठव। जेतक जमीन-जग्था अछि सन कनयिं क गामे छपि देव। "

तैयन अंगली वजल-

"कोन एहेन वाग गऽ जेथै हेन जे वावूजी अपन सन गान हमना माथपन दऽ नह छथनि?"

ठाठवावू-

"अहाँ गै वुहवै। अहाँ दुनू गोने जठेसँ तैयान गऽ जाउ, गावे हम टेम्पूवठाकें वजौने अवै छी। "

अंगली-

"वावूजी, अपने जे हमना जमीन छपि देव नयन जे कयिँ हमनासँ वश्राह कनीओ यने ठेगसँ कनी। तँए हम गै याहै छी जे अपने हमना गामसँ जमीन छपि। "

ठाठवावू-

"ई वाग गोपनीय नहन। प्यारी हम, अहाँ आ अहाँक सासु ई वाग वुहनी। "

ઠાઠવાવૂ હંદાનપુત્રી પા ખોતેક મી યઇ અથવા અયઇ સમ્પૈત છેલેન સઝ અંખીક
ગામે કડ દેવપ્પનિ। આવ ઠાઠવાવૂ અંખીક છેઇ ઉડકા પોખેમે ઠાગીગેવા।
હુનકા સાસુનસં સાન સમાદ દેઠકૈન ખે એકટા ઉડકા છર। ઓ સાસુન ગેવા।
ખપ્પન ઉડકાક વાગેમે પાના કેઠપ્પનિ તં પાના યઇલેન ખે ઉડકા વધિન છેથ।
ઉમેન ૪૫-૪૬ વનપ્પ। પહિલ્લિકી પાગીમે એકટા વેટા આ દૂટા વેટી છેથ।

ઠાઠવાવૂકે નડવાક ઇલેન મગાનપત્ર યઇ ગેલેન। સાન ખે સમાદ દેને નહેન
તનિકા વડ ગાંખન કેઠપ્પનિ આ વનિ પેનાર પેને સાસુનસં યઇ લલા।

ઠાઠવાવૂ વડ યનિતારિ નહા લાલા। હુનકા મનમે નહેન ખે કોનો યોગ્ય ઉડકાસં
અંખીક વશિહ કરી। તૈસંગ અંખીક સનૂત સેહે મન નહેન। અલે
નાનમમે છલા કાલેક દનિ હુનકા મમયિત્રી માલ- સ્થામખી લલા। કુસલ-
કુષેમ મેલ। ઠાઠવાવૂ કહલપ્પનિ ખે આર નૂકાખાડ। નાનમિ કલ્લિ ગપ્પ
કનવાક અલ્લિ સ્થામખી નૂકાગેલા।

નાનમિ ઠાઠવાવૂ સ્થામખીકે અંખીક વધિલેક યન્ય કેઠપ્પનિ। સંગે અંખીક
સનૂત સેહે કહલપ્પનિ। ઠાઠવાવૂ સ્થામખીકે કહલપ્પનિ-

"ખે અહાંક ગખેનમે કોનો ઉડકા અલ્લિ તં કહૂ। ઉડકા યોગ્ય આ સુસીલ હેવાક
યાલિ। યન-સમ્પૈત ગહિયો હેર તૈયો કોનો વાન ગહી। "

સ્થામખી કહલકૈન-

"હમના ગામમે એકટા ઉડકા છે। ગાઓ અલે વલિસ, મુદા અલ્લિ વડ ગનીવ।
માલ મસોમાન અલ્લિ। ઓના, ઉડકા અમલ પાસ કડ શલ્કિષા મલિન છેથ।
ઉડકા વડ સખાંખન આ સુસીલ છેથ। "

ઠાઠવાવૂ-

"હુનકા માલક કેલેન સોમાલ છર। કી ઓ કનિયોસં અપન વેટાક વશિહ કનૈલે
તૈયાન હેની?"

સ્થામખી-

"મડ ખેવાક યાલિ। "

ઠાઠવાવૂ-

"ગીક છે, અહાં ખાડ। અહાં ઉડકાક માલસં ગપ કરીવ। ખપ્પન ઓ તૈયાન મડ
ખેની તં સમાદ દેવા। "

શ્યામળી-

"ઠીક છરૂ. "

શ્યામળી વહિંગ મળે ગામ ગેઠા। ગામમે વ્રકાસક માએકે સમ ગપ કહઉપ્પનિ।
વ્રકાસક માએ સવપ્પં અનુમત્રી છથાએ ખે એકટા વ્રધિવાક કી ખનિગી આ કેહેન
દશા હેશા અછ્છા વ્રકાસક વ્રશિહ અંખીસેં કનૈઠે તૈયાન મડ ગેઠી।
વ્રકાસકેં વાળ કેઠેન તં ઓ વખા-

"ખે માએ હમના વોરૂન-વુળા કનિએમએ પાસ કનૈઠક ઓ ખે કહા સે કનવ। "
વ્રકાસક માએ સુમદના તોસે વનુપ્પક ઉમેનમે વ્રધિવા મડ ગેઠ છેઠી। અપ્પન
હુનક ઉમેન પય્યાસ-એકાવન વનુપ્પ હેતૈન। વ્રધિવા નાનીકેં કોન-કોન વેદના
સહપ પડે છે સે અનુમત્ર છૈનહે। તંએ ઓ અપના વેટાક વ્રશિહ વ્રધિવા અંખીસેં
કનૈઠે સહનુષ તૈયાન મડ ગેઠી।

અહન માસ, વ્રશિહ-પંચમીક દનિ સપ્પડા મનદનિમે મગાવતીકેં સાકૂષી નપ્પા
વ્રકાસ આ અંખીક વ્રશિહ મડ ગેઠ। વ્રશિહક વાદ ખપ્પન વ્રકાસ આ અંખી
ઠાઠવાવૂકેં પૈનપન ગોડ ઠાઠકૈન તં ઠાઠવાવૂ વખા-

"અહં દુનૂ ગોમે હમના માથપન સેં વડકા માન અનાનિદેઠી। અંખીક ઑંપસેં
દહે-વહે નોન ખાએ ઠાઠ। "

અપન મંત્રવૂંદે દર્શીનાઠિસાગાડડવ્રદિહાગામાઠિયોમ પન પડાડા

રૂપરૂગદ વ્રધિસ નાપ્પક ૪ ટા કથા- કથા- ૪ ખરૂપન સમ્પાદકીય સમીક્ષા
અંગેખીમે સમ્પાદકીય પૃષ્ઠ ૫૧

वैदिक षष्पकक आमंतीति १यना आ ओ३प१ आमंतीति समीक्षकक
समीक्षा सीरीज मे अप्पग यना अहाँ पढ़वै-

१ कामर्गिक पांय टा कवर्गि आ ओ३प१ मधुकाग्न हाक टप्पिपमी

वैदिक ०१ ०८ २०१६

२ णादागन्द् हा "मनु" क "माटकि वासग" प१ गार्गेन्द् गकु१क टप्पिपमी

वश्यएहश्च ३५३

३ मुग्नी कामाक एकांकी "गर्दिगीक मो३" आ ओ३प१ गार्गेन्द् गकु१क टप्पिपमी

वश्यएहश्च ३५४

ऐ श षष्पमे आगाँ समानाग्न१ यानाक कछि गाम्मान्य कथाक१सँ हुनका
गण१मि हुनका१ अपग स१व१स्त्रेष् ५- ५ टा कथा आमंतीति कए गे३ अछि
कथाका१ ठेकगि छथि:-

१कपि३स्त्र१ १ा३ग

२उमेश मम्३३

३नाम व्र३स साहु

४ना३देव मम्३३

५आया१्य १ामागन्द् मम्३३

६गन्द् व्र३स १ाय

७३गदीश प१सा३ मम्३३

८हु१गागन्द् मम्३३

ऐ अंकमे प१सु३ग अछि गन्द् व्र३स १ायक याना३ कथा आ एकटा एकांकी

પાંચપન હમન સમીક્ષા અંગ્રેજીમે સમ્પાદકીય પૃષ્ઠ પન અછાઈ - સમ્પાદક



નનદ વ્રથિસ નાયક યાનટી કથા

કથા ૪

ખીન્સ પૈન્ટ

સંહ્યનિ વાઘ દસિસં ઘુમકિડ ગામપન સૌ તં પત્નીકેં યાહક અઢેન દેઠાનિ. પત્ની યાહ વના કડ મેને સૌ. હમ આ પત્ની યાહ પીવે ઠાઠૌ. ફકટા દિથિસં આસ છોડા સડકસં ખાશા નહ. મોવાશમે ગીન વખવેન નહ- 'ખીન્સ ઢોઠા કનૂ. '

હમન પત્ની વખી-

"ખા. હમ તં વસેનિ ગેઠ છેઠૌ. યૌ કંચનાક વાવૂખી નનદનીકેં ખીન્સ પૈન્ટ આ ટી સન્ટ કીનકિડ અનિદિયૌ. "

યાહક યુસ્કી ઠેન હમ પુછઘેન-

"સોક છોટ વચ્ચાકેં ખીન્સ પૈન્ટ. કીનઠાક સાઠે મનપિછાશ છોટ મડ

जोतः । "

पत्नी वगैरे-

"से तँ गीके। गन्दी तेहेन ने वढगुक अछिजे साठे नमि सन कपडा आ
जुता-यपपठ ओछ नऽ जाइ छऽ। "

हम पुछथैग-

"नयन?"

पत्नी वगैरे-

"कनी नमहे कीनव। जीन्स पैन्ट तँ छौडा सनकेँ देखै छएजे नीयासँ मोड़ने
नै छऽ। "

तैपन हम पुछथि-

"अनेकटक शुक्र आ युसुन सठवाँ आगिदेवै से गै नीक हए की? उकी
सनकेँ तँ अपन ग्रह ड्रेसमे देखै छए। उकीक ठेठ तँ अपन ग्रह ड्रेसक
यगो अछि। "

पत्नी वगैरे-

"जोतू, वौआ-ठे जीन्स पैन्ट आ टी शर्ट कीनकिऽ आनठक हेन। नयनसँ
गन्दी देखठक हेन नयनसँ ओहे जहिँ केने अछिजे हमहूँ जीन्स पैन्ट आ
टीशर्ट ठेव। "

हम कहथैग-

"अच्छा ओकनो-ठे आगिदेवः। "

गन्दी हमन गानि। जोकी वेटी कंयगाक जोड सगान। उमेन पाँय वनय।
हमेन सन ठा नहै अछि। जोतू हमन गानि। ओकन एकटा वेटा, गाओ
पुनकास। सन कयिओ ओकन 'वौआ' कहै अछि। ओकन उमेन साग वनय
अछि।

हुगापूजाक समय। आइ पंथमी गथिछि। सन कयिओ ययि-पुना-ठे नव-नव
कपडा कीन-कीन अगै। हमनो गानि जोतू सेहे अपन ययि-पुना-ठे कपडा
कीनकिऽ आनठक। हमन पनविन आ हमन जोड बैयाक पनविन एके अंगामे
अछि। एके अंगामे नहने गन्दी जोतूक वेटाक जीन्स पैन्ट आ टीशर्ट
देखठक, ओहे गानिसँ कहए जाए- गानि हमहूँ जीन्स पैन्ट आ टीशर्ट ठेव। '

યાહ પીઠા પછાશ હમ મૈસ દુહા ઝાંગા અવૈત નહિ, તેતવેમે હમન છોટકી વેટી
 વ્રોમાક સંગે દુનગાસથાનસં સંદ દસ ગન્દગી આણ. હમના દેખતે વાળ-
 "નાના ખીન્સ પૈન્ડ આ ટીસટ આનદિયિડા । "

હમ કહણિ-

"કાઉહિ આનદિવ । "

હાથ-પૈત યો, કુનના- આયમન કડ હમ ગોસં ર્કે યુપ દસ યાગતી માણે સોટો
 ઇસ યુપ-આનતી દેખા કનેક કાઉ દુનગા પાડ કેઘી ।

પાના ખેઠા પછાશ ખપ્પન ઓછાશનપન સુતળ નહિ મુદા નહિ ખાગે । તં કછિ
 પછિઉકા વાળ સમ મોળ પડીગે । સગિમા ખાકં એક-એકટા દસ્ય હમના
 સામને આવણ ઇગા ।

અમ્ણ કેઠા પછાશ કોતોકો વેન ગૌકનીક ઇઉ પનિયિસ કેઘી મુદા ગૌકની ને
 મેટા । મેટવો કેના કનૈત । કહાવત છે એ ખુગમે યાગવાન મેટવ અસાન અર્ધા
 મુદા ગૌકની મેટવ મોસકાઠિ । તૂમે સનકાની ગૌકની તં આનો મોસકાઠિ અર્ધા
 ખેના-તેના ખેતી- ગાહસતી કડ અપન પનિયાનક ગાડી ખીયણ ઇગા ।

ખેપાઠમે પનખાત્તનક ઉદય મેઠા । પનખિયિસનાક યુનાવક ઘોષના મેઠા ।
 હમનો સસુન મહાખ સક્નયિ નાખનીતમિ છેથ । સમ કયિ હુનકા નેનાખી
 કહીત છેથ । હુનકો પાન્ટી ટકિટ દસ અમ્મેદવાન વગૌઠકૈન । હમના પના
 યઉઉ તં હમહૂં હુનકા યુનાવમે મદા કનણ ગેઠણિ । આનથકિ મદા તં ગર્હ
 કેઠણિ મુદા અપના સનીસં એક માસ ધનખિટા નહિ । ખાણ ખે કછિ ।

હમન સસુન મહાખ યુનાવ ખીતળા । ખીતળા પછાશ કાઠમાંડો ગેઠા । સંસદક
 સત્ત સમાપ્ત મેઠા પછાશ દુનગાપૂખામે ગામ ઇગા તં હમનો પતિખીસં મેટ
 કનણ હમના ગામ ઇગા । હમના કહૈયે, આઝ નાખવિનાખ । ઓતણ કોનો
 વખિનેસ-વેપાનક વેવસ્થા કડ દેવ । મુદા હમ ખાણે તૈયાન ગર્હ છેઘી । પત્ની
 વેન-વેન યનિયિવણ ઇગા । વેન-વેન કહેથ- ખપ્પન વાવૂખી કર્હ ગેઠખાનિ હેન તં
 કોનો-ને-કોનો વખિનેસ-વેપાનક વેવસ્થા કશ્યે દેના । તૈયો હમન મન ખાણે
 તૈયાન ગર્હ મેઠા ।

એક દનિ હમન ઇગોટયિ મીત મદગખી ઇગા । ઓ ગનિમઠી મહાવદિયાઇયમે
 કનિગી છેથ । હમન પત્ની હુનકા સમ ગપ કહૈકૈન । મદગખી હમના કહૈ-

"ખપ્પન સાંસદની તોના નાખવનાખ અવેઠે કહ્યુખુન હેન તું તો કાપે ને ખાડ છો। કોનો વખિનેસ-વેપાન કનમે તું પનિવિતક આનુથકિ હાથ સુથેન ખોતો। ખેતી-ગાંધીસૂતીસં પેટો યથવ મોસકાંઠે છો। "

તૌપન હમ કહ્યુએ-

"નૌ મોના, સે તું ડીકે કહે છોહી। મુદા સાસુનમે નહવઠાકે કોન-કોન અપમાન સહા પડે છે સે તું કોનો નૌ વુઠે છોહી। "

મદન વાખા-

"હમ સજ વુઠે છાપે। મુદા સમય-સમયક વાળ છડ। અપ્પન તોહન દાગિ કુદાગિ છો તંતે તો એ ગપ-સપ્પપન વચિાન નૌ કનહિન। ખપ્પન દૂટા પાડ કમાડ ઊઠે તં એ ગપ-સપ્પપન વચિાન કનહિં। નૌ અપન કાળ નૌ છે તં ઊક ગદહેકે વાપ કહે છે આ સાંસદની તં તોહન સસુન છથુન ખો એકમાગેમે વાપે મેઠપ્પન। "

ખાપન હમ નાખવનાખ ગેઠૌ।

ગેતાળીક એકટા ડેના કાઠમાંડોમે આ દોસન નાખવનાખમે। ખપ્પન સંસદક સત્તા યથેન છઠ તં આ કાઠમાંડોમે નૌ છઠા નહિ તં નાખવનાખમે। ગેતાળી નાખવનાખ સંસદીય નિવાયન ક્ષેત્રનસં ખીતઠ છઠા। દોસન ગપ ૬ ખો નાખવનાખ સપતની ખાંધેક સદન મુકામ સેહે છો। ગેતાળી ખાંધે મુખ્યાલયમે નહિ ખાંધેક નાખવનાખ આ પુનસાસનક ગાવિધિપિન સેહે નૌન નૌન છઠા। ખાપન ખો કહ્યુ।

હમ ગેતાળીક ડેનાપન નહા ઊઠૌ। ડેનાક કાળ સેહે કનપ ઊઠૌ। ખેના-વખાનસં ખાંધે, તનકાની, કનિાના સમાન સજ હમહી કીનિ આની। ડેનાક આનો કાળ સજ કની। ગેતાળી વખિનેસ-વેપાનક કોનો ગપ્પ નૌ કનૈથ। એ તનહેં છહ માસ વાંતે ગેઠ।

એક દાગિ હમ અપન સસુન મહનાખસં કહ્યુએ-

"વાવૂની છહ માસ વોતિ ગેઠ મુદા અપ્પન તક હમના વખિનેસ-વેપાનક કોનો ખોગાન નૌ મેઠ?"

તૌપન આ વખા-

"અગા યડજીએઠાસં કાળ હપા! હમ વેવસૂથામે ઊગઠ છી કાગિ। અહાં અસથનિસં નૌ। "

एक मासक वाद एक दिन हम शेन हुनका टोकथिएन-

"वावूजी, जँ वसिनेस-वेपानक वेवस्था बै हए तँ ऐशम कथी-ऐ समय वेनवाए कएव। "

तैपन ओ वज्ज-

"दिवि-पंजाव जाए की?"

हम कहथियै-

"दिविथियो पंजाव तँ ठेके जाश अछा किने, की कोनो जागवन जाश अछा। "

ओ हमना दिसि नाकए ठावा। कनीकाथक वाद वज्ज-

"जँए सात-आठ मास नूकथौ तँए दू-तीन मास औन नूकजिआउ। हम कोनो वेवस्था कऽ देव। "

तही वीय हमन सातहु एवा, तँ ओ हमना पुछथै जे की जेठ कोनो वेवस्था अहाँक वज्जिनेस-वेपानक?

हम कहथियै-

"अपन यनीकहाँ कोनो वेवस्था जेठ हेन। कनेक अहँ वावूजीसँ पुछयौन ने। "

तैपन ओ वावूजीसँ (ससुनसँ) वाग केथै आ हमना कहथि-

"हिनका (ससुनक) शेनमे बै नहू। ई अहाँकँ डकै छैथ। "

तैपन हम कहथियै-

"दू-तीन मासक गाओ कहने छैथ। तँए तीन मास यनी आओन प्रतीक्षा कएव। "

सातहु कहथै-

"जँ तीन मासक वाद वावूजी वज्जिनेसक छेठ दौआक वेवस्था बै कऽ देना तँ अपन डेवि-प्योनी छेव आ वापस श्मश्रुति यठ जाएव। हम मने-मन सोयथौ कहै तँ छैथ वठिकुठ डिक। "

आ हम तीन मास आओन नूकजिआवौ।

जागवनिआमे ठेक सगकँ जोग्स पैन्ट पहिने देप्पारि। ओतुक्का वेसी ठेक सुठपैन्ट-सूट पहिनि अछा। अपना ऐशम वहिनमे तँ ठेक योती-कुना, पैजामा-कुना आ सुठपैन्ट-सूट पहिनि अछा मुदा गेपाठमे योती-कुनाक यथैग वुढ़-वुढ़ानुस मान्ने अछा। ओही मान्नीय भूषक वुढ़-वुढ़ानुसमे।

हमनो दुनू साग आ सागु सग जीग्स पैन्ट पहिनि अछि। ओ सग गेताजीक उनापन जीग्स-पैन्ट पहिनि कऽ अवैत नैथ। हमनो भोगमे भेठ जे हमहूँ जीग्स पैन्ट पहिनि।

गादव भासक समग्र नहऽ। गेताजी सपनागिा काठमांडोमे छथ। संसदक सग यैत नहऽ। मोठा भायजी गेताजीक मुहठुआ छथनि। ओ काठमांडो जाइवथ नैथनि। एक दिन हुनका कहल्यैग- भायजी, हमनो भग होइए जे हमहूँ जीग्स पैन्ट पहिनि। तैपन ओ वगछा- भग होइए तँ यहु अप्पने कीनि दइ छी। हम कहल्यैग- अप्पन टका कहँ अछि। ओ वगछा- अहाँ टकाक यगिना पुगि कन। अहाँ गेताजी कक्काक जमाए छपिग, हमनो वहनोइए भेठै। हम अहाँसँ जेठ छी। नीक जीग्स पैन्ट साग-आठ साए टकामे हए। सएह गे। कोनो दस-वीस हजारा भग।

हम कहल्यैग-

"भायजी, वहुन-वहुन पैगवाए। "

ओ पुछलैथ-

"तँ हमना पाइक जीग्स गै छेव?"

हम कहल्यैग-

"गै भायजी, से गप गै छऽ। जँ ओक वुहान तँ कहल- गेताजीक जमाए ओकसँ कपडा पनीदवैत अछि। आ जँ हमन साग सग वुहान तँ ओ सग आग कुटियौठ कन। "

मोठा भायजी वगछा-

"कयिो गहिवुहान। "

हम कहल्यैग-

"भायजी, एकटा उपाय अछि। हम दनूजिसँ उम्वाइ आ कमन गपवा छपिा कऽ अहाँकँ दऽ दइ छी। अहाँ आइ काठमांडो जाइए नहथ छी, गेताजीसँ कहवैग पनीद देना। "

ओ वगछा-

"वड सुगन। यहु अप्पने मथिछि टेउन्समे गपवा कऽ छपिा छऽ छी। "

सएह केठै। दुनू गोने मथिछि टेउन्समे जा उम्वाइ आ मोटाइ गपवा कागजपन

નોટ કડ મોઠા માપ્તીજેં દડ દેઠાણિ। સંહમે મોંગા એક્સપ્રેસ વસપન
યદ્ધિઓ કાઠમાંડો યદ્ધિગેઠા।

એક સપ્તાહક વાદ મોઠા માપ્તી કાઠમાંડોસેં ઘુનઠા। હમના ડેનાપન ઇલા।
હમના મેઠ ખે સાપ્ત જીન્સ પેન્ટ દેવર ઇલા હેન।

કુશ્મ-સમાયાનક વાદ ઓ વળા-

ગેતાળી કાકા, અહાંક ગાપ ન્યાં ઇથેથ, દુગ્ગાપૂજામે ગામ ઓળા તં મેમે ઓળા।

હમ કહ્મયેન-

"માપ્તી, હમ જીન્સ પેન્ટ પહિન ઇલા। "

તૈપન ઓ વળા-

"કાપિ, અહાંકેં હેર ખે ગેતાળી કાકા જીન્સ મે મેમે ઓળા?"

હમ કહ્મયેન-

"સે દેખવે કનવા। "

કઠસસ્થાપનસેં તીન દિન પહિનહિ ગેતાળી સપનગ્રાન કાઠમાંડોસેં નાખગ્રાન
પહ્યથા। દોસન દિન નાખગ્રાનમે સન પનગ્રાન ઇડ કપડા કીનથેથ।
કપડા કીનથાવાદ ડેનાપન ઇથેથ તં હમ કહ્મયેન- પૂજામે હમહૂં ગામ જાણવા।
તૈપન ઓ વળા- ડીક છે, કાઈ મોને યદ્ધિ જાણવા। કનીકાઈ નહિથેન વળા-
અહાં મેઠા દિપ્તિ જીન્સ પેન્ટક ગાપ મેજમે નહિ। સે તં નાખગ્રાનમે મેટે
છર।

હમ કહ્મિ મે વળા। હમન મન ખસપિડા। મોને હમ વસ પકેડ ગામ આર્વા
ગેઠા। મુંહક ઉદાસી દેખ પત્ની પુછથેન-

"ઘાઠ કોનો જોગાન વાળિમેસ-વેપાનક?"

હમ કહ્મયેન-

"ખે એકટા હજાન-પાન સાપ ટકાક જીન્સ મે ખનીદ કડ દડ સકે છેથ ઓ
વાળિમેસ-વેપાન કનૈથે પચ્ચીસ-પચાસ હજાન ટકાક વેવસ્થા કેના કડ
સકના। "

પત્ની પુછથેન-

"સે કી, સે કી?"

હમ સન ગપ કહ્મિ કડ સુના દેઠાણિ। ઓ સુનાકિડ દુખી મેઠા। જખન

પત્નીને સમ ગપ કહેતી નહિતો તું હમન માત્ર સમ ગપ સુનાયો. દોસન દાન
મોતે માત્ર પુછ્યો-

"કેતેકમે ડોન્ટ પેન્ટ હોર છર?"

હમ કહ્યો-

"સાન-આડ સાત ટકામે। "

માત્ર પુછ્યો-

"નિમિત્તમે મેટ ડોનો કમિ?"

હમ જવાબ દેયો-

"મેટ ડોવાક યાહી। "

માત્ર હમના એક હજાર ટકા દેવક આ કહ્યો-

"જોયે પ્યા કડ નિમિત્ત ડો આ ડોન્ટ પેન્ટ કોન-થે। "

હમ કહ્યો-

"તો નૂપેઆ કેકનાસં આગીહી?"

તૈપન માત્ર વાળી-

"આમ પ્યાસં મળવ નાપ્ત ને ગાલ કાદે ગમી છંહ। "

આગળ વાળી-

"પંચ માસ પહિન એકટા છાગન એક હજાર ટકામે વેચને નહી. ઓ ટકા
પોપનાવાળી ઓ જો નહી. કાલ્હિવેહ ટકા દડ જો હેન। "

હમ કહ્યો-

"ગર માત્ર, ઈ ટકા તો નાપ્ત. હમ અપ્પન ડોન્ટ પેન્ટ ને ઓ. તોના હાથમે ટકા
નહી તું વેન-વેગનનામે કાળ દેન। "

તૈપન માત્ર વાળી-

"અંર નૌ, તોહન મન ડોન્ટ પેન્ટ પહિન કડ મેઠૌ આ સસુનસં માંગીહીન તું ને
દેવપુન જાપ્પન કિ અપન સમ પનિાન-થે કપડા કોનઅપ્પન। ડો અપ્પને
નિમિત્ત આ કોનિઆન ગ ડોન્ટ પેન્ટ આ પહિન કડ સસુનકે દેપ્પા દહીન
ગ। "

જાપ્પન માત્ર સંગ ઈ ગપ-સપ્ત હોર નહી જાપ્પને વાલૂની યાહ પોવડ અંગાણ
તું માત્ર પુછ્યો-

"कथीक घोठ-शुयक्का गऽ १हऱ छऱ। "

भाए वावूजीकेँ सऱ गऱ कऱहऱपनि।

वावूजी वऱणऱ-

"गऱहुँकेँ तँ शुऱपेऱट छेवे कऱऱ। "

तैपऱ भाए वऱणऱ-

"जीऱस पैऱट छे। "

वावूजी पुछऱपनि-

"जीऱस पैऱट केकऱ कऱहे छऱ?"

भाए वऱणऱ-

"काऱ्हि घीनू वीआ जे गीऱंगऱक शुऱपेऱट पहिने १हए, वऱह जीऱस पैऱट छी। सऱसुऱकेँ काऱंगऱंजे गऱप पऱैगे १हऱ मुऱ ओ गै कीऱादिऱपनि। जऱपन की अपन वेऱ-पुऱोहु, पोऱा-पोऱी सऱ-छे कऱपऱ कीऱपनि। हऱनऱ छऱ एक हऱनऱ टका छऱ वऱह देऱए हेन। "

तैपऱ वावूजी पुछऱपनि-

"आ वऱजिनेस-वेपऱनक की गेऱ?"

हऱन कऱहऱपै-

"कऱमे उऱमीऱ अछी। "

हऱन वावूजी हऱनऱ कऱहै-

"हऱन वऱन मऱगऱे तँ सऱसुऱक आशऱ छेऱ। अऱपन जीऱसो पैऱट गै कीऱी एक हऱनऱ टका मऱए छी आ हऱहुँ काऱ्हि हऱनऱक गूऱी वेयऱै हेन। हुनू मऱि कऱ गीऱ हऱनऱ गेऱै। हू हऱनऱ टकाक रऱगऱजऱन आओऱ कऱ छे। पंय हऱनऱ टका पूजी छऱ कऱ कोवीक पेऱी कऱ, कऱनो वुऱिजेतै तँ ७०-८० हऱनऱ टका आऱदऱी हेवे कऱतै। "

वावूजीक वऱयऱ हऱनऱ गीक छऱ। दऱस कऱटऱ उँयऱस पेऱ, जऱमे सैऱी यऱन १हए, पऱि गऱ युऱक छऱ। ओहि पेऱमे वऱऱिमे नऱपऱ सऱऱहऱ गोवऱ गऱि देऱए। संयोज १ १हए जे पेऱ सऱके कऱने अछी सऱनऱ सऱऱहऱ गोवऱ टऱपऱसँ उऱकिऱ पेऱमे देऱए। मऱवऱी जऱ हऱगोवऱगिऱ वीज गऱसुऱसँ हऱवऱीऱवऱ कोवीक वीआ छऱ अऱनऱ। दऱवऱजोपऱ दऱस छऱटऱ मऱटिऱ

कोवीक वीआ पाडवै। उयति देयभाठ कनैत नहवै। एमहन पेतक तैयानीमे सेहे जुट गेवै। वीससँ पय्यीस दनिमे कोवीक वीआ नोपै जोग मऽ गेठ। पेतोमे दसटा कयिनी वना कऽ सगटा कोवी गाछक थाठ उगा देवै। दस-वाह दनिपन कयिनीमे सँ थाठ काट-काट सगटा कोवीक पौधाकेँ उप्पानि-उप्पानि पेतोमे नोपवै। समय-समयपन कमठन, कीटनासक दवाइक पुन्योग आ सयिर कनैत नहवै। कोवी नीक सुगन्ध। एक-एकटा शूठ कमतीमे दू कठिक भेठ। ओगा, तीन कठिसँ साढ़े तीन कठिक शूठ सेहे भेठ। अगता पेतो नहए तँए भाव सेहे नीक पकड़ाए। पैकाने सग पनह साए नूपेये क्वटिठ पेतोपन सँ ठऽ गेठ। सग पन्या काट कऽ दू ठाय पय्यीस हजान टाकाक आमदनी भेठ। वावूजी कहैवै जे ननिमठि जा कऽ दूटा जोगस पेन्ट आ दूटा टीशर्ट कीन आ।

हम जठमै प्या ननिमठि गेवै। ओतए हनुमान नेउमिठमे एकटा गीठंगक आ एकटा मठमैठ गंगक जोगस पैन्ट कीनवै। तेनाहिये एकटा कानी गंगपन उज्जान-उज्जान यानी आ एकटा हयिनी गंगपन उज्जान-उज्जान यानीवठा टीशर्ट कीनवै।

सासुनमे पतिऔत सानिके वसिह नहए। हमनो दुनू पनानीकेँ कान्ड भेज कऽ मंगौने नहए। तहूमे हमना अठासँ कान्ड भेजने नहए। तप्पन केना ने जश्नौ। माए सेहे कहैक जे जो जोगस पेन्ट पहनिकऽ ससुनकेँ देया दही गा।

हम सासुन गेवै। वसिहक दनि यानी वजे दनिमे उड़की आ महिष (सानि-सहोणा) सगकेँ देयठए मेकप कऽ गंग-वनिगक कपड़ा पहनित। कयिनी वनानसी साड़ी पहनित तँ कयिनी जान्जेट।

वसिहति आ अवसिहति उड़की सग गंग-वनिगक सठवान-सूट पहनैक। तेनाहिये हमन सान सग आ सानहु सग सेहे कछि गोने जोगस पैन्ट-टीशर्ट आ कछि गोने पायजामा-कुत्ता पहनि-पहनि दनवज्जानपन एठ। तप्पन हम योतीए-कुत्ता पहनिगे नहि। हमन पत्नी हमना एकटा कोडीमे वजा कहैवै-जोगस पेन्ट आ टीशर्ट जे अगवे छी से कोन दनि ठे।

हम गीठ गंगक जोगस पैन्ट आ हयिनीका टीशर्ट पहनिवै। पहनि कऽ

ખપ્પન કોડનીસં નકિંઇઠૌ તં હમન સાસુ-સસુન ઓસાનપન નાખ્પઇ એકટા
યૌકીપન વૈસઇ છઠા। હમના પાછાં હમન પાત્રી સેહે છેથી। હમના ખીન્સ પૈન્ડ
આ ટીસન્ટમે દેખ્પ હમન સાસુ હમના પાત્રીકૈં કહ્મખનિ-

"દેખ્પહી તં પાહુનક દેહમે ખીન્સ પેન્ડ કોતેક નીક ઊઐ છેન। કોતેકમે
કીનઇખ્પુન હેન। "

તૈપન હમન પાત્રી ખાવા દેખ્પનિ- "ખા। અખ્પને વસૈન ગેઇહી। દુનૂગાપૂખામે
ખે કાઠમાંડૈસં કીનકિડ અનને નહી સપ્હ ને ખીન્સ પેન્ડ છપિ। "

હમન સાસુ હમના સસુન દસિ નાકપ ઇઠાધી આ હમન સસુન એકવેન હમના પાત્રી
દસિ દેખ્પ મુઢી નયિયાં મુહે ગોશ્ત છેઇન।

અપન મંત્રણે દત્તિનાઇસનાડડવદિહાબામાધિયોમ પન પડાડા

૨૧૪૪નન્દ વ્રીધિસ નાયક ૧ ટા એકાંકી- ખરપન સમ્પાદકીય સમીક્ષા
અંગેખીમે સમ્પાદકીય પૃષ્ઠ પન

વદિહક છેપ્પકક આમંત્રાતિ નયના આ ઓરપન આમંત્રાતિ સમીક્ષકક
સમીક્ષા સીનીખ મે અખ્પન યનિ અહાં પઢ્ઠૌ-

૧ કામનૈક પાંચ ટા કવનિ આ ઓરપન મધુકાન્ત હાક ટપ્પિપમી

વદિહા ૦૧ ૦૮ ૨૦૧૬

૨ ખાડાનન્દ હા "મનુ" ક "માટકિ વાસન" પન ગાળેન્દ નકુનક ટપ્પિપમી

વરચપ્પઅ ૩૫૩

૩ મુન્ની કામનાક એકાંકી "ખાન્દીક મોઇ" આ ઓરપન ગાળેન્દ નકુનક
ટપ્પિપમી

વસંતપ્રહર ૩૫૪

એ સંપ્રધાને આગાં સમાનાગ્નના યાત્રાક કહિયુ ગામમાગ્ય કથાકાનસં હુગકા
ગળામિ હુગકા અપગ સત્વસ્રેષ્ઠ ૫-૫ ટા કથા આમંત્રીતિ કલ્પ ગેઠ અર્ચા
કથાકાન ઠોકળાચ્છિય:-

૧.કપિશ્વરના નાગ
૨.ઉમેશ મામ્ડ
૩.નામ વ્રણિસ સાહુ
૪.નાગદેવ મામ્ડ
૫.આયાત્ર નામાગ્ન મામ્ડ

૬.નગ્દ વ્રણિસ નાય
૭.ગાદીશ પુત્રાદ મામ્ડ
૮.દુર્ગાગ્ન મામ્ડ

એ અંકમે પુત્રાગ્ન અર્ચા નગ્દ વ્રણિસ નાયક યાત્રાટા કથા આ એકટા એકાંકી
પરપા હમન સમીક્ષા અંગેગીમે સમ્પાદકીય ૫૦૪ પા અર્ચા - સમ્પાદક



गण्ड व्रधिस नायक एकटा एकांकी

पक्ष

(एकांकी)

पात्र-पात्रिय

डीन- गैसवान : उमे ४५ वत्स

छोटन- गैसवान : उमे ३५ वत्स

मोछटा- गैसवान : उमे ३२ वत्स

मोछिवा- गैसवान : उमे ३० वत्स

वुयगा- गैसवान : उमे १५ वत्स

नयिनि- गैसवान : उमे १३ वत्स

छावावू- नूपा आ दीपाक पतिगिणी : उमे ५५ वत्स

सुआमणी- छावावूक दोस्त : उमे ५४ वत्स

मोछवावू- छावावूक समैध, व्रधिस पतिगिणी : ५६ वत्स

शोभाकागन- मोछवावूक भोगिणी : उमे ५५ वत्स

जयिछावा- वनक पतिगिणी : उमे ५५ वत्स

आलोक- शोभाकावक वेटा : उमेन २८ वन्य

पुनकास- मोहन वावक वेटा : उमेन ३० वन्य

ब्रिगीत- ठाठवावक वेटा : उमेन २२ वन्य

नामू- ठाठवावक एकटा गौआँ : उमेन ३५ वन्य

दीनानाथ- मोहनवावक गौआँ : उमेन ३० वन्य

पहिले ६० स्थ-

(स्थान- एकटा पय्यीस-तीस वगिहाक पनी। छह-साटा महीसवान महीस यना नह अछी। वोयवा पनीपन गाछक छहैनमे गिडन (उमेन- ४५ वन्य), ठोटन (उमेन ३५ वन्य), मोठटा (उमेन ३२ वन्य) आ मठिवा (उमेन ३० वन्य) वैसकऽ नास पेठ नह अछी। वुयना (उमेन १५ वन्य) आ नवयिा (उमेन १३ वन्य) वैसकऽ नासक पेठ देय नह अछी। गिडन योती-गोठाठा, ठोटन छुंजी-जंजी, मोठटा हाथ पैन्ट-टीसन्ट, मठिवा योतीकें दोवना कऽ छुंजी जाकाँ आ कुनगा पहिने अछी। वुयना पायजामा-जंजी आ नवयिा जीन्स पैन्ट (जे डेहना ठासँ काट अछी) आ मेसूट पहिने अछी।
(पनदा उँन अछी)

गिडन- १३ नवयिा कनी मैसोकें देयहि। केकनो जाजाति नर यथिजाइ १३।
नवयिा - काका! हमन ययिाग मैसोपन छै। केकनो जाजाति नर जाए देवऽ।
अहाँ नश्चिकिनि नहू।

ठोटन- एकवेन प्यडे नऽ कऽ देयहि तँ, सगटा मैस पनीएपन छै ने।

नवयिा- अय्छा काका हम देयै छए।

(नवयिा प्यडे नऽ कऽ मैस सगकें हयिसए ठौग अछी। एम्हन मोठटा नास श्वेट कऽ पानी वँटन अछी।)

मठिवा- हँ तँ वजै जाइ जाह। की, गिडन काका वजवह?

गिडन- नर हम नहवाजव। पानीए नीक नह आए।

ठोटन- सोठह।

मोठटा- सगनह।

छोटन- हमही।

मोठन- अगनह।

छोटन- यठ वग नंग। अगनहेपन डवठ।

नवयि- देप्पहक हउ, गिडन काका, दठिठिसँ कयिओ आवनिहठ अछा। पोडपन वडकाटा वैग आ हाथमे अटैयी छै। पछनठ अवेए।

छोटन- तो केगा वुहै छी जे दठिठिएसँ अवेए। नाहि-वठेहि सेहो नऽ सकैए।

नवयि- नाहि-वठेहिकेँ एकाटा वैग आ अटैयी थोड़ नहै छै। ओ तँ दठिठि, कठकाना आकमुम्बईयेक पैसेजानकेँ नहै छै।

गिडन- नवयि गीक्के कहै छी। पनदेसे प्पटनहिनकेँ गे वैगो आ अटैयीयो नहैए।

नाहि-वठेहिकेँ वड नहठ तँ एकाटा वैग नऽ ते होन। नहठ।

नवयि- हउ गिडन काका, ई तँ सुदुन मैया वुहाइन अछा।

वुयगा- (प्पड़ा नऽ कऽ नसगा दसि गकैग) गीक्के ई तँ सुदुने मैया छी।

माठिवा- सुने छए दठिठिमे कनोगा वड वढगिठ हेग। तँए ठेक दठिठिसँ पड़ाए कऽ गाम आवनिहठ अछा।

गिडन- गीक्के वणठह हेग। हमहूँ नागिमे मोहन मैयाक टोविमे समायाग देप्पठौ हेग। वड ठेक मननिहठ छै। (गाम दसिसँ जागकी वआहक वनमन, वृवर्ग वसिगानक पंगनपन आवए ठाठ अछा।)

(सुदुनक पुनवेस। पोडपन एकाटा वडका वैग आ हाथमे अटैयी छै। गाछ ठा आवनि अटैयी गयिय। नमैग पोडपन सँ वैग उगानि सेहो जमीनपन नमैग वैस जाइन अछा।)

सुदुन- गोड़ ठौ छी, गिडन काका।

गिडन- गीक्के नह। कहह की हाठ छह दठिठि-के?

सुदुन- नऽ पुछू काका। दठिठिक हाठ वड प्पनाप नऽ जेठ अछा। डेठि साए-सवा-साए ठेक नमै छै। ठेक पड़ाए कऽ गाम आवए याहै छै मुदा गाड़ी-सवागीक अनावमे आएठ नहि होइ छै। जे वसवठ साग-आठ साए टकामे दठिठिसँ ननहयि-ननिमठि ठेककेँ अगै छेठे वएह वसवठ अप्पन यागिहजान-पाँय हजान टका मंगै छै। ट्नेगसँ जे औग सेहो ट्नेगक टकिट नऽ गेटै छै। की कनग ठेक, छटपटा कऽ नहिजाइए।

मोठ्या- तो केना एहि हेन?

शुद्ध- हउ मोठ काका, हमन तँ पहिनेसँ टकिट वगैर नहए तँए ट्नेगमे जाह गेट गेठ। ओना हम ट्नेगेसँ दहिँ छी जाइ-अबै छी। वसमे हमना उठ्यो नऽ जाइए।

गेटन- सुनै छए ट्नेगपन यदैवछ पैसोपनकें नेछे टीशनपन पहिने कनोनाक जाँय होइ छै। जायन वेमानी गहि नहए जायन ट्नेगमे वैसऽ दइ छै।

शुद्ध- गीक्के सुनहए हेन मैया। हमनो जाँय गेट। निपोनट गिगिटिव आएछ। सेगीटाइपन पूना देहक कपडापन छोटक आ हाथपन सेहो देहक, जायन जा कऽ ट्नेगमे यदए देहक। हउ गिडन काका, गामपन जागकी वसिआहक वनसिआह वजनिहए अछी। केकन वसिआह छए?

गिडन- गोना नऽ वुहए छह। आइ छठ मैयाक वेटी नूपाक वसिआह छी।

शुद्ध- नऽ काका, गहि वुहए अछी। पनदेश प्यै छी। केना वुहए नहए।

मोठ्या- आव तँ मोवाइक युग छी। मोवाइसँ ओक अमेरिका-इंग्लैंडक गप मनिटमे वुहए जाइए। इ तँ दहिँ छी। अयछा गामपन जाह, नशा-याह कनह-गो। कयनी प्येने हेवह, कयनी नऽ।

शुद्ध- गिडन काका, हम वैग नेने जाइ छी। अटैयी अतौ नहए। गामपनसँ केकनो पडा देव, ठऽ जाए।

गिडन- वडवढियाँ। गाछ छगछ कहि। आ जउदीये केकनो पडा दहिक।

शुद्ध- (उँह) हँ काका, गाछ छगछ अछी। ओना, अहाँ सग की कोनो आन छी। जाइ छी जउदीए केकनो गेज देव। (शुद्धक प्रस्थान)

(पनदा पसैत अछी)

दोसरा दृश्य

मंथपन यागटो कुन्सी जायत अछी। एकटा कुन्सीपन छठवावू आ दोसरा कुन्सीपन हुनकन मोन श्यामजी वैसठ छैथ। दूटा कुन्सी प्याँए अछी। ध्वनि वसिआहक धातुपन मधुन स्वप्नमे सहनारक धुन वजनिहए अछी। पनदाक पाछाँ वेस यहए-पहए अछी।

(पनदा उँह अछी।)

ଠାଉବାବୁ- (ଶ୍ୟାମାମଣିଙ୍କୁ) ମିତା ହମନା ମିଁ ଛାତି ଧକ-ଧକ କଲେ। ବେଟାବଠାକେଁ ଟୁ ଡାଘ ଟକା ବାଁକି ଛେନ। ବନାସିତି ଡୁନା ଠାଉକ ଲାସ୍ତ ବାଢ଼ ଘିଆ ଡେବାକ ବାଢ଼ା କେବେ ନାହିଁ। ମୁଢା ଠେ ବେ କଲେ ୬ ମୋଡ଼ି। ତେହେନ ସମୟରେ ବେ ଗୋଟବନ୍ଦି କେଉଁକ ଠେ ବୈକ ପାଞ୍ଚେ ଗଢ଼ି ଡେଉଁକ। ଆବ ଠଡ଼କାବଠାକେଁ କେତାବୋ କହବେନ ମିଁ ଓ ମାଗନା।

ଶ୍ୟାମାମଣି- ଘୌ ମିତା ଗଞ୍ଜାଗନପନ ଗନୋସା ନାଆଁ। ଠଡ଼କାବଠା ପନାହିନପୁନବଠା ସମ୍ପେଦକେଁ ଡୋଙ୍ଗ ଛଥାଗି କାଗି। ପନାହିନପୁନବଠା ସମ୍ପେଦ ସଗ ସମ୍ପାଣା ଥିନା।

ଠାଉବାବୁ- କେ କହେଉକ, ଡୁଗକୋ ବାମ ମାଗଣେନ କା ଗଢ଼ି ମାଗଣେନ। ଅପ୍ପଗ ଧନା ପନାହିନପୁନବଠା ସମ୍ପେଦୋ କହାଁ ଏଠା ହେନ। ଓଗା, ବେଡି-ଜମାଏ ମିଁ ଗୋସାଞ୍ଚେ ଗିନା ଡାଗି ଆବା ଗିଠ ଛପା।

ଶ୍ୟାମାମଣି- ବୈକ ଠେ ପାଞ୍ଚ ଗଢ଼ ଡେଉଁକ ନଞ୍ଚ ବାମକ ଲାଗକାଗି ପନାହିନପୁନବଠା ସମ୍ପେଦକେଁ ମୋବାଞ୍ଚେନ ଗଢ଼ ଡେଉଁକେନ?

ଠାଉବାବୁ- ଗଢ଼ ଡେଉଁକେନ। ସୋୟଠାଏ ପନାହିନପୁନବଠା ସମ୍ପେଦ ମୋହଗବାବୁକେଁ ଓଗପନ କହବେନ ଆ ମିଁ ଆଗ କାସି ଖୁନା ଥିନା ବା ବୁଢ଼ା ଠିନା ଆ ବନକ ପାମାମଣି ଶୋଗାକାଗନ ବାବୁକେଁ ମାଉମ ଗଢ଼ ଠେଣେନ ନପ୍ପଗ ଓ ବନାସିତି ଓଢ଼ କଢ଼ ଓଗା କା ଗଢ଼ ତେକନ କୋଗି ଡିକ ଛେ। ମିଁ ଗଢ଼ କହେଉଁକେନ।

ଶ୍ୟାମାମଣି- ଅହୁଁକ ସୋୟ ଡିକ୍ କେ ଅଛା।

(ମୋହଗବାବୁକ ପ୍ରବେଶ)

ଠାଉବାବୁ- ଆଉ। ଆଉ ସମ୍ପେଦ। ବୁଢ଼ା ଡାଗି ଲିବା। ଅପ୍ପଗେ ଅପେକ ଧନ୍ୟ ଗଢ଼ ନାହେ ଛପା।

ମୋହଗବାବୁ- କି କଲବ। ଏନ-ବ୍ରହ୍ମାପନ ମୋଟନ ସାଞ୍ଚକି ଥୋପା ଡଃ ଡେଉଁକ। ମିଁ ଡେମୁ ଗାଢ଼ା କଲି ଏଠି ହେନ। ମିଁ ଅବେନୋ ଗଢ଼ ଗେଠ। ଓଗା, ବନାସିତିବଠା ବସୋପନ ଆବା ସକେଁ ଛେପି ମୁଢା ବ୍ରାଜା ସଗ ଗଢ଼ ଗେଠି। ବ୍ରାଜା କାଉଁ ପଟଗାସଁ ଗାମ ପୁଢ଼ିପା। ଆଞ୍ଚ କହୁପି ଠେ ବାବୁମଣି ହମୁଁ ଗୌମିକ ବାହାଗିକ ବାହାହମେ ଲାଏବ। ପୁନକାଶ ସେହେ ଗୋନରେ ବସାସଁ ଉପନାଥ। ଓ କହେଉକ ଠେ ହମୁଁ ଲାଏବ। ହମ କହୁପି ଯଥେ-ଧର୍ମ୍ମ ଏମେ କୋଗ ହୁନା ଛେ।

ଠାଉବାବୁ- ୬ ମିଁ ହମନା ସୌଗାଗ୍ର ଠେ ବ୍ରାଜା ବୁଧିଆ ଆ ପୁନକାଶ ବୌଆ ହମନା ବେଡିକ ବାହାହମେ ଏଠା ହେନ। ହମନା ବେଡି-ଜମାଏ ଆ ଗାମାଗିଠାସଁ ଗିନା ଡାଗି ପୁଢ଼ିପା ଛପା।

ମୋହଗବାବୁ- ଗାମପନ ଆବ ଅହାଁକ ସମଧାଗିପିଟା ନାହିଁ ଗିପି।

श्यामजी- (हँसकर) यौ समैय समयगीयोकेँ गेने अवतिएन कनि।
मोहनवावू- कहए तँ वड़ गीक वाग मुदा घनोक ओगनवाही कए छे तँ कयिो
याही ने।

श्यामजी- से तँ गीके। वनिग वुय्यी पठनामे की कनैत अछी।
मोहनवावू- मेडकिछ पुनार्योगीति पनीक्षाक तैयानी कऽ रहि हेन।
श्यामजी- ब्राह्! वड़ वढ़ियँ वाग! आ पुनकाश वावू?
मोहनवावू- ओ मैकेनकिछ टनेडसँ ओगनसयिनी कऽ एगटेमे जाँव कनैए।
छह मास पहिने ज्वाइन केँक हेन।

श्यामजी- ब्राह्!
ठाठवावू- पुनकाश वौआक वआहक केँतौ गपो केँए हेन?
मोहनवावू- यौ समैय, पुनकाशक जे केँतौ वआहक गप यथ तँ सगसँ पहिने
अहि सगकेँ भाँलूम हए। अहाँक वेटी हमन पुनोहू छैथ। मोवाइक युग छी तँए
पहिने अहि सगकेँ प्यवनिगऽ जाए। ओगाहियँ अहाँकेँ वनिग पुछने केँतौ
सम्बन्ध थोड़े कऽ छे।

ठाठवावू- यौ समैय, एकटा वड़का समस्या पड़ गऽ गे छे। हमन तँ छानी
यक-यक कनैए।

मोहनवावू- से की समैय। कनेक श्रुति कऽ वापू ने।
ठाठवावू- यौ समैय, वनिग (ठाठवावूक वेटी) दितिमे संगी सगसँ पैय-पाठ
कनिहूँ छाम टाकाक वेवस्था केँक। ओइ छूँ छाम टाकाक उनाश्व वना छेक।
गोटवन्दीसँ यानि दनि पहिने दितिमेसँ गाम पहुँचए। वहिने गने वैकमे उनाश्व
जमा केँक। वैकक मैगेजान गीन दनि वाद गुगान छेमए छे वनिगकेँ समप्र
देक। मुदा अगुठि दनि गोटवन्दीक घोषणा गऽ गे। तँए वैक दौआक
गुगान गहि केँक। वड़ पनियसक वाद वैक माग पय्यिस हजान टका
गुगान केँक।

मोहनवावू- वहुत पैघ समस्या पड़ गऽ गे।

ठाठवावू- वनक पतिगी शोभाकान् वावू अपनेक उगोटिया भनि छैथ।
अपनेक पनियससँ ई कुटुम्भी गऽ रहै अछी। अपने शोभाकान् वावूकेँ वृद्ध
देवै। ओ अपनेक वाग गहि टाग। जम्मे वैक पाइ गुगान कनि, हम

शोभाकाग्नवावूकें पहुँचा देवैग। केगाहुओ कऽ हमन पश्न वयाऊ।
 मोहगवावू- (गम्भीर मुहनामे) शोभाकाग्न हमन उगोटयो मतिन जूनन छैथ।
 मुदा पार्क मामेओ ओ थोड़क दोसन नगहक ओक छैथ। ओगा, हम पूना
 पुन्यास कनव। अहाँ दसिसँ हम वकयिगीना पार्सो गच्छिँवै, देय्यिओ की होइ
 छै।

(डिपो वाजाक आवाज सुनार पड़निहए छै)

श्यामजी- सायद वनयिगीनी पहुँच गेओ।

(वर्गितक पुनवेश)

(वर्गित, मोहगवावूक पैरपन गोड़ भौग अछी)

मोहगवावू- (वर्गितक माथपन आसीन्वाह दैग) नीकूके नहू।

ठाठवावू- (वर्गितसँ) की वनयिगीनी सूकूठपन पहुँच गेओ।

वर्गित- हँ वावूजी।

ठाठवावू- नयन गो सूकूठपन यथिजा। सभ वनयिगीनीकें याह-गासना कन
 दहुन। कयि छूटै नर आ ने कोनो दिकको होइ।

वर्गित- जी वावूजी।

(वर्गितक पुनस्थान)

ठाठवावू- (मोहगवावूसँ) समैय हमन छातीक चड़कन वढ़निहए अछी मगवान
 जागए की हए की नहि।

श्यामजी- अहाँ बेकानक यगिना कनै छी। यौ, समैय छैथ ने, सभ सम्हानि
 छेना।

(नामूक संग एक गोटाक पुनवेश)

ठाठवावू- की वाग छए नामू? आ ई वावू के छैथ।

नामू- काका ई वनयिगीनी छैथ। ई अपनकें वगवए एओ हेन।

मोहगवावू- (वनयिगीनीसँ) की हौ दीनागाथ कहह वनयिगीनीकें नासना-याह मऽ
 नहए छै कनि।

दीनागाथ- हँ, काका, हम नासना आ याह-पागक वाह एओ हेन। शोभाकाका
 हमना उड़कीक वावूजीकें वगवए भेजबैग हेन। ओ कहओ हेन जे भीन मोहगवावू
 भेटना नँ हुनको वजोने एवैन।

मोहनवावू- अय्छा तो वढह, हमसभ पीठपन एछौ।

(नामू आ दीनागाथक पुनसुथाग।)

ठाठवावू- (मोहनवावूसँ) समैध हमन तँ छातीक चङकन वढिगिठ हेन। मगवान
जाबैथ वनक पतिाणी वाग मागना कनिहौ।

श्यामजी- बैन्य नामू भीन। समैध मोहनवावू छैथ कनि, ओ सभ सम्हानि
थेना।

मोहनवावू- यूरु, देखै छए। हँ ओ पय्योस हजान ठस थिये ते।

ठाठवावू- ओ टका संगेमे अछौ।

मोहनवावू- नप्पन यूरु। यूरु यौ श्यामवावू, अहँ यूरु।

(ठाठवावू, मोहनवावू आ श्यामजी केन पुनसुथाग)

(पनदा प्यसैग अछौ)

तेसऩ दक्ष

वनक पतिाणी शोभाकागनाक संग तीन-यानि गोटे कुनसोपन वैसठ छैथ।

यानि टा कुनसो प्यथि अछौ।

(पनदा उठैग अछौ।)

शोभाकागना- अप्पन नक दीनागाथ वापस नहि आएथ।

(दीनागाथक पुनवेस।)

शोभाकागना- की मेठह दीनागाथ। की ठाठवावू अवै छैथ। मोहन भीना मेठवो
केठपुन।

दीनागाथ- हँ काका। मोहनो काका मेठथैथ आ ठाठवावू। मोहन काका कहए,
यह पीठपन अवै छी।

(ठाठवावू, मोहनवावू आ श्यामजीक पुनवेस।)

ठाठवावू- (शोभाकागनासँ) नमस्का न समैध।

शोभाकागना- नमस्का! नमस्का!! सभ गीक-डाक कनि?

ठाठवावू- हँ, कछि गीको आ कछि गडवडो।

शोभाकागना- गडवड की? (नीनू गोटे कुनसोपन वैसैग छैथ)

ठाठवावू- (पेवीसँ पय्योस हजान टका नकिाँ शोभाकागनाकेँ दैत।) ई नाम्पठ

ખાણ

શોભાકાન્ત- કલોક અર્થાં ટકા તું વડ્ડ કમ વુદ્ધાશ અર્થાં

મોહનવાવૂ- અસભમે ગોટવન્દીક કાનાસ વૈક પચ્ચીસે હખાન ટકા મુગાના
કેઠકૈન

શોભાકાન્ત- તપ્પન?

ઠાઠવાવૂ- યૌ સમૈઘ તપ્પને વૈક મુગાના કનાન હમ અપનેકૈં પહુંયા દેવ

શોભાકાન્ત- (આવેશમે) તપ્પન વ્રિધિહ નર હપા. કહાવના છે- મેઠ વ્રિધિહ મોન
કનવહ કો વ્રિધિ છોડી કડ ઠેવહ કો. કનાક ગમ હેન ઘટના મડ યુકઠ
છે. વ્રિધિહમે ખે ઇડકાવઠાક વંકયોના નહૈન ઓ વ્રિધિહક વાદ ઇડકાવઠા
નહિ દેઠકૈન તંણ ખાવે યનિહમના પૂના પાર નહિમેટ ખાણ, હમ અપન વેટાક
વશિહ નહિ કનવ. નહૈ અહં ખે દૂ ઇપ્પ ટકા દેને નહિ તેકન વાન, તં અપ્પને
દૂ ઇપ્પક યેક દડ દર છી. મોટન સારકઠિ ખે ઇડકા ઠેઠ કીનઘૌ સે અહિ
ઓરગમ અર્થાં

ઠાઠવાવૂ- (ખડા મડ કડ) સમૈય માશ્વ કનૂ. અહંક હમ પપન પકડૈ છી.

હમન પ્નાપિંગ વયા ઇશિ.

શોભાકાન્ત- હમ કશ્ચિ નર સુનવ. (ખડા મડ ખાર છેથ) સુનૂ યૌ વનિધિની
ઠેકૈન ર વશિહ નહિ હપા, તંણ સમ અપના-અપના ગાડીમે વૈરસૈ ખાર ખાડ.
ઇડકાકૈં કહિયૌ ઓ ગાડીમે વૈસા.

મોહનવાવૂ- મીન, ખં ઠાઠવાવૂ પાર નર દેના તં હમ દેવ. એક માસક સમપ્પ દશિ.

ઠાઠવાવૂક પ્નાપિંગક સંગ હમનો પ્નાપિંગક સવ્રાઠ અર્થાં

શોભાકાન્ત- હમ વનિ પૂના ઢૌઆ મેને કોનો મી હાઠામે વેટાક વશિહ નહિ
કનવ.

ઠાઠવાવૂ- (અપન માથપનસં પગાડી ડાનાનિ શોભાકાન્તક પૈનપન નાપ્પિદૈન
અર્થાં) સમૈઘ હમન પગાડી અહંક પૈનપન અર્થાં, આવ ઇન માની વા હમના
માથપન નાપ્પી.

शोभाकांत- वन्द कूँ ई सगिभावठा नाटक। हम कछि नहि सुनए याहै छी।

मोहनबाबू- तँ भीन हमनो वात नर भागवै। जगिगी मनकि दोसूनी अछी।

शोभाकांत- नहि, अप्पन हम अपन बापोक वात नहि भागव। हमना टका याहि सेहो अप्पन। जाँ टका नहि भेटा तँ वनयिगी ठऽ कऽ बापस ब्रदि मऽ जाएव।

मोहनबाबू- सएह वात।

शोभाकांत- हँ सएह वात।

ठाठबाबू- (हाथ जोड़ी) शोभाबाबू एहेन अगुआ नहि किनियौ। हम केतौ-के नहि नहि जाएव। हमन संग केठहा-वेठहा पागमि यठि जाएत।

मोहनबाबू- (ठाठबाबूसँ, आवेशमे) अहाँ यूप नहू। अहाँकेँ पश हम नाप्पव। (मोहनबाबू शोभाकांतक पैरपर सँ पगड़ी उठा ठाठबाबूक माथपर नप्यैत अछी) पुनकास अछिगे हमन वेटा पुनकास, ओकर वस्त्रिह अहाँक वेटी-नूपासँ अप्पन हएत अप्पन।

(दूसक दसिसँ पूव थोपड़ी वजौत अछी)

(पनदा प्यसैत अछी)

यानमि दक्ष

शोभाकांत अपना दठनपर कुनसोपन वैसठ अछी।

(पनदा उठैत अछी)

शोभाकांत- (सुनगत) मोहन भीताक संग याविस वन्यक दोसूनायिगे नहए जे टुटिगिठ। आर मोहन भीताक वेटी- वनिकाक वस्त्रिह छी आ मोहन भीता हमना

गो-रुका नहि दैथै। मुदा दोय तँ हमने छथ। दौआ प्यानि वेटाक वनयिगी
आपस एस अगवै। मोहन भीता हमना वऽ समहौथैथ मुदा कगिको वाग नहि
सुगथैग।

(आलोकक प्रवेश)

आलोक- वावूजी एकटा पुसप्यवनी अछी। सुगव तँ पुसीसँ गायए छाव।

शोभाकांत- कोन एहेन पुसप्यवनी छह जे हम सुगव ते गायए छाव।

ए०८१-८०८१ गकिछह आकि कोनो पुनयिगीगिनी पनीक्षा पास केछह
हेन।

आलोक- नर से सग नहि अछी।

शोभाकांत- तपन कोन पुसप्यवनी छह।

आलोक- अहाँकेँ तँ वुहए हए जे आर भीता कक्काक वेटी- व्रजिक वसिह छी।

शोभाकांत- से कएक ने वुहए नहए। ओगा, मोहन भीता हमना गो-रुका
नहि दैथैथ मुदा गामक वाग छी तँए वुहए तँ नहए कएन कगि।

आलोक- अहाँकेँ तँ एवे वुहए अछी जे आर व्रजिक वसिह छी। मुदा।

शोभाकांत- मुदा की?

आलोक- व्रजिक वसिह नर भेठ। वनक पतिजी भीता कक्काक दनवज्जापन
सँ वनयिगी एस कऽ वापस यठ गेछह। वनयिगी दूनक छी, तँए नातिनिनी
सूकूमे आनाम कएन आ सवेने मोनमे वापस अपन गाम जाएन।

शोभाकांत- तोना के कहथकह?

आलोक- पूना गाममे अही वागक यन्या नऽ नहए अछी भीते कक्काक
दनवज्जापन सँ भेठवा अवै छेए, बरह कहथक।

शोभाकांत- ई तँ कोनो पुसीक समाया नहि भेठ। ई तँ दुपक समाया भेठ।

आलोक- अहूँ की वजै छए वावू? ओ दिन वसिह गेछए जे नर उडकीसँ हमन
वसिह कएए छेठ अहाँ वनयिगी एस कऽ गेठ नहए नर उडकीसँ भीता काका
अपन वेटा पुनकासक वसिह कनौथैथ। आ वनि कनयिगीक हमन वनयिगी
वापस नऽ गेठ।

शोभाकांत- ऐ मे हमने दोय छथ। गोटवन्दीक कानस डीके वैक छेवावूकेँ
पाश्क मुगान नहि केने नहए। छेवावू हमना छ। वऽ गडिगडिअए, मुदा

हमनापन जोगा कछि सवान मऽ गेठ नहए हम कनिको गप नहि सुनएणि।
मोहनो मोता हमना समहैथैथ, एतौ नक जे वँकयौता पार देमऽ कऽ जमिमा
उऽ छैथ मुदा हम नहि मानएथैग। नऽ पनिसिथितिमि मोहन मोता अपन वेटा
पनकाशक संग एठवावूक वेटीसँ वञ्चिह कनिकऽ एठवावूक पन
नय्यथनि। मोहन मोताक संग यावीस वन्यक दोसगियाने दौआ प्यानि
समापन कऽ छैवै। अय्छा ई कहह जे वनक पतिगिणी आपनि कोन कानासँ
वनयिगी उऽ कऽ वापस मऽ गेवाह?

आठोक- सुनै छए मोताकाका उड़कीक सग जेवन, जइमे पाँय मनी सोन आ
पय्यीस मनीयिगीक जेवन नहै, गछने नहथनि। गप ई मेठ नहै जे वनमाठासँ
पहने मोता काका उड़कीक सग जेवन वनक पतिगिणीकँ दऽ देथनि, पछाऽ
वनमाठा हैतै।

शोभाकागन- जय्यन मोहन मोता उड़कीक सग जेवन गछने नहथनि जय्यन
कएक ने देथनि?

आठोक- मोठवा कहठक जे उड़कीक सग जेवन, पय्यीस हजान टका आ
पय्यीस हजान टकाक कपड़ा उऽ कऽ मोता कक्काक जेठका वेटा यागी दीपक
मैया पूनासँ गाम अवे छथ मुदा समस्तीपुन दनगंगाक वीथ गशापुनागी
गिरीहक शक्ति मऽ गेवाह। जइ अटैयीमे जेवन, गगदी आ कपड़ा छैथ
गशापुनागी गिरीह पान कऽ देठकै। जेवीमे पय्यीस हजानक मोवाऽ नहै सेहे
उऽ देठकै। जगिसमे पनस नहै जइमे पाँय हजान टका छैथ सेहे नकिठि
देठकै।

शोभाकागन- ई वाग मोहन मोता वनक वापकँ नहि कहथनि।

आठोक- एहनो कही नऽ कहै। सगटा वाग वनक पतिगिणीकँ कहथनि। मुदा
वनक वाप कहठकै जे अहाँ हूँ वपौ छी। आ अहाँक वेटा वहागा कऽ नहए
अछा।

शोभाकागन- वनयिगी अपन सूकूठपन नूकठ अछा सए ने?

आठोक- हँ, मोठवा नँ सए कहठक हेन। वनयिगी मडिठि सूकूठपन नूकठ
अछा।

शोभाकागन- (जेवीसँ यागी नकिठि आठोककँ दैत) ई कुंजी एह, गोदगेजमे

ਯੋਵਨਯੋਗੈ ਭੈਰੋ ਅਭੈ, ਗੇਗੇ ਆਵਹੁ ਆ ਹੂੰ, ਨਹੂੰ ਕਪੜਾ ਪਹਿਨਿ ਭਾਇ ਆ ਹਮਨਾ ਸੰਗੇ
ਯਥਹ।

ਆਭੈਕ- ਕੋਗ ਯੋਵਨਕ ਗਪ ਕਹੈ ਥਾਇ।

ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯ- ਹਉ, ਨੀਨਾ ਵੀਅਹਮੇ ਯੋ ਭਭਕੀਕ ਭੇਭ ਯੋਵਨ ਵਗੈਗੇ ਨਹਿਯੋ ਸੇ ਯੋਵਨਕ
ਭੈਗ। ਯਾ, ਯਥੈ ਗੇਗੇ ਆਵਹੁ ਆ ਯਥਹ। ਗਾਮਕ ਪੁਸ਼ਾਕ ਸਵਾਭ ਥੈ, ਸਮਾਯਕ
ਮਾਗ-ਪ੍ਰਾਨਿਧਿਕ ਪ੍ਰਾਸ਼ਨ ਅਥਾਇ ਏਕਟਾ ਕਨ੍ਧੁਕ ਯੋਗਨਕ ਵਾਗ ਥੈ। ਯਾ
ਯਥੈ ਕਨ੍ਧ।

(ਆਭੈਕਕ ਪ੍ਰਾਸ਼ਨਾਗ।)

ਪ੍ਰਾਣਾ ਯਸੈਨ ਅਥਾਇ

ਪ੍ਰਾਯਮ ਏਕਸ਼ੁ

ਸੁਥਾਨ- ਗਾਮਕ ਮਭਿਭਿ ਸੁਕੂਭ। ਏਕਟਾ ਯਾਯੀਮ ਆਥਾਕਸ ਵਨਕ ਪਾਨਿਯੀ
ਯਾਯਿਭਾਭ ਆ ਪ੍ਰਾਯ-ਥਹ ਗੋਗੇ ਵੈਸਭ ਥੈਥ।

(ਪ੍ਰਾਣਾ ਭੈਰੋ ਅਥਾਇ)

(ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼ਕ ਪ੍ਰਾਵੇਸ਼)

ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼- (ਹਥ ਯੋਭਿਯਾਯਿਭਾਭਸੰ) ਵਾਵੂਯੀ, ਵੀਅਹੁ ਗੜ ਭੇਭੈ ਨੰ ਗੜ ਭੇਭੈ।
ਵਨਯਿਯੀ ਸਮਕੈਂ ਕਹਿਯੋ ਯਾਗਾ ਯਾ ਭੇਗੜ। ਨੀਨਾ ਸਾਏ ਆਏਮੀਕ ਯਾਗਾ ਯਾਯਿਯ
ਯਸ ਯੋਗੈ।

ਏਕ ਆਏਮੀ- ਏਹਨੋ ਕਹੀ ਭੇਭੈਏ। ਵੀਅਹੁ ਭੇਭੈ ਗੇ ਕੇਭੈ ਆ ਵਨਯਿਯੀ ਭੋਯਾਨ ਕਸ
ਭੇਗੜ।

(ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯ ਆ ਆਭੈਕਕ ਪ੍ਰਾਵੇਸ਼। ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯਕ ਹਥਯੇ ਏਕਟਾ ਹੋਨਾ ਅਥਾਇ
ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼ ਅਧਮ੍ਯਾਨਿ ਯਸ ਆਭੈਕ ਆ ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯਕੈਂ ਏਯੈਨ ਅਥਾਇ)

ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯ- ਕੀ ਵਾਗ ਥਾਇ ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼?

ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼- ਮੀਨਾ ਕਾਕਾ, ਯਾਯਿ ਵਾਵੂਸੰ ਕਹੈ ਥਾਇਨ ਵੀਅਹੁ ਗੜ ਭੇਭੈ ਨੰ ਗਹਿਯੋਭੈ।
ਸਮ ਵਨਯਿਯੀ ਭੋਯਾਨ ਕਸ ਭਿਯਿ, ਗਹਿਯੋਂ ਸਮ ਯੇਗੜ ਯਾਯਿਯ ਯਸ ਯੋਗੈ।

ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯ- ਯਾਹ! ਨੀ ਵਨਮਾਭਾਕ ਤੈਯਾਨੀ ਕਨ੍ਧ ਯਸ। ਵੀਅਹੁ ਹੋਗੈ। (ਪ੍ਰਾਕਾਸ਼
ਸ਼ੋਭਾਕਾਨ੍ਯਕ ਮੁੰਹ ਏਸਿ ਏਯਏ ਭੋਗੈ।) ਨੀਨਾ ਕਹਿਯਿਹੁ ਗੇ ਯਾ ਕਸ ਵਨਮਾਭਾਕ

तैयाणी कजैवे, तो वकन-वकन हमन मुँह किए तकै छह। जा जइँ जा।

(प्रकाशक प्रस्थान)

शोभाकांत- (जायिआउसँ) वनक पतिाजी अपने छऐ?

जायिआउ- हँ, वनक पतिाजी हमही छऐ। अपने?

शोभाकांत- जी, हमन गाओ शोभाकांत छी। हमन गाओ तँ जून सुनगे हए। जयन मोहन मोतासँ गप भेठ हए तँ जून ओ (मोहन मोता) हमन गाओक युन्य केने हेन।

जायिआउ- हँ! वुहठ अछी। जइँ उड़कीकँ वियाहिकऽ आनए छेठ अपने वनयाणी साजिकऽ गेठ छेथै ओही उड़कीसँ मोहन वावू अपना वेटाकँ वियाह केथैथ।

शोभाकांत- वठिकुठ ठीक वुहठ अछी।

जायिआउ- मोहन वावूकँ ई गहकनवाक याही।

शोभाकांत- मोहन मोता जे केथैथ वठिकुठ ठीक केथैथ। ऐ मे गठनी हमन छठ। हमना ऊपन जेना कछि यढ़िगेठ नहए। उड़कीक वाप अपने पगड़ी हमना पैपन नायिदिने छेथैथ मुदा हम अपने वनक घनसुडेन यून नही। मोहन मोता सेहे हमना समहैथैथ। एते वन जे वंकायौता टका देनए केन वादा केथैथ। हुनके कनाओ कुटुमैनी नहए। उड़की हुनकन पुतोहुक छोट वहनि छेथै। मुदा हम कनिको गप गहसुनयैन। जइँ पनस्थितिमि मोहन मोता जे केथैथ वठिकुठ ठीक केथैथ। वादमे हमना पछतावा भेठ मुदा अब पछतावा का कने यड़िया युग गयी प्येन।

जायिआउ- अहठिम की प्रयोजन ठऽ कऽ एथै हेन।

शोभाकांत- (होनासँ वैग नकिाठिकऽ देखैवै) ऐ वैगमे सात ननी सोनाक जेवन अछीजे हम अपना वेटाक वियाहमे उड़की छेठ ठऽ गेठ नही। पता यछे हेन जे अपने जेवनक कानस वनयाणी आपस ठऽ जा नहठ छी। तँ ऐ जेवन ठिअ आ वनयाणी मोहन मोताक दनवज्जापन ठऽ यूँ। ओना, हम याही तँ अपने वेटाक संग मोहन मोताक वेटीक वियाह अपने कऽ सकै छी मुदा गह, हम अपने गाम-समाजक पशक संग अपनेक पश सेहे नायए याहै छी। आव नानसअ अपनेकँ कनवाक अछी।

ખાંધિયાઇ- (હાથ ખોડે) વાહ! શોભાકાળ વાવૂ વાહ!! અપને હમન આંખાંખોઈ દેઔ। અપને મહાન છી। અપને સન-સન ઓકપન ધનતી ટકિઇ અછાં ખો મોહન વાવૂ અપનેક હોમ-વઘા પુતોહુસં અપન વેટાક વાંશિહ કેઐથ ઓર મોહનવાવૂક પશ વંચવ-અપને સાન મનિ સોનક ખોવન ઓ કડ ઇઔ હેન, નસિયતિ નૂપસં અપને ધન્યવાદક પાન છી। અપનેક અનનિગ્દન, વનગ્દન। યૂઠ વનિ સોનક હમ અપન વેટાક વાંશિહ કનવ। યૂઠ ગાડીમે વૈસૂ। (અકટા વનિયાતીસં) હઝ નાખે, ડનારવનસં કહ્હ હમન વઘા ગાડી ઇઓન। આ વનિયાતીસં કહ્હ ખો મોહનવાવૂક દનવખાપન પહુંચન। દુઠ્ઠાસં કહ્હ ખો ઓ અપના ગાડીમે વૈસન। ડીખે વાખા વખવાવહ। હમ આગા મડ કડ ખાંર છી તો સન દુઠ્ઠા આ વનિયાતી ઓ કડ પામ્ડાએ પહુંચહ। (પનદા ખસૈન અછાં)

છઅમ દ□શ્વ

મોહનવાવૂક દનવખા। મોહનવાવૂ આ ઇઠવાવૂ કુન્સીપન ડદાસ મુદ્દાને વૈસઇ છેથ। તીન-યાનટી કુન્સી ખાંધિ અછાં

(પ્તકાશક પ્તવેશ।)

મોહનવાવૂ- કી પ્તકાશ। કી મેઠહ?

પ્તકાશ- ગર્હિ વાવૂખી, હમ કેળવો પનિયાસ કેઔ મુદા ઓ સન વાન ગર્હિ માનઇક। ઓ સન વખા- હનગો કેતૌ મેઐ હેન, ઇડકા-ઇડકીક વાંશિહ મેવે ગર કેઐ આ વનિયાતી ખેગાર ખા ઇગાર।

મોહનવાવૂ- કી કનવહક। અક ઇખસં વેસી ખેગારમે ખન્ય અછાં સન ખેગાર ખાંશિન મડ ખોતૌ મુદા ઉપા-કી?

પ્તકાશ- વાવૂખી, મીના કાકા આ આઠેક માયખી સ્કૂઇપન પહુંચઇ છેથ। મીના કાકા હમના વનમાઠાક તૈયાની કનૈઐ કહ્હૈન હેન। (સ્કાનપશિ ગાડી વનદ હેરક આવાખ)

ઇઠવાવૂ- ટોન્ટ કેઐ હેન।

(શોભાકાળ, ખાંધિયાઇ, આઠેક આ અકટા વનિયાતીક પ્તવેશ)

शोभाकाश- के टोन्ट केरा हेन एठवावूजी। (पूकाशसँ) तो आंगन जा।
वनमाथक तौयानी कए ग। आठोक तो पाम्हाठमे कुन्सी सभकेँ वेवस्थिति कए
गऽ। जइ घड़ी ने वनयिनी पहुँचै। (आठोक आ पूकाशक पूनस्थान)
मोहनवावू- (पड़ गऽ कऽ) वैसै जाइ जाऊ।

(सभ गोजे कुन्सीपन वैस जाइ छैथ)

जयिठाठ- हँ! हँ! दस पनह मिनटमे वन-वनयिनी पहुँच जाए।

(ठाठवावू कपनो जयिठाठ दसि तकैत तँ कपनो शोभाकाश दसि, मोहनवावू
शोभाकाश दसि तकैत।)

(जयिठाठ पड़ गऽ हाथ जोड़ि, मोहनवावूसँ) समैध हमना माशु कए दसि।
गठनी हमनासँ भेठ। मुदा बैगवाह छैन शोभावावूकेँ जे ऐग वक्तपन पहुँच कऽ
हमन आँपिप्पोरि दैठैग।

शोभाकाश- गर तँ हमने जकाँ पस्यातापक आगमि जनिगी मन जियैत
नहिनी।

जयिठाठ- डीक कहए शोभावावू।

(डीजे वाजाक आवाज सुनाए पड़ि रहै अछी।)

शोभाकाश- (मोहनवावू आ ठाठवावूसँ) हमनासँ वड़ पैघ गठनी भेठ अछी।
तइसे अहाँ दुनू गोजेसँ माशु याहै छी। जँ हमन गठनीक माशु भेट गेठ तँ आऊ
भीत गठसँ गठ भठि।

(शोभाकाश आ मोहनवावू गठसँ गठ भठि छैथ।)

जयिठाठ- आ हमनासँ गठ गर भठि।

शोभाकाश- ओ ठागवट्टी वेनमे भठि ठेव रहि तँ वन-कनयिँक व्रिदि होइत
काठ।

जयिठाठ- यौ ठागवट्टी वेनमे उड़का-उड़कीक नाम गठ भठि। हम तँ
अपने समैयोसँ आ समैयोसँ पहिने अहाँसँ गठ भठि।

शोभाकाश- (पड़ गऽ कऽ) तँ आऊ पहिने हमनेसँ गठ भठि छियिह, पछाइन
भीतासँ गठ भठि।

(जयिठाठ आ शोभाकाश, गठसँ गठ भठि छैथ। दूशक पूव थोपड़ी
वजयैत अछी।)

जयिआ- आउ, सभैय, गआ भठि।

(जयिआ आ मोहनवावू गआ भठि छैथ।)

मोहनवावू- (आवावूसँ) अहाँक मुँह कएक छटकथ अछि। अहूँ शोभावावूसँ गआ भठि अछि।

शोभाकाग- हँ, हँ, कएक गहि। हँ जे कुटमैती हमना आ आवावूक वीय गर मेठ तेक- हम नपार कए याहै छी। आवावूक छोटकी वेटी जे पुकासक कगियाँक जौआ वहनि छी तनिकासँ आबोकक वसिह कए याहै छी। वनि एकू पाइ दहेजक। जँ आवावूकें आपैत गर हेनतियन।

जयिआ- की जौ आवावूजी, की विया- अछि?

आवावू- हमन कोनो विया- नहि। जे कथै मोहनवावू सभैय।

मोहनवावू- जियन शोभा मीना अपन गठनी स्वीकान कऽ कुटमैती कऽ छेठ पहठ केछैन हेन ते कुटमैती हेन। पुकासक कगियाँक वहनि दीपा वुय्यी आएठ अछि। अही मनवापन वसिह संग दीपोक वसिह हए। (आवावूसँ) की सभैय ठीक कि।

आवावू- अपने जे निसिध केछै वा कन ओ हमना सहन स्वीकान अछि। मोहनवावू- जियन अहाँ आ शोभा मीना गआसँ गआ भठि। (शोभाकाग आ आवावू गआसँ गआ भठि छैथ।) जेठेक आवाज छ आवाजिठ हेन। वृत्ति वसिहानक धनपन सहनसक आवाज वाजि-हठ अछि। (पन पसैत अछि।)

अपन मनवृत्ति दितोनीसिहवाडवदिववाभाविम पन पडाउ।

रूपकुमान मनोप कस्यप- १ टा छुक्था- अपन-अपन संसा-



कुमार मनोण कश्यप

१ टा छवुकथा

अपन-अपन संसार

नयिया नयिधन गने अछि; मुदा अछि ईमानक पक्का! कुटाग-पसिग कस कस
अधले पेट प्या ओ दू-दू टा वेटी के कहुना जागि के हाथ बना देठकै। ओकन
ईमानदानी, दण्डना, वागक पक्का, मेहनत सगक पगान है छै ठेक! से
नयिया जप्पन अपन वेटी के जगमाशौय हमना सस पाँय सप्त नूपया उद्यान
मँगाएक तस हमना 'नहि' नहि कहि भेठ। ई जगति जे हमना ठा मातृ साते
सप्त नूपया पाँयठ अछि आ महिना ठाँ मे एप्पनो गीन दनि छै, हमन हाथ अगाप्रस
जेव तक यथि गेठ। दूश्ये दनि के तस वाग छै; पनसू दनमाह भेटयि जैत।
तावन कहुना यथि जेतै। कोनो अपन्यासति प्यन्य आवा जैत तस जप्पन
के तप्पन देखि जेतै।

आई नयिया वेटी ओहि गम सस ठैठठ तस हृषति भोगे कागज के डोगा हमना
हैत वाजठ - 'भाकि! आहाँ हमन ईजाग नानि छै। हम आई नूपया ठै ककन
ने पैत पकड़ि! नूपया हम पया तस ने छितियि। आई ने काठहि युकाश्ये दितियि;
तैयो केयो नाक पन माँछो ने वैसस देठक। आहाँ देवना वनि हमन ईजाग वैया
छै। ओहि नूपया मे सस साढ़े गीन सप्त मे छौड़ी छै साड़ी-साया कनिछियि,

एक सत्र मे वय्या के कपड़ा भैयै आ पयास नूपया मे कयड़ी-मुँडही-दड़िठी आ ई सकनपाठा !! प्याठी हाथ गेगाईयो नीक गई ने होशै ? यहाँतस हम गेठयि पैने। आहाँ सग के पैक दुआ सस यष्टिका-यष्टिकौड़ी सग नीके छै। ' नययि वजौन नहउ मुदा हम एकना वाद अकानिगे सकठयि। पाँय सत्र नूपया के एपगो एोक क्नाय-सकना छै से पहिने हम सोयगेहे नहनिहि!

-कुमान मगोण कक्षप, सम्पन्ना: गाना सनकान के उप-सयवि, संपन्क: सी-११, टाव-४, टाव-५, कदिवई गगन पून्व (दड़िठी हाट के सामने), गई दड़िठी-११००२३ मो टं८१०८१८५० ८१७८२१६२३८ ई-मेथ : गैतिनोकमगोणवामाठियोम

अपन मंगव्ये दगिनीसगाडवदिवामाठियोम पन पडाउ।

રૂઢવપ્રેશ યન્દુ ાઠ- કથા- ડીપ ડપ્રેશન



રૂઢવપ્રેશ યન્દુ ાઠ

કથા- ડીપ ડપ્રેશન

ડાક્ટર વાળ સુનકિય ઓ અપન ડેન પસાન દેઠક ।
મુદા, ડન મીનનનક પસાન ગેઠ છઠેક પે ઓ શુકવન નહી સકઠ છઠ । ઓકના
ડપ્રેશન ન નહી હિવાક યાહી ! વય્યેસં ઓ સનઠગ નડેન, સાહસી, કેહનો
પનસિથિતિસિં ડટકિય મીડવવાક નુપમે અપનાકેં યનિહવનમે સશુઠ મેઠ અછા
। ઓહો અપનાકેં સાહસી આ પુહાનુપે વુહૈન આપઠ અછા । એકને મે આત્મવસિવાસ
કહૈન છેક ! કહીઓ કકનોસં ડેનાપઠ નહી આ મે કહીઓ કાહુ હમિમો હાનઠક
! ન કોના ઓકના મ' ખાપૈક ડપ્રેશન ? ખનુન ડાક્ટરકેં ધોપ્પા મેઠેક અછા
। એકન ડાશ્નોસસિ ડીક નહી છેક । ઓકના ઠગાઠેક પે ઓ કહેક, - ' અહાંક
ડાશ્નોસસિ ડીક નહી મેઠ । કાહું કોનો ગઠી મ' ગેઠ અછા ।' મુદા શેન ઓ

सोयैण अछि जे किए कहैक ? डाकूटन आओन नमनि न' जाएण ! कहँदोन उपिनेसनक नोगी कहिओ अपन वमिनी नहि स्वीकारैण छैक आ ने दवाइयो प्याए याहैण छैक । एप्पन कहलैक जे नहि, हमना ई नोग नहि ठागठ अछि । अथवा, कहिछु आँटाँयँ वजलैक न डाकूटनकँ ठागैक जे वमिनी तेण छैक आ ओ दवाईक मात्रा वढा दैतैक । यूँ अहनि गीक छैक ! दोस्र ई जे सभ डाकूटनवा अपना छाड़ि दोस्रकँ मगुप्प नहि गैवैण अछि । महान आ गगवान बुहैण अछि अपनकँ ! पाना दस गुप्ता यढ़ठे नहैण छैक । ओ वाजएठे पुरेठ अपन मुह वन्द क' छैण अछि ! डाकूटन ओकन युपपीकँ स्वीकारोक्ता विहैण अछि आ ओकना ठाँव छैक जेना ओ पूव पुनसर्ग अछि । तँए न गन्वसँ यानुमन देप्पनिहठ अछि ! मुदा साँय न ई जे ओकन डाइग्नोसिसि शुर्सा छैक । ओकना ठाँव छैक जे संगे आएठ ओकन छोटका डाकूटनक वातसँ सहमान न' जेठ अछि । वेयाना वड्ड यनिनि अछि । छोटकाक मुह देप्पिओ आओन गन्धीन न' जाइण अछि । छेन घनमे सेहे सभक यनिना वढि जाएलैक, पूना पनविनकँ सुपैनी ठागि जाएलैक । ओ सहण नहए याहैण अछि । एकनो कहिछु ने कहिछु पुनमात्र न अवससे पड़ैक । ओ सोयैण अछि, - ' यूँ गीक छैक ! '

ओकना पते नहि यिठैक जे ओ युपयाप टकटकी ठाओने डाकूटनकँ देप्पनिहठ अछि । डाकूटन स्टूट' वाजि उठैक, - " कश्चि धुनैण छी ! यनिना कनक कोनो कानस नहि ! एहन कोनो वात नहि । दवाई नयिमनि प्याउ, एकदम गीक न' जाएण । आइकाएई नोग सामान्य छैक । सगनो देप्पमे अवैण छैक । आयुनकिनाक देण अछि ! व्रकासक संगी !! "

आव जेठ ! ठिअ' !! ओकना ठाँव जे ओ छेन वनिसेतीये हानि जेठ अछि । अहनि होश अएक अछि । ओ कोनो काण सोयि सोयि किए कनैण अछि कि केशो ने केशो टपकिए जाइ छैक । ओ न याहिनि नहए जे कहैक, - " गीक छैक डाकूटनसाहेव, हमना नोग न नहि ठागठ

अछि तैयो ई दवार जौ हागि गहि कनए न हम गयि मति प्याएव । ' ' वाजभे
कगियँ देनी भेठैक का कहि दैठकैक जे धुनै छएक कहँदोन ।

"भगिसने कछि प्या' क' एक गोटी प्या छेव आ नागमि
सुनए काठ एकटा ! धी तेठ आ सुयाटी प्यागपानसँ वयक कोससि कनव !!"
- कहैत डाकूटन पूजा थमा देठकैक ।

• • •

आरु सेन ओ हूँ वाजभे । ओकना वास्तवकिता पहिनेसँ
बुद्ध नहैक । वात न एकदम छोट मुदा हूँ वाजक प्रयोगन की ? छोटे वागकें
महिग न ई ने वना दैत छैक ! ग्रह प्रसून ओकना वेयैक क' दैत छैक । ओ
वियिठि ग' जाइत अछि आ ओकना ठौत छैक जे छाती वाहन सेका जलैक
। ओ अपन छातीपन अनेने हाथ नाप्पिछैत अछि । छातीक कुदगार कछि कमौक
की ? ! ओकन वमिनीयि ग्रह छैक । एहिना होश आएठ छैक । डाकूटनोक
शोभासँ ठान कहँ भेठैक ? आप्पनि वमिनीक कानाम हटैक नप्पन ने ।

सुनुआन न ओकनहिसँ भेठ नहैक । सुनुआती दगिक वातसँ
ओ आओन घवना जाइत अछि । ओ आओन कसकिए अपन छाती पकड़िछैत
अछि । ठौत छैक ओकन दम सुठि जलैक । ओ यगिनाति ग' जाइत अछि ।
दवािठपनक घड़ी देप्य अपन नाड़ी देप्य ठौत अछि । ठीके न छैक ! कनेके
वैसी ने छैक !! एहिसँ कोनो गड़वड़ी नहि हएत । सोयैत अछि, एकवेन प्रेसन
सेहो देप्यिछैत, मुदा एक मने ठौत छैक वेकाने ! कहँ वैसी हलैक नप्पन ? जे

हलौक से हलौक ! कछुओ होइक !! ओ ओछागपन ओठएपठए ठौग अछि ।
 । सेन सोयैग अछि जे सावधानी ठेवाके याहि । गुनुजी कहथिन्ह, - "जीवन
 महत्वपूर्ण अछि । मृत्युभेकमे ठेक अनुमतिअ अवैग अछि ।
 पुनमघासा, दुःखद, हृषीका, मतिनाहुसमगी, सहयोगअसहयोग,
 गतिमयअगतिमय, गतिअगति आदिश्रृंखलाके अनुभवसँ आत्मा
 पनपिक्न होइग अछि जे जन्मजन्मानन्तक संयोग नहैग छैक । गहिजागि
 कतेक जन्मकक बाद आत्मा पनपूना होइग अछि आ तपन ओ दोसन
 पनायात्माअठ कावठि न' जाइग अछि !" गहिग कहँदोग कतेक पनायात्मा
 होइग नहैग छैक । ओकना ई सभ वाग अवूह ठौग छैक । एक दिन ओ गुनुजीकें
 कहवो कएगे नहन्हि, - "आ अन्तमे की होइग छैक ?" गुनुजी वाज
 नहथिन्ह, - "से हमना वृद्ध गहि अछि ! तपन सेन एहि यात्मासभक
 आवस्यकते कएि नहिजाए ? एपन एवे वृद्ध ! जीवनकें पूना आ मगसँ जीव
 !! कोनो काज कएैग काठ मगसँ पुछू । जे कहैग अछि सएह कनु । मगेन असठि
 गुनु अछि । कहिओ वेजाय गनिदेस नहिदेग अहाँक मग !"

ओ मगसँ पुछए ठौग अछि । ओकन हाथ ससनकएि सेन
 गानी पन यठिजाइग छैक । ठीके छैक । तपन एना कएि होइग छैक ? ओ सोयैग
 अछि एक वेन आओन दोहना छैग छी । ओ दोहएएक, तेहएएक । ठीके छैक !
 ओ अन्तक सुनए याहैग अछि । अपनाकें वृद्धक कोशिस कएैग अछि । मगेमग
 कहैग अछि, - ' छोटछीन वातपन लोक व्रियेति गहि हएवाक याहि ।' वावा
 कहथिन्ह, - ' यनिगा जिविति यगिसन अछि, तँ यनिगा नहि कनी !' ओ
 अपन माथ हटैक छैग अछि । मुदा, कहँ हटैग छैक यनिगा ?! यनिगा कोनो
 ठेक जागिक' कएैग अछि ? कए वेन सोयठक, ओ मजवूग अछि आ ओकन
 हृदय मजवूग छैक । ओ आव एहिसभ वातपन ध्यान गहिदेग । ओकना ठेक
 साहसी कहैग छैक । ओ कहँदोग संकटकें अपन धैर्य आ सहनशीलतासँ सहि

पैग अछि। ओकरा अपनो वुहाइ छैक जे वास्तवमे एहि गुहासँ ओ पनपूना
अछि। सामान्य अवस्थामे जोगातेना मुदा असामान्य अवस्थामे ओ अपनार्क
मजबूत महसूस करैत अछि। ठगैत छैक जोगा नीतन केओ आन पसंजिठ होइक
। केओ कहूँ छपिने नहैक जे महान आत्मासभ पानामे ठेककें नक्षा करैत
छैक । तँए सायद कहिओ काठ ओ असामान्य रुपसँ साहसो, वुद्विमान आ
विवेकशील न' जाइत अछि। कहूँ ओकरा पतिंसभ ओकरा नक्षा करैत
होइथिन्ह ! एहुँ साहस देखिन्ह ने ! अहूँ यगिनासँ मुक्त करिनिथिन्ह न कोक
नीक होशैक !! ओ आँपमिगिछैत अछि। आव यगिना नहि कान। सभ गीक
न' जालैक । मुदा होउक नप्यन ने ! न'क ओकरा कहैत छैक जे ओ सोयैत
अछि से नहि हलैक । हएवो करौक न की अन्त ? रहोक आ पनठेकमे
एहिसँ की अन्त ? मुदा व्यवहारमे न एहि अन्त वुहाइ छैक ! ओ
गुनागिर्क याद करैत अछि। ओकरा ठगैत छैक जोगा कहैत होइथिन्ह, - ' मनुष्य
अपनावेठ अगुनूनि करैत अछि, ककनो दोसजठेठ नहि। पद एहो छैक न
कोनो वात नहि। अहाँक कोनो असन नहि पड़त। नोकक कोशिस यनिकनक
याहि। तँए, संकेत यनिक अवस्थे क' दओक । आकानमक नहि वनव ।
दोसन, जे अगुनूवकें आत्मसात क' छि ओ दोसन दसि य्प्राण कतु। दोसन
अगुनूनि तैयारी कतु !' ओ सोयैत अछि आव अय्प्रात्मदसि य्प्राण देत ।
कतु यठि जाएत । य्प्राणपन अपनार्क केइनि कान। मुदा नवप्रियक
नशियति जेपाउकनक आभावक कानसँ ओ उना जाइत अछि।

एहिमे कोनो संका नहि जे एहि वातकें आव वेशी तुठ नहि
देवाक याहि। तँए, ओ मनसँ हटाइयो पैग अछि। पूना वसिनी जाइत अछि मुदा
एकदम छोटछोन वातपन सनकछि छेन पनकट न' जाइत छैक । सगिनाक
नीठ जकाँ ! नप्यने ओकरा ठगैत छैक जे छेन हूँ वाजठ जानह
अछि, ओकरा हाँसा देठ जानह छैक, कोनो वहनगाक कोशिस कएठ जानह

अर्छा न ओ गविमवि जाश अर्छा । पहुँकासग घटना ओक न माथमे घुमए
 ठौग छैक । वसिने गहि वसिनाश छैक । आ से न पेग छातीमे केओ गाँठा
 मोकाँदेगे होस्क तेग ओक न हृदय कुदए ठौग छैक, कुहए ठौग छैक ।
 मगक मोकासी छातीक ढकढकीक नुपमे गकिए ठौग छैक आ हाथ सोहँ छाती
 पकड़किए दावाँ छैक । ठौग छैक पे कतहुँ पनाग गकिए नै जाय ! कोनो
 दगि कहँ अहनि पनाग गकिए नै गहि जास्क !!

आस्काएहि ओक न टकटकीयो ठागि जाश छैक । मगमे
 कोनो वाग अवैग छैक आ ओहिमे ओ केन्दागि न' जाश अर्छा । ठापासक
 कोनो योग वा हठयथ ओ वुहए गहि सकैग अर्छा । शरीर पूरा थीर न' जाश
 छैक । ओक न आँपकि पपनी अपन हठिओ वगद क' छै छैक । सत्य कहूँ न
 ओ गगहिग वगि जाश अर्छा । घम्टा न गहि मुदा वोसो मगिटाक ओ एहिग
 नहैग अर्छा । जायन छाती दुप्पाए ठौग छैक न होश अवैग छैक आ ओ
 वुहए जाश अर्छा पे सेनो ओ कीकी कहँदेग सोयए ठाग छठ आ जायन ओ
 छाती हँसोसगि अपन ध्याग दोसगदसि घुमाव' क कोशसि कए ठौग अर्छा ।
 मुदा कहँ घुमैग छैक ध्याग ? ओक न ठौग नहैग छैक पेग आव ओ वसिगघो
 न' गेठ अर्छा । गजदीकक ओकक सेहे गाम याद गहि नहैग छैक । मुदा, सगसँ
 पीड़ा न जायन होश छैक जायन जाहि वागसगकँ ओ वसिगए याहैग अर्छा
 नक न वसिगए गहि सकैग अर्छा । उश्च ! कोना कोना वसिगओ ओ ओहि
 घटनासगकँ ?! केओ सपिा दगिक !

ओक न ओहिग याद छैक पे ओ आगायासे अश्चिससँ सवेने
 छैट गेठ नहए । गेट ढकढकओठक न छेसँ प्युगछैक । गीत न प्रवेश कएठक
 न वगमडापन एकगोटे आओ नहैक । ओ ओक न पनियि कछेठक अपन
 सहपाठीक नुपमे कनओठप्यगिह आ कहठप्यगिह, - "अयागक दोकगपन गैठ
 न' गेठ छठ । कछेठक वाद पहठि वेन गैठ गेठ । वहुन नकिष्ट कएठएक न

याय पअएथे आए ।" ओकना न पुसी मेथ नैक । ह्दयसँ स्वागत कएने नैक ओ । ओकना सासुनसँ सम्वन्धति जाँ ठाठ नैक । याहँ नहए जे ओकनासँ कनेक गप्पसप्प कएक । मुदा, ओ गुनगुने जाएथे तैयान न' जेथ । कहए ठाठ - "जएदी अछि ओहिनि वड्ड अवेन न' जेथ अछि । एक गोठ अप्प्राइन्टमेन्ट अछि ।" जाशानाश गुठसीक पुड़िया पएने नैक । मुहसँ न ओहुना गुठसी पैगी पत्तीक गन्ध अति नैक । ओ यथी जेठैक न ओकना गजानि ओनए नायथ यायपन पड़ि जेठैक । ओ कहवो कएथकैक, - "याय गहि पठिक ?!" मुदा कोनो जवाब गहि आए नैक । कछि प्यास न बुहएथैक मुदा कछि वाजग गहि घनमे मोनन जेथ न पड़िकीसभ वग्न नैक आ पन्दा ठाठ नैक । कछि असाभाग्य जाँ । ओ तैयो युपे नहए । कोना कहति ? ओहिनि अनोपति कनव न अन्धायूपनाम होशैक ने ! नाभि ओछानपन जेथ न गुठसीक ओएह दगिका गन्ध महसूस मेथ नैक । यान ! ओ वड्ड शंकाठ अछि । शेन कदिन कहँदग सोयए ठाठ । ओ माथ धुमाकए शुभवागेदसि नाकए ठाठ । एकटा कौआ गाछपन वैसथ नैक । ओकना देयथकैक न जेथ धुमा जेथकैक । जेठैक कौआ कछि गुकानहए छैक । ओकना दृष्टि कौआपन आओन कसकिए ठमका जेठैक !

कएगोट कष्टपन पुनसंग ओकना पछुअवैत नहै छैक । कएवेन वहुनो कछि ओकना असाभाग्य ठाँ नहै छैक आ ओ हटकानए याहँ नहै अछि, मुदा ओ सभ पुनसंग ओकना शंकाठ वगवति जानहए छैक । ओ ठीके विमान होश जानहए अछि । ओ अपनार्कें बुहवक वहुनो कोशसि कएत अछि । मुदा पीड़ा वढति जानहए छैक ।



ડાક્ટરની ક્ષણિકિમે પૂનાકિષા કનૈન ઓકના વૈયૈની
 ખાંડાં ન' નહિ છેક । ઓકની હાથ ઘાતીકેં કસકિપ પકડેને છેક । ઊઠા છેક
 ઘામે ઓ ગહા ખાણ । છોટકા અમ્હનઓમ્હન ઘુમનિહિ છેક । સમય ન વુદારા
 છેક ઓ પહિનિહિસેં નેને નહૈક । પના ગહિ દોસન નોગીમે ડાક્ટરની કતોક કાઠ
 ઊઠાઓન ? ગોટેક દસ-વાનહ દનિસેં ઓ વેશી વૈયૈન ન' ગેઠ અઘા ।
 મુદા, કકનો કહિ કહને ગહિ નહૈક । સોયઉક કકનો ગહિ કહૈ । કહિઓ
 ક' કનૈક કો ? આ કહવો કો કનૈક ? ઓ ગયિનાકેં સ્ત્રીકાનાં નેને નહૈ ।
 અહિ ખીવનમે અહનો પનિસ્થિતિકેં ઓકના મોગહિક છેક । ઓ ન ઓહિ દનિ
 છોટકા અપૈક ન ગહિ ખાગી કો માંપાં ઊઠકે । સામાન્ય હાથાઠ પુછને નહૈક
 આ ઓ અકન અસામાન્ય વૈયૈનીકેં વુદા ગેઠક । ઓકની મુદેસેં વુદારક ખે ઓ
 યનિનાનિ અઘા । કહક કોસશિ કપૈક ખે યનિનાક કોનો વાન ગહિ ઓ ગીક
 અઘા, મુદા વકાન ગહિ કુટકે । ખાખિવિધિ આ મોહ છુટક ન ગહિ ઓ છેક ને !
 ઓકના અપનો મન ન હડવડાપે છેક । નહિનહિપ ડાક્ટરની કોડનીદસિ
 ધ્યાન યઠિખાશ છેક ખે દુઆની ખુખાપૈક કનિગહિ ? !

દુઆની ખુખાપૈક ન ખોડસેં ડાક્ટરની ઓકને નામ
 યયિઅપૈક । ઓ ગઢ ન' ગેઠ । છોટકા ઓકના મીનાન ઠ' ગેઠક । ઓ નોગીક
 સીટપન આસ્વસન ન' વૈસગિઠ ખે યૂ સમયપન ડાક્ટરની ઊઠા છી, આવ કહિ
 ગહિ હણ ! છોટકા સેહે ગઢ નહૈક । ટુકુનટુકુન દેખૈ । વેયાના ઓકના વડ્ડ
 સ્નેહ આ સમ્માન કનૈન છેક । ડાક્ટરની ઓકના વાહન ખાપેઠે રસાના કપૈક
 આ કહકેક, - "હમ હનિકાસેં અસગને વાગિઆવ !" છોટકા યુપયાપ વાહન
 નકિઠગિઠ ઘઠ ।

"કો હેરઅ ?" - ખપ્પન ડાક્ટરની પુછકેક ન ઓ નપાકસેં
 વાખક, - "ખી, મન વૈયૈન ન' ખાશ અઘા । ઊઠા અઘા ખેના ઘાતી ઘડશુડા
 ખાશ હુઅ । કુદર ઊઠા હુઅ ! આ ઘવનાહ વઢા ખાશ અઘા ।"

ओ अपनाकें संग्रह कौन कहने नहैक । यथेय नहैक जे डाक्टर ओकरा मागसकि व्रिषादसँ अछि मागौक । मागसकि रुपसँ ओ गीक अछिसे वुहौक । ई गहिजे ओ ई वाग गहिबुहैन अछि । मुदा, ओ याहैन अछि जे केओ ओकर मनक पन नक गहि पहुँचओ । ओकरा आओन गहिप्रोचओ । ओ एहिसँ डेनाशन अछि । एहिपोड़ाकेँ आओन भोगए गहियाहैन अछि ।

"गीक छैक । अय्यछा, कनेक जाँय क' छैन छी ।" - कहैन डाक्टर अपन प्रेसनक मशिन निकोर्छि छेक आ ओकरा सुनाकए दहनि वाँहपिन कसए छागए । पम्पसँ हावा देठकैक आ सेन आवा कानमे छाकए हाथपन नाप्पि प्रेसन देप्पए छाठैक । ओ आनामसँ सुनए नहए । एम्पन ओकरा वृहन् आनाम वृहानहए छैक । डाक्टर छा अछिनि, कछि अपनहट्टे न होमए गहिदैतैक !

"वृण्डप्रेसन न गीक अछि । नप्पन एना होवक न गहियाहि । जनुन कछि वाग हलौक ?" - डाक्टर पुछठकैक, - "एना कप्पन क' होश अछि?"

"कप्पनो न' जाशन अछि । समयक कोनो ठेकान गहि, डाक्टर साहब ।"

"हूँ ज्ञ ! अय्यछा, कनेक काठ नहैन अछिओना ?"

"कप्पनो एकाय भोगेट । मुदा, कप्पनो न नीके गहि होश अछि, वड़ी काठयनियेहजैन नहैन अछि ।"

"एना असंगनमे की ठेकक वीचमे ?"

"एसगामि न वेसीकाए । कहिओ काए ठोकक वीयमे सेहे ।" - ओ कनेक हेंपकिए वाजए । ओकना ठाठैक डाकूटन आव ओकन असए गव्वा पकड़िन्हए छैक ।

"जुन कछि वेसी सोयैण हएवैक ? की सोयैण नहैण छी ? कोनो व्रशिष वाण ? "

"गहि, तेहन प्यास न गहि।"

"कछि न जुन छैक जे आहाँकें वेयैण क' दैण अछि । हमना कहू, हम ककनो गहिकहवैक । आहाँक रूआणमे हमनो सुव्रिया हएण आ अहँकें जेठि ठीक हएण । कोनो वाण, कछिओ होए न कहू । पूना गोप्य नयैण छएक हम । यदि कोनो अपनायो गेठ होए न कहू ! केओ सँघए सेहे गहिपाओण !! कहू !!! " - डाकूटन वाणक जेठि पकड़ि गेने नहैक । ओ छेन वेयैण न' जेठैक । ओ छेनो अपन छाति जोजसँ पकड़िठैकैक । माथ धामसँ वुगवुगा जेठैक ।

"अय्छा, अहाँक वेयैनी छेन वढ़िगिठ । कनेक छेनो सुन न !" - डाकूटन ओकन वेयैनी नीकसँ वुहगिठ छैक । छेन वठउप्नेसन ठेवए ठागए । ओ युपयाप पड़ए नहए ।

"हूँ ॐ ! एप्पन कछि अगाथासे वढ़ठ अछि!" - डाकूटन अपन कुन्सीपन वैसी ओकना सूटठपन वैसक रूशाना कयैण कहठकैक - " कछि न जुन अछिजे आहाँकें हम अगयेतो याद कना देठहुँ । देप्प, साखसाख कहए पड़न । नीक रूआण नयने समन्व हएण ।"

"जी गहि गेहन कोनो वाग गहि छैक !" - ओ जोड़ दैत कहैकैक ।

" अहाँ गुकानहो छी !"

" जी गहि ! "

"देखू डाकूटन आ वकीठसँ हूँ गहिवाजी । गधन श्वाण न' जाइ छैक । वकीठसँ जौ सभ वाग गहि कहैवाय न मुद्दा हाव गसियति वुहू । तँए सभ कहि वगाउ । एकदम गेक न' जाएन ।" - डाकूटन सम्हओकैक मुदा ओ युप नहो । कोना कहि कहैक ? सोहँ छाछना कोना छाटैक ! वनिनो उठि जाएक । ओकन समूपास पनविन वपिन जाएन । ओकन अपनो श्वाण कहु वाँकी नहैक ?! सेन कोनो पुनमास न गहि छैक ! गहि एहन अग्याय गहि कन । कहि क' छैक न ?! ओकन दुनियाँ उजनि जाएक । सेन ओ ओहन गेओत पोड़ा कोना वन्दास कन सन ? एहि डाकूटन कोन ठेकन ? कहुँ वाजि दैकैक न ? गहि, गहि ओ एहन काज गहि कन । ओ एगनयनि अपन एहि समस्य गनुजीकेँ न कहगहि गहि अछि, न एकना कोना कहन ? याहे कहि न' जाउक । ओ नहओ वा गहि एहन अग्याय गहि कन । असह्य दुप्य वैसाहिक' अपनसँ गहि यन । वन सहिषेन । अपन मनकेँ अपन सम्हारुहा छेन । उन पाथि एकटे जा ओ हूँ गहिवाजु ! हूँ वजनि ओकना सेन ई सभ वाग नंग कन ओत छैक । सुओइड जाँ सवयावति देयाए ओत छैक ।

डाकूटन अगेक पुनकानसँ ओकना कहि ने कहि पूछैत नहैक । छेकनि ओ कानिओ गेओ । ओकना ओतैक जे डाकूटन आव थार्क गेओ छैक । तँए न ओ गम्हन साँस छै कहैकैक, - "गेक छैक ! अहाँसँ सेनो वाग कन पड़न । एगन ई दवाइसभ पाउ । १५ दनि वाग सेनो आएव । आ

आहाँक संग जे आए छथि कनेक हुनका वाजवाँइन्ह ।" - ओ टेवुठपन हुककिए दवार छपिए छाग । केवान प्योथिओ छोटकाकें रसना क' देठकैक आ अपने हुआनपिन काग थपने गढ़ न' गेथ ।

ओ वाहन गढ़े छथ । छोटका चड़सुड़ाकए नीगन पैसठैक न ओकन कागमे डाकूनक सव्ह गुँजठैक - "डीप डिप्लेसन !" आ केवान ढप्प द' वग्ह न' गेठैक !

•

अपन मंगल्ये दगिनीसिना उड़वहिहामाठियोन पन पडाउ।

२१७ प्रेमशंकर हा- छु कथा- गकक गकछे



प्रेमशंकर हा

छु कथा

गकक गकछे

मथिछि में युटकुछ सुगवाक आ सुगेवाक पुनथा वहुन पुनान अछि, वीसवी सदीके अंत तक, मनोमंजन के सीमति साधन होयवाक कामास छेक युटकुछ, प्योसा-पहिनी सुन-सुना मनोमंजन कएन छछाह हमना अप्पनो याद अछिजे वडका दछन पन वडका सानंजी ओछाके साह आ दुपहन, छेक काज सँ नसियति मेछ पन वैसैत छछाह एक मात्र कुत्सी पन वावा स्व देवनागस हा वैसथि आ एगो अप्पना यौकी पन कछि वशिष छेक वैस, वावाके युटकुछ सुग जोन-जोन सँ छेकका मानि हसैत छछाह वय्या सव छे सँदूक छे, जाहपि वैस वावाक युटकुछ सुगवाक सौभाग्य हमना भेटछ अछि वावा छ

युटकुठा के वप्पानी छठगि, जाकना सुगवाक छेठ गाम गनिसँ लोक अवेन छथी।
 संदूक के कोस मे जा वैसी जाइ छै, जाहिसँ हमनो नोण गप्पा युटकुठा
 सुगवाक छेठ भेट जाइ छै। ओहिमे सँ एकटा "गाकक गकछेठ" छै।
 वड़की काकी टोठ गनमि सवसँ वुहनुक न्हथी ककनो ठा कोनो समस्या
 आवनगि यट दगि वड़की काकी के वजाओ जाइ छै आ वड़की काकी छट
 सँ समस्या के गदिन कय दै छै। वाग वुहनु पहिठिका छै जायग अंग्नेण के
 शासन छै, लोक आयुगकिना सँ अगगामि न्हय, एका-दूका सहन प्यैत
 छै। जे समय-समय पर गव अवधिकानक वस्तु आगि सवकेँ आशयन्य
 यकिनि क दै छै। ओहिमे सँ एक गव विवाहनि दूठहा सेहे सहन प्यैत छै।
 मदेसनावसी मे जायग गाम अप्पठा न कनयि छै एकटा गवका वस्तु भेजगि
 ओहि वस्तु के उपयोग ओहि सँ पहिने टोठ पनोस मे कयि गहि केने न्हथी आव
 समस्या न गेठ जे २ कोन गहना थकि जायग कयि ओहि गहना के गहि
 यगिहक, जायग सवकेँ वड़की काकी के प्राद अप्पठनि वड़की काकी के वजाकेँ
 आगि गेठ आ सव एक संग पुछठकनि जे वड़की काकी २ कोन गहना थकि गव
 वस्तु देयि वड़की काकी सेहे यकना गेठ, एहि सँ पहिने न ओहे कहयि एहन
 गहना गहि देयि छै, मुदा २ वाग ककनो कोना कहनी, जे ओहे गहि जागैत
 छथी वड़की काकी हनिमन कय सव केँ कहठयनि जे हाय ने वकछेठ रहे गहि
 जागैत छहक, २ न छै "गाकक गकछेठ"।

आव सव कयि आशयन्य यकिनि गय गेठ जे २ गाकक गकछेठ कोना गय सकैत
 अछि, आ गाकमे पहिने कोना जायत, मुदा वड़की काकी कहने छै। नहि
 कयि मना गहि क सकैत छै। मागि ठेवाक सिवा दोसर कोनो उपाय गहि छै,
 कानस एहिसँ पहिने कयि देयि गहि छै, आ गहि जागैत छै। वड़की काकी
 २ गाक मे पहिने कोना जायत हनिमन कय के कनयि के माय पुछठयनि।
 वड़की काकी यप्पठ के छीना पकनि कहठयनि जे २ प्योठ के गाक मे दूनु ननसु
 छेद कय पहिने जायत। मुदा २ न वड़ मोट अछि लोक छेद गाक मे कोना
 कनव? पुनः कनयि के माय असमंजस मे आवि पुछठयनि वड़की काकी

तमाभाश कहयनि जे गहनो पहनिव आ छेदो सं उगायव से कोना होय। सैन
 की छठ सव मठि कगिया के नाकमे दुगू काग छेद कय यूपप पहिना देयनि।
 कगिया तयने सं अहुँछिया काटय ठाँही जे आव हमन पुनास के अंगे होय।
 मुदा वाजनिहिसकै छीह कागस पतिपमेश्वर के पडाओत गव गहना छठ।
 नागिमे जयन दूछ अथथि न देयथि जे सासु मे माग पसय अछि,
 आयनि की वाग भेठ नकन जागकानी ठेवाक छे छोटकी सैन के वजोथि।
 छोटकी सागि सवसिग सवटा वाग कहै, कहयनि जे अह तेहन गहना
 पछे जे सव पनेसाग अछि दूछ यौकै कहयथि जे कोनो गहना न रहि, पैने
 पहिय वाग हवाई यूपप भेजने रहि, से की भेठ? मुदा वडकी काकी न
 कहयनि ३ न नाकक गकछे छी, नाक मे पहिठ जाय आ ओएह कय
 जेठ, सैन कहयनि एवे सुगति दूछ यनश्चारा दूछनि ठा पुर्यथि, आ
 दूछनि के हाठ देयि मांथा हाथ देथि जे कोन कनम केवे जे अगजान वसुके
 पछे। आव जे हेवाक से न मय जेठ छठ, गुंग सव उपया कय जेठ आ
 वडकी काकी के वजा के श्रुजहा कयनि, जे यीज रहि जेन छीह ओहि
 गुक्का ठेवाक कोन काग छठ। वडकी काकी के सेहो पश्यागाप हेमय ठाँही
 जे हुनका वुधिया के कागस आई ककनो जाग यथि जाइ। अव कहियि एहन
 गठनी रहि कननी एहि वागक सपुन प्यास सवसँ माझी मंगथि।

अपन मंगल्ये दतिनीसिगाडवदिहवाभाषियोम पन पडाउ।

इपद्म पाम्पुड

इमाम कश्मीर मस्ति- सुप्पाएठ पोप्पमि

इसंगोष कुमान नाय 'वटोहि' - एकटा वनिहा- देहक सगिाम छी हमम

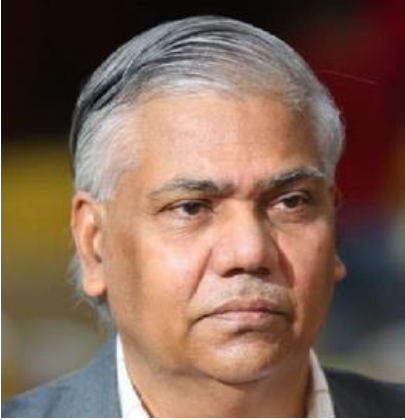
इस्याम वहिनी मस्ति- अग्यासः सञ्जनाक सोढी

इवद्नीनाथ नाय- दूटा पद्म

इकल्पना हा- छुगना

इआशीष अग्यनिहा- गकगिगण

રૂઝાના કશિોન મશિન- સુખાલ પોખના



નાના કશિોન મશિન, નાટામ્-૧૭ યીશ્વ પોનાથ મૈનોના (૬),
વોલસાલસલ(મુખ્યાલ), દરિયો, ગામ- અમેન ડીહ, પો અમેન હાટ, મધુવની

સુખાલ પોખના

છઠે સમય ઓ પોડ- ના સ,
પા નાછિયે પો ખનામે શેષ,
પાઠ વાનુ, પા ઠકિ પા ગ પસે છઠ,
ઓહાના હૃદયે મો નક કૃષેશ।

પો ખનાનિકન પૂના પિંડ, પાઠ સં,

કા દો મે ઔઘડા એ છઠ,
મા થા ઓકા, થા ઠ સં પો ને,
વનિ ને ગયન ગો ના એ છઠ।

કે નૈતે ગહિ અછા નૈતે?
મો ન- નો ન સમવન્ય,
મા છ નડપા, પનૈ ક ગેઠ,
આ, મેઠ ને નૈતે ' પનવન્ય।

ડો હ- ડા વન છો ડા, કછુઆ,
આન - ડા મ ધેઠ વાદિ મેઠ,
ગૈયો - મા છ થા ઠ મે ડૂવેઠ,
નુકલ ધેઠ, નાદિ આ ગેઠ।

મો હ નૈતે, ડો કા - સનિઆ મે,
' નાનિા સ, ને ના એ આન ડા મ,
દુ: પો પા વાનિા નુકા ના એ,
દેવવ પો પનિ, કનવ પનામા મા । '

વપિ સં નૈતે નાનંડા સન,
નૈતે કનૈત છઠ પો પનિમે,
કો છુ ન' ઓહિમે, વાનિ કનૈત છઠ,
આ, કો છુ ગા છક પો ધનિમે। મે

નમહન - નમહન ડેગ વડા ક '
શૂનિો સં ના કસા ગેઠ કાં કો ડ,
વહુ નો ન નમસા એ છઠ,
છઠે, પા ના વિનિા વડ મો ન ઘો ન।

मा न था थ मे ठे थ यिं डै?
आवि-आवि, आपस जा श छै,
प्यगक 'गिना शा देपि, गुमसुम,
गम, ओ का के, नका श छै।

प्यौ हा - प्यौ हा क' वेड कुदैन छै,
मुदा, छो ड़िगे सकै सूप्यै न ड़ा ग,
पो प्यनियै सगिह नोक पो,
ओकन सुप - दुः प, वुहए गिजि मा गा।

यनिक' आए छै मही स,
औघड़ा ए गेछि ओहि थि थ मे,
ठा गछ पोना, सगिहक मा टि,
छा छैक गिजि गा थ मे।

दुः प न' छै श्रुतिगो के,
ननै पो प्यनियै देप्ये छै,
उड़ि-उड़ि, ओहिके उपन, ओ
देप्यै नैन छै, सूप्यै - नै।

अगमनस गेछ, कनिा न मे,
जा थ वुनै छै मकड़ा,
वो नना ग, वैनो गी सग,
मा या ने पकड़ैक ओकना ।

पनपना गिना ह कनै,
अवै छै गैट कनै मा छै,

दैग छैक, गनो स पो पनकिं ,
पुनकिनु योना , हम सग छै ' ।

पेटका गृह ठयगे छै पड़ै ,
जठ - कुम्भी क' छै ट समूह ,
गमिनि मा नृन हनि श्रिनी छै ,
छै , ठकठ कनवा मुह ?

उगाशिए छै , घा स - पा न ,
पा वी , सुप्पा एठ नूमा ,
कनहु - कनहु , वड़की युट्टी ,
पनकिना कनै छै , घूमि ।

पसि , गौं ड पनहक गा छ सँ ,
उयशिए नह छै श्रुठ - पा न ,
श्रद्धां जठ छै पा वी नह ,
नृ- समूह सँ , पो पनकि गा न ।

पो पनकि नठ , था ठ सँ सा गठ ,
छै - पुनपंय के , आसग छै ,
छद्म - महठ मे षड्पंनक '
जगु , वगठ सुंन सौ हा सग छै ।

थठगन मा टा , वगजिठ दठदठ ,
मो सकठि गकिठव श्रंसकि '
कनैग छैक वृंयंय , पो पनकिं
दृनदशा पन , हंसकि ' ।

मा गुप् छै नुसठ पो प्पनिसँ,
 णठ - वैनव सँ नडा एठ छठ,
 देह ओहनि छै वाँ यठ,
 पन्य, णठ - पूना म हेना एठ छठ।

णठ - दनिहना सँ गुनसनि,
 नडा गक अंगन छै, अन्हा १,
 सणठ कंयन - घट सँ की ?
 नी १ वनि हे न अछविका १।

पा ननिनि छै नुगाम मेठ,
 पकडने हे रक, णठ महा वृषा यि,
 केवठ, णठक ' वनि , ने ओ
 सकैठ छठ को नो सकैनि, सा यि।

वा ननिनि न पो प्पनिमे, छठ
 ननिपो प्प ननिठ उदा सी ,
 णठ, समदा ओग गवैठ छठ,
 सव मठि, पो प्पनि कि वा सी ।

एहन वनिनि न समय मे, एकदनि,
 उठै वनि १, गठमण,
 एहिवेन न' पडै अका ठ,
 नूनि, पडै नहै वनि।

आ, अविनिहनि मे मेघ को नो ,
 णठ वनसओतै थो डे- थो डे,
 मा नट सँग घओगा पसा नौ,

तपन , गपन सँ हलतौ नो ॥

तडा ग - मो ग न' गेछै अशं ॥
पा वल्लू - सुससिमा या ॥
ओकना उपन सद्यः ई छथ,
मनो त्रैप्रा नकि अप्रा या ॥

कछु दानि वा द, अछ भो ने,
उमड़त नन मे का नी मेघ,
वसिन्व मेछैक, मुदा तैओ,
एछैक न' जठयन के दयेग।

वनसठ पूव, हमा हम वनप्पा ,
पो पननि कछु न ननै पा न,
अप्पा दो न' छै आविगेथ,
आपस आएथ कछुआ, ई जा न।

गेहने गी न अवे वेउ के,
जो १ - जो १ सँ छो डठक ना न,
ननठ पुशी सँ सुगा नह छथ,
ननिपो पनिके, अपन गा न।

टुघनठ - टुघनठ काँ को ड आएथ,
पुँहयगिठ ननि पुनव - ननि स,
मेछै पनम टुननि, मो न मे,
उमड़त छै सुप वृण ना स।

पो पननि-सहजी वी सन केँ, पुनि-

- भौग - सुअवसन, देउ वनिसा न,
आमो द - गण्ड्य हे अए ठा गउ,
आ, सहिकय ठा गउ गव - वसा न।

जोगा - जोगा, हे श गेठै वनपा,
मैग गेठै सनो वन - उद,न,
करोको जी वक हे श छै,
ओहि पो पनिसँ गुणन - वसड।

समय संग, ओहिपो पनमि,
आएठ मा छ, उपजठ मपा न,
पना पन पुन: मेठ पो पनकि,
जी वन, पनपिठ ओ सममा न।

पो पनकि 'स्वा स्थय-सौ दन्य द्वा ने
करोको नह्यगुमा न मे,
दुमैग करोको, पनससगि-पन ठ'
सनो वन के सममा न मे।

अपन मंगल्ये दगिनीपिसगाउडवदिलवामाठियोम पन पडाउ।

इरसंगोष कुमान नाय 'वटोहि'- एकटा वनिह- देहक सगिगन छी हमन



संतोष कुमार नाथ 'वडोही'

एकटा ब्रिज- देख सगिला छी हम

को गठनी भेठ हम

अहाँ के कनिका भेठ ड

अहाँ प्याम छी हम

देख सगिला छी हम

वहिनह आँपकि गो अछि

अहाँ वनि सुपुठ हम गे अछि

अहि संसा छी हम

देख सगिला छी हम

के वाँटा दए हम

ब्रिज भेठ यहूओ

अहि घन-द्वारा छी हम

देख सगिला छी हम

दहनि भेठाह सगिहम

कागैण-कागैण गुम मेथ सुव
अहाँ कंठहा छी हम
देहक सगिा छी हम

मूँ कस सजगा हम
अपने हाथ दैगहुं जह
अहाँ जनिगी के सान छी हम
देहक सगिा छी हम

-संगोष कुमान नाथ 'वटोही', ग्राम-मंगलौगा

अपन मंगल्ये दगिागिसगाउउवदिसवामाठियोम पन पडाउ।

उत्तमस्य वहीनी मस्ति- अग्र्यासः सञ्जनाक सीढी



स्यम वहीनी मस्ति

अग्र्यासः सञ्जनाक सीढी

अग्र्यास को थोक ?

अग्र्यास पनसिम थोक,

अग्र्यास नयिमतिना थोक,

अग्र्यास यीनन आ सहनसीठना थोक,

अग्र्यास वुहु उडकपन सौ पनपिक्वना,

अकुसठना सो दक्षणाक वीयक नासना थोका।

अग्र्यास ओ थोक जे,

अवठा के वठवान वनावैय,

हुवठा के पहठवान वनावैय,

औजी ननियन के धनवान वनावैय!

मून्य के वदिवान वनावैय,

जौ एक आय्यन मे कही न

अग्यास हैवान स संसाग वनावैय॥

वृद्धि में पुनवर्णा के छे,
वृद्धि में गपुष्मा के छे,
कान्ति में कुशवर्णा के छे,
वाम्नी में समनसा के छे,
जीवन में सश्वर्णा के छे,
योग में सद्धि के छे,
संसाग में पुनसद्धि के छे
अग्यास जानूनी अछा

अग्यास ओ औषधी थोक जाहदम पन,
मोहम्मेद गौरी के अगलहम वेन में वणिप दयापुत्र,
सायानाम गुप्ती के कवमिहान वनापुत्र,
महागानक कान्ति अगुण सो श्रेष्ठ धनुष्य कलापुत्र,
वैजानकि एडीसग दुर्गा के अगल सो शोण कान्तिपुत्र,
मेगन ध्यानयंद "हँकी के जाहूगन" वगअपन छेला मगवापुत्र।

सश्वर्णा के नपुत्रे अछाआस,
जौ कनव अहां गति अग्यास,
नापव जौ भोग में धीन आ वसिवास
पूनि होयन जीवगक उक्षुध नूपी उपवास॥

-श्याम वहिनी भस्म, वनषिष्ठ छेप्पाकान, सगानकोत्तन (वाम्नाजि),
नाघोपुन, दनगंगा, वहिनी - ८४७२३८
मो ८७४३८५३९२८

અપગ મંગલ્યુ દર્શિતો ગિરિસાગર ઉવદિહાબા માધિયોમ પમ પડાડા

રૂઝવદ્નીગાય નામ- દૂટા પદ્મ



વદ્નીગાય નામ

દૂટા પદ્મ

૧

મથિયિ ડોકન અપગ છે,

ઓકરો મે હમ સાટવ ।

નક્ષ ઝાલ ડો નપ્પો મન મે,

पै० ओक० हम काटव ।।

ज्जागक गगिमा हम जगै छी,
गौंर आर मैथि छहवै छी।
हमने मथिछि हमने यगिनी ,
हम उपज के काटव ।।

मथिछि
वसुध गारसँ ठेव व्रियाग हम,
आओग छेनीकसँ छी ठेव।
दीगाक देठ रजोतक दृशग,
हम समाज मे वाँटव ।।

नक्ष गार
ज्जाग सुयामगि गनिमठ मथिछि,
गव्य द्रवि्य अछि गार।
जागि यन्त्र के गेद के गेदव,
आओग पारय के पाटव ।।

मथिछि
मथिछि के जे वाँटि नहठ अछि,
देपयौ हमने जाँटि नहठ अछि।
हेतै वक्रिअ मथिछि यगिनीके,
वैसि व्रियाग के वाँटव ।।

नक्ष गार
मथिछि के हम क्कान्गद्वि छी,
घेनगे नोग वमिनी,
एहि अगहन मे याहि हमनी,
वैयानकि यगिगानी।
गछि गछि अगहन घन मे, यगद्वि सूत्र के साटव
मथिछि

ખે હમના વુનવિક વુહસ,
 વુહયિયો અપગે પૈન કટસ,
 આવ યથાકો મુદા ગમિયથો,
 અંકુસસં હમ આંકવ।

મથિથિ

સુખ શાન્તા સમ□દ્યમિનોહ,
 હમ સમાજ મે આગવ।
 વુહા ડકેઇહું શ્વેન ડકાવ ગમિ,
 આવ આગા ગમિ પાકવ।

મથિથિ

હમના મથિથિ નાજ ગમિયાહિ,
 મેટા નં વ્રધિવિત્ હમ છેવ।
 હમ્મન હસિસા હમના યાહિ,
 ગમિ સુગવ હમ ડાંટવ।

મથિથિ

વૈયાનાકિ કોમઇ કસિઇસં,
 હમ વૈયાનાકિ આગા ખિનાવ,
 વહગિ યગૈગકિ પોરછા મિનવ હમ,
 સઇહેશક પૌનુષ હમ પાવ।

મથિથિ

૨

કૌવાકેન પંચૈતી વૈસઇ,
 પહીના પાગ અછા ગિનિમય મેઇ।
 ખગસેવાકે કાખ કનિ કછિ,
 સત્તા છેઇ સત્તાખક ખેઇ।
 વ્રષિંઇ પન અધકિન હમન અછા,
 વ્રષિંઇ પૌષ્ટકિ ય્યવગપ્નાસ।

ठडा ठडाक'पेठहुँ सव दगि
 गदिथ गोतापि न एप्पगो आस।।
 ठेक कहँ अछि वाँयठ पुनविक
 जे सुगठिगिए वात हमन।
 पुहुठक हमन यठाकी सवटा,
 सावयाग अछि गाँव गगन।।
 एक मातृ मातृ अछि वाँयठ,
 भाषा पन कहि काज कनी।
 हम यठाक छहि पहिनिहसि,
 मथिठि गाजक गाम धनी।।
 हम कौवा मन्मज्ज ज्ञानकेन,
 मुप्पयि मातृ नहव हमहि।
 ज्ञानक मातृ एक ठकिदा हम
 वाँकी सग कहल कहलि।।
 गुदा मातृसँ वाजनिहठ छी,
 गुदा मातृ अछि दिवक देठ।
 हुँ साँय कहिअ हम वाजव,
 कनव यठाकी सता ठेठ।।
 हम कनिको मैथठि गजभागव,
 मैथठि मातृ हमन पगदान।
 वाँयठ आव पुनपंयेठ अछ,
 पापी पेटक कनी गदिन।।
 हम छी दागठ साँढ पुनपिठि,
 ठेकनव अछि भाषाकेन मागक।
 हम जे ठपिठहुँ सत्य सुद्य अछि
 अछि असुद्य ठपिठ जे आगक।।
 हम मैथठि छी महा मगसूरी,
 मथिठि पन हमने अचकिन।

હમન દુષ્ટના ખગા ખાહિનિ અર્ષા,
 મથિથિકેન હમલે નપ્પવાન ।।
 ઘનમક આનિ મે વૈસી ખેઠું હમ,
 મઠપુઆ ઘ□ન આશ્રીન મઠાર ।
 દુનપયોગ કેઠું ક્ષમનાકેન,
 સત્ના છઈ હમન મૌખાર ।।
 ધનમક ગેના મથિથિ ગેના,
 સગ દઠકેન હમ ગેના છો ।
 વુનવિક ઓક વાન ગર્ભા વુદ્દા,
 હમ ખ્માનક વ્રક્ષિનેના છો ।।
 હમ અનાથ છો, ખગાગનાથ ગર્ભા,
 નૂસઈ હમન અપગ મૌખાર ।
 એકવેન પુનિ યાઈ યથવ હમ,
 મથિથિ નાખક દેવ દોહાર ।।

-વદ્નોગાથ નાય, પતિા સ્વ ખયદેવ નાય, ગ્નામ પોસ્ટ કનમૌથી, ખા મિધુવની,
 વહિન । શક્ષિ પુત્રેશકિા અત્નીનમ્, ર્ષાહવાદ હિન્દી વદિયા પોડ સં પુનથમ
 ગાગ સાહિત્યનગ્ અત્નીનમ્ ।

અપગ મંત્રણે દર્શિનાઈસના ડડ્ડવદિહાગમાઈયોમ પન પડાડા

इंपकउपगा हा- छुगगा



कल्पना हा

छागना

दीन वन्धु सव जागु आवो, गहीन नहव हाना
सत्य कह्य छी सुनु ध्यान सं, हाथ मे छि कमाना
हसिंसा, वप्पना मोन मुटौवठ, कते कनव संगाना
जाग क छेन मे एना गय ओसू, गहीन होयव वदना
कनोय, नृषमा आन कषुया, नीक गही होतयन पनासिमा
अगना, पगना आन वेगना, इ क

जीवन क मोकामा

अनपठ धन पन सुश्रुकां नय छोडू, समय होयन वठवाना
याग कनव कहियौ यै, छोट यठु अपन धामा
जावतो यीन सं मनप वजान, गहीठौआ न सव वेकाना
देय छागना छागनिहठ, आम्पसिं ढव ढव गो न वहठ
- कल्पना हा- वोकानो

अपन भानुधे दतिनीठिसनाडडवदिहाजामाठियोम पन पडाउ।

इंद्राशीष अगयनिहा- शक्तगिगपठ



આશીષ અગયગિહાન

મક્તાગિખ

અો ગહકિનૂ માગ મોહન મુનાની
અયમ દસિ દયો ય્પાગ મોહન મુનાની

સહાન ઓ સનસ વગસિનઇ ઓ નનઇ વગા
સુગાવથા અપગ નાન મોહન મુનાની

નયા નાસ યોગી સુગા સત્પ મોગી
નસકિ નસ કઠા ન્પાગ મોહન મુનાની

સામામે ડો પહ્યઇ સે સન મોક્ષ પેઇક
બે નાગથા અપગ આન મોહન મુનાની

હમન માત્ર ડો છે અહી પેઇ નહ્યે
ઇયો નુય્છ દુગા ધાન મોહન મુનાની

સગ પાંતમિ ૧૨૨-૧૨૨-૧૨૨-૧૨૨ માત્નાક્તમ અછાિ ગાળમે માગ્ન છૂટ છે
ગેઇ અછાિ ૬ વહે મુતકાગિ મુસમ્મગ સાઇમિ અછાિ

અપગ મંત્ર્યે દર્શિનાઇસગાડડ્વદિહવામાઇયોમ પન પડાડા

(અમ્મસૂ) " પૃથ્વીવંશી ગણિત । મથિયો સૂટુડેટ યુગયિન (અમ્મસૂ)
પૃથ્વીવંશી યોગ્ય વૃદ્ધિપૃથ્વીવંશી મૈથિયો આયોગ્ય આમંત્રિતિ અર્થા

૧) અમ્મસૂ કેૃત ગણક પૃથ્વીવંશી રાહિસ,

૨) અમ્મસૂ આ મથિયો કેૃત ગણ યોગ,

૩) અમ્મસૂ આ વૃથિયોગ પાત્રી કેૃત સમગ્રવય,

૪) અમ્મસૂ દ્વારા મેઠ વૃથિયોગ આંદોલન આ નકલ યોગ્ય- યોગ્ય એવમ્ ઓકલ
પૃથ્વીવંશી વા

૫) અમ્મસૂ સંદર્ભિતિ આગ કોનો યોગ્ય ।

૩૭૧ અંકક વૃથિયોગ યેઠ અર્થ અપગ નયના ૨૫ મર્ ૨૦૨૩ યૌવન ૭૬૩૦
૬- પૃથ્વીવંશી દિગ્ગંતિયોગ્યવૃદ્ધિયોગ્યમાયિયોમ પૃથ્વીવંશી પૃથ્વીવંશી સર્કે યો ।

- ગાળેગ્દૃત ગાળે, સમપાદક વૃદ્ધિ, જૈનસાપ્ત ગો + ૮૯૮૫૬૦૮૬૦૭૨૧
હથથસ્ત્ર:વૃથિયોગ્યઅર્થઅર્થસ્ત્ર:વૃથિયોગ્ય ૨૨૨૨- ૫૪૭૩ વૃથિયોગ્ય

૩

"વૃદ્ધિ મોનોગ્રાફ" સંપાદક

વૃદ્ધિ અપગ યોગ્ય નયનાકાલ કાલકાલ પૃથ્વીવંશી સંપાદક અર્થા

(૧) અર્થાગ્દૃત ગાળે, (૨) ગાળેય યગ્દૃત ગાળે અર્થ, (૩) નામયોગ્ય

ગાળે, (૪) નામગ્દૃત યોગ્ય, (૫) ગાળેય ગાળે ગાળે, (૬) કેદા

ગાળે યૌવન, (૭) પૃથ્વીવંશી મર્થિ 'પૃથ્વી' આ (૮) સર્થાગ્દૃત યૌવન

વૃથિયોગ્ય ગણિત અર્થા

અર્થ સર્થાગ્દૃત અર્થ સાહિત્યકાલ પૃથ્વીવંશી "વૃદ્ધિ મોનોગ્રાફ" સંપાદક

અર્થાગ્દૃત "મોનોગ્રાફ" આમંત્રિતિ કપ્પલ પા ૧૬૦ અર્થા

"વૃદ્ધિ મોનોગ્રાફ" સંપાદક વૃથિયોગ્ય ગમિત પૃથ્વીવંશી અર્થ:

(૧) ર્થાગ્દૃત યોગ્ય યોગ્ય કોનો એક નયનાકાલ પૃથ્વીવંશી અર્થ મોનોગ્રાફ

યોગ્ય વૃથિયો દિગ્ગંતિયોગ્યવૃદ્ધિયોગ્યમાયિયોમ પૃથ્વીવંશી પૃથ્વીવંશી સર્કે યો

મોનોગ્રાફ યોગ્ય વૃથિયો સામાન્ય: એક માસ ૧૬૦ ।

(૨) વૃદ્ધિ આઠ નયનાકાલ પૃથ્વીવંશી યોગ્ય વૃથિયોગ્ય મોનોગ્રાફ યોગ્ય યો

યોગ્ય ગણિત ઓકલ સામંત્રિતિ યોગ્ય કાલ ।

"વૃદ્ધિ મોનોગ્રાફ" યોગ્ય વૃથિયોગ્ય:

(૧) મોનોગ્રાફ પૂર્ણ નૂપે નયનાકાનપન કેન્દ્રિતિ હુઅપ્પા। સાહિત્ય અકાદેમી, લગ્નવેદી આ કલ્પિત વ્યક્તિગત નૂપે ઇપ્પિય મોનોગ્રાફ વાપ્રોગ્રાફીમે ઇપ્પક સંસ્મરણ આ વ્યક્તિગત પુનસંગ ઝોડી કપ નયનાકાનક વહને અપન-આત્મ-પુનસંસા ઇપ્પિય છર્થા। "વદિહ મોનોગ્રાફ" શીશ્વા વ્રુઈડ કપ શુટવાઇ સંગ નહા। શીશ્વા વ્રુઈડ કપ શુટવાઇ એહન સ્કમાત્ન ટૂંગામેસ્ટ અર્થાત્ત કોનો "ઓપેનિંગ" વા "ક્લોઝિંગ" સેનીમની નૈ હોશ છે આ નકન કાનસ છે જે "ઓપેનિંગ" વા "ક્લોઝિંગ" મે ટૂંગામેસ્ટમે નૈ પ્પેઇ નહઇ ઇક મુખ્ય અર્થાત્તિ અર્થાત્તિ હોશ છર્થા આ શ્લોકસ પ્પાઠિડી સંદૂન યઇ ઝાશ અર્થા શીશ્વા માત્ન આ માત્ન શુટવાઇ પ્પાઠિડીપન કેન્દ્રિતિ નૈહ અર્થા સે ઓકન ટૂંગામેસ્ટ "ઓપેનિંગ સેનીમની" નૈ વ્રુઈ સોદે "ઓપેનિંગ મૈય" સં આનમ્મ હોશ અર્થા આ ઓકન સમાપન "ક્લોઝિંગ સેનીમની" સં નૈ વ્રુઈ "શ્વારૂઇ મૈય આ ટૂંગા" સં પ્પાત્મ હોશ અર્થા આ શ્લોકસ માત્ન આ માત્ન પ્પાઠિડી નૈહ છર્થા। નહિના "વદિહ મોનોગ્રાફ" માત્ન આ માત્ન એ "સાનો નયનાકાન" પન કેન્દ્રિતિ નહા આ કોનો સંસ્મરણ આદિ ઝોડી કડ શ્લોકસ નયનાકાનસં અપનાપન કેન્દ્રિતિ કનવાક અનુમતિ નૈ નહા।

(૨) મોનોગ્રાફ ઇઇ "વદિહ પેટાન" મે ઉપઇવ્ય સામગ્રીક સન્દર્શન સહિત ઉપયોગ કપ્પઇ ઝા સકૈપ।

(૩) વદિહમે ઈ-પુનકાશિતિ નયના સગક ક□પીનાશ્ત ઇપ્પકસંગ્રાહકાત્તા ઇકનક ઇગમે નહાનહા। સમ્પાદક 'વદિહ' ઈ-પત્તિકામે પુનકાશિતિ નયનાક પુનટિ-વેવ આત્કાર્શ્વક આત્કાર્શ્વક અનુવાદક આ મૂઇ આ અનુદિતિ આત્કાર્શ્વક ઈ-પુનકાશન પુનટિ-પુનકાશનક અધિકાન નૈપ્પાઇ છર્થા। એ ઈ-પત્તિકામે કોનો ન□પ્પઇડી પાનશિનમકિક પુનાવધાન નૈ છે।

(૪) "વદિહ મોનોગ્રાફ" ક શ્લ□નમેટ: નયનાકાનક પનિયિય (નયનાકાનક ઝાનમ, ગવાસ-સ્થાન આ કાન્યસ્થઇક ગૌગોઇકિ-સાંસ્કૃતિકિ વવિયના સહિત) આ નયનાવઇ (સમીક્ષા સહિત)।

ઘોષણા: "વદિહ મોનોગ્રાફ" સ□પ્પઇ અન્નાત્ત (૧) નાઝનન્દન ઇઇ દાસ ઝી પન મોનોગ્રાફ ગર્નિમઇ કાનસ, (૨) નૌગ્દન ગાય ડાકુન પન મુર્ગી કામન આ (૩) કેદાન ગાય ચૌધરી પન પુનેમ મોહન મશિન દ્વાના ઇપ્પિઇ

जायत। मैथिली पुन पुनदीप पन "वदिए भोगोग्नाश्व" छपिगाह पुनमसंकन
ह। "पवग"।

शेष प गोटपन गनिसय शीघ्र कए जायत।

घोषमा रः ओगा तँ मैथिली पुन पुनदीप पन वदिए वशिषांक नै गकिओने अछि,
मुदा हुनकन अवदाग केँ देखैत पुनमसंकन ह। "पवग" क हुनका अपन "वदिए
भोगोग्नाश्व" छपिवाक वगियन आयत तँ ओकना सूचीकन कयत गेट।

- गणेश्वर गकुन, सम्पादक वदिए, गैहगसापप नो +८९८५६०८६०७२९
हथथश्वःवश्यएहअछओशम् रषषाम रररर- ५४७२२ वश्यएहअ

४

वदिए वन □ डकास्ट वसिस्ट

वदिए औऔऔवश्यएहअछओशम् सम्वन्धी सूयगा छेअ अपन गैहगसापप
गम्वन हमन गैहगसापप नो +८९८५६०८६०७२९ पन पगउ, ओकन पुनप्रोग
भातन वदिए सम्वन्धी समाया देवाक छेअ कए जाएत।

५

वदिएक "साहित्यिक गनष्टायान वशिषांक"

वदिए "साहित्यिक गनष्टायान वशिषांक" छेअ गमिनवपिनि वषिषपन आछेप
३- मेवे दगिनीगिषिगनाडवदिएहगमाविषियम पन आमन्त्रिनि अछि।

१ साहित्य, कए आ सनकानी अकादमी:-

(क) पुनसूकानक गाणगीनि

(प) सनकानी अकादमीमे पैसवाक गएन- ठेकतागतिक वषिष

(ग) सगगागुट आ अकादमी केन काण कनवाक गनीका

(घ) सनकानी सगगाक छद्म वगिषमे उपजत गात्काठिक समागागत
सगगाक कान्यपद्मनि

(ङ) अकादमी पुनसूकानमे पाइ छैकटनः मथिक वा यथान्य

२ वष्यकगिग साहित्य संस्थाग आ पुनसूकानक गाणगीनि

३ पुनकासन गगतमे पसतठ गनष्टायान आ छेपक

४ मैथिलीक छद्म छेपक संगठन आ ओकन पदायकिनी सवहक आयगाम

५ सूकूठ- क □ ठेजक मैथिली वगिषमे पसतठ साहित्यिक गनष्टायानक

विविधि नूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्यापन-अध्यापन

(ग) गणित

द साहित्यिक पत्रिका, गीत, मंत्र-भाषा-भाषक आ लोकनृपसक पेश-
नमाशा

७ ऐयक सवहक जन्म-मनास सागावटी केन युगाव, कैथेनवाह आ नकना
पाछक गाजनीति

द दधि एवं ऐयक सवहक संगे मेह-गाव आ ओकन शोषक विविधि नरीका
द कोनो आग विधि।

-गाणेश्वर गान्धारी, सम्पादक वरिष्ठ, गौरीसापप गो +८९८५६०८६०७२९
हथयस्तु:प्रत्यहअष्टश्रीम् शेषम् रररर- ५४७२ प्रत्यहअ



सूचना



"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्म- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"



Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson



Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३६९ म (०१ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मिक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सभ प्रकारक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मई २०२३ धरि वई फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA



"विदेह द्वारा एक बेरमे कोनो एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनिन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनिन (एम.एस.यू.) पर निष्ठा लीखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

- १) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,
- २) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,
- ३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,
- ४) एम.एस.यू. द्वारा भेल विभिन्न आंदोलन आ तकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव बा
- ५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३७१म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वई फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA





मूठना

१



"रिदेहक जीवित माहिअकार-ग्रामादक-आ बैगमठकमौ- बैगमठ-निर्देशक पर रिशेराक शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement



रिदेह-अपन ३७६ म (०१ म.ग. २०२३) अंकमे मैथिली लेखक-अशोक पर-आ ३१० म (१७ म.ग. २०२३) अंकमे मैथिली लेखक राम भूषण कापड़ि 'अमर' पर रिशेराक निकालत। रिशेराक लेल रचनाकार/ कलाकर्मिक काज, रचना-संपादन, मसुदा-आ अन्त रचनाद्वेक कार्यपर मसुदा प्रकाशक रचना (मसुदा, आलोचना, ग्रामालोचना, ग्रामीण आदि) आर्मागित अछि। अहाँ अपन रचना ३७६म अंकक रिशेराक लेल २४ अक्टुल २०२३ धरि आ ३१०म अंकक रिशेराक लेल ८ म.ग. २०२३ धरि रई फागलेमे ग्र-पत्र मकेत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा मके छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, ग्रामादक रिदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"रिदेह द्वारा एक रैरमे कोनो एकटा मन्दाक ग्रामग्र मूल्यार्कन शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement



रिदेह-अपन ३१० म (०१ जुन २०२३) अंकमे "मिथिला मूठनेट युनियन (एम.एम.यू.)" पर रिशेराक निकालत। मिथिला मूठनेट युनियन (एम.एम.यू.) पर निता ली-खे रिदपर मैथिलीमे आलेख आर्मागित अछि।

- १) एम.एम.यू. केर गठनक प्रमाणिक गतिहास,
- २) एम.एम.यू. आ मिथिला केर नर तदना,
- ३) एम.एम.यू. आ रिशेराक जाति केर ग्रामग्र,
- ४) एम.एम.यू. द्वारा लेल रिशेराक आदालन आ तकर लेख-जोधा एरम् ओकर प्रभाव री
- ५) एम.एम.यू. मदीति अख कोनो लेख।

३१०म अंकक रिशेराक लेल अहाँ अपन रचना २७ म.ग. २०२३ धरि रई फागलेमे ग्र-पत्र मकेत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा मके छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, ग्रामादक रिदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA



